# बातचीत

## अपने ईसाई दोस्त से एक मस्लमान की गफ़्तगू

बादरू केटरेगा तथा डेविड शैंक

# बातचीत

## अपने ईसाई दोस्त से
## एक मस्लमान की गफ़्तगू

*bātchīt. apne īsāī dost se ek musalmān kī guftagū*

# A Muslim and a Christian in Dialogue

by Badru D. Kateregga & David W. Shenk

translated by D. Becht

(Urdu—Hindi script)

© 2021 Good Word, New Delhi

ISBN 978-93-80941-29-5

*original in English, © ACK Uzima Publishing House, Nairobi.*
*Published and distributed under license by GWCS Pvt Ltd, New Delhi under the Mountain Peak imprint*

www.mountainpeak.biz

Bible quotations are from UGV.
Koran quotations are from A. A. Maududi's translation.

*for enquiries or to request more copies:*
askandanswer786@gmail.com

बादरू की अहलिया फ़रीदा

और

डेविड की अहलिया ग्रेस

के नाम

# पेशलफ़्ज़ 1

अल्लाह की मरज़ी से इस दुनिया में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब पाए जाते हैं। भारत के मुसलमानों ने अकसरियत और दीगर अक़्लियतों के साथ अमन से रहना सीखा है। चौदह सदियों से भारत में रहते हुए मुसलमान इस अज़ीम मुल्क की हर क़िस्म की उतार-चढ़ाव में हिस्सा लेते रहे हैं। भारत की ग़ैरमज़हबी जुमहूरियत के मुताबिक़ सबको मज़हबी आज़ादी हासिल है यहाँ तक कि अपने मज़हब की फ़रोग़ देने की इजाज़त भी है। हाज़िर दौर बहस का नहीं बल्कि मुकालमे और गुफ़्तगू का दौर है।

भारत में इस्लाम की राहनुमाई दोनों शरीअत और तरीक़े के ज़ेरे-असर है। सूफ़ी उनको कहते हैं जिन्होंने तरीक़ा अपनाकर इस्लाम की बातिनी ज़िंदगी पर ज़ोर दिया है। न वह शरीअत को नज़रंदाज़ करते, न ही उन्होंने इस्लाम के ज़ाहिरी आमाल तक अपने आपको महदूद रखे हैं। वह बातिनी ज़िंदगी की ख़ुलूस पर ज़ोर देकर तालीम देते हैं कि दिल को बुरी ख़ाहिशों से पाक रखना ज़रूरी है। सूफ़ी हज़रात फ़ैयाज़दिल थे। वह ईमान की बातों में किसी भी क़िस्म की मजबूरी या जबर की मुख़ालफ़त

करते थे। उन्होंने क़ुरान शरीफ़ की इस बात को पूरा किया कि “तुम्हारा मज़हब तुम्हारे लिए और हमारा मज़हब हमारे लिए” जब वह हर क़िस्म के दूसरे ईमान रखनेवालों के साथ पुरअमन तरीक़े से रहते रहे। उन्होंने न सिर्फ़ दूसरों को बरदाश्त किया बल्कि उनकी इज़्ज़त भी की। और हम कह सकते हैं कि मुकालमा करने के लिए दूसरों की इज़्ज़त करना निहायत ज़रूरी है।

मैं मुसलमान की हैसियत से मुसलमानों और ईसाइयों के ताल्लुक़ात पर ध्यान देता रहता हूँ। इसलिए मैं समझता हूँ कि इस वक़्त ज़ेरे-नज़र किताब की अशद ज़रूरत है। मुसन्निफ़ अपने अपने ईमान के बुनियादी ख़यालात को बड़े इज़्ज़तदार तरीक़े से पेश करते हैं। वह न तो अपने आपको बेहतर समझते हैं न एक दूसरे को कमतर समझते हैं। दरअसल वह यह दिखाते हैं कि दीन के बारे में बातचीत उस वक़्त मानीख़ेज़ और फलदार है जब हम अपने ईमान में पक्के और दूसरों के लिए खुले दिल हैं। जो भी इस किताब को ग़ौर से पढ़े उसे समझ आएगी कि दूसरे

ईमानवालों के साथ ख़ालिस बातचीत करने से कोई भी अपने ईमान में बढ़ सकता है। मैं पब्लिशर को मुबारकबाद कहता हूँ कि उन्होंने भारती ईडिशन तैयार करने में कामयाबी हासिल की है। मुझे यक़ीन है कि मज़हब के तालिब-इल्म इस किताब के ज़रीए बहुत कुछ सीखेंगे।

प्रोफ़ेसर अख़्तरुल-वासे

भारत के लिसानी अक़्लियतों के कमिश्नर, हुकूमते-हिंद
साबिक़ सदर डिपारटमेंट ऑफ़ इस्लामिक स्टडीज़
डायरेक्टर ज़ाकिर हसीन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इस्लामिक स्टडीज़
जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दहली

# पेशलफ़्ज़ 2

गो इनसान ने इल्म,टेक्नॉलॉजी और मेयारे-ज़िंदगी के लिहाज़ से कितनी तरक़्क़ी क्यों न की हो, फिर भी मेरे ख़याल में हम एक नए दौर में दाख़िल हो रहे हैं और वह एक रूहानी दौर है। इस नए दौर में हमें मज़ीद गहरी गहरी बातें नज़र आती हैं जब मुख़्तलिफ़ ईमान के रस्मो-रिवाज हमारे सामने आते हैं। इस वक़्त हमें इनसानी तहज़ीब में बहुत गूनागूनी महसूस होती है। अहम सवाल यह है कि क्या यह रंगारंगी अल्लाह की तख़लीक़ का हिस्सा और राज़ है या इनसानों का बनाया हुआ है? कसरत की ज़िंदगी पाने के लिए यह ज़रूरी है कि हम हलीमी से गूनागूनी के राज़ को क़बूल करें। अनगिनत सदियों के दौरान ज़बान और रंग वग़ैरा में बहुत कसरत का तनव्वो वुजूद में आया है। साथ साथ ईमान के रस्मो-रिवाज और तरीक़ों की तादाद भी बहुत ज़्यादा बढ़ गई है। आम ख़याल यह है कि इनसान को मज़ीद बेहतरी लाने के लिए दुनिया में रखा गया है। हम तनव्वो में इत्तहाद ढूँडते हैं, न कि यकसानियत में। अगर सरसरी तौर से भी इस दुनिया पर नज़र डाला जाए तो मालूम होता है

कि इसकी ख़ासियत और ख़ूबसूरती इसकी कसरत की गूनागूनी में है। यह बहुत तक़वियत देनेवाला ख़याल है कि हम सब अल्लाह के मिशन के लिए इस दुनिया में मौजूद हैं।

इस लिहाज़ से यह किताब वक़्त पर आ गया है। मुसन्निफ़ों ने जिस हलीमी और अच्छे तरीक़े से अपने अपने ईमान का इज़हार किया है, इससे दोनों ईमान के माननेवाले बहुत कुछ सीख सकते हैं। बेशक इन दो ईमानों में इख़्तिलाफ़ हैं। लेकिन कई-एक बातों में इत्तफ़ाक़ भी है। बहुत बार लोगों ने अपने मज़हब की बरतरी बरक़रार रखकर दूसरे मज़हबों की हर बात को रद किया है। लेकिन अल्लाह हमारे महदूद ज़हनों और दिलों से बहुत ही अज़ीम है! जब हम हलीमी से यह बात मान जाएँ तब ही पुरअमन तबादलाए। ख़यालात का दरवाज़ा खुल जाता है। हद से ज़्यादा ज़रूरी यह है कि हम अपने ईमान में रहकर दूसरों पर एतमाद करें और उनकी ख़िदमत करने के लिए रस्मी दीवारों और हदों को पार करें। तब ही इस दुखी दुनिया में मुसबत तबदीलियाँ आएँगी। इस तक़सीमशुदा दुनिया में इसकी अशद ज़रूरत है कि हम दूसरे ईमानवालों की सचमुच सुनें और बा-इज़्ज़त तरीक़े से उन्हें समझने की कोशिश करें।

इस किताब में इन्हीं बातों की क़दर की गई है। लिहाज़ा यह एक नई इनसानियत तामीर करने में बहुत बड़ी कोशिश है। चूँकि इस्लाम और ईसाई दीन दुनिया के सबसे बड़े मज़ाहिब हैं, इसलिए वह दुनिया के मिशन में हद से ज़्यादा मुअस्सर किरदार अदा कर सकते हैं। मतलब है कि वह अपने अपने ईमान में मज़बूत रहकर तास्सुब को रद करें और दूसरों के मुख़्तलिफ़ होने की क़दर करें। हर एक को दूसरे ईमान के फ़वाइद और दौलत के बारे में सीखना है। और यही इस किताब की कामयाब कोशिश है।

फ़्रायर थॉमस कुन्नुंकल एस.जे.

सदर इस्लामिक स्टडीज़ असोसियेशन

पद्म श्री पुस्कार हासिल करनेवाले

# किताब का मक़सद

करोड़ों मुसलमान और ईसाई एक दूसरे के पड़ोसी हैं। दोनों का फ़र्ज़ यह है कि वह दूसरों में तबलीग़ करें, मगर अकसर वह शाज़ो-नादिर एक दूसरे की गवाही सुनते हैं। माज़ी में उनकी आपस में मुख़ालफ़त ने दोनों के बीच एक ऐसी दीवार खड़ी कर दी है जो उन्हें जुदा करती है। गो दोनों अल्लाह की इबादत करके उसकी क़ौम के फ़रायज़ अदा करने की कोशिश करते हैं ताहम वह शाज़ो-नादिर एक दूसरे की सुनते हैं।

यह किताब एक मुसलमान और एक ईसाई की बातचीत है जिसके दौरान वह अपना ईमान पेश करने और दूसरे की बात सुनने की कोशिश करते हैं। दोनों मुसन्निफ़ीन क़रीबी दोस्त हैं। हमने कीनियाटा यूनिवर्सिटी कॉलेज कीनिया में शोबे फ़लसफ़ा और मज़ाहिब में एक साथ पढ़ाया है। बादरू केटरेगा मुसलमान हैं। उन्होंने इस्लामी तारीख़ और इल्मे-इलाहियात सिखाया है। डेविड शेंक ईसाई हैं। उन्होंने ईसाई तारीख़ और इल्मे-इलाहियात सिखाया है। हमने मिलकर भी मज़ाहिब का मुक़ाबला करना सिखाया है। अकसर हम यह तालीम बातचीत की सूरत में देते

थे। तुलबा के सामने हममें से हर एक अपना ईमान दूसरे को पेश किया करता था।

हमने महसूस किया है कि मुसलमानों और ईसाइयों के दरमियान जब इस तरह की बातचीत होती है तो यह एक संजीदा मामला है। ऐसे मज़मून छेड़े जाते हैं जो गहराई में ले जाते हैं। इनसानी हालत के मुताल्लिक़ बुनियादी सवाल उभर आते हैं। नतीजे में एक दूसरे की बात सुनते और अपनी गवाही देते वक़्त दर्द महसूस होता है। शायद हम सब ऐसे दर्द से डरते हैं। शायद यही एक वजह है कि मुसलमान और ईसाई शाज़ो-नादिर ही ईमान से मुताल्लिक़ एक दूसरे से बातचीत करते हैं।

ताहम हम मुसन्निफ़ समझते हैं कि गुफ़्तगू में गवाही का उनसुर अज़हद ज़रूरी है। ज़रूरी है कि हम अपनी अपनी क़ौम की तरफ़ से एक दूसरे से बात करना सीखें। इस किताब में हमने यह कुछ करने की कोशिश की है। हमने गोल-मोल बातों से दूर रहकर खुलकर बात की है। हर एक ने अपना ईमान साफ़ साफ़ पेश करने की पूरी कोशिश की है। हर एक ने वह कुछ पेश किया है जो उसके ख़याल में अल्लाह की मरज़ी है।

किताब को दो हिस्सों में तक़सीम किया गया है। पहले हिस्से में बादरू ने मुसलमान की हैसियत से अपना ईमान पेश किया है जबकि दूसरे हिस्से में डेविड ने ईसाई की हैसियत से अपना ईमान पेश किया है।

हर एक हिस्सा 12 अबवाब पर मुश्तमिल है। पहले हिस्से के हर बाब के आख़िर में ईसाई का जवाब है और इसी तरह दूसरे हिस्से के हर बाब के आख़िर में मुसलमान का जवाब है। कभी कभी जवाब के बाद दूसरी तरफ़ से मज़ीद विज़ाहत पेश की गई है।

हम दोनों ने अपनी अपनी तरफ़ से और दोस्ताना अंदाज़ में इस किताब को लिखा है। जो कुछ हमने कहा है उसके ज़िम्मेदार हम ख़ुद ही हैं। क्योंकि जो अपने ईमान की गवाही देता है यह उसके लिए एक ज़ाती बात है। ताहम हम उस ईमान की बात करते हैं जो हमारी क़ौम से जुड़ी हुई है। बादरू ज़्यादातर क़ुरान शरीफ़ की बिना पर अपनी सोच पेश करते हैं जबकि डेविड ने अपनी तहरीर की बुनियाद किताबे-मुक़द्दस को रखा है। बादरू सुन्नी माहौल की तरफ़ से बात करते हैं जबकि डेविड प्रोटेस्टेंट माहौल की तरफ़ से अपनी सोच पेश करते हैं। इसके बावुजूद भी दोनों ने पूरी कोशिश की है कि अपने अपने मज़हब का ख़याल करते हुए लिखें।

तालीम और अमल के लिहाज़ से इस किताब ने हर बात तो नहीं छेड़ा, लेकिन हम उम्मीद रखते हैं कि इसमें ईसाइयों और मुसलमानों के बीच मरकज़ी बातों की तरफ़ इशारे पाए जाते हैं। यह किताब दोनों मज़हबों का एक दूसरे के साथ मुक़ाबला करती है। उम्मीद है कि हम नुकताचीनी और पार्टीबाज़ी से दूर रहे हैं। हमारा उसूल यही रहा है कि मुझे मत बताओ कि मैं क्या मानता हूँ।

यक़ीनन यह किताब उन मुसलमानों और ईसाइयों के लिए मुफ़ीद साबित होगी जो एक दूसरे के ईमान की नौईयत को समझना चाहें। हमारी बड़ी ख़ाहिश यह है कि यह किताब ईसाइयों और मुसलमानों के बीच बातचीत के लिए इस्तेमाल की जाए।

हम यह भी यक़ीन करते हैं कि यह किताब उन तुलबा के लिए मुफ़ीद होगी, जो हाई स्कूल, मदरसों और ईसाई थियोलॉजिकल सेमिनरियों और यूनिवर्सिटी में पढ़ते हैं।

मुसलमान आम तौर पर दिक़्क़त महसूस करते हैं जब ईसाई इस्लाम के बारे में लिखते हैं। इसी तरह ईसाई मुश्किल ही मान लेते हैं कि मुसलमान हमारे ईमान की सही तालीम पेश करते हैं। यह किताब मुश्तरका तौर से एक मुसलमान और एक ईसाई के हाथ से लिखी गई है। हर एक लफ़्ज़ के पीछे यह इल्म है कि हम साथ मिलकर लिख रहे हैं। इसके पेशे-नज़र ईमानदारी, मेहरबानी और हस्सासियत दरकार होती रही है।

बादरू डी केटरेगा

डेविड डबलयू शेंक

# मुसलमान की दुआ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢﴾ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿٣﴾
مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٤﴾ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ
﴿٥﴾ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿٦﴾ صِرَاطَ
الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّالِّينَ ﴿٧﴾

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है।
सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो पालनेवाला सारे जहान का।

> बेहद मेहरबान, निहायत रहमवाला।
> मालिक रोज़ जज़ा का।
> तेरी ही हम बंदगी करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं।
> बतला हमको राह सीधी।
> राह उन लोगों की जिन पर तूने फ़ज़ल फ़रमाया,
> जिन पर न तेरा ग़ुस्सा हुआ और न वह गुमराह हुए।
> (सूराए-फ़ातिहा)

यह दुआ रोज़ाना कम अज़ कम 17 बार दोहराना हर मुसलमान का फ़र्ज़ है।

# ईसाई की दुआ

> Πάτερ ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς, ἁγιασθήτω τὸ ὄνομά σου. Ἐλθέτω ἡ βασιλεία σου. Γενηθήτω τὸ θέλημά σου, ὡς ἐν οὐρανῷ, καὶ ἐπὶ τῆς γῆς. Τὸν ἄρτον ἡμῶν τὸν ἐπιούσιον δὸς ἡμῖν σήμερον. Καὶ ἄφες ἡμῖν τὰ ὀφειλήματα ἡμῶν, ὡς καὶ ἡμεῖς ἀφίεμεν τοῖς ὀφειλέταις ἡμῶν. Καὶ μὴ εἰσενέγκῃς ἡμᾶς εἰς πειρασμόν, ἀλλὰ ῥῦσαι ἡμᾶς ἀπὸ τοῦ πονηροῦ. Ὅτι σοῦ ἐστιν ἡ βασιλεία καὶ ἡ δύναμις καὶ ἡ δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας. Ἀμήν.

> ऐ हमारे आसमानी बाप, तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
> तेरी बादशाही आए।
> तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है ज़मीन पर भी पूरी हो।
> हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।
> हमारे गुनाहों को माफ़ कर
> जिस तरह हमने उन्हें माफ़ किया जिन्होंने हमारा गुनाह किया है।
> और हमें आज़माइश में न पड़ने दे बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख।
> (मत्ती 6:9-13)

हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने यह दुआ अपने शागिर्दों को सिखाई। इसको अकसर दुआए-रब्बानी कहा जाता है।

# मुसलमान का ईमान

# कोई ख़ुदा नहीं सिवाए अल्लाह के

## मुसलमान का अक़ीदा

इस्लाम से मुराद अपने आपको पूरे तौर पर अल्लाह[1] की मरज़ी और अहकाम के तहत रखकर चलना है। इस्लाम की सबसे पहली और अज़ीम तालीम कलिमाए-शहादत है : ला इलाहा इल्ल अल्लाहु मुहम्मदुन रसूलुल-ल्लाहि। मतलब है कोई ख़ुदा नहीं सिवाए अल्लाह के और मुहम्मद (सलअम) अल्लाह के रसूल हैं। यही कुछ पूरी वफ़ादारी और ईमान के साथ इक़रार करने से इनसान हक़ीक़ी मुसलमान बन जाता है। यही इक़रार ज़िंदगी-भर हर मुसलमान की राहनुमाई करता रहता है।

इस्लाम में सबसे अहम बात अल्लाह की वहदानियत है। क़ुरान शरीफ़ इस्लाम की वहदानियत यों पेश करता है,

---

1 अल्लाह अरबी लफ़्ज़ है जिसका मुश्किल से ठीक तरह से तरजुमा किया जा सकता है। यह लफ़्ज़ यह बयान करता है कि अल्लाह लासानी और हर तरह से कामिल और ख़ूबसूरत है।

> तू कह वह अल्लाह एक है
> अल्लाह बेनियाज़ है
> न किसी को जना न किसी से जना
> और नहीं उसके जोड़ का कोई। (अल-इख़लास 112)

हर मुसलमान को अल्लाह के एक होने पर ईमान रखना है। अल्लाह पर ईमान दीने-इस्लाम की बुनियाद है। अल्लाह ने ख़ुद फ़रमाया,

> और मत पुकार अल्लाह के सिवाए दूसरा हाकिम। किसी की बंदगी नहीं उसके सिवाए।
> (अल-क़सस 28:88)

एक और जगह हम पढ़ते हैं,

> अल्लाह ही के लिए है बंदगी ख़ालिस। (अज़-ज़ुमर 39:3)

## अल्लाह एक है

कोई भी इनसानी ज़बान अल्लाह को ठीक ठीक बयान नहीं कर सकती, क्योंकि उसकी मानिंद कोई भी नहीं है। अल्लाह की क़ुदरत हमारी समझ से बाहर है। इसके बावुजूद भी हम जानते हैं कि वह वाहिद है। अल्लाह, जो सच्चा और बरहक़ ख़ुदा है, वह हमसे दूर नहीं है क्योंकि वह हमेशा हमारे साथ है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> हम उससे नज़दीक हैं धड़कती रग से ज़्यादा। (क़ 50:16)

अल्लाह एक है और वही ख़ुदा है। सिर्फ़ वही इबादत के लायक़ है। अल्लाह ने फ़रमाया,

> मत पकड़ो माबूद दो। वह माबूद एक ही है, सो मुझसे डरो। (अन-नहल 16:51)

दीगर तमाम अशया और जानदार जो इनसान जानता या नहीं जानता वह अल्लाह से बनाए गए हैं। अल्लाह का उसकी मख़लूक़ात से मुक़ाबला करना मुमकिन ही नहीं।

> तू कह, मैं तो यही हूँ डर सुना देनेवाला हाकिम। कोई नहीं मगर अल्लाह अकेला दबाववाला। (साद 38:65)

और दूसरी जगह पर अल्लाह फ़रमाता है,

> चलो उसी पर जो उतरा तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से, और न चलो उसके सिवा और रफ़ीक़ों के पीछे। (अल-आराफ़ 7:3)

ग़रज़, चूँकि ख़ुदा वाहिद है इसलिए उसके अलावा कोई और उसकी क़ुदरत और इख़्तियार के एक ज़र्रे का भी साझेदार नहीं हो सकता। अल्लाह ही उलूहियत की सिफ़ात रखता है। चूँकि अल्लाह वाहिद है, इसलिए उसके साथ किसी और को शरीक करना गुनाह और कुफ़र है।

इस्लाम साफ़ साफ़ फ़रमाता है कि अल्लाह का कोई बेटा, बाप, बहन, बीवी या बेटी नहीं है। वाहिद होने के बाइस अल्लाह किसी और चीज़ या जानदार की मानिंद नहीं है। उसके औसाफ़ और फ़ितरत नुमायाँ तौर से लासानी हैं। उसका कोई शरीक नहीं है।

## अल्लाह ख़ालिक़ है

मुसलमान को मानना है कि अल्लाह तमाम कायनात का ख़ालिक़ है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और वही है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को ठीक तौर पर। (अल-इनाम 6:73)

साथ ही वह फ़रमाता है,

> बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने पैदा किए आसमान और ज़मीन छः दिन में, फिर क़रार पकड़ा अर्श पर। ओढ़ाता है रात पर दिन कि वह उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ, और पैदा किए सूरज और चाँद और तारे ताबेदार अपने हुक्म के। सुन लो उसी का काम है पैदा करना और हुक्म फ़रमाना। बड़ी बरकतवाला है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। (अल-आराफ़ 7:54)

यह आयतें हमको याद दिलाती हैं कि कोई भी चीज़ अपने आपसे ज़िंदा नहीं हो सकती। क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा ही ने हर एक चीज़ को ख़लक़ किया है बशमूल ज़मीन और आसमान के।

अल्लाह न सिर्फ़ अपनी मख़लूक़ात को पैदा करके यों ही छोड़ देता है बल्कि वह नई शक्लो-सूरतें बनाने और तशकील देने में लगा रहता है। जो कुछ उसने ख़लक़ किया उसे वह अपनी मरज़ी से बरक़रार रखता और सँभालता है।

> वह अल्लाह है बनानेवाला, निकाल खड़ा करनेवाला, सूरत खींचनेवाला। उसी के हैं सब नाम ख़ासे (उम्दा)। (अल-हश्र 59:24)

वह पूरी कायनात का सँभालनेवाला है।

अल्लाह ने इनसान को बनाकर अपनी मेहरबानी से उसकी तमाम ज़रूरियात पूरी कीं। इनसान की तख़लीक़ के बारे में क़ुरान फ़रमाता है,

> वही है जिसने बनाया तुमको ख़ाक से, फिर पानी की बूँद से, फिर ख़ून जमे हुए से। फिर तुमको निकालता है बच्चा, फिर जब तक कि पहुँचो अपने पूरे ज़ोर को, फिर जब तक कि हो जाओ बूढ़े। और कोई तुममें ऐसा है कि मर जाता है पहले इससे और जब तक कि पहुँचो

> लिखे वादे को और ताकि तुम सोचो।
> (अल-ग़ाफ़िर 40:67-68)

अल्लाह ने उन तमाम चीज़ों को ख़लक़ किया जो हमें नज़र आती हैं और जो हमारी नज़रों से ग़ायब हैं। उसने अपना इलाही हुक्म सादिर फ़रमाया, "हो जा" तो "वह हो गया।" इसी तरह उसने कायनात और उसमें रहनेवाली तमाम अशया को ख़लक़ किया।

मुसलमान का ईमान है कि अल्लाह ने तमाम कायनात और जानदार को बनाने के बाद आराम नहीं किया। उसको इनसानों और जानवरों की तरह आराम की ज़रूरत नहीं। अल्लाह मुकम्मल तौर पर ज़िंदगी है जो कि इस तरह की ज़रूरतों से आज़ाद है। क़ुरान फ़रमाता है,

> अल्लाह—उसके सिवा कोई माबूद नहीं—ज़िंदा है, सबका थामनेवाला। नहीं पकड़ सकती उसको ऊँघ और न नींद। उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। (अल-बक़रा 2:255)

अल्लाह का काम ख़लक़ करने, ज़िंदगी बख़्शने और ज़िंदगी लेने, सँभालने और तमाम मख़लूक़ात पर पूरा क़ाबू रखने में दिखाई देता है।

# अल्लाह के नाम

अल्लाह बरतरो-बाला हक़ीक़त है। उसने इनसान पर 99 ख़ूबसूरत नामों को ज़ाहिर किया है जो उसके ला-महदूद अज़मत और वहदत बयान करते हैं। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और अल्लाह के लिए हैं सब नाम अच्छे। सो उसको पुकारो वही नाम कहकर और छोड़ दो उनको जो कज राह चलते हैं उसके नामों में। वह बदला पा रहेंगे अपने किए का। (अल-आराफ़ 7:180)

एक हदीस[1] में अबू हुरैरा के मुताबिक़ पैग़ंबरे-इस्लाम ने फ़रमाया कि अल्लाह के निनानवे नाम हैं, और जो कोई उनकी तिलावत करे वह जन्नत में दाख़िल होगा।[2]

यह नाम अल्लाह को तक़सीम नहीं करते, क्योंकि अल्लाह एक से ज़्यादा नहीं हो सकता बल्कि यह नाम उसकी कुछ सिफ़तें बयान करते हैं। मुसलमान इन नामों को अल्लाह की ताज़ीम में हम्दो-सना और नमाज़ करते वक़्त इस्तेमाल करते हैं। एक इल्तिजा करनेवाला अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ अल्लाह के मुनासिब नाम को लेकर उससे हमेशा दुआ कर सकता है। यहाँ पर हम कुछ नामों का बयान करेंगे,

---

1 हदीस का मतलब नबी (सलअम) के रिवायात है।

2 *Sahih Muslim*, transl. by Abdul Hameed Siddiqui, Vol. IV (Lahore, 1975), 1409.

जैसे अर-रहमान (मेहरबान करनेवाला), अर-रहीम (रहम करनेवाला), या अल-जलील (जाहो-जलाल रखनेवाला)।

## अल्लाह रहम करनेवाला है

एक[1] को छोड़ तमाम सूरा 'बिसमिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम' से शुरू होते हैं। इसके मानी हैं 'शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहमवाला है।' बिसमिल्ला वह दुआ है जो हर मुसलमान को हर काम के शुरू में कहना है। यह हर मुसलमान को याद दिलाता रहता है कि अल्लाह हमेशा अपने तमाम मख़लूक़ात पर मेहरबान है। क़ुरान के बहुत-से आयात अल्लाह की इनसान से मुहब्बत और उसका उस पर रहम बयान करती हैं।

क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> अल्लाह है जिसने बनाया तुम्हारे वास्ते रात को कि उसमें चैन पकड़ो और दिन बनाया देखने का। अल्लाह तो फ़ज़लवाला है लोगों पर, और लेकिन बहुत लोग हक़ नहीं मानते। (अल-ग़ाफ़िर 40:61)

दूसरी आयत यह बात जारी रखती है,

1 सूराए-तौबा (सूरा 9)

> अल्लाह है जिसने बनाया तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को इमारत। और सूरत बनाई तुम्हारी, तो अच्छी बनाईं सूरतें तुम्हारी। और रोज़ी दी तुमको सुथरी चीज़ों से। वह अल्लाह है रब तुम्हारा। सो बड़ी बरकत है अल्लाह की, जो रब है सारे जहान का। (अल-ग़ाफ़िर 40:64)

अल्लाह इनसान पर रहम करता है, क्योंकि वह मेहरबान और भला है। और वह हर किसी पर रहम करता है, चाहे वह मुसलमान हो या ग़ैरमुसलमान, ईमानदार हो या ग़ैरईमानदार, ताबेदार हो या ग़ैरताबेदार, काला हो या गोरा।

क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और दिया तुमको हर चीज़ में से जो तुमने माँगी। और अगर गिनो एहसान अल्लाह के न पूरे कर सको। बेशक आदमी बड़ा बेइनसाफ़ है, ना-शुक्र। (इब्राहीम 14:34)

अल्लाह का अपनी मख़लूक़ात पर रहम बेइंतहा है। न हम इनसान उसकी इनायतों को गिन सकते, न ही उनका तसव्वुर कर सकते हैं। वह इनसान को खाने-पीने की चीज़ें, आमदो-रफ़्त के ज़राए और ज़िंदगी की ज़रूरियात मुहैया करता है। और वह हमारे बरताव का लिहाज़ किए बग़ैर ही हमें सब कुछ मुहैया करता है। अल्लाह ने इनसान को बतौरे-अशरफ़ुल-मख़लूक़ात पैदा करके उसे रूहानी और जिस्मानी तरक़्क़ी

के लिए दरकार सब चीज़ें मुहैया कीं। अल्लाह ने यह सारी चीज़ें अपने रहम की ख़ातिर मुहैया कीं। अल्लाह रहीमो-करीम है। उसके रहम के वसीले से लोग सलामती, सुकून, उम्मीद, और एतमाद हासिल करते हैं। अल्लाह का रहम हक़ीक़ी और अमली है। वह इनसानी तजरिबे के तमाम शोबों में सरायत करता है।

इसके अलावा अल्लाह ने उनको अपनी ख़ास मुहब्बत से नवाज़ने का वादा किया जो उसकी मरज़ी पर चलते हैं। यह मुहब्बत उन सबसे है जो उसकी मरज़ी की इताअत करते हैं। क़ुरान फ़रमाता है,

> तू कह, अगर तुम मुहब्बत रखते हो अल्लाह की तो मेरी राह चलो ताकि मुहब्बत करे तुमसे अल्लाह और बख़्शे गुनाह तुम्हारे। और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (आल इमरान 3:31)

## अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ है

अल्लाह न सिर्फ़ मेहरबान और रहीम है बल्कि वह क़ादिरे-मुतलक़ भी है। अल्लाह के सिवा कोई और इनसान को नुक़सान या फ़ायदा नहीं पहुँचा सकता। अल्लाह ही इनसान की तमाम ज़रूरियात को पूरा कर सकता है, वही ज़िंदगी बख़्शकर वापस ले सकता है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> क्या तुझको मालूम नहीं कि अल्लाह ही के लिए है सलतनत आसमान और ज़मीन की और नहीं तुम्हारे वास्ते अल्लाह के सिवा कोई हिमायती और न मददगार। (अल-बक़रा 2:107)

अल्लाह ही को आसमानो-ज़मीन और तमाम मख़लूक़ात पर हुकूमत करने का इख़्तियार है।

कोई भी इनसान या चीज़ अल्लाह के अज़ीम इख़्तियार और क़ुदरत का मुक़ाबला नहीं कर सकता। वह तमाम कायनात का आला हाकिम और ख़ालिक़ है। क़ुरान अल्लाह की क़ुदरत को यों बयान करता है,

> तू कह, या अल्लाह, मालिक सलतनत के। तू सलतनत देवे जिसको चाहे और सलतनत छीन लेवे जिससे चाहे और इज़्ज़त देवे जिसको चाहे और ज़लील करे जिसको चाहे। तेरे हाथ है सब ख़ूबी। बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। (आल इमरान 3:26)

इस आयत में अल्लाह दुनिया के इख़्तियारवालों को तंबीह देता है। उन्हें याद रखना चाहिए कि अल्लाह ही अपनी मरज़ी से बादशाही बख़्शता और बादशाही छीन भी लेता है। वह क़ादिर है, क्योंकि तमाम क़ुव्वतें उसी की तरफ़ से आती हैं। वह क़ुदरत का मालिक है।

> सो बहुत ऊपर है अल्लाह वह बादशाह सच्चा। कोई हाकिम नहीं उसके सिवाए, मालिक उस इज़्ज़त के तख़्त का। और जो कोई पुकारे अल्लाह के साथ दूसरा हाकिम जिसकी सनद नहीं उसके पास सो उसका हिसाब है उसके रब के नज़दीक। बेशक भला न होगा मुनकिरों का। (अल-मोमिनून 23:116-117)

यह आयत हमें अल्लाह तआला के क़ुदरत की फ़ितरत बयान करती है। वह अज़हद महीब ख़ुदा, निहायत आला और मालिक है। जब इनसान की ज़िंदगी में ऐसी बातें वुक़ूपज़ीर होती हैं जो वह नहीं समझ सकता तो क़ादिरे-मुतलक़ की फ़ितरत पर पक्का ईमान उसकी मदद कर सकता है। इस बिना पर वह जानेगा कि ख़ुदा ही इन बातों के पीछे है।

अल्लाह तआला इख़्तियार का मालिक है, इस पर बहस मुमकिन ही नहीं। सिर्फ़ वही फ़रमाँबरदारी मिलने का हक़दार है। और उसे यह फ़रमाँबरदारी मिलती भी है। वह सबसे अज़ीम है, इसलिए उसके सामने तमाम मख़लूक़ात को उसकी ताज़ीम में सर-निगूँ होना है। गो वह साहबे-इख़्तियार है, तो भी वह पाक, हाँ तमाम शर और गुनाहों से पाक है।

# अल्लाह आलिमे-कुल है

जिस तरह अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़, रहीम और करीमुन-नफ़स है उसी तरह वह साहबे-हिकमत और आलिमे-कुल भी है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और तुम छुपाकर कहो अपनी बात या खोलकर वह ख़ूब जानता है जियों के भेद। भला वह न जाने जिसने बनाया और वही है भेद जाननेवाला ख़बरदार।
> (अल-मुल्क 67:13-14)

मुसलमान इन औसाफ़ को संजीदगी से मानते हैं। मसलन पोशीदगी में गुनाह नहीं करना चाहिए यह सोचते हुए कि किसी को मालूम नहीं। अल्लाह के सामने हर चीज़ चाहे ज़ाहिर हो या बातिनी, देखी हो या अनदेखी सब कुछ उसके सामने अयाँ है। कोई भी बात उससे पोशीदा नहीं है। वह इनसान के हर पोशीदा इरादे और ख़ाहिश से वाक़िफ़ है।

क़ुरान शरीफ़ अल्लाह की हिकमत और इल्म पर बहुत बार ज़ोर देता है। मसलन

> वही है हिकमतोंवाला, सब कुछ जाननेवाला। . . . ग़ायब नहीं हो सकता उससे कुछ ज़र्रा-भर आसमानों में, और न ज़मीन में। और कोई चीज़ नहीं इससे छोटी और न इससे बड़ी जो नहीं है खुली किताब में। (सबा 34:1,3)

> और वह जानता है जो कुछ जंगल और दरिया में है। और नहीं झड़ता कोई पत्ता मगर वह जानता है उसको। और नहीं गिरता कोई दाना ज़मीन के अंधेरों में, और न कोई हरी चीज़ और न कोई सूखी चीज़ मगर वह सब किताबे-मुबय्यन में है। (अल-इनाम 6:59)

अल्लाह हर एक बात से वाक़िफ़ है जो हाल में हो रही है और मुस्तक़बिल में होनेवाली है। वह दूर और नज़दीक की तमाम बातों से वाक़िफ़ है और जो आसमान और ज़मीन की बातें हैं उनसे भी। उसका इल्म बेहद और बेक़ैद है। वह इनसान को अपने पैग़ंबरों और अपने कलाम के ज़रीए हिदायत देता, सिखाता और समझाता है। वह फ़ितरत के क़वायद और पूरी कायनात में अपने अजीबो-ग़रीब निशानात इनसान पर भी ज़ाहिर करता है। यह सारी चीज़ें साबित करती हैं कि वह साहबे-हिकमत और आलिमे-कुल है।

## अल्लाह अबदी है

इस पर ज़ोर दिया गया है कि हम मानें कि अल्लाह अबदी है। मतलब है कि अल्लाह की न कोई इब्तिदा है और न इंतहा। वह अज़ल से था, अबद तक रहेगा। उसके बाद और उससे पहले कोई नहीं है। जब कुछ भी नहीं था वह था। और जब कुछ भी नहीं होगा तब भी वह रहेगा। क़ुरान शरीफ़ बयान करता है,

> वही है सबसे पहला और सबसे पिछला, और बाहर और अंदर। और वह सब कुछ जानता है।
> (अल-जदीद 57:3)

अबदी ख़ुदा वक़्त, ख़ला, मक़ाम या हालात से महदूद नहीं है। चूँकि वह वक़्त के पार है इसलिए वह बुढ़ापे की तरफ़ नहीं जा सकता। अल्लाह अज़ली और अबदी है जबकि दीगर तमाम अशया का ख़ातमा होगा। अल्लाह ही हमेशा तक क़ायम रहेगा। क़ुरान शरीफ़ तालीम देता है,

> जो कोई है ज़मीन पर फ़ना होनेवाला है। और बाक़ी रहेगा मुँह तेरे रब का बुज़ुर्गी और अज़मतवाला।
> (अल-रहमान 55:26-27)

यह तालीम इनसान को याद दिलाती है कि हम दुनिया में मेहमान ही हैं। अल्लाह ही अबद तक क़ायम रहनेवाला है। दीगर तमाम मख़लूक़ आने-जानेवाली है।

इनसान के अज़ीमुश-शान ईजादात जैसे ख़लाई जहाज़ और फ़लकबोस इमारतें, यह सब अल्लाह की नज़र में कुछ नहीं है। तमाम अज़ीम सलतनतें और इनसान के तमाम काम सब फ़ना हो जाएँगे। क़ुदरत के तमाम अजूबे जैसे बड़े बड़े पहाड़, वादियाँ, समुंदर, तारे, सैयारे, चाँद और सूरज सब यकसाँ तौर से अल्लाह के मुक़र्ररा वक़्त

पर तबाहो-बरबाद हो जाएँगे। सिर्फ़ अल्लाह ही जो तमाम कायनात का अज़ीम मालिक और ख़ालिक़ है हमेशा तक रहेगा।

## ख़ुलासा

ग़रज़ क़ुरान शरीफ़ हमें सिखाता है कि अल्लाह वाहिद है। उसका न कोई बेटा और न कोई साथी है। कायनात और जो कुछ उसमें है उन सबका ख़ालिक़ और मालिक अल्लाह ही है। वह तरस खानेवाला और रहमदिल है, और वह तमाम मख़लूक़ात पर रहम करता है। वह आदिल है। वह सबको हिदायत देनेवाला और हर चीज़ का मुहाफ़िज़ है। वह अज़ली और अबदी है। वह आलिमे-कुल और साहबे-हिकमत है। वह मुहब्बत रखनेवाला, सब ज़रूरियात पूरी करनेवाला है। मख़लूक़ात पर उसका रहम बेहद है। वह पाक और मुक़द्दस है। वह गुनाह या बुराई नहीं कर सकता। वह आज़ाद और अपनी ज़ात में बेमिसाल है।

लोग अल्लाह के बारे में सारी बातें नहीं जान सकते हैं, क्योंकि वह बेमिसाल है। यहाँ तक कि उसके 99 नाम भी उसे मुकम्मल तौर पर बयान नहीं करते। फिर भी मुसलमान ग़ौरो-फ़िकर, मुराक़बे, कलिमे की दोहराई और अल्लाह की मरज़ी और अहकामात के ताबे रहने से उसका इक़रार कर सकता है।

# ईसाई का जवाब

अल्लाह का नाम इस्लाम से पहले मुस्तामल था, और ख़ासकर अरब ममालिक में दौरे-इस्लाम से पहले ही आज तक बेशुमार ईसाई यही नाम इस्तेमाल करते आए हैं। ग़रज़, ईसाई और मुसलमान दोनों एक ही ख़ुदा की इबादत करते हैं। दोनों ही का अक़ीदा है कि एक हक़ीक़ी ख़ुदा है जो आदिल है और माफ़ौक़ुल-फ़ितरत है। वही आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ो-मालिक है। ईसाई की हैसियत से मैं भी अल्लाह तआला के तमाम 99 नामों को तसलीम करता हूँ। नाम "अल्लाह" ईसाइयों से भी इस्तेमाल होता है। नबी हज़रत इब्राहीम (अलैहिस-सलाम) अल्लाह को "एल" या "इलोहीम" से जानते थे जो कि इबरानी तर्ज़ का अरबी नाम अल्लाह है। क्या अजब कि क़ुरान शरीफ़ इस बात की तसदीक़ करता है कि ईसाई मुसलमानों के सबसे ज़्यादा क़रीब हैं। मुसलमान इस पर ज़ोर देते हैं कि अल्लाह माफ़ौक़ुल-फ़ितरत और क़ादिरे-मुतलक़ है। यह एक बात है जो ईसाइयों को भी नहीं भूलना चाहिए।

गो मुसलमान और ईसाई दोनों अल्लाह पर ईमान रखते हैं तो भी फ़रक़ साफ़ नज़र आता है। क़ुरान शरीफ़ अल्लाह के अहकाम और उसके नामों पर ज़ोर देता है जबकि किताबे-मुक़द्दस इस पर ज़ोर देती है कि अल्लाह ने अपने आपको इनसान पर ज़ाहिर किया है।

किताबे-मुक़द्दस यह फ़रमाती है कि अल्लाह ने अपनी मरज़ी से ख़ुद अपने आपको इनसान पर ज़ाहिर किया है। यह ख़ुदा जो इनसान से

रिश्ता क़ायम करता है यहविह कहलाता है, इनसान से अहद बाँधनेवाला ख़ुदा जिसका नाम “मैं हूँ” है। वह हर वक़्त हर इनसान को बुलाता है ताकि उससे अहद बाँधे। यह ख़ुदा न सिर्फ़ अपनी मरज़ी, अहकाम और अपने नाम इनसान पर ज़ाहिर करता है बल्कि वह अपने आपको भी ज़ाहिर करता है।

किताबे-मुक़द्दस के मुताबिक़ यहविह ने अपने आपको ज़ाहिर करने से इनसान से अपनी कामिल मुहब्बत का इज़हार किया। किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है कि ख़ुदा ने दुख सहकर और कफ़्फ़ारा देकर अपने आपको पेश किया है। जब हम ग़म खाते हैं तो वह भी अपनी मुहब्बत के बाइस ग़मगीन होता है। जब हमें दुख है तो वह भी दुखी होता है। हाँ, हमारे गुनाहों को देखकर उसे दुख होता है। वह हमसे पूरी तरह से मुहब्बत रखता है।

ईसाई समझते हैं कि अल्लाह अहद के ज़रीए हमारे साथ रिश्ता बाँधना चाहता है और इसके लिए हमें दावत देता है। ख़ुदा हमको दावत देता है कि मुझे जानो और मेरे साथ रिफ़ाक़त रखो, वही ख़ुदा जिसके 99 नाम मुसलमान ताज़ीमन दोहराते हैं।

# तख़लीक़

## मुसलमान का अक़ीदा

> बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने पैदा किए आसमान और ज़मीन छः दिन में। (अल-आराफ़ 7:54)[1]

क़ुरान शरीफ़ और अहादीस ज़ाहिर करती हैं कि मुसलमान को किस तरह तख़लीक़ के अजीब कामों की हम्दो-सताइश करनी है।

हम पहले ही कह चुके हैं कि अल्लाह तमाम कायनात का ख़ालिक़ है। लेकिन इनसान और क़ुदरत का ख़ालिक़ से क्या ताल्लुक़ है?

ज़मीन और कायनात अल्लाह के ज़रीए क़दम बक़दम और सिलसिलावार ख़लक़ की गई हैं। क़ुरान शरीफ़ कायनात की तख़लीक़ को यों बयान करती है,

---

1 क़ुरान शरीफ़ के मुसलिम मुफ़स्सिरीन समझते हैं कि छः दिन का मजाज़ी मतलब है। अल्लाह की नज़र में एक दिन 1,000 साल से लेकर 50,000 साल तक हो सकता है (देखिए अल-मआरिज 70:40)। पैदाइश के यह दिन दरअसल छः बहुत लंबे अरसे हैं।

> और क्या नहीं देखा इन मुनकिरों ने कि आसमान और ज़मीन मुँह-बंद थे। फिर हमने उनको खोल दिया और बनाई हमने पानी से हर एक चीज़ जिसमें जान है। फिर क्या यक़ीन नहीं करते? और रख दिए हमने ज़मीन में भारी बोझ कभी उनको लेकर झुक पड़े। और रखीं उसमें कुशादा राहें ताकि वह राह पाएँ। और बनाया हमने आसमान को छत महफ़ूज़ और वह आसमान की निशानियों को ध्यान में नहीं लाते। और वही है जिसने बनाए रात और दिन और सूरज और चाँद सब अपने अपने घर में फिरते हैं। (अल-अंबिया 21:30-33)

क़ुरान शरीफ़ की यह आयतें तरतीबशुदा दुनिया की नशो-नुमा की तरफ़ इशारा करती हैं। क़ुरान शरीफ़ आगे बयान करता है कि अल्लाह ने आसमानो-ज़मीन और उसके दरमियान जो भी कुछ है उन्हें छः मियाद में किसी थकावट के बग़ैर बनाया (क़ 50:38)। सो अल्लाह ने कायनात और ज़मीन को तरतीबवार क़दम बक़दम बनाया।

हम यह भी सीखते हैं कि तमाम ज़िंदगी पानी में शुरू हुई। जदीद सायंस इस बात की तसदीक़ करता है। इसके अलावा क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है कि अल्लाह तआला ने ज़मीन को तरतीब दी,

> और अंधेरी की रात उसकी और खोल निकाली उसकी धूप। और ज़मीन को उसके पीछे साफ़ बिछा दिया।

> बाहर निकाला ज़मीन से उसका पानी और चारा। और पहाड़ों को क़ायम कर दिया। काम चलाने को तुम्हारे और तुम्हारे चौपाइयों के। (अन-नाज़ेआत 79:29-33)

अल्लाह न सिर्फ़ तमाम कायनात का ख़ालिक़ है बल्कि उसने उसको तरतीब और क़ाबिले-समझ तरीक़े से ख़लक़ किया। ग़ालिबन इनसान को आख़िर में ख़लक़ किया गया। अल्लाह ने आसमान की चीज़ें,[1] आसमानो-ज़मीन के बीच की चीज़ें और ज़मीन के अंदर की चीज़ें बनाईं।

> उसी का है जो कुछ है आसमान और ज़मीन में और उन दोनों के दरमियान और नीचे गीली ज़मीन के। (ताहा 20:6)

ग़रज़ क़ुरान में तख़लीक़ इस तरह पेश की गई है : पहले, तख़लीक़ छः मियाद में हुई। दूसरे, आसमान और ज़मीन के ख़लक़ होने में कुछ मरहले थे। तीसरे, कायनात शुरू में एक ही ठोस टुकड़ा था जिसको अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से टुकड़ा टुकड़ा कर दिया। चौथे, ज़मीन और सात आसमान हैं। पाँचवें, आसमानों और ज़मीन के दरमियान सैयारे और अजरामे-फ़लकी पाए जाते हैं। छटे, अल्लाह अकेला ही क़ुदरत और कायनात का ख़ालिक़ है और यह दो ख़ुदा नहीं हो सकते और

1 मुसलमान ईमान रखते हैं कि अल्लाह ने सात आसमान बनाए। “अल्लाह वही है जिसने बनाए सात आसमान और ज़मीन भी उतनी ही।” (अत-तलाक़ 65:12)

न ही यह दो क़ाबिले-परस्तिश हैं। क्योंकि अल्लाह ही ख़ालिक़ और मख़लूक़ पर क़ादिर है। सातवें, अल्लाह ने हर चीज़ को तरतीब और क़ाबिले-समझ तरीक़े से ख़लक़ किया।

## इनसान ख़लीफ़ा है

इनसान का तख़लीक़ में कौन-सा किरदार है? इनसान तख़लीक़ का हिस्सा है, और ग़ालिबन उसे सबसे आख़िर में बनाया गया। इनसान को ख़ुदा ने मुंफ़रिद तरीक़े से बनाया। उसने उन्हें सीखने, बोलने और समझने की लियाक़त बख़्शी, नीज़ यह कि वह सही और ग़लत, नेकी और बदी में इम्तियाज़ कर सकें। तमाम मख़लूक़ात में से वह अकेले ही इन ख़ासियतों के मालिक हैं, इसलिए उनका ख़ास ओहदा भी है।

पहला इनसान आदम (अलैहिस-सलाम) था। आदम को ज़मीन पर अल्लाह का ख़लीफ़ा यानी नायब पैदा किया गया। क़ुरान शरीफ़ के मुताबिक़ अल्लाह ने फ़रिश्तों से फ़रमाया,

> और जब कहा तेरे रब ने फ़रिश्तों को कि मैं बनानेवाला हूँ ज़मीन में एक नायब, कहा फ़रिश्तों ने, क्या क़ायम करता है तू ज़मीन में उसको जो फ़साद करे उसमें और ख़ून बहाए। और हम पढ़ते रहते हैं तेरी ख़ूबियाँ और याद करते हैं तेरी पाक ज़ात को। फ़रमाया, बेशक

> मुझको मालूम है जो तुम नहीं जानते।
> (अल-बक़रा 2:30)

इसके बाद अल्लाह ने आदम (अलैहिस-सलाम) को मिट्टी से बनाकर उसे तमाम चीज़ों के नाम और ख़ुसूसियात सिखाईं। फिर अल्लाह ने यह चीज़ें फ़रिश्तों को पेश करके उनसे फ़रमाया,

> बताओ मुझको नाम इनके अगर तुम सच्चे हो।
> (अल-बक़रा 2:31)

गो अल्लाह ने आदम (अलैहिस-सलाम) को तमाम चीज़ों के नाम फ़रिश्तों के सामने ही सिखाए थे तो भी वह एक भी न बता सके। तब उन्होंने कहा,

> पाक है तू। हमको मालूम नहीं मगर जितना तूने हमको सिखाया। बेशक तू ही है असल जाननेवाला, हिकमतवाला। (अल-बक़रा 2:32)

तब अल्लाह ने हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) को कहा कि वह फ़रिश्तों को तमाम नाम बताएँ। आदम (अलैहिस-सलाम) ने वह सारे नाम बताए तो फ़रिश्ते दंग रह गए। यों अल्लाह ने एलान किया कि ज़मीन पर मेरे ख़लीफ़े का इल्म फ़रिश्तों के इल्म से आला है। तब अल्लाह ने तमाम फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि वह आदम (अलैहिस-सलाम) के सामने सिजदा

करें। तमाम फ़रिश्ते मान गए सिवाए इबलीस के। उसने घमंड से सिजदा करने से इनकार किया (देखिए अल-बक़रा 2:34)।

इस दौरान अल्लाह ने हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) के लिए एक साथी बनाया जिसका नाम हव्वा (अलैहिस-सलाम) था। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और हमने कहा, ऐ आदम रहा कर तू और तेरी औरत जन्नत में और खाओ उसमें जो चाहो जहाँ कहीं से चाहो और पास मत जाना इस दरख़्त के। फिर तुम हो जाओगे ज़ालिम। (अल-बक़रा 2:35)

हमने ग़ौर किया है कि अल्लाह तआला ने इनसान को एक ख़ास तरीक़े से बनाया और उन्हें एक ख़ास दर्जा अता किया। हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) को अल्लाह का ख़लीफ़ा होना था। फिर अल्लाह ने उनको तमाम मख़लूक़ात के नाम सिखाए। फिर अल्लाह ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि वह आदम (अलैहिस-सलाम) के सामने सिजदा करें। इबलीस[1] के सिवा सब मान गए। इन सब बातों का क्या मतलब है? इसका मतलब है कि अल्लाह ने इनसान को इस क़ाबिल बनाया कि वह इन सब पर अपना इख़्तियार रखे। क्योंकि किसी चीज़ का नाम जानने का मतलब है कि उस पर मुख़तार होना। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

---

1 मुसलमान तालीम के मुताबिक़ इबलीस फ़रिश्ता नहीं था बल्कि वह एक जिन्न बल्कि जिन्नों का सरदार था जिसने अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी की।

> बेशक ज़मीन है अल्लाह की। उसका वारिस कर दे जिसको वह चाहे अपने बंदों में। (अल-आराफ़ 7:128)

अल्लाह ने अपने ख़लीफ़े इनसान को अपने अनगिनत मख़लूक़ात पर इख़्तियार रखने की इज़्ज़त बख़्शी। इनसान को हुक्म दिया गया है कि वह क़ुदरत की तमाम अशया अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल करे (अल-अहज़ाब 33:72)। ख़लीफ़ा होने के नाते से इनसान को चुना गया है कि वह काश्तकारी करके इल्म और समझ के साथ ज़िंदगी का इज़ाफ़ा करे। क़ुदरत इनसान के ताबे है।

अल्लाह की नज़रों में इनसान आला ओहदा रखता है जिसकी वजह से वह तख़लीक़ पर इख़्तियार रखता है। सिर्फ़ इनसान को यह हक़ हासिल है कि वह इलाही अहकाम के ताबे रहकर अपनी भलाई के लिए क़ुदरत इस्तेमाल करे। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> अल्लाह वह है जिसने बस में कर दिया तुम्हारे दरिया को कि चलें उसमें जहाज़ उसके हुक्म से। ... और काम में लगा दिया तुम्हारे जो कुछ है आसमानों में और ज़मीन में सबको अपनी तरफ़ से। (अल-जासिया 45:12-13)

यहाँ दरिया का ज़िक्र किया गया है, मगर यह अल्लाह तआला की इनसान के लिए फ़िकर की सिर्फ़ एक मिसाल है। जब लोग क़ुदरत को अपने मातहत करते हैं तो उनको याद रखना चाहिए कि यह सब कुछ

अल्लाह की तरफ़ से है। वह ज़मीन पर सिर्फ़ अल्लाह का ख़लीफ़ा हैं। लाज़िम है कि वह क़ुदरत को ज़िम्मेदारी से इस्तेमाल करें।

## क़ुदरत के हुक़ूक़

गो इनसानों का आला ओहदा उन्हें अल्लाह की तख़लीक़ पर इख़्तियार देता है, तो भी वह कभी कभी अपनी हदें पार कर लेते हैं। इस्लाम तालीम देता है कि दीगर मख़लूक़ात के भी हुक़ूक़ होते हैं। इनको तोड़ना मना है। इनसान को क़ुदरत को ग़लत तरीक़े से इस्तेमाल करने की इजाज़त नहीं है। क़ुदरत का बुनियादी हक़ यह है कि न उसे बेमक़सद बरबाद किया जाए, न उसे ज़रर पहुँचाया जाए। मिसाल के तौर पर इस्लाम दरख़्तों और झाड़ियों के बेफ़ायदा काटे जाने को नामंज़ूर करता है। वह जंगल के फल और दीगर चीज़ें इस्तेमाल कर सकता है। वह चरागाहों को चौपाइयों के लिए इस्तेमाल कर सकता है। मगर उसे यह चीज़ें बिलावजह बरबाद करने का हक़ नहीं। आख़िर पेड़ों और नबातात में जान होती है।

> और उतारा हमने आसमान से पानी बरकत का फिर उगाए हमने उससे बाग़ और अनाज जिसका खेत काटा जाता है। ... रोज़ी देने को बंदों के। (क़ाफ़ 50:9-11)

ख़लीफ़े को ज़मीन के ऊपर दीगर सैयारों की खोजबीन करने की भी इजाज़त है। मगर उसे कोई हक़ नहीं कि उन्हें बरबाद करे। इस्लाम

में बेजान चीज़ों को ज़ाया करने की भी मनाही है। यहाँ तक कि पानी को ज़ाया नहीं करना चाहिए। नमाज़ के वक़्त सिर्फ़ उतना ही पानी इस्तेमाल करना है जितना वुज़ू या ग़ुस्ल के लिए ज़रूरी है।

अल्लाह तआला इजाज़त नहीं देता कि इनसान ख़ुराक को ज़ाया करे। यह भी ग़लत है कि हद से ज़्यादा खाया जाए जबकि दूसरे भूके मरें। मुसलमान को इजाज़त दी गई है कि वह जानवरों को खाने के लिए ज़बह करे। मगर किसी जानवर को तमाशा, खेल-कूद या मशग़ले के लिए हलाक करने की मनाही है। और जब किसी जानवर को ज़बह किया जाए तो इस तरह ज़बह करना है कि उसे कम तकलीफ़ हो। जानवर को ज़बह करने से पहले ज़िंदगी देनेवाले का नाम ज़रूर ज़बान पर लाना चाहिए यह याद दिलाने के लिए कि उसे ला-परवाई से नहीं बल्कि सिर्फ़ खाने के लिए ज़बह किया गया है।

शिकार करना जायज़ है अगर खाने के लिए किया जाए। मूज़ी जानवर को हलाक किया जा सकता है, क्योंकि इनसान की ज़िंदगी मूज़ी जानवर से ज़्यादा क़ीमती है। मगर उनको भी यों हलाक किया जाए कि तकलीफ़ कम हो। पालतू जानवरों के साथ नरमी से सुलूक किया जाना चाहिए। परिंदों को सिर्फ़ इस सूरत में पिंजरों में बंद रखा जाए कि इसकी ख़ास वजह हो।

## ख़ुलासा

हमने देखा है कि हमारे ख़ालिक़ ने इनसान को सिखाया है कि क़ुदरत से फ़ायदा उठाए। मगर लाज़िम है कि वह क़ुदरत को ज़ाया करने और बरबाद करने से परहेज़ करे। मेहरबान ख़ुदा ने क़ुदरत को इनसान की ग़िज़ा के लिए मुहैया किया है। उसे हुक्म दिया गया है कि वह क़ुदरत के ज़राए से फ़ायदा उठाए। इनसान का मरकज़ी किरदार यह होना चाहिए कि वह अल्लाह के ताबे रहते हुए नायब की हैसियत से तरक़्क़ी करे।

## ईसाई का जवाब

इस्लाम और ईसाई दीन दोनों तसलीम करते हैं कि क़ुदरत अल्लाह की उम्दा तख़लीक़ है। इनसान को अल्लाह से बताया गया है कि वह शुक्रगुज़ारी और ज़िम्मेदारी के साथ क़ुदरत से फ़ायदा उठाए। क़ुदरत की बरबादी और इस्तेह्साल ईसाइयों और मुसलमानों दोनों के नज़दीक मज़म्मत के लायक़ है। ईसाई और मुसलमान दोनों तसलीम करते हैं कि क़ुदरत अल्लाह की अच्छी और उम्दा तख़लीक़ है। लाज़िम है कि हम क़ुदरत को ज़िम्मेदारी के साथ इस्तेमाल करने में अल्लाह पर इंहिसार करें। इसमें हमारा पूरा इत्तफ़ाक़ है।

ताहम क़ुदरत के बारे में तालीम में मुसलमान और ईसाई के बीच कुछ फ़रक़ भी नज़र आता है। मिसाल के तौर पर इस्लाम में हम सीखते हैं कि अल्लाह ने तमाम चीज़ों के नाम इनसान को सिखाए। मगर तौरेत में हम पढ़ते हैं कि अल्लाह ने इनसान को जानवरों और परिंदों के नाम रखने

का हुक्म दिया। इस्लाम में आदम (अलैहिस-सलाम) ज़मीन पर अल्लाह का ख़लीफ़ा है। तौरेत में इनसान को हुक्म दिया गया है कि वह दीगर मख़लूक़ात पर हुकूमत करे। क्या इसका मतलब है कि तौरेत शरीफ़ के हिसाब से लोगों को ज़्यादा आज़ादी, इख़्तियार और ज़िम्मेदारी दी गई है कि वह सब कुछ अपनी भलाई के लिए इस्तेमाल करे?

लेकिन साथ साथ किताबे-मुक़द्दस आगाह करती है कि इनसान का क़ुदरत के साथ रिश्ता उस वक़्त ज़्यादा ख़ुशकुन होगा जब उसका अल्लाह के साथ सही रिश्ता हो।

किताबे-मुक़द्दस का मक़सद है कि ज़िंदगी के मानी को ज़ाहिर करे; यह कोई सायंस की मालूमात की किताब नहीं बल्कि यह बताती है कि ज़मीन अल्लाह की तरतीब की गई अच्छी तख़लीक़ है। वह इससे आगे नहीं जाती। यह इनसान की अपनी ज़िम्मेदारी है कि समझे कि किस तरह अल्लाह ने ज़मीन को एक साथ मिलाया और क़ुदरत के पोशीदा उसूलों की छानबीन करे। किताबे-मुक़द्दस में हम पढ़ते हैं कि अल्लाह ने इनसान को हुक्म दिया है कि वह ज़मीन को मातहत करे, उसे भर दे, उसकी खेतीबाड़ी करे, उस पर हुकूमत करे और उसकी फ़िकर करे।

बिसमिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

# हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम)

## मुसलमान का अक़ीदा

> फिर जब ठीक करूँ उसको और फूँक दूँ उसमें अपनी जान से तो गिर पड़ियो उसके आगे सिजदा करते हुए। (अल-हिज्र 15:29)

क़ुरान शरीफ़ की एक और आयत फ़रमाती है,

> कहा तेरे रब ने फ़रिश्तों को कि मैं बनानेवाला हूँ ज़मीन में एक नायब। (अल-बक़रा 2:30)

इसका क्या मतलब है कि हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) अल्लाह के नायब हैं जिनको अल्लाह की जान हासिल हुई है? हाल के कुछ मुसलिम उलमा समझते हैं कि इनसान एक हद तक अल्लाह की मानिंद है। मगर मुरव्वजा तालीम यह है कि इनसान किसी भी तरह अल्लाह की मानिंद नहीं है। बेशक अल्लाह की जान उसमें फूँकी गई। लेकिन

इसका मतलब सिर्फ़ यह है कि उसे अल्लाह की तरह इल्म और इरादा रखने की सलाहियत दी गई है जिससे इनसान तमाम मख़लूक़ात पर सबक़त रखता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि अल्लाह इनसान की मानिंद है, क्योंकि वह तो पूरी तरह से माफ़ौक़ुल-फ़ितरत है।

ताहम इनसान इज़्ज़त के लायक़ है, क्योंकि उसके अंदर अल्लाह की जान फूँकी गई है, और उसे हुक्म दिया गया है कि वह ज़मीन पर अल्लाह का ख़लीफ़ा बना रहे। इनसान इसलिए ख़लीफ़े के ओहदे का हक़दार है क्योंकि वह अकेला ही ज़ी-अक़्ल, रूहानी और इरादा रखनेवाला है। कायनात के ख़ालिक़ो-मालिक ने ज़मीन को बनाकर इनसान को उसकी हिफ़ाज़त करने की ज़िम्मेदारी दी है। उसने उसको एक महदूद खुदमुख़तारी अता करके ज़मीन पर ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया और उसको हिदायत दी कि वह उसके अहकाम के ताबे रहकर ज़िंदगी बसर करे।

चूँकि अल्लाह ने इनसान में अपनी जान फूँकी इसलिए उसके अंदर कोई चीज़ है जो ख़ास है। यह चीज़ क्या थी?

- सही और ग़लत, भले और बुरे, हक़ीक़त और वहम में इम्तियाज़ करने की सलाहियत।
- भले या बुरे, सच या झूट, अच्छाई या बुराई को चुनने की आज़ाद मरज़ी।
- अपने इर्दगिर्द की चीज़ों को इस्तेमाल करने का इख़्तियार।

- बोलने की सलाहियत जिससे वह अपने ख़ालिक़ की इबादत का इज़हार कर सकता है।

अल्लाह ने यह चार नेमतें इनसान को दी हैं। अगर इनको सही तौर से काम में लाया जाए तो वह इनसान को अल्लाह की मरज़ी के ताबे रहने के क़ाबिल बना देती हैं। जब अल्लाह ने इनसान को बनाया तो उसने उसे हुक्म दिया कि सिर्फ़ उसकी इबादत करे। उसने इनसान को ज़मीन पर एक मुक़र्ररा वक़्त के लिए रखा है ताकि उसे जाँच ले कि वह किस तरह यह रूहानी नेमतें इस्तेमाल करेगा। अल्लाह ने इनसान को पैदा किया कि सिर्फ़ उसकी इबादत करे। वह किसी भी तरह से उसका शरीक या हरीफ़ नहीं हो सकता। इनसान की यह रूहानी नेमतें उसकी महदूद फ़ितरत के मुताबिक़ दी गई हैं।

जितना अच्छा और भला इनसान क्यों न हो वह कभी भी अपने ख़ालिक़ जैसा भला और कामिल नहीं हो सकता। तारीख़ गवाह है कि इनसान ग़ाफ़िल, बेपरवा, ला-परवा और भुलक्कड़ है। वह अच्छा मगर नाक़िस है। नाक़िस होने के नाते से उसको लगातार याददिहानी की ज़रूरत है। इसी लिए अल्लाह ने नबियों और पैग़ंबरों को भेजा कि कामिलियत को हासिल करने में उसकी मदद करे। नबियों के ज़रीए अल्लाह ने लगातार इनसान को अपने अहकाम की याद दिलाई।

# पहले मुसलमान

यह मुसलमान का ईमान है कि हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) न सिर्फ़ पहले ख़लीफ़ा और पहले इनसान थे बल्कि कि वह पहले नबी भी थे। नबुव्वत पहले इनसान से शुरू होती है। पहले इनसान को शरीअत दी गई ताकि वह उसकी पैरवी करके उसे आनेवाली नसलों को पेश करे। यह शरीअत उस ज़माने से लेकर आज तक इस्लाम कहलाता है यानी अल्लाह के ताबे रहना।

मुसलमान का ईमान है कि यह पहला दौर गुनाह और बग़ावत से शुरू नहीं हुआ। बेशक हज़रत आदम और हज़रत हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को इबलीस की आज़माइश के बाइस बाग़ से निकालकर नीचे ज़मीन पर भेजा गया।[1] लेकिन उन्होंने अपने गुनाह को तसलीम करके तौबा की। तब उन्हें अल्लाह से मग़फ़िरत हासिल हुई। उन्हें ज़रूरी हिदायत दी गई। हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) अल्लाह तआला के एक सच्चे नबी थे। और हज़रत आदम और हज़रत हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) दोनों पहले सच्चे मुसलमान थे। क़ुरान शरीफ़ यह बात साफ़ फ़रमाता है,

> बोले वह दोनों, ऐ रब हमारे ज़ुल्म किया हमने अपनी जान पर। और अगर तू हमको न बख़्शे और हम पर रहम न करे तो हम ज़रूर हो जाएँगे तबाह।
> (अल-आराफ़ 7:23)

1 इबलीस को भी जन्नत से निकाला गया था।

रहीमो-करीम ख़ुदा ने उनको बख़्श दिया और उन्हें ज़मीन पर यह कहकर भेज दिया,

> तुम सब उतरो। तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे, और तुम्हारे वास्ते ज़मीन में ठिकाना है और नफ़ा उठाना है एक वक़्त तक। (अल-बक़रा 2:36)

लेकिन इनसान को इसलिए ज़मीन पर नहीं रखा गया कि उसे सज़ा दी जाए बल्कि इसलिए कि उसे जाँचकर देखा जाए कि क्या वह अल्लाह तआला के अहकाम की ताबेदारी करेगा कि नहीं। अल्लाह तआला ने उन्हें यक़ीनन बख़्श दिया। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> फिर सीख लीं आदम ने अपने रब से चंद बातें, फिर मुतवज्जिह हो गया अल्लाह उस पर। बेशक वही है तौबा क़बूल करनेवाला मेहरबान। (अल-बक़रा 2:37)

अल्लाह हर तरह से मुहब्बत और रहम करनेवाला है। इसलिए उसने इनसान के ख़ताओं के बावुजूद उसे हिदायत देने का यक़ीन दिलाया। उसने फ़रमाया,

> हमने हुक्म दिया, नीचे जाओ यहाँ से तुम सब। फिर अगर तुमको पहुँचे मेरी तरफ़ से कोई हिदायत तो जो चला मेरी हिदायत पर न ख़ौफ़ होगा उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (अल-बक़रा 2:38)

ग़रज़ पहले इनसान को इल्हाम और हिदायत बख़्शी गई जिससे तमाम लोग फ़ैज़याब हो जाएँ। अल्लाह इनसान को यक़ीन दिलाता है कि जो भी इस हिदायत की पैरवी करे वह हाल और मुस्तक़बिल के ख़ौफ़ से आज़ाद रहेगा, और उसे माज़ी के बारे में दुख नहीं होगा।

अकसर मुसलमान समझते हैं कि हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को इस आसमानी बाग़ में रखा गया ताकि जाँचा जाए कि उनका रुझान किस तरफ़ है। तब ही उन्हें ज़मीन पर भेजकर ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया गया।[1] यह बाग़ उन्हें जाँचने का सबसे ज़्यादा मौज़ूँ मक़ाम था, क्योंकि यह असल में जन्नत था। इनसान को बताया गया था कि फ़िरदौस रहने की सबसे मौज़ूँ जगह है, पर अगर वह इबलीस के आज़माइश तले दब जाए तो वह फ़िरदौस में ठहर नहीं सकता। फ़िरदौस को फिर से हासिल करने का एक ही रास्ता है। यह कि वह मज़बूती से क़ायम रहकर इबलीस का मुक़ाबला करे और अल्लाह की शरीअत पूरी करे। आदम (अलैहिस-सलाम) को सच्ची हिदायत मिली ताकि वह अपने ख़ानदान और नसल समेत फ़रमाँबरदार मुसलमान बने और अल्लाह तआला की मरज़ी पूरी करे। तब ही उन्हें बाग़ दुबारा हासिल होगा।

हज़रत हव्वा और हज़रत आदम (अलैहुमा अस-सलाम) दोनों को आज़माया गया, लिहाज़ा दोनों ही बराबर ज़िम्मेदार ठहरे। दोनों आज़माए गए, दोनों ने तौबा की, दोनों को मेहरबान ख़ुदा से बरकत मिलकर बख़्शा गया।

1 A. Maududi, *The Meaning of the Qur‘an*, Vol. (Lahore: 1971), pp 58-59.

वह दोनों सच्चे मुसलमान थे। वह दोनों ही ज़मीन पर अल्लाह तआला के ख़लीफ़े थे। कोई भी मुसलमान, औरत को पहली ख़ता के लिए क़ुसूरवार न ठहराए। इस्लाम में न औरत आदमी से कमतर है और न ही आदमी औरत से बल्कि वह दोनों यकसाँ दर्जा रखते हैं।

## इनसान नाक़िस है

तमाम लोग पैदा होते वक़्त सच्चे मुसलमान होते हैं। उस वक़्त सब बेगुनाह, पाक और आज़ाद होते हैं (अर-रूम 30:30)। इस्लाम के मुताबिक़ इनसान की मरज़ी एक ही गुनाह के बाइस नहीं बिगड़ी। इस्लाम की तालीम मौरूसी गुनाह नहीं मानती। गो इनसान से ग़लतियाँ होती रहती हैं यह कोई गुनाह नहीं है। एक महदूद मख़लूक़ होने के नाते से उसका नाक़िस होना ज़रूरी है। इसके बरअक्स गुनाह उस वक़्त हो जाता है जब इनसान को कामिल बनने का ज़रीअ है लेकिन वह यह ज़रीअ नहीं अपनाता। बचपन में इनसान से जो गुनाह हो जाते हैं उसके लिए वह ज़िम्मेदार नहीं है। वह तब ही ज़िम्मेदार होता है जब उसे बालिग़ होकर अल्लाह से सही और ग़लत में इम्तियाज़ करने की सलाहियत दी जाती है। वह सिर्फ़ उसी वक़्त अपने ख़ालिक़ के सामने ज़िम्मेदार ठहरता है। फिर भी चूँकि इनसान अच्छा ही पैदा होता है इसलिए उसके गुनाह मजमुई तौर पर बैरूनी असरात और माहौल का नतीजा हैं।

इस्लाम इनसान को अच्छा और ज़िम्मेदार क़रार देता है। जिससे गुनाह सरज़द हुए हैं वही ज़िम्मेदार ठहरता है। इस्लाम के मुताबिक़

गुनाह मौरूसी नहीं है क्योंकि इनसान गुनाहगार पैदा नहीं होता। इसी तरह गुनाह न तो किसी क़ौम की ख़ुसूसियत है, न ही एक से दूसरे में मुंतक़िल हो जाता है। अल्लाह ने इनसान को आज़ाद मरज़ी अता की है और इसलिए इनसान अपने आमाल का ख़ुद ज़िम्मेदार है, चाहे वह भले हों या बुरे, सही हों या ग़लत। एक इनसान अपनी आज़ादी ग़लत इस्तेमाल करके गुनाह के शिकंजे में आ सकता है। मगर साथ साथ उसे तौबा करने की क़ाबिलियत है। अगर वह ऐसा करके अल्लाह की हिदायत के ताबे हो जाए तो उसे बख़्श दिया जा सकता है। इनसान गुनाह करने के क़ाबिल है, लेकिन गुनाह उसकी फ़ितरत में शामिल नहीं है। इसलिए इनसान अगर अपनी ख़ास सलाहियतें काम में लाए तो वह आसानी से गुनाह से परहेज़ कर सकता है। गुनाह नागुज़ीर नहीं है, क्योंकि इनसान फ़ितरी तौर पर गुनाहगार नहीं है।

## ख़ुलासा

इनसान एक इज़्ज़तदार मख़लूक़ है जिसके अंदर अल्लाह ने अपनी जान फूँकी है। इस जान का फूँके जाने का मतलब यह है कि वह अल्लाह की तरह इल्म और इरादा रखता है; इसका मतलब यह नहीं कि वह अल्लाह का हमशक्ल या उसके बराबर या उसका हरीफ़ो-रक़ीब है। जो रूहानी नेमतें इनसान को मिली हैं वह उसकी फ़ितरत के मुताबिक़ महदूद ही हैं। इनसान को ज़मीन पर ख़लीफ़ा भी बनाया गया है।

इस्लाम नहीं समझता कि इनसान फ़ितरी तौर पर गुनाहगार है। बल्कि इस्लाम सिखाता है कि इनसान कामिल नहीं है। सिर्फ़ अल्लाह ही कामिल है। मगर नाक़िस इनसान ग़ाफ़िल होकर भूल जाता है। इसी वजह से इनसान को नबियों और मुकाशफ़े के ज़रीए बार बार सही रास्ते की याद दिलानी पड़ती है।

## ईसाई का जवाब

इनसान क्या है? सवाल यही है। इनसान को अल्लाह की जान या रूह मिलने से क्या मतलब है? यक़ीनन इसका मतलब यह है कि इनसान आला मख़लूक़ है जिस तरह इस्लाम गवाही देता है। इंजील जलील फ़रमाती है,

> तूने उसे थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम कर दिया, तूने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहनाकर सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया। (इबरानियों 2:7-8)

इस्लाम यह तालीम देता है कि इनसान को अल्लाह की जान मिली। इससे बढ़कर तौरेत शरीफ़ फ़रमाती है,

> रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी लेकर इनसान को तशकील दिया और उसके नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ। (पैदाइश 2:7)

साथ ही वह यह भी फ़रमाती है कि

> अल्लाह ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर। उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया। (पैदाइश 1:27)

जब फ़रमाया गया कि इनसान को अल्लाह की सूरत पर बनाया गया तो इसका मतलब यह नहीं कि देखने में अल्लाह उन जैसे है या देखने में लोग अल्लाह जैसे हैं। इसका मतलब यह है कि इनसान अल्लाह जैसी आला ख़ासियतें रखते हैं। अल्लाह की मुशाबहत का मतलब ख़ास तौर से यह है कि लोगों में अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त रखने की क़ाबिलियत या सलाहियत पाई जाती है। लोग अल्लाह को जान सकते हैं। वह अपने ख़ालिक़ के साथ अहद बाँधकर रिफ़ाक़त रखने के क़ाबिल हैं। और यह रिफ़ाक़त शख़्सी है। इसी में वह अल्लाह से मुशाबहत रखते हैं।

इस्लाम इस बात पर ज़ोर देता है कि इनसान ज़ी-अक़्ल है। ईसाई ईमान इस बात को ज़्यादा अहमियत देता है कि इनसान ख़ास तौर से अहद बाँधकर रिफ़ाक़त रखने के क़ाबिल है। इस्लाम के मुताबिक़ इनसान का ख़ास मक़सद यह है कि वह अल्लाह की मरज़ी के ताबे रहकर चले। इसके मुक़ाबले में ईसाई ईमान के मुताबिक़ इनसान का ख़ास मक़सद यह है कि वह अल्लाह और दूसरे इनसानों के साथ ख़ुशी मनाकर रिफ़ाक़त रखे।

किताबे-मुक़द्दस के मुताबिक़ लोग अल्लाह से दूर होने से बुरे और गुनाहगार हो जाते हैं। ईसाई का ईमान यह है कि अल्लाह की जिस सूरत पर उसे बनाया गया है वह उस वक़्त बिगड़ जाती है जब वह अल्लाह के साथ सही रिश्ता नहीं रखता। किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है,

> सबने गुनाह किया, सब अल्लाह के उस जलाल से महरूम हैं जिसका वह तक़ाज़ा करता है। (रोमियों 3:23)

## मुसलमान की विज़ाहत

अल्लाह की जो जान हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) को मिली उसके बारे में मुसलमान और ईसाई मुख़्तलिफ़ सोच रखते हैं। मुसलमान का ईमान यह है कि जो जान अल्लाह ने इनसान में फूँक दी उससे उसे दीगर मख़लूक़ात से बढ़कर फ़हम, मरज़ी, इख़्तियार और बोलने की क़ाबिलियत मिली।

# इबलीस और बुराई

## बुराई का सरचश्मा

मुसलमान का ईमान है कि इबलीस हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) की पैदाइश से पहले ही बुराई का सरचश्मा और मरकज़ रहा है। इबलीस ने पहले ही अल्लाह की ना-फ़रमानी की। उसने इनसान की पैदाइश से बहुत पहले अल्लाह से बग़ावत की। इसके बारे में क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और जब कहा तेरे रब ने फ़रिश्तों को मैं बनाऊँगा एक बशर खनखनाते सुने हुए गारे से। फिर जब ठीक करूँ उसको और फूँक दूँ उसमें अपनी जान से तो गिर पड़ियो उसके आगे सिजदा करते हुए। तब सिजदा किया इन फ़रिश्तों ने सबने मिलकर। मगर इबलीस ने न माना कि साथ हो सिजदा करनेवालों के।

> (अल-हिज्र 15:28-31; बमुक़ाबला अल-आराफ़ 7:11; अल-बक़रा 2:34)

इबलीस की यह ना-फ़रमानी इनसान के बीच बुराई का सरचश्मा थी। जब अल्लाह ने इबलीस से पूछा कि तूने सिजदा करने से क्यों इनकार किया तो उसने जवाब दिया,

> मैं वह नहीं कि सिजदा करूँ एक बशर को जिसको तूने बनाया खनखनाते सुने हुए गारे से। (अल-हिज्र 15:33)

उसने यह भी कहा कि मैं इनसान से कई गुना बेहतर हूँ, क्योंकि मुझे आग से (या नूर) से बनाया गया है जबकि इनसान को मिट्टी से बनाया गया है।

अल्लाह ने इनसान में अपनी जान फूँककर उसे ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया और तमाम चीज़ों के नाम सिखाए। जब फ़रिश्तों को हुक्म दिया गया कि आदम (अलैहिस-सलाम) के आगे गिरकर सिजदा करें तो इबलीस ने ग़ुरूर से इनकार किया। यों ईमान से दूर होने से इबलीस बुराई का सरचश्मा है।

इबलीस मग़रूर था। उसने कहा कि मैं नूर से बनाया गया हूँ और इसलिए इनसान से जो मिट्टी से बना है बेहतर हूँ। गो इनसान मिट्टी से ज़रूर बना था लेकिन इनसान को अशरफ़ुल-मख़लूक़ात पैदा किया गया था, और उसको अल्लाह की जान का कुछ हिस्सा हासिल हुआ था। साथ ही इनसान को अल्लाह का ख़लीफ़ा बनाया गया। उससे पहले

किसी भी मख़लूक़ को यह इज़्ज़त हासिल नहीं हुई थी, न आसमान में और न ज़मीन पर। यों घमंड, अनापरस्ती, हसद और बग़ावत जो बुराई के सरचश्मे हैं इबलीस की ख़ास मिलकियत हैं।

चूँकि इबलीस ने ग़ुरूर से इनसान के सामने सर झुकाने से इनकार करके उन फ़रिश्तों की बदज़बानी की जिन्होंने हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) के सामने सर झुकाया था इसलिए अल्लाह ने उसको मुस्तरद करके उस पर लानत भेजी। अल्लाह ने फ़रमाया,

> तू तो निकल यहाँ से तुझ पर मार है। और तुझ पर फटकार है उस दिन तक कि इनसाफ़ हो।
> (अल-हिज्र 15:33-34)

तब इबलीस ने अल्लाह तआला से एक आख़िरी दरख़ास्त करके कहा,

> ऐ रब, तू मुझको ढील दे उस दिन तक कि मुरदे ज़िंदा हों। (अल-हिज्र 15:36)

इबलीस की यह दरख़ास्त क़ियामत के दिन तक मंज़ूर की गई। फिर उस शरीर ने अल्लाह तआला पर अपना इरादा ज़ाहिर किया,

> ऐ रब, जैसा तूने मुझको राह से खो दिया मैं भी उन सबको बहारें दिखलाऊँगा ज़मीन में और राह से खो दूँगा उन सबको मगर [सिवाए उनके] जो तेरे चुने हुए बंदे हैं। (अल-हिज्र 15:39-40)

यों इबलीस ने अल्लाह को अपने बुरे चाल-चलन के लिए क़ुसूरवार ठहराया। अल्लाह ने जवाब में कहा,

> यह राह है मुझ तक सीधी। जो मेरे बंदे हैं तेरा उन पर कुछ ज़ोर नहीं मगर [सिवाए उसके] जो तेरी राह चला बहके हुओं में। और दोज़ख़ पर वादा है उन सबका। उसके सात दरवाज़े हैं। हर दरवाज़े के वास्ते उनमें से एक फ़िरक़ा है बाँटा हुआ। परहेज़गार हैं बाग़ों में और चश्मों में। कहेंगे उनको जाओ उनमें सलामती से ख़ातिरजमा से (बेखटके)। (अल-हिज्र 15:41-46)

इससे हम सीखते हैं कि इबलीस तख़लीक़ के शुरू से लेकर मौजूदा ज़माने तक इनसान का सबसे बड़ा दुश्मन रहा है (अल-आराफ़ 7:14-18)। उसने शरारत की सरगरमियाँ पहले इनसान पर चलाना शुरू कर दिया, और उसने यह काम तब ही से जारी रखा है।

जब अल्लाह इबलीस को लानत दे चुका तो उसने आदम (अलैहिस-सलाम) से कहा,

> और ऐ आदम, रह तू और तेरी औरत जन्नत में। फिर खाओ जहाँ से चाहो और पास न जाओ उस दरख़्त के। फिर तुम हो जाओगे गुनाहगार। (अल-आराफ़ 7:19)

उस वक़्त हमारे पहले माँ-बाप रूहानी और जिस्मानी तौर से बिलकुल ही मासूम थे। उन्हें मासूमियत और मुसर्रत के रूहानी बाग़ में रखा

गया था जो कि ज़मीन पर नहीं था बल्कि आसमान में। वह बुराई को नहीं जानते थे। फिर भी वह अल्लाह के ख़लीफ़े थे, जो इल्म, मरज़ी और इंतख़ाब करने की सलाहियत रखते थे। गो वह गुनाह करने की क़ाबिलियत रखते थे तो भी उन्हें बुराई को रद करने की ज़रूरत थी। अल्लाह तआला ने अपने ख़लीफ़े को जाँचने के लिए एक छोटी-सी बात मना की। इनसान को सिर्फ़ एक दरख़्त के नज़दीक जाने से मना किया गया। मगर दोनों शरारत के सरदार की आज़माइश का शिकार हुए। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> फिर बहकाया उनको शैतान ने ताकि खोल दे उन पर वह चीज़ कि उनकी नज़र से पोशीदा थी उनकी शर्मगाहों से। और वह बोला कि तुमको नहीं रोका तुम्हारे रब ने इस दरख़्त से मगर इसी लिए कि कभी तुम हो जाओ फ़रिश्ता या हो जाओ हमेशा रहनेवाले। और उनके आगे क़सम खाई कि मैं अलबत्ता तुम्हारा दोस्त हूँ।
> (अल-आराफ़ 7:20-21)

यों इबलीस धोका देकर हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को उस दरख़्त का फल खिलाने में कामयाब हुआ। तब उनको बाग़ से ज़मीन पर नुज़ूल कराया गया। इससे बढ़कर जब उन्होंने उस फल से खाया तो पहली बार उन्होंने अपना नंगापन देखकर शर्म महसूस की।

उन्होंने जल्दी से पत्तों से ख़ुद को ढाँका। तब अल्लाह ने उन्हें यह कहकर पुकारा,

> क्या मैंने मना न किया था तुमको इस दरख़्त से और न कह दिया था तुमको कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है? (अल-आराफ़ 7:22)

इस तरह से शरारत का सरदार उनको सिराते-मुस्तक़ीम से मुनहरिफ़ करके अल्लाह की मरज़ी से दूर ले जाने में कामयाब हुआ।

हमको इस बात पर ध्यान देने की ज़रूरत है कि हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने इबलीस के धोके और आज़माइश के बाइस ही ममनुआ फल से खाया। बेशक उन्होंने अल्लाह की ना-फ़रमानी की और उनसे गुनाह सरज़द हुआ। मगर उन्होंने यह कुछ जान-बूझकर नहीं किया। और जब अल्लाह ने उनको बुलाया तो उन्होंने अपने गुनाह को खुले तौर पर तसलीम किया। उन्होंने कहा,

> ऐ रब, हमारे ज़ुल्म किया हमने अपनी जान पर। और अगर तू हमको न बख़्शे और हम पर रहम न करे तो हम ज़रूर हो जाएँगे तबाह। (अल-आराफ़ 7:23)

हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने अल्लाह के हुज़ूर तौबा करके अपने गुनाह का एतराफ़ किया। वह शरमिंदा हुए। वह बाग़ की शादमानी की हालत से महरूम हो गए। इसलिए उन्होंने दुआ की कि

अल्लाह उन पर रहम करे। हम इससे यह नतीजा निकाल सकते हैं कि इनसान नाक़िस है चाहे वह आसमान पर भी हो। हम यह भी सीखते हैं कि इस जैसे संगीन गुनाह के बावुजूद इनसान रूहानी इसलाह के क़ाबिल है।

चूँकि इनसान अल्लाह का ख़लीफ़ा है इसलिए उसे इतना इल्म हासिल है कि वह अपने गुनाहों और कमज़ोरियों को पहचान सकता है। इससे बढ़कर इस इल्म की मदद से वह जान लेते हैं कि हिदायत कहाँ से हासिल हो सकता है। इस्लाम का ईमान है कि अल्लाह तआला अपने रहमो-फ़ज़ल से हमेशा तैयार रहता है कि उन तमाम लोगों के गुनाहों को बख़्श दे जो ख़ुलूसदिली से उसकी हिदायत की तलाश करके बेहतर बनने का इरादा रखते हैं। इस्लाम में सबसे संगीन गुनाह शिर्क यानी अल्लाह तआला के सिवा किसी दीगर माबूद को मानना है। इसके बावुजूद मुलहिद, कसरत-परस्त और हमाओस्ती को अल्लाह से बख़्शा जा सकता है अगर वह ख़ुलूसदिली से उसके अहकाम और मरज़ी के ताबे हो जाए।

जब हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने अल्लाह तआला के रहम और बख़्शिश माँगी तो वह नहीं जानते थे कि किस तरह अपने गुनाह का इक़रार करें। मगर अल्लाह तआला ने हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को दुआए-मग़फ़िरत सिखाकर उन्हें माफ़ किया,

> फिर सीख लीं आदम ने अपने रब से चंद बातें। फिर मुतवज्जिह हो गया अल्लाह उस पर। बेशक वही है तौबा क़बूल करनेवाला मेहरबान। (अल-बक़रा 2:37)

यों हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को माफ़ी मिली, और उनकी आनेवाली नसल इस असर से महफ़ूज़ रही। अल्लाह तआला ने न सिर्फ़ हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) की तौबा को क़बूल किया बल्कि उसने आगे बढ़कर उसको अपना पैग़ंबर मुक़र्रर किया ताकि वह इनसान की राहनुमाई करे।

अल्लाह तआला ने हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को बख़्श तो दिया था मगर इसके बावुजूद उसने उन्हें उस आसमानी बाग़ से ज़मीन पर नुज़ूल फ़रमा दिया। बाग़ से नुज़ूल किए जाने में इबलीस भी शामिल था जो इनसान का जानी दुश्मन था। यह बात सूराए-अल-आराफ़ (7:24) में ज़ाहिर की गई है जहाँ लिखा है, “तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे।” इसका मतलब यह है कि इबलीस और इनसान एक दूसरे के दुश्मन होंगे। इबलीस की पूरी कोशिश यह है कि इनसान को अल्लाह के रास्ते से हटाकर बुराई के रास्ते पर फेर दे। मगर इनसान को हुक्म दिया गया है कि वह इलाही हिदायत की मदद से इबलीस का मुक़ाबला करे। इस्लाम समझता है कि उसी को बुराई लग जाती है जो उसके सामने हार माने। मगर अल्लाह तआला के ईमानदार ख़ादिमों पर उसका कोई असर नहीं होता जब उन्हें बख़्शिश हासिल हुई है।

ग़रज़, इस्लाम में बुराई से परहेज़ किया जा सकता है अगर मुसलमान ख़ुलूसदिली से अल्लाह तआला की इबादत करे। जो अपना गुनाह तसलीम करे वह बख़्शे जाने के क़ाबिल है। इस्लाम में गुनाह मौरूसी नहीं है।

## ख़ुलासा

मुसलमान का ईमान यह है कि इबलीस ने इनसान की तख़लीक़ से पहले ही अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी की, इसलिए वह बुराई का सरचश्मा है। गो हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने गुनाह किया तो भी उन्होंने जान-बूझकर अपने ख़ालिक़ की ना-फ़रमानी न की। वह शरारत के सरदार, इबलीस के ज़रीए आज़माए गए। तब उन्होंने ख़ुलूसदिली से अल्लाह तआला के हुज़ूर तौबा की, और उसने उन्हें बख़्श दिया। इनसान हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) की ना-फ़रमानी की बदौलत गुनाह और बुराई में मुब्तला नहीं होते, क्योंकि गुनाह मौरूसी नहीं है। जब हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) ने तौबा की तो उनको ज़मीन पर पहला पैग़ंबर मुक़र्रर किया गया ताकि वह अपनी औलाद को हिदायत दें। अगर वह अच्छा न होते तो अल्लाह इतना बड़ा ओहदा क्यों उनके सुपुर्द करता?

## ईसाई का जवाब

ईसाई का ईमान यह है कि आज़ादी का ग़लत इस्तेमाल बुराई का सरचश्मा है। शैतान ने अपनी आज़ादी को ग़लत इस्तेमाल किया। उसने अल्लाह से बग़ावत की और नतीजतन निहायत ही शरीर हुआ। बेशुमार फ़रिश्ते उसके पीछे हो लिए। किताबे-मुक़द्दस के मुताबिक़ इबलीस ने इनसान को वरग़लाया। लेकिन गुनाह करना उनका अपना फ़ैसला था। यह हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) का अपना फ़ैसला था कि उन्होंने अल्लाह की ना-फ़रमानी की। उन्होंने उस ममनुआ फल को लेकर खाया। जब उनकी आँख खुली तो उन्होंने दरख़्तों की आड़ में अपने आपको छुपाया। उन्होंने अल्लाह से फिर जाने का फ़ैसला किया (पैदाइश 3:1-24)।

अल्लाह से फिर जाने का फ़ैसला बुराई की जड़ है। हम अपनी ना-फ़रमानी के सबब से बुरे बन जाते हैं। अल्लाह की जिस सूरत पर हमको बनाया गया था वह गुनाह के बाइस बिगड़ गई है। क्योंकि हम इनफ़िरादी और मजमुई तौर पर अल्लाह से फिर गए हैं। इसमें अल्लाह का कोई क़ुसूर नहीं। हम ख़ुद ही अल्लाह से फिर गए हैं। इसी वजह से हम ख़ताकारी और मौत का तजरिबा करते हैं। इंजील जलील फ़रमाती है,

> गुनाह का अज्र मौत है। (रोमियों 6:23)

बिसमिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

# अल्लाह तआला की किताबें

## मुसलमान के इलहामी नविश्ते

हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) पहले इनसान थे जिनको अल्लाह तआला से हिदायत मिली। जब उन्होंने अपने गुनाह का इक़रार किया तो उन्हें बख़्श दिया गया। साथ ही अल्लाह ने हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) को हिदायत देने का वादा भी किया। उसने हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) को ज़मीन पर भेजा ताकि वह अल्लाह के ख़लीफ़े हों और उन्हें पहला पैग़ंबर मुक़र्रर किया ताकि वह अपनी नसल और दीगर इनसानों को हिदायत दें।

ज्योंही हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) और उनकी औलाद ज़मीन पर सुकूनतपज़ीर हुए तो इबलीस दुबारा अपने शरीर कामों में लग गया। मगर जब कभी बुराइयाँ मुआशरे में पनपकर फैल जाते तो अल्लाह इसलाह का पैग़ाम भेजता। यह पैग़ाम अकसर उन पाक नविश्तों में दर्ज थे, जिनका इनकिशाफ़ अल्लाह के नबियों और पैग़ंबरों पर हुआ था।

लेकिन अल्लाह ने तमाम नबियों और पैग़ंबरों को पाक किताबें अता न कीं। उसने अपने इलाही कुतुब कुछ ही नबियों और पैग़ंबरों पर मुंकशिफ़ किया।

अल्लाह तआला के चार नविश्तों पर ईमान लाना हमारे ईमान का मरकज़ी हिस्सा है। यह चार किताबें मुक़द्दस और अल्लाह की तरफ़ से हैं। यह सब आसमान में अबदी तख़्तियों पर नक़्श की गई हैं। यह नविश्ते अल्लाह की तरफ़ से वक़्तन फ़वक़्तन और लफ़्ज़ बलफ़्ज़ ज़मीन पर नाज़िल हुए हैं। इन चारों किताबों में बहुत कुछ मिलता-जुलता है, और इनका एक ही मक़सद है कि इनसान की इसलाह करें। यह चारों किताबें एक दूसरे की तसदीक़ करती हैं। मुसलमान का फ़र्ज़ है कि उन्हें क़बूल करके उन पर पूरी तरह से ईमान लाएँ। इस्लाम के मुताबिक़ अल्लाह तआला की एक पाँचवीं किताब भी है मगर यह गुम हो गई है।

ज़ैल के सहायफ़ इलाही हैं,

- वह दस सहायफ़ जो हज़रत इब्राहीम (अलैहिस-सलाम) पर मुंकशिफ़ हुए। यह नविश्ते गुम हो गए हैं।
- तौरेत शरीफ़ जो हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) पर नाज़िल हुई।
- ज़बूर शरीफ़ जो हज़रत दाऊद (अलैहिस-सलाम) पर नाज़िल हुए।
- इंजील शरीफ़ जो हज़रत ईसा (अलैहिस-सलाम) पर नाज़िल हुई।
- क़ुरान शरीफ़ जो हज़रत मुहम्मद (सलअम) पर नाज़िल हुआ।

## क़ुरान शरीफ़ और साबिक़ नविश्ते

मुसलमान समझते हैं कि जब भी लोगों का ईमान ज़वाल पर होता तो अल्लाह एक नया पैग़ाम नाज़िल कर देता। पैग़ाम यह होता कि लोग तौबा करके दुबारा अल्लाह तआला की मरज़ी के ताबे हो जाएँ। हमारा ईमान है कि यह साबिक़ किताबें अल्लाह के पैग़ंबरों पर नाज़िल हुईं ताकि लोगों को हिदायत दें। क़ुरान शरीफ़ दीगर इलाही किताबों की तरह है। यह कोई नया और अजनबी मुकाशफ़ा नहीं है बल्कि क़ुरान शरीफ़ आख़िरी मुकाशफ़ा है जो तमाम साबिक़ नविश्तों की तसदीक़ करता है। जहाँ कोई बात साफ़ नहीं वहाँ क़ुरान शरीफ़ बात साफ़ बताता है। वह सच्चाई को कामिल तौर से बयान करता है। क़ुरान शरीफ़ ख़ुद इसकी तसदीक़ करता है। वह फ़रमाता है,

> उतारी तुझ पर किताब सच्ची, तसदीक़ करती है अगली किताबों की और उतारा तौरेत और इंजील को। इस किताब से पहले लोगों की हिदायत के लिए और उतारे फ़ैसले। (आल इमरान 3:3-4)

क़ुरान शरीफ़ तमाम साबिक़ नबियों और पैग़ंबरों की इज़्ज़त करता है। ईसाइयों और यहूदियों को "अहले-किताब" यानी किताब के लोग कहा गया है। इन लोगों को क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> ऐ किताबवालो, तुम किसी राह पर नहीं जब तक न क़ायम करो तौरेत और इंजील को और जो तुम पर उतरा तुम्हारे रब की तरफ़ से। (अल-माइदा 5:68)

क़ुरान आगे मुसलमानों की हौसलाअफ़्ज़ाई करता है कि अहले-किताब के साथ दोस्ताना ताल्लुक़ रखें। उन्हें उनकी औरतों से शादी करने की इजाज़त भी है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> आज हलाल हुईं तुमको सब सुथरी चीज़ें। और अहले-किताब का खाना तुमको हलाल है, और तुम्हारा खाना उनको हलाल है। और हलाल हैं तुमको पाकदामन औरतें मुसलमान और पाकदामन औरतें उनमें से जिनको दी गई किताब। (अल-माइदा 5:5)

साबिक़ इलाही नविश्ते लोगों को रास्तबाज़ी, मुहब्बत और अल्लाह को पसंद चाल-चलन की तालीम देते हैं। तो भी लगता है कि उनमें से कुछ अहकाम और तालीम सिर्फ़ किसी ख़ास क़बीले, मुआशरे, क़ौम या ज़माने के लिए दी गई हैं।

इसके अलावा मुसलमान समझते हैं कि इनसानों की नाक़िस बातें किताबे-मुक़द्दस में दर्ज की गई हैं। मिसाल के तौर पर किताबे-मुक़द्दस अंबिया के किरदार पेश करती है। मज़ीद यह कि नविश्तों में तारीख़ और अल्लाह का कलाम दोनों किताबे-मुक़द्दस में शामिल हैं। इसलिए मैं

मुसलमान की हैसियत से समझता हूँ कि किताबे-मुक़द्दस में से अल्लाह का कलाम दीगर मवाद से अलग करना मुश्किल ही है।

इसलिए मुसलमान समझते हैं कि क़ुरान शरीफ़ इन नविश्तों में से आख़िरी मुकाशफ़ा है। यह दीगर नविश्तों की तमाम सच्चाइयों का मेराज और कामिल बयान है। गो यह अरबी ज़बान में नाज़िल हुआ है मगर यह तमाम ज़मानों और तमाम इनसान के लिए है। क़ुरान शरीफ़ का मक़सद यह है कि अल्लाह तआला की अबदी सच्चाई को बहाल करने से साबिक़ मुकाशफ़ों की हिफ़ाज़त करे। क़ुरान शरीफ़ वही मशाले-राह है जिसकी हिदायत से आदमज़ाद सिराते-मुस्तक़ीम पर आ सकता है।

## क़ुरान शरीफ़ की नौईयत

क़ुरान शरीफ़ इलाही हिदायत की एक लासानी किताब है। वह अल्लाह तआला का सच्चा कलाम है। वह जिबराईल (अलैहिस-सलाम) फ़रिश्ते के ज़रीए नबी करीम पर नाज़िल हुआ, और उसका असल सातवें आसमान पर महफ़ूज़ रखा हुआ है।

> और अल्लाह ने उनको हर तरफ़ से घेर रखा है। कोई नहीं यह क़ुरान है बड़ी शान का।
> (अल-बुरूज 85:21-22)

अल्लाह के कलाम के मुकाशफ़े के लिए हज़रत मुहम्मद (सलअम) को चुना गया। हर एक हरफ़, लफ़्ज़, जुमला और मानी सब कुछ मुंकशिफ़ हुआ। ताज्जुब की बात यह है कि हज़रत मुहम्मद (सलअम) अनपढ़ थे।

मुकाशफ़ा यों शुरू हुआ : हज़रत मुहम्मद (सलअम) हिरा पहाड़ी के एक ग़ार में जाया करते थे ताकि रूहानी बातों पर ध्यान दें। यह ग़ार मक्का से बाहर कुछ फ़ासले पर था। एक शाम जब आप वहाँ पर आराम फ़रमा रहे थे तो अचानक जिबराईल (अलैहिस-सलाम) फ़रिश्ता हाज़िर हुए और हुक्म फ़रमाया कि पढ़ो (इक़रा)! नबी करीम निहायत डर गए, और उन्होंने फ़रिश्ते से कहा कि मुझे पढ़ना नहीं आता। फ़रिश्ते ने बात दोहराई और वही जवाब मिला। तब फ़रिश्ते ने काँपते हुए पैग़ंबर को सीने से दबाया और दर्जे-ज़ैल आयतें पढ़ने के लिए कहा,

> पढ़ अपने रब के नाम से जो सबका बनानेवाला है, बनाया आदमी को जमे हुए लहू से। पढ़, और तेरा रब बड़ा करीम है, जिसने इल्म सिखाया क़लम से, सिखलाया आदमी को जो वह न जानता था।
>
> (अल-अलक़ 96:1-5)

इन आयतों से क़ुरान शरीफ़ का मुकाशफ़ा शुरू हुआ। अल्लाह के फ़रिश्ते ने पैग़ंबरे-इस्लाम को यह आयतें याद रखने और अल्लाह की किताब हासिल करने की क़ुव्वत अता की। यह वाक़िया तक़रीबन 610 ई. में पेश आया। उस वक़्त नबी करीम (सलअम) की उम्र 40 साल की

थी। क़ुरान शरीफ़ पूरे 23 साल के दौरान थोड़ा थोड़ा करके पैग़ंबरे-इस्लाम की मौत से कुछ पहले तक नाज़िल होता रहा। आप 632 ई. में रेहलत कर गए। आख़िरी आयत फ़रमाती है,

> आज मैं पूरा कर चुका तुम्हारे लिए दीन तुम्हारा, और पूरा किया तुम पर मैंने एहसान अपना, और पसंद किया मैंने तुम्हारे वास्ते इस्लाम को दीन। (अल-माइदा 5:3)

मुसलमान क़ुरान शरीफ़ को इबादत में इस्तेमाल करते हैं, और इसी किताब से तमाम मुसलमान अरबी ज़बान सीखते हैं। क़ुरान शरीफ़ मुसलिम ज़िंदगी का मरकज़ है। यह दीगर किताबों से बिलकुल फ़रक़ है। उसमें 114 सूराजात हैं। उनमें से 86 सूराजात हज़रत मुहम्मद (सलअम) पर मक्का में, और 28 सूराजात मदीना में रहते हुए नाज़िल हुए। इन सूराजात को आयतों में तक़सीम किया गया। सबसे छोटे सूराजात सूरा 103, 108 और 110 हैं जो तीन तीन आयतों पर मुश्तमिल हैं। सबसे लंबा सूरा नंबर 2 यानी अल-बक़रा है। उसकी 286 आयतें हैं। क़ुरान शरीफ़ में कुल 6239 आयतें, 77,934 अलफ़ाज़ और 323,621 अहराफ़ हैं। हाल ही में यह भी दरियाफ़्त किया गया है कि क़ुरान शरीफ़ रियाज़ी का एक मोजिज़ा है जिसकी बुनियाद ज़रबी अदद 19 है[1]

---

1 A. Deedat, *Al-Qur'an: the Ultimate Miracle*, (Durban: 1979), pp1-75.

(सूराए-अल-मुदास्सिर 74:30 में लिखा है कि उस पर मुक़र्रर हैं उन्नीस फ़रिश्ते)।

इनसानी नुकताए-नज़र से देखा जाए तो उसमें एक तरह की बेरबती पाई जाती है। क़ुरान शरीफ़ दीगर किताबों की तरह नहीं है। उसके मौज़ू सिलसिलावार नहीं होते। यह मौज़ू पूरी किताब में बिखरे हुए हैं। लेकिन जिनको यह मुकाशफ़ा पेश किया गया, उनको कोई परेशानी नहीं थी, क्योंकि यह उन हालात के जवाब में थे।

फिर भी मुसलमान के नज़दीक ऐसा कोई मौज़ू नहीं जिसका ज़िक्र क़ुरान शरीफ़ नहीं करता। इल्मे-इलाही, फ़लसफ़ाए-क़ानून, सायंस और तारीख़ क़ुरान शरीफ़ में पाए जाते हैं। इसलिए सदियों से क़ुरान शरीफ़ मुसलिम ममालिक में तालीम की मरकज़ी किताब रही है। गो क़ुरान शरीफ़ मुफ़स्सल तौर से इल्म के तमाम पहलू बयान नहीं करता ताहम मुसलमान मानते हैं यह तमाम हक़ीक़ी हिकमत और इल्म की बुनियाद और सरचश्मा है। यह अल्लाह तआला का कलाम है।

गो क़ुरान शरीफ़ को तारीख़ी तरतीब नहीं दी गई फिर भी उसकी तरतीब अल्लाह तआला की मरज़ी के ऐन मुताबिक़ है। यह बात भी क़ुरान शरीफ़ की लासानियत पर ज़ोर देती है। क़ुरान शरीफ़ से नावाक़िफ़ लोग उससे ज़्यादा फ़ैज़याब होंगे अगर वह पहचानें कि यह एक इलाही किताब है जिसका मुक़ाबला किसी इनसानी तहरीर से नहीं किया जा सकता। यह एक बेमिसाल किताब है जिसका तसनीफ़ी तर्ज़

दीगर तमाम किताबों से बिलकुल फ़रक़ है। उसका मौज़ू इनसान है। उसका मरकज़ी मक़सद हक़ीक़त को आशकारा करना है। मुकाशफ़े का मक़सद यह है कि इनसान को सिराते-मुस्तक़ीम पर लाया जाए जिससे वह ग़फ़लत और बुराइयों के बाइस भटक गया है। जो कोई दर्जे-बाला तीन पहलुओं को मदे-नज़र रखते हुए क़ुरान शरीफ़ का मुतालआ करे उसे पता चलेगा कि उसमें न बेरबती और न ही कोई और ख़ामी पाई जाती है।

इसके अलावा क़ुरान शरीफ़ सबसे उम्दा अरबी नज़मो-नसर का मजमुआ है। जब ग़ैरईमानदारों ने हज़रत मुहम्मद (सलअम) से सबूत माँगा कि क़ुरान शरीफ़ अल्लाह तआला का कलाम है तो उन्होंने सवाल किया कि क्या तुम क़ुरान शरीफ़ की एक आयत या एक जुमले के बराबर की एक आयत पेश कर सकते हो? उनमें से कोई भी यह न कर पाया। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और अगर तुम शक में हो उस कलाम से जो उतारा हमने अपने बंदे पर तो ले आओ एक सूरत इस जैसी और बुलाओ उसको जो तुम्हारा मददगार हो अल्लाह के सिवा अगर तुम सच्चे हो। (अल-बक़रा 2:23)

क़ुरान शरीफ़ का लासानी अरबी मेयार एक ज़बरदस्त सबूत है।

> हमने उसको उतारा है क़ुरान अरबी ज़बान का ताकि तुम समझ लो। (यूसुफ़ 2:12)

# क़ुरान शरीफ़ की तकमील

जब भी नबी करीम (सलअम) को कोई मुकाशफ़ा हासिल हुआ तो आप उसे जिबराईल (अलैहिस-सलाम) फ़रिश्ते के सामने हिफ़्ज़ करते थे। तब हज़रत जिबराईल (अलैहिस-सलाम) उनको बताते कि किस तरतीब से पेश करना है। फिर कातिब नबी करीम (सलअम) की निगरानी में उसे क़लमबंद करते (क्योंकि आप ख़ुद ही अनपढ़ थे)। तब कातिब लिखे हुए मुकाशफ़े की तिलावत करते ताकि आप उसकी तसदीक़ कर सकें। बहुत जल्द नबी (सलअम) के साथियों ने भी क़ुरान शरीफ़ की आयतों को हिफ़्ज़ कर लिया ताकि इबादत और नमाज़ में उसका इस्तेमाल हो। नबी करीम (सलअम) के रेहलत फ़रमाने से पहले क़ुरान शरीफ़ लोगों की हिफ़्ज़ में महफ़ूज़ था। इसके अलावा उसके मुख़्तलिफ़ हिस्से मिट्टी की तख़्तियों, हड्डियों, भेड़ों की छालों,मिट्टी के बरतनों और पत्थरों पर क़लमबंद हुए थे।

632 ई. में हज़रत मुहम्मद (सलअम) के इंतक़ाल के बाद हज़रत अबू बक्र (रदियल्लाहु अन्हु) पहले ख़लीफ़ा यानी पैग़ंबरे-इस्लाम के जानशीन मुक़र्रर हुए। हज़रत उम्र फ़ारूक़ (रदियल्लाहु अन्हु) ने हज़रत अबू बक्र (रदियल्लाहु अन्हु) को क़ायल किया कि क़ुरान शरीफ़ की तमाम आयतों को

एक ही जिल्द में जमा किया जाए, क्योंकि कई-एक हाफ़िज़ मर गए थे। हज़रत अबू बक्र (रदियल्लाहु अन्हु) ने ज़ैद बिन साबित को फ़रमाया कि वह क़ुरान शरीफ़ के तमाम हिस्सों को एक ही जिल्द में इकट्ठा करें। उसकी वही तरतीब हो जिसकी इजाज़त हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने दी थी। ज़ैद बिन साबित ने हज़रत मुहम्मद के साथियों की मदद से और उनकी निगरानी में यह काम सरंजाम दिया। फिर यह किताब उन मुसलमानों से मंज़ूर हुई जिन्होंने हज़रत मुहम्मद (सलअम) की ज़बानी क़ुरान शरीफ़ सुना था। उस वक़्त उनकी याददाश्त ताज़ा था, क्योंकि सिर्फ़ दो साल क़बल हज़रत मुहम्मद (सलअम) का इंतक़ाल हुआ था।

तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उसमान (रदियल्लाहु अन्हु) के दौरे-ख़िलाफ़त में उन्हें यह इत्तला मिली कि क़ुरान शरीफ़ की तिलावत फ़रक़ फ़रक़ तलफ़्फ़ुज़ के साथ की जा रही है, ख़ास तौर पर उन लोगों से जो अरब नहीं थे। हज़रत उसमान (रदियल्लाहु अन्हु) ने फ़ौरी जवाब में तक़सीमशुदा तमाम क़ुरान शरीफ़ की नक़लें जमा करवाईं और चार कातिबों को बशमूल ज़ैद बिन साबित के बुलाया ताकि वह क़ुरान शरीफ़ पर नज़रे-सानी करें। इस कमेटी ने वह नुसख़ा तैयार किया जो आज तक चलता है। यह नुसख़ा क़ुरैश की मक़ामी बोली में है, वही बोली जो हज़रत मुहम्मद (सलअम) ख़ुद ही इस्तेमाल करते थे। लिहाज़ा मुसलमान का ईमान है कि जो क़ुरान मौजूदा ज़माने में इस्तेमाल में है वह बिलकुल वही है जो हज़रत मुहम्मद (सलअम) से हासिल हुआ और जिसे ख़लीफ़ा

हज़रत उसमान (रदियल्लाहु अन्हु) और हज़रत मुहम्मद के सहाबाए-इकराम से 651 ई. में मंज़ूर हुआ। न कोई बात बदली गई, न छोड़ी गई, न जोड़ी गई है। सब कुछ वैसे का वैसा ही है। बल्कि अल्लाह ख़ुद ही क़ुरान शरीफ़ की महफ़ूज़ हालत की गवाही देता है जब वह फ़रमाता है,

> हमने आप उतारी है यह नसीहत और हम आप उसके निगहबान हैं। (अल-हिज्र 15:9)

## अहादीस

इस्लाम को दो ख़ास ज़राए से समझा जा सकता है। पहला, क़ुरान शरीफ़। दूसरा, क़ुरान के अलावा हज़रत मुहम्मद (सलअम) के वह इरशाद और काम जो क़लमबंद हुए हैं। इन कामों को "सुन्नत" और इन इरशादों को "हदीस" कहा जाता है। मजमुई तौर पर यह दोनों हदीस कहलाते हैं।

सुन्नत और हदीस पैग़ंबरे-इस्लाम का चाल-चलन ज़ाहिर करते हैं। सुन्नत वह कुछ है जो आपने किया जबकि हदीस वह बातें हैं जो आपने फ़रमाईं। जिन मजमुओं में सुन्नत और हदीस दोनों शामिल हैं वह मिल मिलाकर हदीस कहलाते हैं। जब आपके साथियों में से किसी ने उन्हें कुछ करते देखा तो उसने अपने दोस्तों को इत्तला दी जिन्होंने यह इत्तला आगे फैलाई। इस तरह यह इत्तला का सिलसिला जारी रहा।

बाद में इन अहादीस के मजमुए क़लमबंद हुए। लाज़िम था कि हर हदीस की तसदीक़ एक इसनाद से की जाए। यानी ऐसे क़ाबिले-एतबार लोगों के अटूट सिलसिले के ज़िक्र से जिन्होंने यह हदीस महफ़ूज़ रखकर एक दूसरे को आगे बताया था। हर हदीस के मतन को भी क़ाबिले-फ़हम और क़ाबिले-एतबार होना चाहिए था। हदीसों को जमा करने का काम मुसलमान कैलंडर की दूसरी सदी में तकमील तक पहुँचा। इनकी बुनियाद पर हमें हज़रत मुहम्मद (सलअम) के बारे तमाम ज़रूरी मालूमात दस्तयाब हैं।

क़ुरान शरीफ़ और दीगर इलहामी किताबों की निसबत अहादीस इलहामी नहीं हैं। मगर मुसलमान के लिए हदीस की अहमियत क़ुरान शरीफ़ के बाद दूसरे नंबर पर है। हदीस क़ुरान शरीफ़ को समझने और उस पर अमल करने की इमदादी तसनीफ़ है। यों क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> जिसने हुक्म माना रसूल का उसने हुक्म माना अल्लाह का। (अन-निसा 4:80; अल-अहज़ाब 33:21; अल-आराफ़ 7:157; इब्राहीम 14:44)

अगर हम मुसलमान हदीस का मुतालआ करके उनकी पैरवी न करते तो इस्लाम के बारे में हमारा इल्म नाक़िस और इतना साफ़ न होता। ग़ैरमुसलिम भी इस्लाम को ठीक नहीं समझ सकता अगर वह हदीस को नज़रंदाज़ कर दे।

## ख़ुलासा

मुसलमान का ईमान है कि अल्लाह ने अपने कलाम का इनकिशाफ़ अपने कुछ नबियों और पैग़ंबरों पर इनसान की राहनुमाई के लिए किया। कई बार मुकाशफ़े इनसान की हिदायत के लिए नाज़िल हुए। जब कभी लोगों का ईमान ज़वाल पर होता तो उनकी तजदीद की ज़रूरत होती। यह मुकाशफ़े इनसान को इलाही नविश्तों के ज़रीए दिए गए हैं। लाज़िम है कि इनसान तमाम साबिक़ नविश्तों को क़बूल करे। ताहम क़ुरान शरीफ़ आख़िरी मुकाशफ़ा है जो साबिक़ किताबों की तसदीक़ करके सच्चाई को कामिल तौर से पेश करता है। गो अहादीस की किताबें इलहामी नविश्ते नहीं हैं फिर भी यह क़ुरान शरीफ़ को समझने और उस पर अमल करने में मदद करती हैं।

## ईसाई का जवाब

ईसाई और मुसलमान दोनों अहले-किताब हैं। दोनों अल्लाह के कलाम की बहुत ज़्यादा इज़्ज़त करते हैं। मुसलमान किताबे-मुक़द्दस की इज़्ज़त करते हैं, ख़ास तौर से तौरात, ज़बूर और इंजील। यह तीनों नविश्ते किताबे-मुक़द्दस में शामिल हैं। मुसलमान की यह इज़्ज़त क़ुरान शरीफ़ के उस फ़रमान में ज़ाहिर होता है जिसमें ईसाइयों और यहूदियों को कहा गया है कि वह अपने नविश्ते न छुपाएँ बल्कि ध्यान दें कि वह सबको दस्तयाब हों (आल इमरान 3:71)। ईसाई शुक्रगुज़ार हैं कि मुसलमान किताबे-मुक़द्दस की इज़्ज़त करते हैं।

यह ख़ुशी की बात है कि मुसलमानों को ईसाइयों का खाना खाने की इजाज़त है। इससे आपस की रिफ़ाक़त मुमकिन है, और हमें दोनों तरफ़ से इस रिफ़ाक़त पर ज़ोर देना चाहिए। बेशक यह बात अच्छी है कि मुसलमान मर्द ईसाई औरतों से शादी कर सकते हैं। लेकिन ईसाई यह सवाल ज़रूर पूछते हैं कि इस्लाम की तरफ़ से ईसाइयों को मुसलमान औरतों से शादी करने की इजाज़त क्यों नहीं दी जाती? यह बराबर की बात नहीं लगती।

सवाल यह भी है कि इनकिशाफ़ की क्या फ़ितरत और मानी हैं। क्या हर इलाही मुकाशफ़े का एक पहलू यह नहीं कि वह मुजस्सम हुआ है? यह किस तरह मुमकिन है कि अल्लाह का कलाम इनसानी शख़्सियत के ज़रीए, इनसानी ज़बान और ख़यालात की शक्ल में ज़ाहिर न हो? नीज़, हमें ख़ुद से पूछना है कि हम किन किन उसूलों की बिना पर क़रार देते हैं कि कौन-सी किताबें सचमुच अल्लाह का कलाम हैं।

ईसाई ईमान का मरकज़ यह है कि अल्लाह न सिर्फ़ एक किताब बल्कि ख़ुद अपने आपका इनकिशाफ़ करता है। इनसानों में अल्लाह ख़ासकर अपने कामों से अपने आपका इनकिशाफ़ करता है। चुनाँचे इलाही नविश्ते यह क़लमबंद करते हैं कि अल्लाह ने किस तरह अपने आपका इनकिशाफ़ किया। साथ साथ वह इसका इलहामी बयान हैं कि मुकाशफ़ों के जवाब में इनसान का क्या रदे-अमल था। ईसाई यह नहीं समझते कि इलाही किताबें आसमान से नाज़िल हुईं। बल्कि हम

समझते हैं कि किताबे-मुक़द्दस अल्लाह का कलाम है जिससे वह शख़्सी तौर से इनसान से मुलाक़ात करके उसे अपने क़रीब लाता और तबदील करता है। ज़ोर इस पर होता है कि इनसान का अल्लाह से शख़्सी ताल्लुक़ बहाल हो जाए और उसका दिल तबदील हो जाए। तब ही वह सिराते-मुस्तक़ीम पर चलने में कामयाब होगा।

ईसाई का ईमान है कि पूरी किताबे-मुक़द्दस का पैग़ाम क़बूल करके उस पर ईमान रखना लाज़िम है। यह ज़रूरी है कि पूरी किताबे-मुक़द्दस का मुतालआ करें ताकि अल्लाह का पैग़ाम हासिल कर सकें। ईसाई नहीं समझते कि कुछ किताबें किसी ख़ास क़ौम के लिए और महदूद वक़्त के लिए मुंकशिफ़ हुई हैं। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) बात करते वक़्त साबिक़ नबियों का हवाला लिया करते थे और अपने पैरोकारों को भी फ़रमाया करते थे कि वह ख़ुद नविश्तों का मुतालआ करें। तमाम इलहामी नविश्ते एक दूसरे से ताल्लुक़ रखते हैं। किताबे-मुक़द्दस के हर एक हिस्से को समझना ज़रूरी है ताकि अल्लाह के कामिल मुकाशफ़े को समझा जा सके।

## मुसलमान की विज़ाहत

मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह तमाम असली इलाही किताबों पर ईमान लाए। मुसलमान यह भी एतक़ाद रखते हैं कि साबिक़ इलाही नविश्तों के तमाम आलमगीर उसूलों का ख़ुलासा क़ुरान शरीफ़ में हैं। क़ुरान

शरीफ़ में इलाही हिदायत के तमाम आलमगीर उसूल ऐन उसी तरह से महफ़ूज़ हैं जिस तरह पैग़ंबरे-इस्लाम पर मुंकशिफ़ हुआ था।

बिसमिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

# अंबिया का किरदार

## मुसलमान का अक़ीदा

मुसलमान आम तौर पर अल्लाह तआला के नबी और रसूल में इम्तियाज़ करते हैं। पैग़ंबर या रसूल इलाही नविश्ते के साथ भेजा गया है कि वह इनसान को हिदायत देकर उसकी इसलाह करे। उसे एक इलाही किताब अता हुई है। नबी अल्लाह तआला के पैग़ाम की मुनादी करते हैं। नबियों को पैग़ंबरों की तरह किताब नहीं दी गई है। तमाम पैग़ंबर नबी हैं, लेकिन तमाम नबी पैग़ंबर नहीं हैं। पैग़ंबर और नबी दोनों अल्लाह की तरफ़ से चुने गए हैं कि वह अल्लाह के मुंकशिफ़ हुए पैग़ाम (वही وحی) को सुनाएँ। यह इलाही पैग़ाम लोगों की एक जमात के लिए, एक क़ौम के लिए या फिर तमाम इनसान की राहनुमाई के लिए है।

## अंबिया की नौईयत

अल्लाह तआला ने अपनी मरज़ी से अपने कुछ ख़ास बंदों को नबुव्वत का ख़ास ओहदा अता किया है। वह इसलिए चुने गए कि अपने मुआशरों और इनसान को सिराते-मुस्तक़ीम पर लाएँ। सबने एक ही पैग़ाम यानी इस्लाम सुनाया। अल्लाह ने उन्हें अपनी मरज़ी और अपने मज़हब के बारे में बेहतर इल्म बख़्श दिया। तब उन्होंने इनसान को हिदायत दी कि वह किस तरह अच्छी ज़िंदगी गुज़ारकर मौत के बाद की ज़िंदगी के लिए तैयार हो जाएँ।

तमाम अंबिया इनसान थे। वह हम सबकी तरह खाते, पीते, चलते-फिरते, सोते, बात करते, साँस लेते, दुख उठाते और मसलों का सामना करते थे। वह अक़्लमंद, क़ाबिले-भरोसा, इल्म रखनेवाले और अल्लाह के अज़हद फ़रमाँबरदार थे। वह अख़लाक़ी तौर से सबसे अच्छे नमूने थे। यों क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और नबी का काम नहीं कि कुछ छुपा रखे।
>
> (आल इमरान 3:161)

अल्लाह तआला ने उन्हें संजीदा गुनाहों और बुरी बीमारियों से महफ़ूज़ रखा।

अंबिया इनसान थे, इसलिए सबने उनकी न सुनी बल्कि उनके अपने मुआशरों के कुछ लोगों ने उन्हें पूरे तौर से रद किया। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और लोगों को रोका नहीं ईमान लाने से जब पहुँची उनको हिदायत मगर इसी बात ने कि कहने लगे क्या अल्लाह ने भेजा आदमी को पैग़ाम देकर।
> (अल-इसरा 17:94)

मुसलमान की हैसियत से न हमें अंबिया को रद करना चाहिए, न ही उन्हें इनसान से ज़्यादा समझना चाहिए। नबी करीम (सलअम) ने भी अपनी इनसानी फ़ितरत पर ज़ोर दिया। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और मुहम्मद तो एक रसूल है हो चुके उससे पहले बहुत रसूल। (आल इमरान 3:144)

दूसरी आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है,

> तू कह, मैं भी एक आदमी हूँ जैसे तुम। हुक्म आता है मुझको कि माबूद तुम्हारा एक माबूद है।
> (अल-कहफ़ 18:110)

लाज़िम है कि मुसलमान अल्लाह के तमाम अंबिया पर ईमान रखें। उनमें से किसी की नबुव्वत का इनकार करना कुफ़्र है।

अल्लाह ने माज़ी के मुख़्तलिफ़ दौरों में कई-एक नबियों को इनसान की राहनुमाई के लिए भेजा। फ़रक़ फ़रक़ नबियों को तक़रीबन हर क़ौम में खड़ा किया गया। यों क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और हमने उठाए हैं (भेजे हैं) हर उम्मत में रसूल कि बंदगी करो अल्लाह की और बचो हुड़दंगे से (झूटे माबूदों से)। (अन-नहल 16:36)

क़ुरान शरीफ़ मज़ीद फ़रमाता है,

> तुम कह दो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और जो उतरा हम पर और जो उतरा इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उसकी औलाद पर और जो मिला मूसा को और ईसा को और जो मिला दूसरे पैग़ंबरों को उनके रब की तरफ़ से। हम फ़रक़ नहीं करते उन सबमें से एक में भी, और हम इसी परवरदिगार के फ़रमाँबरदार हैं। (अल-बक़रा 2:136)

अल्लाह तआला के नबियों की सही तादाद वाज़िह नहीं है। मगर मुसलिम रिवायत के मुताबिक़ उनकी तादाद 1,24,000 मानी जाती है। क़ुरान शरीफ़ सिर्फ़ 25 नबियों की फ़हरिस्त पेश करता है। मगर मुसलमान को उन नबियों को भी मानना चाहिए जिनका ज़िक्र नहीं किया गया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है,

> और भेजे ऐसे रसूल कि जिनका अहवाल हमने सुनाया तुझको इससे पहले और ऐसे रसूल जिनका अहवाल नहीं सुनाया तुझको। (अन-निसा 4:164)

दर्जे-ज़ैल उन नबियों के नाम हैं जिनको क़ुरान शरीफ़ में बयान किया गया है (अलैहुम अस-सलाम) : हज़रात आदम, सालिह, लूत, हूद, याकूब, इब्राहीम, यूनस, मूसा, दाऊद, इलीसा (इलीशा), ज़करिया, ज़ुल-किफ़ल (हिज़कियेल), ईसा अल-मसीह, नूह, शईब, इसमाईल, यूसुफ़, इसहाक़, हारून, सुलेमान, यहया, ऐयूब, इलयास, इदरीस और मुहम्मद (सलअम)।

हज़रत मुहम्मद (सलअम) अल्लाह तआला के आख़िरी नबी और पैग़ंबर हैं। उन्हें तमाम दुनिया और तमाम ज़मानों के लिए भेजा गया।

## अंबिया का किरदार

हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) न सिर्फ़ पहले इनसान बल्कि पहले नबी भी थे। अल्लाह ने आदम (अलैहिस-सलाम) पर इस्लाम का इनकिशाफ़ किया यानी यह तालीम कि इनसान उसके ताबे रहे जो सच्चा ख़ुदा, दुनिया का ख़ालिक़ और क़ायम रखनेवाला है, जो कायनात और रोज़े-महशर का मालिक है। अल्लाह ने हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) को फ़रमाया कि इनसान सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत करे और उसकी सुने जो सबसे आला और बरतर है। अल्लाह ने आदम (अलैहिस-सलाम) को यह अहद अता किया कि अल्लाह सब चीज़ों का मालिक है और इनसान उसका बंदा (अबद) है।

हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) की औलाद में से कुछ रास्तबाज़ थे जिन्होंने अल्लाह तआला की तालीम की पैरवी की। मगर कुछ बुरे कामों

के जाल में फँस गए। उन्होंने असली हिदायत को छोड़कर अल्लाह के साथ साथ दीगर देवताओं और मूर्तियों की परस्तिश की। इनसान की सही राहनुमाई के लिए अल्लाह ने हर क़ौम के लोगों में से अंबिया खड़े किए। तमाम नबियों की बुनियादी पैग़ाम एक ही था। उन्होंने लोगों को तालीम दी कि ख़ुदा वाहिद है और कि अच्छी, दीनदार और अमनपसंद ज़िंदगी गुज़ारने का अज्र क्या है। नीज़, उन्होंने रोज़े-क़ियामत और ग़ैरईमानदारों की ख़ौफ़नाक सज़ा की तालीम दी। तमाम नबियों ने इसी पैग़ाम को अल्लाह तआला की तरफ़ से लोगों तक पहुँचाया। उनकी अपनी ज़िंदगियाँ मिसाली थीं। उन्होंने अपनी ज़िंदगी से अपने ईमान का इज़हार किया।

अंबिया ने इलाही अहकाम, अवामी इनसाफ़ और लोगों का तावुन क़ायम करने की कोशिश की। मक़सद यह था कि ज़िंदगी का हर पहलू मुतअस्सिर हो। यह करने में कुछ अंबिया कामयाब थे जबकि कुछ नाकाम रहे। बहुत लोगों ने अंबिया को रद किया। कुछ ने अंबिया से बदसुलूकी की। उन्होंने उन्हें सज़ा दी, सताया और उनकी तालीमात को रद किया। मुख़ालफ़त के बावुजूद भी नबियों ने न हिम्मत हारी न ग़लत तालीम से समझौता किया। जिसके लिए उन्हें भेजा गया था उसमें वह मुकम्मल तौर से फ़ेल न हुए।

कुछ अंबिया ख़ास तौर से ग़ौर के लायक़ हैं। मिसाल के तौर पर हज़रत इब्राहीम (अलैहिस-सलाम) का सबसे बड़ा शाहकार यह था कि

उन्होंने अल्लाह की वहदानियत का एलान किया। यह एतक़ाद कई हज़ार सालों से चला आ रहा है। इस्लाम मानता है कि अल्लाह हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) से हमकलाम हुआ।

> और बातें कीं अल्लाह ने मूसा से बोलकर।
> (अन-निसा 4:164)

हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) को कलीमुल्लाह का लक़ब दिया गया जिसका मतलब है "वह जिससे अल्लाह ने बात की।" लेकिन हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) की क़ौम समझती थी कि उनकी हिदायत सिर्फ़ उसी के लिए है। मुसलमानों के ख़याल में उन्होंने असल शरीअत के साथ दीगर रस्मो-रिवाज भी जोड़ लिए हैं। तमाम नबियों की तरह हज़रत ईसा इब्न मरियम ने भी अल्लाह तआला के एक होने की मुनादी की। इस्लाम के मुताबिक़ ईसाइयों ने अल्लाह तआला की वहदानियत की जगह तसलीस पर ज़ोर देते हुए समझौता किया है।

आख़िर में अल्लाह ने अपनी आख़िरी हिदायत नबी हज़रत मुहम्मद (सलअम) के ज़रीए इरसाल की। जो हिदायत तमाम साबिक़ नबियों ने इनसान को दी थी उसे पैग़ंबरे-इस्लाम ने कामिल तौर पर बयान किया। इस आख़िरी हिदायत को ख़त्मे-नबुव्वत पर ज़ाहिर किया गया जो हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) के 600 साल बाद पैदा हुए। हज़रत मुहम्मद (सलअम) वह नबी थे जिन्होंने अल्लाह तआला के मिशन को अपनी ज़िंदगी के दौरान पूरा किया। अल्लाह तआला का आख़िरी पैग़ाम यह था,

> आज मैं पूरा कर चुका तुम्हारे लिए दीन तुम्हारा और पूरा किया तुम पर मैंने एहसान अपना और पसंद किया मैंने तुम्हारे वास्ते इस्लाम को दीन। (अल-माइदा 5:3)

सो हज़रत मुहम्मद (सलअम) अल्लाह के आख़िरी पैग़ंबर थे जिनके ज़रीए इनसान का असली मज़हब यानी इस्लाम पूरा हुआ और मुसलिम क़ौम क़ायम हुई।

## ख़ुलासा

मुसलमान अल्लाह के उन तमाम नबियों पर ईमान रखते हैं जो हज़रत मुहम्मद (सलअम) से पहले गुज़रे हैं। वह उनकी इज़्ज़त भी करते हैं। अंबिया सब अल्लाह तआला की तरफ़ से एक ही पैग़ाम लेकर आए यानी इस्लाम का पैग़ाम। हज़रत मुहम्मद (सलअम) सबसे आख़िरी नबी और नबुव्वत का मोहर हैं। उनके ज़रीए इस्लाम पूरा हुआ। चूँकि वह आख़िरी नबी थे इसलिए मुसलमान हिदायत के लिए उन्हीं की तरफ़ रुजू करते हैं।

## ईसाई का जवाब

मुसलमान और ईसाई दोनों अंबिया पर एतक़ाद रखते हैं। कम अज़ कम तीस नबियों और रसूलों की तहरीरें और तालीमात किताबे-मुक़द्दस में शामिल की गई हैं। किताबे-मुक़द्दस के नबियों में से कई-एक का ज़िक्र

क़ुरान शरीफ़ में किया गया है। नबियों में से हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) बहुत अज़ीम नबी माने जाते हैं।

सवाल यह है कि मूसा (अलैहिस-सलाम) के साथ अल्लाह की मुलाक़ात का क्या मतलब था? इस वाकिये का ज़िक्र तौरेत और क़ुरान दोनों में हुआ है। उस वक़्त अल्लाह जलती झाड़ी के ज़रीए हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) से हमकलाम हुआ। तौरेत के मुताबिक़ उस वक़्त अल्लाह के एक नए नाम का इनकिशाफ़ हुआ, और वह है "मैं हूँ।" इबरानी ज़बान में उसे यहविह कहा गया है। हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) से शुरू करते हुए अल्लाह का ख़ास नाम यहविह रहा। इस नाम का ख़ास ताल्लुक़ उस अहद से है जो अल्लाह ने इनसान के साथ बाँधा। इस अहद में अल्लाह ज़ाती तौर से इनसान से रिफ़ाक़त रखता है। यह ठीक ठीक मालूम करने के लिए कि अल्लाह ने किस तरह अपने आपका इनकिशाफ़ किया लाज़िम है कि हम किताबे-मुक़द्दस के तमाम हिस्सों का लिहाज़ करें।

नबियों का पैग़ाम एक अज़ीम और आलीशान इमारत जैसा है। हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) जैसे इब्तिदाई अंबिया ने इस इमारत की बुनियाद रखी। बाद में हज़रत दाऊद और हज़रत यसायाह जैसे नबियों ने इमारत की दीवारें बनाईं। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) उस इमारत की छत की मानिंद हैं। किताबे-मुक़द्दस के तमाम अंबियाए-अकरम मिलकर एक ख़ूबसूरत इमारत से मुताबिक़त रखते

हैं। ईसाई हलीमी से गुज़ारिश करते हैं कि तमाम लोग अल्लाह के नबियों के पैग़ाम पढ़कर क़बूल करें। इमारत का हर एक हिस्सा अहम है। हर हिस्से की ज़रूरत है ताकि हम यह समझें कि अल्लाह ने अपने आपका इनकिशाफ़ किस तरह किया।

## मुसलमान की विज़ाहत

मुसलिम नज़र से जलती झाड़ी के वाकिये से हद से ज़्यादा मतलब निकालना मुफ़ीद नहीं है। गो अल्लाह हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) से जलती झाड़ी के ज़रीए हमकलाम हुआ फिर भी कुछ मुसलमान उलमा का ख़याल है कि यह जिबराईल (अलैहिस-सलाम) फ़रिश्ते के ज़रीए हुआ जो जलती झाड़ी में मौजूद था। साथ साथ मुसलमानों का पक्का यक़ीन है कि नाम अल्लाह ख़ुदा का सबसे अहम नाम है। मुसलमान का कहना है कि अल्लाह ख़ुदा का सबसे बेहतरीन नाम है। इसी नाम अल्लाह में एक बेनज़ीर ख़ूबसूरती पाई जाती है, और इसी नाम के ज़रीए वह हज़रत मुहम्मद (सलअम) पर ज़ाहिर हुआ।

बिसमिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

# नबियों का मोहर

## मुसलमान का अक़ीदा

हज़रत मुहम्मद[1] (सलअम) 570 ई. में अरब के तिजारती शहर मक्का में पैदा हुए। उनकी वालिदा आमिना बिंत वहब थीं जो मदीना की रहनेवाली थीं। वालिद अबदुल्लाह बन अब्दुल-मुतत्लिब थे। अब्दुल-मुत्तलिब बनी हाशिम का सरदार था। बनी हाशिम क़ुरैश क़बीले की एक शाख़ थे। अब्दुल-मुत्तलिब काबा का सरदार मुहाफ़िज़ भी था। काबा अल्लाह का घर कहलाता है जिसमें हजरे-असवद है।

हज़रत मुहम्मद (सलअम) का बचपन बदक़िस्मत था। पैदाइश के कुछ ही महीने पहले वालिद अबदुल्लाह का इंतक़ाल हुआ। 6 साल की उम्र में वालिदा का इंतक़ाल हुआ। फिर दादा ने आपकी देख-रेख की, मगर दो साल बाद उनका भी इंतक़ाल हुआ। इस तरह से आप 8 साल की उम्र में यतीम हो गए। फिर भी ऐसे रिश्तेदारों की कमी न थी जो उनकी देख-

1 मुहम्मद लफ़्ज़ का मतलब “हम्द किया हुआ” है।

भाल करने के लिए तैयार हों। उन्हें चचा अबू तालिब के सुपुर्द किया गया। चचा ने अपने भतीजे से प्यार का सुलूक करके उसकी भरपूर परवरिश की।

मुहम्मद (सलअम) ने अपनी जवानी के इब्तिदाई बरस अपने चचा के साथ गुज़ारे। आपने काम-काज में जोशो-ख़ुरोश के साथ अपने चचा का हाथ बटाया। हज़रत मुहम्मद (सलअम) मेहनती थे और ख़ुशी से हर काम करते थे। आप अपने कपड़ों और जूतों की मरम्मत अपने ही हाथों से किया करते थे। वह अपने चचा की भेड़-बकरियों और ऊँटों की देख-भाल करते। जब चचा क़ाफ़िला लेकर रवाना होते तो वह भी साथ देते। आपने दो मरतबा तिजारती सिलसिले में शाम का सफ़र किया, पहली बार जब 12 बरस के थे। हज़रत मुहम्मद (सलअम) कभी स्कूल न गए। आप अनपढ़ थे। ताहम जब जवान थे तो मक्का के शहरी आपकी क़दर करते थे, क्योंकि आप दियानतदार और ईमानदार थे, और आपका चाल-चलन अच्छा था। इसलिए आपको अल-अमीन का लक़ब मिला जिसका मतलब है क़ाबिले-भरोसा।

## पैग़ंबरे-इस्लाम का मुआशरा

जिस मुआशरे में हज़रत मुहम्मद (सलअम) पैदा हुए उसके लोग जाहिल थे। जहालत और तारीकी का ज़माना था। अरब के लोगों के बहुत-से देवता थे। वह समझते थे कि इनमें से सबसे आला देवता अल्लाह है। तीन अहम देवियाँ बनाम अल-उज़्ज़ा, अल-मनात और अल-लात थीं।

उन्हें मक्का के बाशिंदे अल्लाह की बेटियाँ मानकर उनकी पूजा करते थे। मक्का में काबा सब तरह की बुराइयों से नापाक हो गया था। हज़रत मुहम्मद (सलअम) के ज़माने में काबा 360 बुतों का घर बन गया था। साल के हर दिन एक ख़ास देवता की पूजा की जाती थी।

शराब पीना, जुआ खेलना, धावा बोलना, और ख़ूनी बैर इस मुआशरे के दस्तूर बन गए थे। औरतें नंगी हालत में नाचती और जिस्म के हर अज़ु के बारे में गंदी नज़में लिखती थीं। मुआशरे में औरतों की कोई इज़्ज़त नहीं होती थी। लोग समझते थे कि लड़कियों की पैदाइश बदक़िस्मती का निशान है। यहाँ तक कि शीरख़ार लड़कियों को पैदा होते ही ज़िंदा दफ़न कर दिया जाता था। उन दिनों में जायदाद अहम किरदार रखती थी। जितनी जायदाद किसी के पास थी उतना ही उसकी क़दर की जाती थी। हज़रत मुहम्मद (सलअम) इसी माहौल में पले-बढ़े।

हज़रत मुहम्मद (सलअम) बचपन से ही इस बिगड़े हुए मुआशरे से नफ़रत रखते थे। वह अपने लोगों के बुरे रवैये से दुखी और परेशान रहते थे। तब वह हिरा पहाड़ के एक ग़ार में जाने लगे ताकि मुराक़बे में जाएँ। साथ ही वह अपनी रोज़ी भी कमाते थे।

## पैग़ंबरे-इस्लाम की शादी

अबू तालिब अमीर नहीं थे, इसलिए उन्होंने अपने भतीजे को एक दौलतमंद बेवा के सुपुर्द किया ताकि पैसे कमा सकें। उस ख़ातून ने आपको अपने क़ाफ़िलों का लीडर बनाया। ख़ातून का नाम ख़दीजा

(रदियल्लाहु अन्हु) बिंत ख़ालिद था। वह दो मरतबा बेवा हो चुकी थीं। उनके दो बेटे और एक बेटी थी। वह निहायत दौलतमंद थीं। जल्द ही मालूम हुआ कि हज़रत मुहम्मद (सलअम) ईमानदार, मेहरबान, ज़िम्मेदार, सीधे-सादे और पाकदामन हैं। हज़रत मुहम्मद (सलअम) को बेहतरीन ख़ासियतें हासिल थीं।

इन नादिर क़ाबिलियतों से मुतअस्सिर होकर हज़रत ख़दीजा (रदियल्लाहु अन्हु) ने आपसे शादी करने की तजवीज़ पेश की। आपने राज़ी होकर हज़रत ख़दीजा (रदियल्लाहु अन्हु) से शादी कर ली। उस वक़्त आप 25 साल के और हज़रत ख़दीजा (रदियल्लाहु अन्हु) 40 साल की थीं। यह शादी पच्चीस साल तक क़ायम रही यानी ख़दीजा (रदियल्लाहु अन्हु) की मौत तक। अल्लाह तआला ने उन्हें 7 बच्चे अता किए। तीनों बेटे अल्लाह को प्यारे हो गए लेकिन चारों बेटियाँ ज़िंदा रहीं। फिर भी आपके इंतक़ाल के वक़्त सिर्फ़ एक बेटी यानी हज़रत फ़ातिमा (रदियल्लाहु अन्हु) ज़िंदा थीं, और वह भी छः महीने के बाद फ़ौत हुईं।

शादी के बाद हज़रत मुहम्मद (सलअम) ज़्यादा वक़्त रूहानी तलाश के लिए वक़्फ़ कर सकते थे। क़ुरान फ़रमाता है,

> भला नहीं पाया तुझको यतीम फिर जगह दी। और पाया तुझको भटकता फिर राह सुझाई। और पाया तुझको मुफ़लिस फिर बेपरवा कर दिया।
>
> (अज़-ज़ुहा 93:6-8)

## पैग़ंबरे-इस्लाम की रिसालत

इसका ज़िक्र हो चुका है कि पैग़ंबरे-इस्लाम हिरा के ग़ार में मुराक़बे में जाने के लिए जाया करते थे। माहे-रमज़ान की एक रात को उन्होंने एक ज़ोरदार आवाज़ यह कहकर सुनी,

> पढ़ अपने रब के नाम से जो सबका बनानेवाला है। (अल-अलक़ 96:1-5)

मुसलमान इस रात को लैलतुल-क़दर या शबे-क़दर के नाम से याद करते हैं। यह वाक़िया 610 ई. में हुआ जब हज़रत मुहम्मद (सलअम) 40 बरस के थे। यह पहला मुकाशफ़ा हज़रत जिबराईल (अलैहिस-सलाम) के ज़रीए नाज़िल हुआ। यों आप अल्लाह तआला के आख़िरी नबी मुक़र्रर हुए (अल-अहज़ाब 33:40)।

आप ख़ौफ़ के मारे जल्दी जल्दी अपने घर लौटे और अपनी बीवी को सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने आपको तसल्ली देकर यक़ीन दिलाया कि जो कुछ उन्होंने हासिल किया है वह अल्लाह की तरफ़ से सच्चा मुकाशफ़ा है। यों हज़रत ख़दीजा (रदियल्लाहु अन्हु) मक्का में इस्लाम क़बूल करने का पहला शख़्स थीं।

इसके बाद दूसरा मुकाशफ़ा जल्द ही नाज़िल हुआ जब हज़रत मुहम्मद (सलअम) अपने घर में कंबल ओढ़े हुए काँप रहे थे। हुक्म यह था,

> ऐ लिहाफ़ में लिपटनेवाले। खड़ा हो फिर डर सुना दे। और अपने रब की बड़ाई बोल। (अल-मुदस्सिर 74:1-3)

आपको अल्लाह के कलाम से चुना गया ताकि उसका पैग़ाम फैलाएँ।

हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने अपनी ख़िदमत को ख़ामोशी से शुरू किया। उन्होंने ख़ुदाए-वहदानियत की मुनादी की। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि अल्लाह तआला क़ादिरे-मुतलक़ है। वह कायनात का ख़ालिक़ और रोज़े-महशर का मालिक है। क़ियामत के दिन ईमानदार और रास्तबाज़ जन्नत हासिल करेंगे जबकि ग़ैरईमानदारों, बुतपरस्तों और काफ़िरों को जहन्नुम में डाल दिया जाएगा जो कि अज़ाब की बड़ी हौलनाक जगह है।

पैग़ंबरे-इस्लाम ने हमेशा साफ़ फ़रमाया कि मैं इनसान से बरतर नहीं हूँ बल्कि मैं सिर्फ़ अल्लाह तआला का एक पैग़ंबर हूँ। क़ुरान शरीफ़ आपकी इनसानी फ़ितरत की तसदीक़ करता है,

> तू कह दे कि मैं मालिक नहीं अपनी जान के भले का और न बुरे का मगर [सिवाए उसके] जो अल्लाह चाहे। . . . मैं तो बस डर और ख़ुशख़बरी सुनानेवाला हूँ ईमानदार लोगों को। (अल-आराफ़ 7:188)

पहले तीन सालों में मक्का के थोड़े ही अफ़राद ने इस्लाम क़बूल किया। उनमें से उनकी बीवी हज़रत ख़दीजा, उनके दामाद हज़रत अली,

हज़रत अबू बक्र, हज़रत उसमान और हज़रत तल्हा (रदियल्लाहु अन्हुम) थे। यह सब उनके दोस्त थे। फिर अल्लाह तआला ने पैग़ंबरे-इस्लाम को हुक्म फ़रमाया कि अवाम में मुनादी करो। नतीजे में आप सफ़ा पहाड़ी पर गए जो काबा के सामने है। वहाँ आपने अल्लाह तआला की वहदानियत की मुनादी की। आपने सबको कहा कि अल्लाह के ताबे हो जाओ। और आपने उन्हें आगाह किया जो इसके लिए तैयार नहीं थे,

> कुछ नहीं वह झुटलाते हैं क़ियामत को और हमने तैयार की है उसके वास्ते कि झुटलाता है क़ियामत को आग।
> (अल-फ़ुरक़ान 25:11)

## मुख़ालफ़त और ईज़ारसानी

आपकी मुनादी ने मक्का के कई-एक शहरियों को झुँझला दिया। वह समझ गए कि आपकी मुनादी उनकी ताक़त को कमज़ोर कर देगी। नीज़, काबा के मुहाफ़िज़ की हैसियत से उन्हें कम पैसे मिलेंगे। उन्होंने आपको कई तरह से धमकियाँ दीं मगर आप नहीं डगमगाए। उन्होंने आपको दौलत, औरतों बल्कि बादशाह बनने का लालच दिया ताकि वह मुनादी करने से बाज़ आएँ। मगर वह नाकाम रहे। नतीजतन वह आपको सताने लगे। कुछ को हज़रत बिलाल (रदियल्लाहु अन्हु) की तरह गरम रेगिस्तान में घसीटा गया जहाँ गरम गरम पत्थर उनके सीनों पर

रखे गए। बहुतों को उन्होंने मार डाला। हज़रत मुहम्मद (सलअम) भी मुख़ालफ़त से न बचे। मक्का के लोगों ने रास्ते में काँटे बिछाकर आप पर कूड़ा-कर्कट फेंका। ताइफ़ शहर में आप लोगों के पथराव से लहू-लुहान हुए।

इसके बावुजूद बहुत-से लोगों ने इस्लाम क़बूल किया। सख़्त मुख़ालफ़त और सताऊ की वजह से हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने ग्यारह ख़ानदान को मशवरा दिया कि वह एथोपिया के ईसाई मुल्क में हिजरत फ़रमाएँ। वहाँ उनका अच्छा इस्तिक़बाल हुआ। इसके बाद 83 और लोग उनके पीछे गए जिनमें हज़रत उसमान (रदियल्लाहु अन्हु) भी शामिल थे। बाद में वह इस्लाम के तीसरे ख़लीफ़ा बने। मक्का के बुतपरस्त क़ुरैशी चाहते थे कि इन मुसलमानों को वापस लाया जाए। उन्होंने बादशाह को मजबूर करने की कोशिश की मगर बेफ़ायदा। वह उन्हें निकालकर क़ुरैशियों के हवाले नहीं करना चाहता था, क्योंकि वह एक ख़ुदा को मानते थे, और वह तमाम नबियों पर ईमान रखते थे।

नुक़सान के बावुजूद पैग़ंबरे-इस्लाम ने अपनी मुनादी को जारी रखा। कई लोगों ने इस्लाम क़बूल किया। साथ ही मुकाशफ़े का सिलसिला जारी रहा। उस दौरान दो बड़ी हस्तियों ने इस्लाम क़बूल किया यानी हज़रत उमर (रदियल्लाहु अन्हु) जो बाद में इस्लाम के तीसरे ख़लीफ़ा बने और हज़रत अबू हमज़ा (रदियल्लाहु अन्हु) जो आपके चचा थे। क़ुरैशी लोग हज़रत उम्र से डरते भी थे और उनकी इज़्ज़त भी करते थे। हज़रत उम्र

ने काबा पर नमाज़ और इबादत शुरू कराई। इस बात से क़ुरैशी बहुत ही परेशान हो गए, और उन्होंने क़सम खाई कि वह मुसलमानों और उनके लीडर को और सताएँगे।

क़ुरैशियों ने बनी हाशिम यानी हज़रत मुहम्मद (सलअम) के ख़ानदान को कहा कि हुज़ूर हमारे हवाला किए जाएँ या फिर अंजाम का सामना करें। बनी हाशिम के सरपरस्त अबू तालिब ने इनकार कर दिया। नतीजे में शईब अबू तालिब की वादी में उनका हुक़्क़ा-पानी बंद कर दिया गया। हालात 3 साल तक यों ही रहे। इसके ऐन बाद अबू तालिब का इंतक़ाल हो गया। गो अबू तालिब ने इस्लाम क़बूल नहीं किया तो भी वह आख़िर तक अपने भतीजे के हक़ में रहे। उसी वक़्त नबी करीम (सलअम) की बीवी भी फ़ौत हुईं। आपने उस साल को "दुख के साल" का नाम दिया।

## मेराज

उन दिनों में मदीना के कुछ लोग इस्लाम के बारे में सुनकर मक्का आए। आपसे मिलने के बाद उन्होंने इस्लाम क़बूल किया। उन्होंने आपको दावत दी कि मदीना में क़ियाम करें। उन्होंने क़सम खाकर कहा कि हम आपकी हिफ़ाज़त करेंगे। मगर नबी करीम ने यह दावत फ़ौरन क़बूल न की।

उस वक़्त की एक रात पैग़ंबरे-इस्लाम को आसमान पर उठा लिया गया। उन्हें एक जानवर बनाम बर्राक़ के वसीले से यरूशलम से होकर

सातवें आसमान पर उठा लिया गया।[1] यह सफ़र मेराज कहलाता है। इस सफ़र का जिस्मानी और रूहानी पहलू था। नबी करीम (सलअम) को सब कुछ दिखाया गया जो आसमानो-ज़मीन में पाया जाता है। आपने अल्लाह तआला के जलाल और तजल्ली का दीदार हासिल किया। यह अल्लाह की तरफ़ से इनसान के लिए सबसे बड़ी बख़्शिश थी।

मेराज के दौरान अल्लाह तआला ने पाँच वक़्त की नमाज़ का हुक्म सादिर फ़रमाया। आपको दीगर साबिक़ अंबिया से मिलने और नमाज़ में इमामत करने का शरफ़ भी हासिल हुआ। इस तजरिबे से नबी करीम (सलअम) को दुख के साल में उम्मीद और ताक़त हासिल हुई।

## हिजरत

जब आपने पहचान लिया कि क़ुरैशी मुसलमानों को ख़त्म करने पर तुले हुए हैं तो आपने 200 पैरोकारों को इजाज़त दी कि वह हिजरत करके यस्रिब (मदीना) में ठहरें जहाँ उन्हें पहले ही से दावत दी गई थी। कुछ देर के बाद आप भी क़ुरैशियों से बचते बचते मदीना पहुँचे। आपके क़रीबी साथी अबू बक्र (रदियल्लाहु अन्हु) भी साथ आए। वह 622 ई. में मदीना पहुँचे। मक्का से मदीना मुंतक़िल होने का यह सिलसिला हिजरत कहलाता है।

1 चूँकि यरूशलम इस सफ़र का एक पड़ाव था इसलिए यरूशलम मुसलमानों के नज़दीक मक्का और मदीना के बाद तीसरा दर्जा रखता है।

पैग़ंबरे-इस्लाम की आमद वहाँ के शहरियों के लिए बड़ी ख़ुशी का बाइस थी। यहाँ तक कि यस्रिब का नाम बदलकर मदीनतुन-नबी यानी नबी का शहर रख दिया गया। उसका मुख़तसर नाम मदीना है। सोलह साल के बाद ख़लीफ़ा हज़रत उम्र ने फ़रमाया कि मुसलिम कैलंडर हिजरत के साल से शुरू हो।

हिजरत इस्लाम का एक निहायत अहम वाक़िया है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और जब फ़रेब करते थे काफ़िर कि तुझको क़ैद में कर दें या मार डालें या निकाल दें। और वह भी दाँव करते थे और अल्लाह भी दाँव करता था और अल्लाह का दाँव सबसे बेहतर है। (अल-अनफ़ाल 8:30)

हिजरत से एक नए दौर का आग़ाज़ हुआ।

जिन मुसलमानों ने मक्का से हिजरत फ़रमाया उन्हें मुहाजिर कहा गया, और जिन्होंने मदीना में उनका इस्तिक़बाल किया उन्हें अनसार कहा गया। अब मुहाजिर और अनसार इस्लाम और आपकी राहनुमाई में मुत्तहिद हुए। यों उम्मत की बुनियाद रखी गई। मदीना में हज़रत मुहम्मद (सलअम) न सिर्फ़ मुसलमानों बल्कि ग़ैरमुसलमानों के भी राहनुमा थे। अब आप न सिर्फ़ पैग़ंबर बल्कि हाकिम भी थे। उन्हें मज़ीद मुकाशफ़े हासिल होते रहे। उनका ताल्लुक़ ख़ासकर क़ानून और निज़ाम से थे।

मसलन माहे-रमज़ान को रोज़ों का महीना क़रार दिया गया। नीज़, नमाज़ का रुख़ (क़िबला) यरूशलम न रहा बल्कि मक्का मुक़र्रर हुआ।

उम्मत को कई-एक मसायल का सामना करना पड़ा। इस्लाम के कुछ दुश्मन उनके दरमियान और कुछ मदीना से बाहर रहते थे। बहुत-से लोगों ने क़ुरैशियों के साथ मिलकर मुसलमानों को बरबाद करने की साज़िश की। इन नाज़ुक हालात के पेशे-नज़र मुसलमान जागते रहे। उन्होंने अपने दुश्मनों के साथ सख़्ती से बरताव किया।

मक्का के क़ुरैशी अब भी मुसलमानों को ख़त्म करने के जोश में थे। तब वह एक हज़ार फ़ौज लेकर मुसलमानों पर चढ़ आए। यह वाक़िया 624 ई. में पेश आया। मुसलमानों के सिर्फ़ 300 फ़ौजी थे। जंग बद्र के मैदान में छिड़ गई। मुसलमान फ़ौज मक्का के क़ुरैशियों पर ग़ालिब आई।

एक साल के बाद क़ुरैशियों ने उहुद में मुसलमानों पर हमला किया। इस बार ग़ैरमुसलमानों ने फ़तह पाई। मगर उनके इतने फ़ौजी ज़ख़्मी हुए कि जंग का मक़सद पूरा न हुआ। आख़िर में मुसलमानों ने उन्हें पीठ दिखाने पर मजबूर किया। 627 ई. में क़ुरैशियों ने मदीना पर धावा बोलकर उसका मुहासरा किया। लेकिन आख़िरकार क़ुरैशियों को पीछे हटना पड़ा।

628 ई. में पैग़ंबरे-इस्लाम 1400 मुसलमान के साथ अपने वतन मक्का के लिए रवाना हुए ताकि वहाँ इबादत करें। आपने मक्का के

क़ुरैशियों के साथ मुआहदा किया था कि मक्का के क़ुरैशियों और मुसलमानों के साथ एक जैसा सुलूक किया जाए। नीज़, जब मुसलमान इबादत के लिए मक्का में दाख़िल होंगे तो शहर के बाशिंदे तीन दिन पहले शहर से निकल चुके होंगे। मुआहदे में मज़ीद बहुत-सी पेचीदा शरायत दर्ज थीं जो ज़्यादातर क़ुरैशियों के हक़ में थीं।

ताहम क़ुरैशियों ने मुआहदे को तोड़ दिया। तब नबी करीम (सलअम) और मुसलमान फ़ौज ने मक्का पर हमला किया। इस बार उन्होंने बग़ैर किसी रुकावट के 630 ई. में मक्का शहर पर क़ब्ज़ा किया। शहर में दाख़िल होते वक़्त आप क़ुरान शरीफ़ की दर्जे-ज़ैल आयत बोले।

> आया सच और निकल भागा झूट। (अल-इसरा 17:81)

फिर आपके हुक्म पर काबा के 360 बुतों को चकनाचूर कर दिया गया। अपने दुश्मनों से आपने कहा, "आज के दिन तुम पर कोई इलज़ाम नहीं है। तुम सब अपने अपने घर जाओ, क्योंकि तुम सब आज़ाद हो।"[1] यों मुसलमानों को एक अच्छा नमूना दिया गया कि हारे हुए दुश्मन के साथ कैसा सुलूक किया जाए।

632 ई. में हज़रत मुहम्मद (सलअम) 14,000 मुसलमानों के साथ अपने अलविदाई हज के लिए मक्का रवाना हुए। अराफात के मैदान में आपने 15 मुआशरती पहलुओं पर ज़ोर दिया जिनसे इनसानी रिश्ते

1 Ibn Sa'd, *Kitab al-Tabaqat*, Series II, Vol. 2 (Leiden, 1330 A.H.), pp 54-55.

मुतअस्सिर होते हैं। आपने अल्लाह की वहदानियत और इस्लाम के पैग़ाम पर ज़ोर देकर यह फ़रमाया कि ज़िंदगी, नबियों, औरतों और ग़ुलामों की बेहुरमती न की जाए। आपने मुसलिम बिरादरी की अहमियत भी छेड़ी। आख़िर में आपने कहा कि मैंने दो चीज़ें उम्मत को मीरास में दी हैं : अल्लाह की किताब और उसके पैग़ंबर की सुन्नत। उस वक़्त आपको वह आख़िरी मुकाशफ़ा हासिल हुआ जिसका ज़िक्र हो चुका है (अल-माइदा 5:3)।

अपने अलविदाई हज के ठीक तीन महीने बाद नबी करीम (सलअम) बीमार पड़ गए। 632 ई. में दोपहर के ठीक 12 बजे आप नमाज़ करते वक़्त रेहलत फ़रमा गए।

हज़रत अबू बक्र (रदियल्लाहु अन्हु) ने ठीक कहा, "अगर आपने मुहम्मद (सलअम) की परस्तिश की तो वह सचमुच मर चुके हैं; लेकिन अगर आप अल्लाह तआला की इबादत करते हैं तो वह ज़िंदा है और वह कभी नहीं मरने का।"[1]

## नबियों का मोहर

क़ुरान शरीफ़ और ख़ुद पैग़ंबरे-इस्लाम ने साफ़ कहा कि आप सिर्फ़ इनसान हैं। आप न तो ख़ुदा हैं, न उसके बेटे। वह सिर्फ़ अल्लाह के

---

1 Ibn Ishaq, *Sirat Rasul Allah*, transl. by A. Guillaume, 683.

नबी हैं जिन्हें इनसान की राहनुमाई के लिए भेजा गया है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> तू कह, ऐ लोगो, मैं रसूल हूँ अल्लाह का तुम सबकी तरफ़ जिसकी हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में। ... सो ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके भेजे हुए नबी उम्मी पर जो कि यक़ीन रखता है अल्लाह पर और उसके सब कलामों पर और उसकी पैरवी करो ताकि तुम राह पाओ। (अल-आराफ़ 7:158)

क़ुरान शरीफ़ के मुताबिक़ पैग़ंबरे-इस्लाम अल्लाह का तमाम मख़लूक़ात, इनसानों और ग़ैरइनसानों पर मेहरबानी का इज़्हार हैं।

> और तुझको जो हमने भेजा सो मेहरबानी कर कर जहाँ के लोगों पर। (अल-अंबिया 21:107)

पैग़ंबरे-इस्लाम का पैग़ाम तमाम साबिक़ मुकाशफ़ों की तकमील है। क़ुरान शरीफ़ और पैग़ंबरे-इस्लाम इस पर ज़ोर देते हैं कि आपकी नबुव्वत आख़िरी नबुव्वत है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> मुहम्मद बाप नहीं किसी का तुम्हारे मर्दों में से लेकिन रसूल है अल्लाह का और मोहर सब नबियों पर। और है अल्लाह सब चीज़ों को जाननेवाला।
>
> (अल-अहज़ाब 33:40)

इस्लाम का ईमान यह है कि हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने रसूलों के एक लंबे सिलसिले पर मोहर कर दिया है।

हम मुसलमान ईमान रखते हैं कि क़ुरान शरीफ़ सौ फ़ीसद सच है। अब नबियों का सिलसिला ख़त्म हो चुका है। आगे के ज़माने के लिए नबियों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी बल्कि उन लोगों की ज़रूरत पड़ेगी जो ख़ुदातरस, दीनदार, बेदारी लानेवाले, इसलाह करनेवाले और सोचनेवाले हों।

## ईसाई का जवाब

ईसाई और मुसलमान इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) अल-मसीह हैं। लेकिन इसका क्या मतलब है कि हज़रत ईसा अल-मसीह हैं? किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है कि अल-मसीह तमाम नविश्तों और नबियों की तकमील है। ईसाई का ईमान यह है कि वह तमाम इनसानों के नजातदहिंदा हैं। अल-मसीह ने फ़रमाया,

> राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। (यूहन्ना 14:6)

इसलिए ईसाई ईमान रखते हैं कि तमाम सच्चाइयों की कसौटी हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) हैं। किताबे-मुक़द्दस यही कुछ फ़रमाती है।

इसलिए हम ईसाई पैग़ंबरे-इस्लाम का किरदार पूरी किताबे-मुक़द्दस की रौशनी में देखते हैं। और किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ख़ुदा के इनकिशाफ़ का उरूज हैं। हम ख़ुश हैं कि पैग़ंबरे-

इस्लाम और क़ुरान शरीफ़ कुछ बातों में किताबे-मुक़द्दस की सच्चाइयों की तसदीक़ करते हैं। मिसाल के तौर पर हम इसकी क़दर करते हैं कि पैग़ंबरे-इस्लाम हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) के मरकज़ी किरदार पर ज़ोर देते हैं।

## मुसलमान की विज़ाहत

मुसलमान हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) की दिल की गहराई से इज़्ज़त करते हैं। ताहम हम यह नहीं मानते कि वह तमाम दीगर नबियों से आला दर्जा रखते हैं। हाँ, क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने मुहम्मद (सलअम) की आमद की पेशगोई की,

> ऐ बनी इसराईल, मैं भेजा हुआ आया हूँ अल्लाह का तुम्हारे पास यक़ीन करनेवाला, उस पर जो मुझसे आगे है तौरेत और ख़ुशख़बरी सुनानेवाला एक रसूल की जो आएगा मेरे बाद उसका नाम है अहमद।
> (अस-सफ़्फ़ 61:6)

बिसमिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

# उम्मत

## मुसलिम क़ौम

मुसलिम क़ौम को उम्मत कहा जाता है। उम्मत दीगर किसी भी क़ौम से फ़रक़ है। वह किसी तबक़े, क़ौमियत, नसल, क़बीले या बोली पर मुनहसिर नहीं होती। उम्मत का नाम न बानी के नाम से जोड़ा गया है न किसी वाकिये से बल्कि यह अल्लाह की क़ौम है। उम्मत की ज़िंदगी और सरगरमियाँ सब उसी की शरीअत के ताबे रहती हैं। इसी तौर से उम्मत के हर फ़रद की घरेलू और अवामी ज़िंदगी अल्लाह की शरीअत के ताबे है। अल्लाह तआला की शरीअत उम्मत में अव्वल हैसियत रखती है। जो भी अल्लाह ने फ़रमाया उसे हमेशा ही मानना है जबकि जो भी बात उसने मना की है वह हमेशा ही मना है। जो कुछ अल्लाह तआला ने फ़रमाया है उसे उम्मत कभी भी मनसूख़ नहीं कर सकती।

उम्मत अल्लाह की तरफ़ से क़ायम की गई है। यों क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और चाहिए कि रहे तुममें एक जमात ऐसी जो बुलाती रहे नेक काम की तरफ़ और हुक्म करती रहे अच्छे कामों का और मना करें बुराई से और वही पहुँचे अपनी मुराद को। (आल इमरान 3:104)

क़ुरान शरीफ़ की एक और आयत में उम्मत की तारीफ़ यों की गई है,

> तुम हो बेहतर सब जमातों से जो भेजी गई आलम में हुक्म करते हो अच्छे कामों का और मना करते हो बुरे कामों से और ईमान लाते हो अल्लाह पर।
> (आल इमरान 3:110)

इसका मतलब यह है कि मुसलिम क़ौम नेकी को बढ़ावा देकर बुरे कामों से नफ़रत करती है। मुसलिम क़ौम इनसाफ़ और रास्तबाज़ी पर क़ायम है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> ऐ ईमानवालो, क़ायम रहो इनसाफ़ पर गवाही दो अल्लाह की तरफ़ की अगरचे नुक़सान हो तुम्हारा या माँ-बाप का या क़राबतवालों का अगर कोई मालदार है या मुहताज है तो अल्लाह उनका ख़ैरख़ाह तुमसे ज़्यादा है। (अन-निसा 4:135)

उम्मत अदलो-इनसाफ़ की ख़ास क़दर करती है। एक हदीस में कहा गया है कि सबसे बड़ा जिहाद (यानी अल्लाह की राह में जिद्दो-जहद करना) यह है कि एक बेइनसाफ़ राहनुमा को इनसाफ़ की बात पेश करे।

उम्मत इत्तहाद और बराबर होने के उसूलों से भी जुड़ी हुई है। मुसलिम बिरादरी इस्लाम में सबसे ज़्यादा मुआशरती अहमियत रखती है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> मुसलमान हो हैं सो भाई हैं। (अल-हुजुरात 49:10)

## पैग़ंबरे-इस्लाम और उम्मत

पैग़ंबरे-इस्लाम 622 ई. में हिजरत करके मदीना में जा बसे। मदीना के मुसलमानों ने आपका बड़े ही गरमजोशी से इस्तिक़बाल किया। उनके साथ वह मुहाजिर भी थे जो पहले से मक्का से मदीना में जा बसे थे। मदीना के लोग ख़ुश थे कि नबी (सलअम) आख़िरकार उनके साथ रहने के लिए आए हैं। मुहाजिरों और अनसार ने हज़रत मुहम्मद (सलअम) को अपना सरदार क़बूल किया।

मदीना में पैग़ंबरे-इस्लाम ने जो पहला काम किया वह यह था कि एक मसजिद तामीर करें जो कि मुसलिम उसूलों के मुताबिक़ हो। यह उम्मत की पहली मसजिद थी। यह उम्मत के लिए एक अहम मरहला था।

मदीना में आपका दूसरा काम मक्का से आए हुए मुहाजिरीन की ज़रूरियात पूरी करनी थी। क्योंकि यह लोग नादारी की हालत में आए थे। अनसार ने मुहाजिरीन के साथ अपने मालो-मता में से हर एक चीज़ बाँटी। बिरादरी के इस ख़ूबसूरत इज़हार ने दोनों गुरोहों को एक दूसरे के साथ जोड़ दिया।

मदीना में क़ुरैशी से महफ़ूज़ होने के बाइस पैग़ंबरे-इस्लाम आराम से उम्मत का इंतज़ाम शरीअत की बुनियाद पर क़ायम कर सकते थे। अल्लाह की मरज़ी से आपने मदीना में एक मज़बूत उम्मत क़ायम की। उस वक़्त आपने उम्मत का इख़्तियार उन पर भी जताया जो मुसलमान नहीं थे। यह ज़रूरी था, क्योंकि मदीना में पैग़ंबरे-इस्लाम के मातहत बहुत-से लोगों ने अब तक इस्लाम को क़बूल नहीं किया था। तीन अहम गुरोह मुहाजिर, अनसार और यहूदी थे। आपने हर एक गुरोह का रुतबा, हुक़ूक़ और फ़रायज़ मुक़र्रर किए।

नबी (सलअम) ने एक फ़रमान लिखवाया जिसने मदीना के मुख़्तलिफ़ गुरोहों के ताल्लुक़ात के क़वायद क़लमबंद किए। यह फ़रमान एक वजह है कि उम्मत अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आई। फ़रमान में लिखा है,

> बिसमिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम। यह फ़रमान मुहम्मद (सलअम) अल्लाह के रसूल की तरफ़ से तमाम मोमिनों को दिया गया है चाहे वह क़ुरैशी हों या मदीना के रहनेवाले, नीज़ दीगर उन सबको जिन्होंने उनका साथ दिया है।[1]

इस फ़रमान में यह बयान था कि यहूदियों की बेइज़्ज़ती नहीं करनी है। उनके हुक़ूक़ मुसलमानों के बराबर हैं, और वह मुसलमानों की तरह अपने मज़हबी फ़रायज़ को अंजाम देने के लिए आज़ाद हैं। यह हुक़ूक़ यहूदियों के इत्तहादियों पर भी लागू हैं। जिन्होंने फ़रमान पर दस्तख़त किए थे उन सबके लिए मदीना मुक़द्दस था। मगर यहूदियों और उनके इत्तहादियों का फ़र्ज़ यह था कि वह मुसलमानों की तरह अपने शहर मदीना का दिफ़ा करें। जो भी धोका देकर उम्मत को दुश्मन के हवाले करने की कोशिश करे उसको सज़ा दी जाएगी। तमाम मुसलमान हर उस शख़्स से नफ़रत करें जिसे वह मुजरिम, बेइनसाफ़, बग़ावती या धोकेबाज़ पाएँ। इस फ़रमान को इस बयान के साथ ख़त्म किया गया कि आइंदा तमाम झगड़नेवाले अपने मामले हज़रत मुहम्मद को पेश करें।[2]

1 A.A. Galwash, *The Religion of Islam*, Vol. I (Cairo: Supreme Council for Islamic Affairs, 1966), p 94.
2 "Al-Medinah," *Shorter Encyclopaedia of Islam*, (London: Luzac & Co., 1956), p 294.

मक्का की निसबत मदीना में नबी (सलअम) की ख़िदमत बहुत फ़रक़ था। अब मुहम्मद (सलअम) को सताया नहीं जाता था। अब आप उम्मत के सरपरस्त थे। अब आप उम्मत के शफ़ीए-आज़म और मुंसिफ़ुल-आज़म थे। आपका इख़्तियार क़बीलों की मंज़ूरी पर मबनी नहीं थी बल्कि अल्लाह की मंज़ूरी पर। तमाम इख़्तियार का सरचश्मा अवाम नहीं था बल्कि अल्लाह तआला जिसने यह इख़्तियार को अता किया। उम्मत की हुकूमत मज़हबी थी। इस हुकूमत के तहत मज़हब और सियासत में इम्तियाज़ नहीं किया जाता था। इनफ़िरादी और अवामी राहनुमाई में भी कोई फ़रक़ नहीं था। मुसलिम समाज के हर शोबे को शरीअत से मुताबिक़त रखना था, चाहे वह सियासी या मुआशरती हो। इसी लिए मदीना की मुसलिम फ़ौज अल्लाह तआला की फ़ौज कहलाती थी और मुसलिम ख़ज़ानाए-रियासत अल्लाह का ख़ज़ाना कहलाता था।

गो नबी (सलअम) मदीना में हुक्मरान थे तो भी वह मज़ीद मुकाशफ़ा हासिल करते रहे। मगर मक्का की निसबत मदीना के मुकाशफ़ों में फ़रक़ था। मक्का के मुकाशफ़े ख़ास तौर से ईमान पर मरकूज़ थे जबकि मदीना के मुकाशफ़े वसी तौर से इनसानी ज़िंदगी के दीगर पहलुओं से ताल्लुक़ रखनेवाले थे जैसे खाना-पीना, शादी-ब्याह, इज़दिवाजी और ख़ानदानी ज़िंदगी, अख़लाक़ियात, सलामती और जंग, ब्योपार और तिजारत, ठेकेदार, जिहाद (अल्लाह की राह में जिद्दो-जहद करना),

जुर्म और सज़ा वग़ैरा। इसी दौरान नबी (सलअम) जो भी फ़रमाते थे उस पर अमल भी करते थे।

मदीना में नबी (सलअम) ने कुछ ख़ास फ़रायज़ क़ायम किए। मसलन पाँच वक़्त का नमाज़ अज़ान समेत, रमज़ान के रोज़े और जुमे की ख़ास नमाज़। अब यरूशलम के बदले मक्का को क़िबला मुक़र्रर किया गया। इन तमाम दस्तूरों ने उम्मत को इत्तहाद दिया। मदीना में नबी (सलअम) ने जो उम्मत क़ायम की वह मक़ामी और क़ौमी हुदूद की पाबंद न थी।

## इब्तिदाई उम्मत के मसायल

गो मुसलमान उम्मत क़ायम करने में कामयाब हुए फिर भी अंदर और बाहर उनके कई-एक दुश्मन थे। पहली क़िस्म के दुश्मन मुनाफ़िक़ कहलाते थे। गो यह किसी तरह इस्लाम के दायरे में दाख़िल हो गए थे तो भी वह चुपके से बुतपरस्त रहे थे। उन्हें बरदाश्त किया गया, मगर जब उनका सरदार अबदुल्लाह मर गया तो यह गुरोह ख़त्म हो गया।

दूसरी क़िस्म के लोग यहूदी थे जिन्होंने शुरू में तो हज़रत मुहम्मद (सलअम) की मुहाफ़ज़त क़बूल की मगर सिर्फ़ अपने आरिज़ी फ़ायदे के लिए। यहूदी असल में मुसलमानों के ख़िलाफ़ थे, और वह मक्का के क़ुरैशियों के साथ साज़िशें करने लगे। मदीना के मुसलमान उन मुख़ालिफ़ों से बा-ख़बर रहे, और जब ज़रूरत पड़ती थी तो वह सख़्ती से उनसे निपट लेते थे।

हिजरत के दूसरे साल में मक्का के क़ुरैशी हज़ार फ़ौजियों को लेकर मदीना पर चढ़ आए। उम्मत के महज़ 300 फ़ौजी थे। मदीना से 80 मील दूर बद्र के मक़ाम पर उनका आमना-सामना हुआ। उम्मत के फ़ौजी क़ुरैशियों पर ग़ालिब आए। इस फ़तह ने उम्मत को दीनी और रूहानी तौर से मज़बूत करके तक़वियत बख़्शी।

ताहम मक्का के क़ुरैशी अभी भी उम्मत का सफ़ाया करने पर तुले हुए थे। 625 और 627 में उन्होंने मदीना पर हमला किया। मगर वह दोनों मरतबा उम्मत को शिकस्त देने में नाकाम रहे। इन तमाम मसायल के बावुजूद उम्मत दस सालों के अंदर अंदर तमाम जज़ीरानुमाए-अरब पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब रही।

## उम्मत का फैलाव

जब पैग़ंबरे-इस्लाम की वफ़ात 632 में हुई तो उम्मत मुल्के-अरब में अच्छी तरह से क़ायम हो चुकी थी। नबी (सलअम) अपनी ख़िदमत की आलमगीर फ़ितरत से ख़ूब वाक़िफ़ थे। आप चाहते थे कि यह उम्मत सिर्फ़ मुल्के-अरब तक महदूद न रहे बल्कि सारी दुनिया को इस्लाम का पैग़ाम पहुँचाना था। इसलिए आपने अपने सफ़ीर शाम और मिसर भिजवाकर मुल्क के राहनुमाओं और रिआया को इस्लाम क़बूल करने की दावत दी।

जैसे जैसे इस्लाम फैलता गया अरबों पर महदूद उम्मत जल्द ही आलमगीर उम्मत में तबदील हो गई। इसमें कोई ताज्जुब नहीं कि पैग़ंबरे-

इस्लाम की वफ़ात के बाद उम्मत तेज़ी से जज़ीरानुमा अरब के सरहदों से बाहर भी फैलने लगी। यों फ़रक़ फ़रक़ तहज़ीबों, क़बीलों और क़ौमों के लोग उम्मत की सूरत में मुत्तहिद हुए। आज भी यह उम्मत फैलती जा रही है। इस्लाम का आलमगीर पैग़ाम अब दुनिया के करोड़ों लोगों से क़बूल किया गया है।

उम्मत को क़ायम हुए 1400 साल गुज़र गए मगर ख़ासकर दो ही फ़िरक़े सामने आए हैं : सुन्नी जिसकी अकसरियत है और दूसरे शिया। तफ़रक़े का सबब उम्मत की राहनुमाई था। शिया मुसलमान का ईमान यह है कि उम्मत के इमाम को नबी (सलअम) की नसल से होना चाहिए। उनके नज़दीक यह इमाम बेख़ता है। इसके मुक़ाबले में सुन्नी के नज़दीक क़ौम का इख़्तियार शरीअत की बुनियाद पर है जिसकी तालीम क़ुरान शरीफ़ से और उम्मत के इत्तफ़ाक़ से अख़ज़ किया गया है। गो कि यह दो फ़िरक़े रहे हैं, फिर भी इस्लाम की उम्मत की यगांगत क़ाबिले-ताज्जुब है।

## ख़ुलासा

उम्मत मुसलमानों की क़ौम है जो पूरे तौर से अल्लाह के ताबे रहकर संजीदगी से उसके पैग़ंबर की तालीम की पैरवी करती है। नबी (सलअम) ने इस उम्मत की बुनियाद को अल्लाह तआला की मरज़ी और रहम से रखी। उम्मत तमाम क़बायली, क़ौमी, ज़बानी और नसली वफ़ादारियों से मावरा है।

## ईसाई का जवाब

ईसाई उम्मत के बारे में मुसलमानों के तसव्वुर से मुतअस्सिर होते हैं, क्योंकि उसमें मुआशरती, माली, इनफ़िरादी, तहज़ीबी, सियासी और मज़हबी शोबों के लिए पूरा प्रोग्राम पेश किया गया है। ज़िंदगी के तमाम पहलुओं में उम्मत को शरीअत के तहत लाया गया है। यह एक अज़हद मुअस्सर हुसूल है।

ईसाई उम्मत भी लोगों को फ़रमाती है कि वह अपनी ज़िंदगी के तमाम शोबों को अल्लाह की सलतनत के ताबे लाएँ। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने इस सलतनत को अल्लाह की बादशाही का नाम दिया। ताहम ईसाई यह नहीं मानते कि अल्लाह की बादशाही सियासी ताक़त से क़ायम की जा सकती है। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने दिखाया कि अल्लाह की बादशाही कभी भी सियासी तौर से न सँभाली और न क़ायम की जा सकती है। जब आपके पैरोकार चाहते थे कि वह एक सियासी राहनुमा बन जाएँ तो आपने इनकार कर दिया। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) की क़ुरबानी से अल्लाह ने ज़ाहिर किया कि अपनी जान दूसरों के लिए क़ुरबान करने से ही अल्लाह की बादशाही दुनिया में क़ायम हो जाती है।

अल्लाह की बादशाही ख़ामोशी से फ़रोग़ पाती है। उससे अल्लाह की मुहब्बत और फ़ज़ल इनसानी मुआशरे में फैल जाती है। यह रोटी में ख़मीर, तारीकी में रौशनी या खाने में नमक की मानिंद है। अल्लाह

की बादशाही बातिनी तौर से तहज़ीबों और मुआशरों में अपना असर डालती है। इससे बढ़कर जब भी कोई अपनी ज़िंदगी को अल्लाह के बचानेवाले फ़ज़ल के ताबे रख दे तो अल्लाह ख़ुद मौजूद हो जाता है।

नाकामिल होने के बावुजूद उम्मत को अल्लाह से कहा गया है कि वह क़ौमों के दरमियान अल्लाह की बादशाही को ज़ाहिर करे। वह रास्तबाज़ी और सलामती की ऐसी बादशाही ज़ाहिर करे जो तमाम क़ौमी और तहज़ीबी निज़ामों से मावरा है। इसे किसी मज़हबी या सियासी निज़ाम के ज़रीए पहचाना नहीं जा सकता। उसका मरकज़ न कोई ख़ास मुल्क, न तहज़ीब है। अल्लाह की बादशाही वहीं हाज़िर होती है जहाँ लोगों का अल्लाह और एक दूसरे के साथ सलामती और शादमानी का रिश्ता है।

हम ईसाई इक़रार करते हैं कि हमने अकसर अल्लाह की बादशाही के बारे में ग़लत सोचा है और इसका ग़लत मतलब निकाला है। कभी-कभार ऐसा हुआ है कि हम अल्लाह की बादशाही को एक ख़ास क़ौमी निज़ाम या एक ख़ास मज़हबी तहज़ीब के बराबर समझे हैं। इस अलमिया गुमराही का इक़रार करके तौबा करने की ज़रूरत है।

बिसमिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

# इलाही हिदायत और सलामती

## मुसलमान का अक़ीदा

मुसलमान इलाही हिदायत की शदीद आरज़ू रखता है। दर्जे-ज़ैल अलफ़ाज़ यह ख़ूब बयान करते है,

> सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो पालनेवाला सारे जहान का
> बेहद मेहरबान निहायत रहमवाला
> मालिक रोज़ जज़ा का
> तेरी ही हम बंदगी करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं
> बतला हमको राह सीधी
> राह उन लोगों की जिन पर तूने फ़ज़्ल फ़रमाया जिन पर न तेरा ग़ुस्सा हुआ और न वह गुमराह हुए।
> (अल-फ़ातिहा 1:1-7)

मुसलमान वह है जो इलाही हिदायत के ताबे रहता है। इताअत में सलामती है।

## इस्लाम सुलह-सलामती का दीन है

इस्लाम सलामती का रास्ता है। मुसलिम उम्मत सलामती की क़ौम है जो अल्लाह की मरज़ी के ताबे रहती है। हर कोई सलामती का तजरिबा कर सकता है अगर वह वाहिद ख़ुदा पर ईमान रखकर अल्लाह की मरज़ी और अहकाम के ताबे हो जाए। ताबे होने का क्या मतलब है? ईमान का इक़रार, अल्लाह की किताबों पर ईमान और नबी (सलअम) और अल्लाह की शरीअत की इताअत।

## कलिमा

सच्चे मोमिन के नज़दीक कलिमा मरकज़ी किरदार रखता है यानी यह इक़रार कि “ला इलाहा इल्ल अल्लाहु मुहम्मदुन रसूलुल-ल्लाहि” यानी कोई ख़ुदा नहीं सिवाए अल्लाह के, और मुहम्मद (सलअम) अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह ने इनसान को इताअत का यह अहद अता किया है। अल्लाह के तमाम अंबिया हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) से लेकर हज़रत मुहम्मद (सलअम) तक इसी अहद की तजदीद करने आए हैं।

जो कलिमा को पढ़े लाज़िम है कि वह यह ठीक समझे कि अल्लाह कौन है। कि वह वाहिद ख़ुदा, ख़ालिक़ो-मालिक और तमाम कायनात का हाकिम है। वही मावरा है, और वही तमाम इलाही सिफ़ात रखता है।

वह अपनी तमाम मख़लूक़ात से आलाओ-बरतर है, और उसकी इबादत में किसी और को शरीक करना संगीन गुनाह है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> क्या ठहराए हैं उन्होंने अल्लाह के लिए शरीक कि उन्होंने कुछ पैदा किया है जैसे पैदा किया अल्लाह ने फिर मुश्तबह हो गई पैदाइश उनकी नज़र में? कह, अल्लाह है पैदा करनेवाला हर चीज़ का और वही है अकेला ज़बरदस्त। (अर-रअद 13:16)

यह वाहिद सच्चा ख़ुदा मुहब्बत रखनेवाला, सख़ी, फ़ैयाज़, करीमुन-नफस, रहम करनेवाला, तरस खानेवाला और बख़्शनेवाला है। सलामती उन तमाम मोमिनों को हासिल है जो अल्लाह की मरज़ी के ताबे रहते, उसके अहकाम बजा लाते और अपनी इबादत में किसी ग़ैरको शरीक नहीं करते।

## क़ुरान शरीफ़

अल्लाह ने अपने अहकाम अपनी इलाही किताबों के ज़रीए ज़ाहिर किए हैं। इनमें से क़ुरान शरीफ़ उसका आख़िरी मुकाशफ़ा है। यही सच्चाई की हतमी कसौटी है, और लाज़िम है कि तमाम मुसलमान इसके इख़्तियार के ताबे रहें। मुसलमान क़ुरान शरीफ़ में बयानशुदा इलाही मरज़ी के ताबे रहने से ही सलामती हासिल करते हैं।

# सुन्नत

अल्लाह की वहदानियत और उसकी किताबों को अंबिया के वसीले से ज़ाहिर किया गया है। इसलिए अल्लाह के सच्चे ख़ादिमों को तमाम अंबिया और ख़त्मे-नबुव्वत पर ईमान लाना ज़रूरी है। सिर्फ़ वही मोमिन है जो नबी (सलअम) के ताबे रहे, उस नबी के ताबे जिससे क़ुरान शरीफ़ का इनकिशाफ़ हुआ। नबी (सलअम) की राहों पर चलना सुन्नत है जो इलाही हिदायत का रास्ता है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> जो लोग मुनकिर हैं अल्लाह से और उसके रसूलों से और चाहते हैं कि फ़रक़ निकालें अल्लाह में और उसके रसूलों में और कहते हैं हम मानते हैं बाज़ों को और नहीं मानते बाज़ों को और चाहते हैं कि निकालें उसके बीच में एक राह। ऐसे लोग वही हैं असल काफ़िर, और हमने तैयार कर रखा है काफ़िरों के वास्ते ज़िल्लत का अज़ाब। और जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उसके रसूलों पर और जुदा न किया उनमें से किसी को उनको जल्द देगा उनके सवाब। और अल्लाह है बख़्शनेवाला मेहरबान। (अन-निसा 4:150-152)

अल्लाह तआला इसका तक़ाज़ा करता है कि हम पूरे तौर से हज़रत मुहम्मद (सलअम) और तमाम रसूलों के ताबे रहें। चूँकि तमाम पैग़ंबर अल्लाह की हिदायत लेकर आए इसलिए लाज़िम है कि हर मोमिन इन

पैग़ंबरों की हिदायात की फ़रमाँबरदारी करे। ख़त्मे-नबुव्वत के बारे में क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और तुझको जो हमने भेजा सो सारे लोगों के वास्ते ख़ुशी और डर सुनाने को लेकिन बहुत लोग नहीं समझते। (सबा 34:28)

हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने फ़रमाया कि मेरी तमाम मुंकशिफ़ हुई हिदायात को बजा लाओ। अल्लाह की मरज़ी थी कि हज़रत मुहम्मद (सलअम) की ज़िंदगी तमाम इनसान के लिए नमूना बने। क़ुरान शरीफ़ के बारे में आपकी विज़ाहत इलाही हैसियत रखती है। मुसलमान नबी (सलअम) के इन फ़रमानों के ख़िलाफ़ फ़ैसला नहीं कर सकते। क़ुरान शरीफ़ नबी (सलअम) का मरकज़ी किरदार यों पेश करता है,

> तुम्हारे लिए भली थी सीखनी रसूल अल्लाह की चाल उसके लिए जो कोई उम्मीद रखता है अल्लाह की और पिछले दिन की और याद करता है अल्लाह को बहुत-सा। (अल-अहज़ाब 21:33)

ग़रज़ पूरी सलामती हासिल करने के लिए वाहिद रास्ता यह है कि वह नबी (सलअम) पर पुरख़ुलूस ईमान रखे और उनकी तालीम और नमूने पर चले।

## शरीअत

चूँकि मुसलिम उम्मत सलामती की क़ौम है इसलिए उसे सख़्ती से अल्लाह की हिदायत के ताबे रहना है। यह हिदायत यानी शरीअत क़ुरान शरीफ़ और नबी (सलअम) की सुन्नत दोनों में पाई जाती है। शरीअत के मानी हैं "सड़क" या "रास्ता।" शरीअत ही एक ऐसा रास्ता है जो हमें सलामती की तरफ़ ले जाता है अगर हम सही तौर से उस पर चलें। शरीअत में क़ुरान शरीफ़ और सुन्नत दोनों की हिदायात जमा की गई हैं, और कलिमा ही शरीअत की बुनियाद है।

शरीअत मुसलमानों का मज़हबी क़ानून है। यह अल्लाह का क़ानून है। लाज़िम है कि तमाम मुसलमान अपनी ज़िंदगी के तमाम शोबों को उसके मातहत रखें। जो शरीअत का इनकार करे वह मुसलिम ईमान का इनकार करता है। शरीअत सच्ची मुसलिम ज़िंदगी का नमूना पेश करती है। यही मुसलिम उम्मत को मुत्तहिद करती है। सख़्ती से शरीअत पर अमल करने से मोमिन इस दुनिया और आनेवाली दुनिया में ख़ुशी की ज़िंदगी बसर करने की उम्मीद रखता है। शरीअत वह राह है जिससे अल्लाह अपनी मरज़ी से इनसान की हिदायत करता है। शरीअत सलामती का रास्ता है, क्योंकि शरीअत में तमाम इलाही हिदायात जमा की गई हैं।

## इनफ़िरादी इबादत

ताबे होने का अमल अव्वल एक इनफ़िरादी कोशिश है। अल्लाह ने लोगों को अपने नबियों और नविश्तों के ज़रीए हिदायत अता की है। यह सब कुछ उसने इसलिए किया कि इनसान उसके ताबे हो जाए। लाज़िम है कि हर मोमिन उसके ताबे हो जाए ताकि सलामती हासिल करे।

सिर्फ़ ईमान ही काफ़ी नहीं है। लाज़िम है कि इनसान उन तमाम फ़रायज़ को निभाए जिनका तक़ाज़ा इस्लाम करता है। इबादत बहुत ज़रूरी है। इबादत का मतलब क्या है? यह कि हम तमाम बुनियादी फ़रायज़ अदा करें और साथ ही दीगर तमाम नेक काम अंजाम दें। इबादत में हम पूरे तौर से अल्लाह की मरज़ी के ताबे रहते हैं।

मुसलमान का ईमान है कि सलामती सिर्फ़ पूरे तौर से ताबे रहने से हासिल हो सकती है। ख़ास तौर से कलिमा, क़ुरान शरीफ़, हज़रत मुहम्मद (सलअम) और शरीअत के ताबे रहने से।

जो अल्लाह की मरज़ी के ताबे होने से इनकार करते हैं वह सलामती हासिल नहीं कर सकते। ऐसे लोगों को अज़ाबे-जहन्नुम हासिल होता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है,

> मेरा अज़ाब डालता हूँ मैं उसको जिस पर चाहूँ और मेरी रहमत शामिल है हर चीज़ को सो उसको लिख दूँगा उनके लिए जो डर रखते हैं और देते हैं ज़कात

> और जो हमारी बातों पर यक़ीन रखते हैं।
> (अल-आराफ़ 7:156)

# ख़ुलासा

अल्लाह तआला अपने रहम और इनसाफ़ की बिना पर क़रार देगा कि किस को अज़ाबे-जहन्नुम से बचाना है। रोज़े-महशर के दिन कोई भी चीज़ इनसान को नहीं बचाएगी सिवाए उसके अल्लाह पर पुरख़ुलूस ईमान के और अल्लाह के रहम के। अल्लाह फ़रमाता है,

> तू कह दे कि मुझको शहादत पहुँची मेरे रब की और तुमने उसको झुटलाया। मेरे पास नहीं जिस चीज़ की तुम जल्दी कर रहे हो। हुक्म किसी का नहीं सिवा अल्लाह के। बयान करता है हक़ बात, और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है। (अल-इनाम 6:57)

# ईसाई का जवाब

ईसाई मुसलमान की तरह लोगों को दावत देता है कि वह अल्लाह की सलामती हासिल करें। ईसाई ईमान रखते हैं कि हक़ीक़ी सलामती अल्लाह के साथ सही और पुर-मुसर्रत रिश्ते से हासिल होती है। किताबे-मुक़द्दस बहुत बार अल्लाह के साथ सुलह-सलामती के रिश्ते का ज़िक्र करती है। ईसाई मानते हैं कि अल्लाह के साथ सुलह-सलामती का रिश्ता उस वक़्त क़ायम होता है जब इनसान गुनाह से नजात हासिल

करता है। हम यक़ीन करते हैं कि हमारी फ़ितरत गुनाह से इतनी मुतअस्सिर है कि हम अल्लाह के तमाम अहकाम और मरज़ी को मुनासिब तौर से पूरा कर ही नहीं सकते। हम मानते हैं कि हमारी इबादत नामुकम्मल और नाकाफ़ी है। यही वजह है कि अल्लाह ने हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) के वसीले से इनसान के लिए एक रास्ता फ़राहम किया जिसके वसीले से वह नजात और सलामती हासिल कर सकता है। इंजील जलील फ़रमाती है,

> यह उसका फ़ज़्ल ही है कि आपको ईमान लाने पर नजात मिली है। यह आपकी तरफ़ से नहीं है बल्कि अल्लाह की बख़्शिश है। और यह नजात हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली, इसलिए कोई अपने आप पर फ़ख़्र नहीं कर सकता। हाँ, हम उसी की मख़लूक़ हैं जिन्हें उसने मसीह में नेक काम करने के लिए ख़लक़ किया है। और यह काम उसने पहले से हमारे लिए तैयार कर रखे हैं, क्योंकि वह चाहता है कि हम उन्हें सरंजाम देते हुए ज़िंदगी गुज़ारें।
> (इफ़िसियों 2:8-10)

हमारा ईमान यह है कि हम सलामती और नजात उस काम पर ईमान रखने से हासिल करते हैं जो अल्लाह ने हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) के वसीले से हमारी ख़ातिर किया है।

# इबादत

## मुसलिम रिवाज

इबादत का मतलब अल्लाह के ताबे रहना है। इसलिए यह सबसे अहम रिवाज है। इबादत इस बात का इक़रार है कि अल्लाह ही मालिक है जबकि इनसान उसका ग़ुलाम है। जो भी ग़ुलाम अल्लाह के ताबे रहकर करे वह इबादत है।

## क़ुरान शरीफ़ का फ़रमान

> तू कह दे, मुझको सुझाई मेरे रब ने राह सीधी दीन, सही मिल्लत इब्राहीम की जो एक ही तरफ़ का था और न था शिर्कवालों में। तू कह कि मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी और मेरा जीना और मरना अल्लाह ही के लिए है जो पालनेवाला सारे जहान का है। कोई नहीं उसका

> शरीक। और यही मुझको हुक्म हुआ, और मैं सबसे पहले फ़रमाँबरदार हूँ। (अल-इनाम 6:161-163)

इस्लाम में इबादत का तसव्वुर वसी है। उसका मरकज़ी ख़याल यह है कि हम पूरे दिल से यह मानें कि अल्लाह ही इबादत के लायक़ है।

मुसलिम इबादत के तीन लाज़िमी उसूल हैं,

- अल्लाह के ताबे रहना
- ईमान
- रास्तबाज़ी

इबादत में क्या शामिल है? दुआ, अल्लाह का ख़ौफ़, उम्मीद, भरोसा, आरज़ू, तौबा, क़ुरबानी, मन्नत, फ़रोतनी, पनाह की फ़रियाद, मदद की फ़रियाद, मुनाजात, एहतराम, अंदेशा। इबादत के यह तमाम पहलू सिर्फ़ अल्लाह की इबादत में शामिल होने चाहिएँ। लाज़िम है कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत की जाए। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और जो कोई पुकारे अल्लाह के साथ दूसरा हाकिम जिसकी सनद नहीं उसके पास सो उसका हिसाब है उसके रब के नज़दीक। बेशक भला न होगा मुनकिरों का। (अल-मोमिनून 23:117)

यह इक़रार करना ज़रूरी है कि सिर्फ़ अल्लाह ही हक़ीक़ी है। वह ख़ुदावंद, ख़ालिक़ और रहम करनेवाला है।

## इबादत में दिल की हालत

ख़ौफ़ मुसलिम इबादत का एक मरकज़ी पहलू है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> यह जो है सो शैतान है कि डराता है अपने दोस्तों से। सो तुम उनसे मत डरो और मुझसे डरो अगर ईमान रखते हो। (आल इमरान 3:175)

इसलिए अगर आप भलाई करना चाहें तो हर वक़्त अल्लाह से ख़ौफ़ रखें। तब ही आप सच्ची इबादत करेंगे।

अल्लाह पर उम्मीद और भरोसा भी इबादत के मरकज़ी पहलू हैं। जो हर काम में अल्लाह पर पूरा भरोसा और उम्मीद रखे वह सच्ची इबादत अंजाम देता है। ऐसे शख़्स को ऊँची रूहानी इज़्ज़त हासिल होती है। अल्लाह तआला फ़रमाता है,

> जिसने बनाए सात आसमान तह पर तह किया। देखता है तू रहमान के बनाने में कुछ फ़रक़? फिर दुबारा निगाह कर कहीं नज़र आती है तुझको दराड़?
> (अल-मुल्क 67:3)

तौबा इबादत का एक मरकज़ी हिस्सा है। क़ुरान शरीफ़ नसीहत देता है कि रोज़े-महशर से पहले ही तौबा करके रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारो। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और रुजू हो जाओ अपने रब की तरफ़, और उसकी हुक्म-बरदारी करो पहले इससे कि आए तुम पर अज़ाब। फिर कोई तुम्हारी मदद को न आएगा।
> (अज़-ज़ुमर 39:54)

मुनाजात मुसलिम इबादत का एक निहायत अहम पहलू है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो पालनेवाला सारे जहान का। ... तेरी ही हम बंदगी करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं। (अल-फ़ातिहा 1:1-4)

मतलब है कि मुसलमान न सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत करते और उससे मदद माँगते हैं बल्कि हर तरह से सिर्फ़ उसी की इबादत और सिर्फ़ उसी से मदद माँगते हैं। क्योंकि वही अकेला बंदगी के लायक़ है और वही अकेला लोगों की मदद कर सकता है। हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने फ़रमाया कि "अगर तुमको मदद की ज़रूरत हो तो अल्लाह तआला के हुज़ूर इल्तिजा करो।"[1]

मन्नत मानकर उसे पूरा करना भी इबादत का हिस्सा है। उसमें लोगों की ख़िदमत भी शामिल है। अगर कोई ब्योपार, माली मामलात या मुआहदे के सिलसिले में अपनी मन्नतें पूरी करे तो यह भी इबादत ही

1 अल-बुख़ारी, हदीस।

है। इसमें दूसरों के साथ तमाम ताल्लुक़ात शामिल हैं। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> पूरा करते हैं मन्नत को और डरते हैं उस दिन से कि उसकी बुराई फैल पड़ेगी।
> (अल-इनसान 76:7)

अल्लाह में पनाह लेना भी इबादत का एक अहम पहलू है। अल्लाह ख़ालिक़, सहारा देनेवाला, हाकिम और यौमे-हश्र का मालिक है। इसलिए सिर्फ़ अल्लाह ही हर वक़्त इबादत के लायक़ है। यह इनसान का फ़र्ज़ है कि वह बुराई का सामना करते वक़्त अल्लाह में पनाह लेकर उसकी इबादत करे। अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त करता है जो इबादत के वक़्त उसमें पनाह लेते हैं।क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> तू कह, मैं पनाह में आया लोगों के रब की, लोगों के बादशाह की। (अन-नास 114:1-2)

क़ुरबानी भी एक अहम इबादत है। क़ुरबानी इसलिए नहीं है कि अल्लाह के ग़ैज़ो-ग़ज़ब को ठंडा करे क्योंकि अल्लाह एक ही है। अल्लाह हमारी क़ुरबानी के गोश्त और ख़ून में दिलचस्पी नहीं लेता। जब हम एक जानवर को क़ुरबान करते हैं तो यह शुक्रगुज़ारी का इज़हार है, जिसके सिलसिले में हम क़ुरबानी को अपने अज़ीज़ों में बाँटते हैं। अहम बात

यह है कि हमारा यह अमल भी इबादत की रूह में सरंजाम दिया जाए। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> अल्लाह को नहीं पहुँचता उनका गोश्त और न उनका लहू, लेकिन उसको पहुँचता है तुम्हारे दिल का अदब। (अल-हज 22:37)

क़ुरान शरीफ़ की एक दूसरी आयत फ़रमाती है,

> तू कह कि मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी और मेरा जीना और मरना अल्लाह ही के लिए है जो पालनेवाला सारे जहान का है। कोई नहीं उसका शरीक। और यही मुझको हुक्म हुआ, और मैं सबसे पहले फ़रमाँबरदार हूँ। (अल-इनाम 6:162-163)

अब हमें कुछ लाज़िमी रसूमात पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

## मुसलमान के फ़रायज़

हमने देखा था कि इबादत इनसान की जिस्मानी और रूहानी ज़िंदगी को पाक-साफ़ करने का एक वसीला है। हमने यह भी बयान किया है कि इबादत किस रूह में करनी है। इसके अलावा अल्लाह ने कुछ लाज़िमी फ़रायज़ भी फ़रमाया है। हम कह चुके हैं कि इनमें दर्जे-ज़ैल बातें शामिल हैं।

- अल्लाह के ताबे रहकर उसके फ़रायज़ की अदायगी

- तमाम अक़ीदों पर ईमान
- नेक आमाल

इबादत के फ़रायज़ के पाँच सतून हैं :

- कलिमा का इक़रार यानी यह इक़रार कि कोई ख़ुदा नहीं सिवाए अल्लाह के और मुहम्मद (सलअम) अल्लाह के रसूल हैं
- नमाज़ (सलात)
- ज़कात
- माहे-रमज़ान के रोज़े (सौम)
- काबा शरीफ़ की ज़ियारत यानी हज

इबादत करते वक़्त दर्जे-ज़ैल बातों पर ईमान रखना है :

- अल्लाह तआला पर
- उसके फ़रिश्तों पर
- उसकी किताबों पर
- उसके रसूलों पर
- आख़िरत के दिन पर
- उसकी तमाम क़ुदरत पर

एक आख़िरी बात : अल्लाह की इबादत यों करनी है जिस तरह आप अल्लाह को देख रहे हों। गो आप उसे नहीं देख सकते मगर अल्लाह तआला आपको ज़रूर देख रहा है।

इस जगह पर हम फ़रायज़ के सिर्फ़ दो पहलुओं पर ध्यान देंगे, रास्तबाज़ी और नमाज़।

## रास्तबाज़ी

रास्तबाज़ी इबादत का एक लाज़िमी हिस्सा है। क्योंकि हर नेक काम जो अल्लाह तआला के ताबे रहकर किया जाए वह हक़ीक़ी इबादत है। रास्तबाज़ी का ताल्लुक़ हमारी ज़ाती और अवामी ज़िंदगी से है, और हम उसका हर पहलू यहाँ बयान नहीं कर सकते। जब हम ग़रीब की मदद करते, भूके को खाना खिलाते, मरीज़ की मदद करते या इसी तरह का कोई और नेक काम करते हैं तो यह हक़ीक़ी इबादत है। शर्त यह है कि हम यह कुछ अपने ख़ुदग़रज़ मक़ासिद पूरे करने के लिए न करें बल्कि अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> नेकी कुछ यही नहीं कि मुँह करो अपना मशरिक़ की तरफ़ या मग़रिब की। लेकिन बड़ी नेकी तो यह है जो कोई ईमान लाए अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर और फ़रिश्तों पर और सब किताबों पर और पैग़ंबरों पर। और दे माल उसकी मुहब्बत पर रिश्तेदारों को और यतीमों को और मुहताजों को और मुसाफ़िरों को और माँगनेवालों को और गरदनें छुड़ाने में। और क़ायम

> रखे नमाज़ और दिया करे ज़कात। और पूरा करनेवाले अपने इक़रार को जब अहद करें। और सब्र करनेवाले सख़्ती में और तकलीफ़ में और लड़ाई के वक़्त। यही लोग हैं सच्चे और यही हैं परहेज़गार।
>
> (अल-बक़रा 2:177)

## नमाज़ (सलात)

नमाज़ इबादत की बुनियादी और सबसे अहम फ़र्ज़ है। हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने फ़रमाया, “नमाज़ मज़हब का सतून है, और जो उसे तर्क करे वह मज़हब का सतून गिरा देता है।”[1] एक और मौक़े पर आप (सलअम) ने फ़रमाया कि “नमाज़ इबादत का जौहर है।” नमाज़ करते वक़्त ही मुसलमान पूरी तरह से और अमली तौर पर अल्लाह तआला के ताबे हो जाता है।

नमाज़ एक मज़हबी फ़र्ज़ है। यह इबादत है। अल्लाह तआला फ़रमाता है,

> और कहता है तुम्हारा रब, मुझको पुकारो कि पहुँचूँ तुम्हारी पुकार को। बेशक जो लोग तकब्बुर करते हैं मेरी बंदगी से अब दाख़िल होंगे दोज़ख़ में ज़लील होकर।
>
> (अल-ग़ाफ़िर 40:60)

1 Reported by Umar, *Al-Hadith*, Vol. 111 (Lahore: The Book House by Fazul Karim, N.D.), p 169.

नमाज़ के फ़र्ज़ से हम अल्लाह का एहतराम करते हैं। तमाम मोमिनों को हुक्म दिया गया है कि वह नमाज़ अदा करें। जो जान-बूझकर नमाज़ तर्क करे वह इस्लाम को तर्क करता है।

नमाज़ मज़हब का दिल और जौहर है। अदालत के दिन दीगर फ़रायज़ से ही पहले नमाज़ का हिसाब किया जाएगा। एक हदीस फ़रमाती है, "जिसकी नमाज़ कामिल क़रार दी जाए उसके तमाम आमाल अल्लाह के हुज़ूर मंज़ूर होंगे।"[1] अल्लाह तआला की वहदानियत के इक़रार के बाद नमाज़ का फ़र्ज़ सबसे अहम है।

मुसलमान को पाँच वक़्त की नमाज़ का हुक्म दिया गया है, यानी फ़जर, ज़ुहर, असर, मग़रिब और अशा की नमाज़।

नमाज़ के दौरान जो हरकतें नमाज़ी करता है वह ख़ूब अल्लाह तआला के ताबे रहने का इज़हार करती हैं। और उस दौरान जो दुआ की जाती है वह अल्लाह तआला के ताबे रहने में उसको तक़वियत देती है। पाँच नमाज़ों को अदा करने से मोमिन नज़मो-ज़ब्त और क़ुव्वते-इरादी सीख जाता है। नमाज़ ईमान की बुनियाद को मज़बूत करके मोमिन को नेक काम करने, अल्लाह के ताबे रहने, सुकून हासिल करने और पुख़्ता रहने के लिए तैयार करती है। वह इनसान को वह हिदायत देती है जिससे वह सिराते-मुस्तक़ीम पर चल सके—यानी ईमानदारी, सब्र, हिम्मत, एतमाद और उम्मीद की राह पर।

---

1 Reported by Abi Hurairah, *Sahih Tirmidh*, (Damascus: L-lftai by Minhaji Slihin & Izudin Baliyk, N.D.), p 134.

इससे पहले कि मुसलमान नमाज़ में अपने आपको अल्लाह को पेश करे उसको साफ़-सुथरा होना चाहिए। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> बेशक अल्लाह को पसंद आते हैं तौबा करनेवाले और पसंद आते हैं गंदगी से बचनेवाले। (अल-बक़रा 2:222)

इस्लाम सब तरह की गंदगी से जिस्म की सफ़ाई पर ज़ोर देता है। साथ साथ वह ग़लत, झूटे और बिगड़े हुए अक़ीदों और रवैयों पर भी ज़ोर देता है। ज़हन, जिस्म और पोशाक की सफ़ाई को तहारत कहा जाता है। मोमिन सिर्फ़ तहारत की हालत में ही नमाज़ पढ़ सकता है। इस तहारत को अंजाम देने के लिए कम से कम जिस्म के खुले हिस्सों को पानी से धोना है। इसे वुज़ू कहते हैं। यह सारी बातें नमाज़ की अहमियत का इज़हार करती हैं।

अगर मुमकिन हो तो नमाज़ को किसी जमात के साथ मसजिद में अदा करनी है। कम से कम जुमे की नमाज़ को मसजिद में अदा करनी है। दीगर तमाम मौक़ों पर अगर मसजिद में मिलकर नमाज़ पढ़ना नामुमकिन हो तो मोमिन घर में या जहाँ कहीं भी हो यानी अपनी दुकान पर, पार्क में, रेलवे स्टेशन में या बहरी जहाज़ पर नमाज़ अदा कर सकता है। बहुत बार मुसलमान सड़क के किनारे नमाज़ अदा करते हुए दिखते हैं।

मुसलमान कहीं पर भी नमाज़ अदा कर सकते हैं। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और यह कि मसजिदें अल्लाह की याद के वास्ते हैं सो मत पुकारो अल्लाह के साथ किसी को।
> (अल-जिन्न 72:18)

ताहम बुनियादी बात यह है कि मोमिन जहाँ भी हो नमाज़ करते वक़्त नंगे पाँव मक्का की तरफ़ मुँह करके खड़ा हो और यह इबादत क़ुरान शरीफ़ की ज़बान में अदा की जाए। नमाज़ का यह आलमगीर रिवाज तमाम दुनिया के मुसलमानों और ग़ैरमुसलमानों में इम्तियाज़ करता है। इस रिवाज से उम्मत का इत्तहाद ज़ाहिर होता है।

हम तमाम फ़रायज़ को तफ़सील से बयान न कर सके। मगर नमाज़ इबादत का एक मरकज़ी फ़र्ज़ है। बल्कि नमाज़ इस्लाम में इबादत के बातिनी मतलब को ज़ाहिर करती है। हक़ीक़त में इस्लाम का मतलब इबादत ही है। इस इबादत से पूरी ज़िंदगी मुतअस्सिर हो जाती है। मोमिन इससे शुक्रगुज़ारी से अपने आपको पूरे तौर पर अल्लाह के ताबे रख देता है। यों वह अपने ईमान की हक़ीक़त की गवाही देता है। इबादत के ज़रीए मुसलमान ज़ाहिर करता है कि इस्लाम का मतलब इताअत और सलामती है।

ग़रज़ हम यक़ीन से कह सकते हैं कि इस्लाम इबादत के बग़ैर हो ही नहीं सकता। इबादत इस्लाम की इमारत के सतून मुहैया करती है।

एक हदीस में अबू हुरैरा फ़रमाते हैं कि एक अरबी आदमी आप (सलअम) के पास आया और कहने लगा, "आप मुझे हिदायत दें ताकि मैं कोई ऐसा काम करूँ जिससे जन्नत में दाख़िल हो सकूँ।"

रसूल (सलअम) ने जवाब दिया, "अल्लाह तआला की इबादत करो और उसके साथ किसी और को शरीक मत करो। मुक़र्ररा नमाज़ अदा करो। ज़कात दो और रमज़ान के रोज़े की पाबंदी करो।"

उस आदमी ने कहा, "उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, जो कुछ आपने फ़रमाया उसमें न मैं इज़ाफ़ा करूँगा, न कमी।"

जब वह चला गया तो हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने फ़रमाया, "अगर तुम किसी को देखना चाहो जो जन्नत में दाख़िल होगा तो इसी को देखो।"[1]

ग़रज़, अगर कोई इन तमाम बातों में से एक भी न छोड़े तो वह जन्नत में दाख़िल होगा। मुनासिब इबादत के वसीले से ही इनसान जन्नत की उम्मीद कर सकता है।

## ईसाई का जवाब

सही इबादत मुसलमानों के लिए मरकज़ी हैसियत रखती है। जिन ईसाइयों के मुसलमान दोस्त हैं वह इबादत के सिलसिले में मुसलमानों की ख़ुलूसदिली और बंदगी से मुतअस्सिर होते हैं। नमाज़, रोज़ा और

1 अल-बुख़ारी, हदीस।

ज़कात के फ़रायज़ अहम हैं। ईसाई दाद देते हैं कि मुसलिम इबादत का मरकज़ अल्लाह के ताबे रहना है। मुसलमानों की बंदगी को देखकर हमें भी सवाल करना चाहिए कि क्या हमारी इबादत भी मुनासिब नज़मो-ज़ब्त के साथ अदा की जाती है?

हम ईसाइयों को अजीब लगता है कि जुमे की नमाज़ मं ख़वातीन शामिल नहीं होतीं। ईसाई जमात में सब हाज़िर होते हैं, क्योंकि अल्लाह के सामने सब बराबर ही होते हैं। सब मिलकर ख़ुदा की परस्तिश करते हैं।

साथ साथ तौरेतो-इंजील फ़रमाती है कि हम इबादत के तमाम रस्मो-रिवाज से बढ़कर अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त रखें। कि हमारा अल्लाह के साथ शख़्सी ताल्लुक़ क़ायम हो जाए। हमारी इबादत के तर्ज़े-अमल और रिवाज इतनी अहमियत नहीं रखते जितनी हमारे दिल की हालत। ज़्यादा अहम यह है कि इबादत करते वक़्त हमारा रवैया, दिल का रुझान क्या है। हम किस नीयत से इबादत करते हैं? हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) हमें दावत देते हैं कि हम यह जानकर अल्लाह की परस्तिश करें कि वह हमारा आसमानी बाप है। हमें दावत दिया जाता है कि हम अपने आसमानी बाप की परस्तिश रूह और सच्चाई से करें। हमको दावत दी जाती है कि हम ख़ुशी मनाकर मिलकर अल्लाह की परस्तिश करें, यह जानते हुए कि उसने अपने फ़ज़ल और मुहब्बत से हमारे लिए सब कुछ किया है।

यही सबब है कि अशाए-रब्बानी मरकज़ी अहमियत रखती है। क्योंकि इसमें ईमानदार अल्लाह के हुज़ूर एक दूसरे के साथ रोटी खाकर और अंगूर का रस पीकर रिफ़ाक़त रखते हैं। यह ईसाई इबादत का सबसे गहरा और मानीख़ेज़ इज़हार है। यह ज़ाहिर करता है कि हमारा प्यार करनेवाला आसमानी बाप अपने फ़ज़ल से हमारे बीच में हाज़िर रहता है।

जब हम अल्लाह की हुज़ूर इबादत करते हैं तो मुसलमान और ईसाई दोनों को याद दिलाई जाती है कि सिर्फ़ वह इबादत अल्लाह को मंज़ूर है जो सही नीयत से की जाए।

## मुसलमान की विज़ाहत

बेशक मुसलमान इबादत के सही तर्ज़ पर बहुत ज़ोर देते हैं। मगर साथ साथ मुसलमानों को इसकी ख़ास फ़िकर है कि इबादत करते वक़्त उसका रवैया और नीयत भी ठीक हो, कि वह दिल की गहराई से अल्लाह के ताबे हो। मुसलिम इबादत में सही रिवाज और सही नीयत दोनों ही ज़रूरी हैं। मुसलिम इबादत में रास्तबाज़ी का पहलू सही रवैये और नीयत पर ज़ोर देता है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> नेकी कुछ यही नहीं कि मुँह करो अपना मशरिक़ की तरफ़ या मग़रिब की लेकिन बड़ी नेकी तो यह है जो कोई ईमान लाए अल्लाह पर। (अल-बक़रा 2:177)

बिसमिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

# चाल-चलन

## ठीक चाल-चलन

क़ादिरे-मुतलक़ ने हज़रत मुहम्मद (सलअम) पर शरीअत की अबदी कसौटी का इनकिशाफ़ किया। यही मुसलिम चाल-चलन की बुनियाद है।

## शरीअत क्या है?

शरीअत के मानी हैं "रास्ता जिस पर चलना है।" यह रास्ता इनसान को इताअत की तरफ़ ले जाता है। शरीअत वह इलाही क़वानीन है जिनका इनकिशाफ़ हज़रत मुहम्मद (सलअम) पर हुआ ताकि मुसलिम क़ौम की राहनुमाई हो। इनमें तफ़सील से फ़रमाया गया है कि मुसलिम चाल-चलन इनफ़िरादी और अवामी तौर पर किस तरह होना चाहिए। क़वानीन का यह आलमगीर निज़ाम मुसलिम चाल-चलन को अच्छी तरह बयान करता है। यह तमाम मुसलमानों को उम्मत की सूरत में मुत्तहिद करता

है, चाहे वह मुसलिम या ग़ैरमुसलिम मुल्क में रहें। शरीअत के वसीले से ही इस्लाम एक ही क़ौम, एक ही तहज़ीब और एक ही आलमगीर निज़ाम बन गया।

## शरीअत में क्या पाया जाता है?

शरीअत में इनसानी अमल के हर एक पहलू पर ध्यान दिया गया है, चाहे वह दुनियावी हो या रूहानी। शरीअत बयान करती है कि सियासी, माली और मुआशरती मामलों को किस तरह चलाना है। इबादत के तर्ज़-तरीक़े और दीन का मेयारे-ज़िंदगी शरीअत में पाए जाते हैं। शरीअत फ़रमाती है कि इनसान अपनी ज़िंदगी किस तरह अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ और अपनी बेहतरी के लिए चलाए।

मसलन उसे तफ़सील से बताया गया है कि वह अपने पड़ोसी, अपने माँ-बाप और अपने मातहत के लोगों से कैसा बरताव करे। उसको न सिर्फ़ यह बताया गया है कि वह रहम करे बल्कि यह भी कि वह ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ शोबों में किस तरह रहम करे। उसे बताया गया है कि खाना कैसे खाना है, मेहमान-नवाज़ी कैसी करनी है, ख़रीदो-फ़रोख़्त कैसा करना है, जानवरों को कैसा ज़बह करना है, ख़ुद को कैसा पाक-साफ़ रखना है, कैसा सोने और हाजत से फ़ारिग़ होना है, हुकूमत कैसी चलानी है, मुक़दमे की कारवाई कैसी करनी है, और नमाज़ और इबादत के दीगर कामों को कैसा अंजाम देना है।

इस्लाम में ज़ाती और अवामी चाल-चलन में इम्तियाज़ नहीं किया जाता। क्योंकि शरीअत इनसान को हिदायत देती है कि वह किस तरह अपनी पूरी ज़िंदगी को अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ चलाए। शरीअत के मुताबिक़ इनसान की रोज़मर्रा की ज़िंदगी मज़हबी ही होती है। शरीअत इनसान के लिए सही और कामिल क़ानून है।

पूरी ज़िंदगी का कामिल क़ानून होने के बाइस शरीअत साफ़ बताती है कि ज़िंदगी के कौन-से काम फ़रायज़ हैं, मसलन नमाज़; कौन-से काम हराम हैं मसलन शराब पीना; कौन-से काम सुन्नत क़रार दिए गए हैं मसलन फ़ालतू नमाज़; कौन-से काम मकरूह क़रार दिए गए हैं मसलन हद से ज़्यादा खाना; और कौन-से कामों से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता (मुबाह) मसलन पैदल सफ़र करना या घोड़े पर सवार होकर सफ़र करना वग़ैरा।

## शरीअत के सरचश्मे

शरीअत का सबसे अहम सरचश्मा क़ुरान शरीफ़ है जो कामिल और आख़िरी मुकाशफ़ा है। हर एक लफ़्ज़ जो अरबी क़ुरान में पाया जाता है अल्लाह तआला की तरफ़ से है। लिहाज़ा वह ईमान और चाल-चलन के हर मामले का कामिल हल मुहैया करता है। क़ुरान शरीफ़ में पूरी शरीअत के उसूल पाए जाते हैं गो यह सिर्फ़ क़वानीन की किताब नहीं है।

गो क़ानून के तमाम उसूल क़ुरान शरीफ़ में पाए जाते हैं फिर भी तमाम उसूल का मुफ़स्सल बयान नहीं फ़रमाया गया है। लिहाज़ा ज़रूरी था कि उन्हें तफ़सील से बयान किया जाए। जो कुछ हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने शरीअत के बारे में फ़रमाया वह सबसे अहम है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> ईमानवाले वह हैं जो यक़ीन लाए अल्लाह पर और उसके रसूल पर। (अन-नूर 24:62)

एक दूसरी आयत में क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> भेजा था उनको निशानियाँ देकर और वरक़े (औराक़) और उतारी हमने तुझ पर यह याददाश्त कि तू खोल दे लोगों के सामने वह चीज़ जो उतरी उनके वास्ते ताकि वह ग़ौर (ध्यान) करें। (अन-नहल 16:44)

ग़रज़ रसूल (सलअम) को क़ुरान शरीफ़ की विज़ाहत करने की इलाही हिकमत और इख़्तियार हासिल था। यों क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> पैग़ाम लानेवाले का ज़िम्मा नहीं मगर [सिवाए इसके कि] पहुँचा देना खोलकर। (अन-नूर 24:54)

जब रसूल (सलअम) की वफ़ात हुई तो आपके क़रीबी साथियों ने आपके तमाम क़ौल-अक़वाल और हिदायात यानी अहादीस और आपका चाल-चलन यानी सुन्नत महफ़ूज़ रखे। बाद में उलमा ने इन

तमाम बातों को जाँच-परखकर किताब की शक्ल दी। इन किताबों को अहादीस कहा जाता है। यह क़ुरान की तशरीहो-तफ़सीर करती हैं। हदीस की यह किताबें जिनमें सुन्नत और हदीस दोनों पाई जाती हैं शरीअत का दूसरा सरचश्मा हैं। यह दो चीज़ें शरीअत के सरचश्मे हैं।

मुसलिम उलमा ने शरीअत को तकमील तक पहुँचाया और उसे नज़मो-तरतीब दी। उन्होंने क़ुरान शरीफ़ और हदीस की बुनियाद पर शरीअत लिखी। उलमा ने शरीअत के क़वायद को उम्मत के इत्तफ़ाक़े-राय (इजमा) और क़यास की बिना पर क़ायम किया। इस तरीक़े से शरीअत क़ायम की गई। यों शरीअत के चार निज़ामों का फ़रोग़ हुआ है,

- हनफ़ी
- मालिकी
- शाफ़ई
- हंबली

शरीअत के यह चार निज़ामों में थोड़ा-बहुत फ़रक़ हैं, मगर इन सबका सरचश्मा क़ुरान शरीफ़ और हदीस हैं।

## शादी

शादी के उसूल इसकी एक अच्छी मिसाल पेश करते हैं कि शरीअत कामिल हिदायत देती है। शरीअत शादी के रिश्ते के हर एक पहलू पर हिदायत देती है। इस्लाम में शादी एक संजीदा मुआहदा है। गो एक

बीवी से शादी बेहतर है ताहम इस्लाम मुनासिब हालात में कसरतुल-अज़वाज या तलाक़ की इजाज़त देती है। शरीअत शादी के मुआहदे और तलाक़ की काररवाई की हर एक तफ़सील को पेश करती है। वह कसरतुल-अज़वाज के घराने में बीवियों के हुक़ूक़ भी तफ़सील से क़रार देती है।

कसरतुल-अज़वाज का रिवाज क़दीम ज़माने से लेकर आज तक जारी रहा है। इस्लाम ने इस रिवाज को नज़रंदाज़ न किया बल्कि इसके क़वायद भी पेश किए। चार बीवियों तक की इजाज़त दी गई है। लेकिन यह इजाज़त न तो ईमान का सतून है और न इबादत का अमल है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> निकाह कर लो जो और औरतें तुमको ख़ुश आवें दो दो, तीन तीन, चार चार। फिर अगर डरो कि उनमें इनसाफ़ न कर सकोगे तो एक ही निकाह करो या लौंडी जो अपना माल है। इसमें उम्मीद है कि एक तरफ़ न झुक पड़ोगे। (अन-निसा 4:3)

ज़्यादा से ज़्यादा चार बीवियों की इजाज़त दी गई है इस शर्त पर कि चारों बीवियों से बराबर मुहब्बत की जाए और हर बात में हर एक के साथ बराबर का सुलूक किया जाए। अबदुल्लाह यूसुफ़ फ़रमाते हैं, "चूँकि इस

शर्त को पूरा करना मुश्किलतरीन है इसलिए मैं समझता हूँ कि एक बीवी पर तरजीह दी जाती है।"[1]

शरीअत कसरतुल-अज़्वाज की हौसलाअफ़्ज़ाई नहीं करती। इस रिवाज को ख़त्म करना मुश्किल था, इसलिए इस्लाम ने उसकी इजाज़त दी। ताहम उसने उसकी शरायत और हदें पेश कीं।

## अख़लाक़ियात

शरीअत के अलावा मुसलिम चाल-चलन की बुनियाद अख़लाक़ी तालीम है। अख़लाक़ी उसूल मुसलिम तालीम में इतनी मरकज़ी हैसियत रखते हैं कि क़ुरान शरीफ़ क़दम बक़दम इनका ज़िक्र करता रहता है। इनमें से कुछ यह हैं : वफ़ादारी, ईमानदारी, हलीमी, इसमत, नरममिज़ाजी, ख़ैरात, शराफ़त, मुहब्बत, माफ़ी, भलाई, हिम्मत, हमदर्दी, इनसाफ़, खरापन, फ़रमाँबरदारी, ताबेदारी, क़दरदानी, मेहरबानी और साबितक़दमी।

यह अख़लाक़ी उसूल बयान करते हैं कि इनसान का अल्लाह से क्या रिश्ता होना चाहिए, इनसान का दूसरे इनसान से क्या रिश्ता होना चाहिए, इनसान का दीगर मख़लूक़ात से क्या रिश्ता होना चाहिए और इनसान का अपनी ख़ुदी से क्या रिश्ता होना चाहिए। यह उसूल लोगों

1 Abdallah Yusuf Ali, *The Holy Qur'an*, (Beirut: Dar al Arabia, 1968), p 179.

को सिखाते हैं कि वह दूसरों को चोट न पहुँचाएँ बल्कि दूसरों के साथ भलाई करें।

क़ुरान शरीफ़ इसका ख़ुलासा यों फ़रमाता है,

> और बंदगी करो अल्लाह की और शरीक न करो उसका किसी को। और माँ-बाप के साथ नेकी करो और क़राबतवालों के साथ और यतीमों और फ़क़ीरों और हमसाया क़रीब और हमसाया अजनबी और पास बैठनेवाले और मुसाफ़िर के साथ और अपने हाथ के माल यानी ग़ुलाम-बाँदियों के साथ। (अन-निसा 4:36)

यह अख़लाक़ी उसूल इस पर ज़ोर देते हैं कि लोग वाहिद ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी करके उससे मुहब्बत रखें। लोगों को अल्लाह की मरज़ी के ताबे रहना चाहिए। ताबे रहने से अख़लाक़ी ख़ूबियों को तक़वियत मिलती है। इन ख़ूबियों में यह शामिल है कि हम अपने रिश्तेदारों, माँ-बाप, पड़ोसियों और अजनबियों पर मेहरबानी और मुहब्बत का इज़हार करें। इनसान दूसरों के हुक़ूक़ क़ायम रखे। वह ईमानदार हो, अपने तमाम वादों को पूरा करे और अपने गुनाहों को तसलीम करे। वह अपनी रोज़ी ख़ुद कमाए।

इस इसबाती तालीम के अलावा जिसके तहत इनसान अल्लाह की मरज़ी के ताबे रहकर नेक काम करता है ऐसे उसूल भी होते हैं जो इनसान की हिफ़ाज़त के लिए दिए गए हैं। इन पर अमल करने से

इनसान दूसरों को चोट पहुँचाने से और दूसरों की जायदाद को नुक़सान पहचाने से बचता है। दर्जे-ज़ैल कुछ मिसालें दी गई हैं।

## पाकदामनी

मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह अजनबी औरतों को बुरी नीयत से न देखे। वह गंदी कहानियाँ न सुने। इस्लाम में शादीशुदा रिश्ते के अलावा दीगर तमाम जिंसी ताल्लुक़ात की मनाही है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और जो अपनी शहवत की जगह को थामते हैं। मगर अपनी औरतों पर या अपने हाथ के माल बाँदियों पर सो उन पर नहीं कुछ इलज़ाम। (अल-मोमिनून 23:5-6)

अवाम में कपड़े पहनने का सलीक़ा भी फ़रमाया गया है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> कह दे ईमानवालों को नीची रखें ज़रा अपनी आँखें और थामते रहें अपने सतर को उसमें ख़ूब सुथराई है। उनके लिए बेशक अल्लाह को ख़बर है जो कुछ करते हैं। और कह दे ईमानवालियों को नीची रखें ज़रा अपनी आँखें और थामती रहें अपने सतर को और न दिखाएँ अपना सिंगार मगर [सिवाए इसके कि] जो खुली चीज़ है उसमें से। (अन-नूर 24:30-31)

यह इसमत मोमिन की मदद करती है कि आला दीनी अख़लाक़ को हासिल करें।

## ईमानदारी

मुसलमान सब बातों में ईमानदार और वफ़ादार रहे। जो कुछ बतौर अमानत उसे सौंपा जाए उसमें वह ख़ियानत न करे। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और दे डालो यतीमों को उनका माल और बदल न लो बुरे माल को अच्छे माल से और न खाओ उनके माल। अपने मालों के साथ यह है बड़ा वबाल।
> (अन-निसा 4:2)

दूसरी आयत में अल्लाह फ़रमाता है,

> पूरा भरकर दो माप और मत हो नुक़सान देनेवाले। और तू लो सीधी तराज़ू से। (अश-शुअरा 26:181-182)

क़ुरान की यह तालीम लोगों की मदद करती है कि ईमानदार रहते हुए हर तरह की बद-उन्वानी से महफ़ूज़ रहें।

# सुलह-सलामती

इस्लाम का मतलब ही है इताअत और सलामती। सलामती एक निहायत अहम दीनी अख़लाक़ी उसूल है। मुसलमान को ताकीद की जाती है कि वह एक दूसरे के साथ सलामती से गुज़र-बसर करें,

> बेशक अल्लाह को ख़ुश आते हैं इनसाफ़वाले। मुसलमान हो हैं सो भाई हैं। (अल-हुजुरात 49:9-10)

सलामती के मानी हैं कि इनसान अपने हमइनसान को चोट न पहुँचाए।

# शायस्तगी

मुसलमान को यह हुक्म दिया गया है कि वह अपने अख़लाक़ में शायस्तगी इख़्तियार करे। उन्हें बदगुमानी, शायबा और फ़ज़ूल बकवास से परहेज़ करें। इसके बारे में क़ुरान शरीफ़ नसीहत करता है कि

> ऐ ईमानवालो, बचते रहो बहुत तोहमतें करने से। मुक़र्ररबाज़ी तोहमत गुनाह है। और भेद न टटोलो किसी का और बुरा न कहियो पीठ पीछे एक दूसरे को। (अल-हुजुरात 49:12)

## सेहत और ग़िज़ा

इसमत, ईमानदारी, सलामती और शायस्तगी इनसान को तरबियत देती हैं कि दूसरों को चोट न पहुँचाए। ऐसे उसूल भी हैं जिन पर अमल करने से हम अपने आपको चोट पहुँचाने से बचते हैं। यों कुछ चीज़ें मना भी हैं : हर क़िस्म की नशाबख़्श चीज़ (अल-बक़रा 2:219; अल-माइदा 5:93-94); सूर का गोश्त या उससे बनी हुई तमाम मसनुआत, पंजा रखनेवाले जंगली जानवर, तमाम जंगली परिंदे जो मुरदार खाते हैं; मरे हुए जानवर का गोश्त, सब तरह के साँप, कीड़े-मकोड़े और उन जानवरों का गोश्त जो मुनासिब तरीक़े से ज़बह न किया गया हो (अल-बक़रा 2:172-173; बमुक़ाबला अन-निसा 5:4)। यह अख़लाक़ी उसूल अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किए गए हैं ताकि वह अख़लाक़ में और अपनी शख़्सियत में अल्लाह तआला की ऐन मरज़ी के मुवाफ़िक़ तरक़्क़ी करे। यह आला अख़लाक़ी उसूल ज़रूरी हैं ताकि इनसान सिराते-मुस्तक़ीम पर चलता रहे।

## ख़ुलासा

अख़लाक़ी उसूल के बग़ैर इस्लाम मुमकिन ही नहीं। अल्लाह तआला की शरीअत और उसके अख़लाक़ी उसूल ही इनसान के चाल-चलन की बुनियाद होते हैं। मुसलिम चाल-चलन पैदा करने के लिए दोनों ही लाज़िम हैं।

## ईसाई का जवाब

हम किस तरह रास्तबाज़ बनते हैं? इस्लाम इस बात को पहचानता है कि क़वानीन और अख़लाक़ी उसूलों की तालीम कई तरीक़ों से मददगार साबित होते हैं। मगर सवाल यह है कि क्या अख़लाक़ी और मुआशरती क़वायद काफ़ी हैं?

इंजील जलील फ़रमाती है,

> चुनाँचे अपने पुराने इनसान को उसके पुराने चाल-चलन समेत उतार देना, क्योंकि वह अपनी धोकेबाज़ शहवतों से बिगड़ता जा रहा है। अल्लाह को आपकी सोच की तजदीद करने दें। और नए इनसान को पहन लें जो यों बनाया गया है कि वह हक़ीक़ी रास्तबाज़ी और क़ुद्दूसियत में अल्लाह के मुशाबेह है।
> (इफ़िसियों 4:22-24)

> क्योंकि शरीअत के तक़ाज़े पूरे करने से कोई भी उसके सामने रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता, बल्कि शरीअत का काम यह है कि हमारे अंदर गुनाहगार होने का एहसास पैदा करे। लेकिन अब अल्लाह ने हम पर एक राह का इनकिशाफ़ किया है जिससे हम शरीअत के बग़ैर ही उसके सामने रास्तबाज़ ठहर सकते हैं। तौरेत और नबियों के सहीफ़े भी इसकी तसदीक़ करते हैं। राह यह

है कि जब हम अल-मसीह पर ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है। और यह राह सबके लिए है। (रोमियों 3:20-22)

# उम्मत का मिशन

## उम्मत के काम

क़ुरान शरीफ़ के पहले दो मुकाशफ़ों में पैग़ंबरे-इस्लाम को मुनादी करने का हुक्म दिया गया। कोहे-हिरा पर अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद (सलअम) को फ़रमाया कि अपने परवरदिगार का नाम लेकर पढ़ो। इस मुकाशफ़े के ज़रीए आपको पैग़ंबर होने की बुलाहट मिली। दूसरे इलाही मुकाशफ़े ने फ़रमाया,

> ऐ कपड़े में लिपटनेवाले, खड़ा रह रात को मगर किसी रात ... और खोल खोलकर पढ़ क़ुरान को साफ़। (अल-मुज़म्मिल 73:1-4)

यों हज़रत मुहम्मद (सलअम) को हुक्म मिला कि अल्लाह के पैग़ाम की मुनादी करें। आपको खुले आम अल्लाह तआला के नाम का एलान

करना था। इस मुकाशफ़े के वसीले से आपको अल्लाह तआला के पैग़ंबर होने की बुलाहट हासिल हुई।

## पैग़ंबरे-इस्लाम का मिशन

अल्लाह तआला की मरज़ी और मनसूबे के मुताबिक़ आपका मिशन माक़ूल और कामयाब रहा। सबसे पहले आपको हुक्म मिला कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों को आगाह करें, फिर अपनी क़ौम को और फिर उन अरबों को जो आपके चारों तरफ़ आबाद थे। फिर आपका मिशन अरब के चारों तरफ़ फैल गया और फिर दुनिया के कई-एक ममालिक में। हज़रत मुहम्मद (सलअम) का मिशन जाननेवालों से लेकर अनजान लोगों तक शुरू किया जाना था। अल्लाह तआला फ़रमाता है,

> हमने उसको उतारा है क़ुरान अरबी ज़बान का ताकि तुम समझ लो। (यूसुफ़ 12:2)

और दूसरी आयत में फ़रमाया गया है,

> सो यह क़ुरान आसान किया हमने इसे तेरी बोली में ताकि वह याद रखें। (अद-दुख़ान 44:58)।

हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने मक्का में खड़े होकर अल्लाह तआला के पैग़ाम की मुनादी की। आपने ग़ैरमोमिनों को रोज़े-महशर की हौलनाक सज़ा के बारे में आगाह किया। आपने मक्का के लोगों को दावत दी कि

वह अल्लाह तआला की मरज़ी के ताबे हो जाएँ। क़ुरैश की अकसरियत ने खुले तौर पर आपके पैग़ाम को रद किया। हज़रत मुहम्मद (सलअम) और उनके पैरोकारों को सख़्त सताया गया। क़ादिरे-मुतलक़ ने आपको हुक्म दिया कि ख़ुद से ख़ातिर जमा रखो और सब्र करो। जब ईज़ारसानी हद से ज़्यादा बढ़ने लगी तो अल्लाह ने आपको मशवरा दिया कि हिजरत फ़रमाओ। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और जब फ़रेब करते थे काफ़िर कि तुझको क़ैद में कर दें या मार डालें या निकाल दें और वह भी दाँव करते थे और अल्लाह भी दाँव करता था और अल्लाह का दाँव सबसे बेहतर है। (अल-अनफ़ाल 8:30)

मदीना में नबी (सलअम) ने मोमिनों को एक बिरादरी, एक उम्मत में जोड़ा। मुसलमानों को जल्द ही मालूम हुआ कि उम्मत के बहुत-सारे दुश्मन उनके अंदर और बाहर हैं। उस वक़्त पैग़ंबरे-इस्लाम को हुक्म मिला कि उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़ते हैं और उनसे गुरेज़ करो जिन्होंने तुमसे जंग नहीं छेड़ी। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और अगर वह झुकें सुलह की तरफ़ तो तू भी झुक उसी तरफ़ और भरोसा कर अल्लाह पर। बेशक वही है सुननेवाला, जाननेवाला। (अल-अनफ़ाल 8:61)

मुसलिम क़ौम को शुरू से ही यह हुक्म दिया गया कि अपनी तरफ़ से जंग न छेड़ें, न ही लोगों के ख़िलाफ़ दुश्मनी या अदावत रखें। लेकिन उनको मज़बूती से खड़े होकर मुख़ालिफ़ों का सामना करना था यानी उनका जो उम्मत और इनसानियत के ख़िलाफ़ ज़ुल्मो-सितम करते हैं।

उम्मत के मिशन को फैलाते वक़्त मुसलमानों को नबी (सलअम) की तालीम और अच्छे नमूने पर चलना है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> जो लोग तुझसे इजाज़त लेते हैं वही हैं जो मानते हैं अल्लाह को और उसके रसूल को। (अन-नूर 24:62)

मुसलमान समझते थे कि हज़रत मुहम्मद (सलअम) अल्लाह के आख़िरी पैग़ंबर हैं, कि आप वाहिद नबी हैं जिन्होंने अपनी ज़िंदगी में अपने मिशन को पूरा किया। वफ़ात पाने से कुछ ही पहले आपको आख़िरी मुकाशफ़ा हासिल हुआ जिसमें कहा गया कि

> आज मैं पूरा कर चुका तुम्हारे लिए दीन तुम्हारा और पूरा किया तुम पर मैंने एहसान अपना और पसंद किया मैंने तुम्हारे वास्ते इस्लाम को दीन। (अल-माइदा 5:3)

आपकी वफ़ात के वक़्त आपने मोमिनों की उम्मत क़ायम की थी। आपने इस्लाम का मुकम्मल नमूना भी फ़रोग़ दिया था जिस पर लोग चल सकें। हज़रत मुहम्मद (सलअम) के बाद उम्मत ने तबलीग़ की ज़िम्मेदारी उठाकर इस्लाम का मुकम्मल पैग़ाम पूरी दुनिया में फैलाया।

## इस्लाम का फैलाव

क़ुरान शरीफ़ और हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने यह बात साफ़ बताई कि यह पैग़ाम तमाम इनसान के लिए है। कई-एक हवालों में क़ुरान शरीफ़ बनी आदम यानी इनसान को इस्लाम क़बूल करने की दावत देता है। क़ुरान शरीफ़ का पैग़ाम आलमगीर है अगरचे अरब के लोगों ने यह पहले ही सुना। वह तमाम इनसानी नसल से मुख़ातिब होकर बयान करता है कि अल्लाह कौन है और उसकी इनसान के लिए क्या मरज़ी है। क़ुरान शरीफ़ इस दुनिया में लोगों का सच्चा राहनुमा है। यह उन्हें दूसरी दुनिया की ख़ुशख़बरी सुनाता है। शर्त यह है कि वह सिराते-मुस्तक़ीम पर चलें। वह फ़रमाता है,

> यह तो एक नसीहत है जहान-भर के वास्ते। जो कोई चाहे तुममें से कि सीधा चले। (अत-तकवीर 81:27-28)

दूसरी आयत में क़ुरान शरीफ़ को यों बयान किया गया है,

> यह एक किताब है कि हमने उतारी तेरी तरफ़ कि तू निकाले लोगों को अंधेरों से उजाले की तरफ़।
> (इब्राहीम 14:1)

शुरू से लेकर आख़िर तक आप कभी न भूले कि आपका मिशन आलमगीर है चाहे आप अपने रिश्तेदारों से मुख़ातिब थे, चाहे अरब के बाशिंदों या दीगर लोगों से। इस्लाम का मिशन यही पैग़ाम है कि हम

उसके ताबे हो जाएँ जो वाहिद और सच्चा ख़ुदा है, जो ख़ालिक़ और सारी दुनिया का सहारा देनेवाला क़ादिरे-मुतलक़ है। मुसलमानों को यह अज़ीम ज़िम्मेदारी दी गई है कि पूरी दुनिया को इस्लाम का पैग़ाम सुनाकर उसे झूटे माबूदों की ग़ुलामी से छुड़ाएँ। यह ज़िम्मेदारी हर मोमिन का फ़र्ज़ है। इसमें वह हज़रत मुहम्मद (सलअम) के अच्छे नमूने पर चलते हैं।

## जिहाद

जिहाद (जिद्दो-जहद करना) का मतलब यह नहीं है कि इस्लाम को जंग के ज़रीए फैलाना है। जो कहते हैं कि इस्लाम मुतअस्सिब है और तलवार के ज़रीए फैलाया गया है वह इस्लाम और उसका मिशन ठीक नहीं समझते। जो यह कहते हैं उनको याद दिलाया जाए कि ईसाइयत के नाम से कितना क़त्लो-ग़ारत हुआ है। मसलन वह क़त्लो-ग़ारत जो बाज़ंतीनी शहनशाह जस्टीनियन के तहत (562-527), रोमी शाहन्शाह क्लोविस (466-511) के तहत और सलीबी जंगों के दौरान हुआ, ख़ासकर जब ईसाइयों ने यरूशलम पर क़ब्ज़ा किया। इसके मुक़ाबले में इस्लाम ज़ाती और अवामी शोबों का इम्तियाज़ नहीं करता, दुनियवी और रूहानी शोबों का इम्तियाज़ नहीं करता। इसलिए शरीअत जंग के अहकाम भी पेश करती है।

क़ुरान शरीफ़ की कई-एक आयतें बयान करती हैं कि जब तक बेइनसाफ़ी और ज़ुल्मो-सितम दुनिया में बरक़रार रहता है, उस वक़्त तक जंग ज़िंदगी का लाज़िमी हिस्सा है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> अगर न होता दफ़ा करा देना अल्लाह का एक को दूसरे से तो ख़राब हो जाता मुल्क। लेकिन अल्लाह बहुत मेहरबान है जहान के लोगों पर। (अल-बक़रा 2:251)

एक और आयत फ़रमाती है,

> और अगर न हटाया करता अल्लाह लोगों को एक को दूसरे से तो ढाए जाते तकिए और मदरसे और इबादतख़ाने और मसजिदें जिनमें नाम पढ़ा जाता है अल्लाह का बहुत।
>
> (ताहा 22:40 बमुक़ाबला अल-बक़रा 2:216)

इस्लाम तसलीम करता है कि जंग ज़रूरी है। इसलिए उसने जंग को क़ानून के मातहत भी किया है।

ताहम इस्लाम जंग के ज़रीए उम्मत के फैलाव की हौसलाअफ़्ज़ाई नहीं करता। बदक़िस्मती से बहुत-से ग़ैरमुसलमान समझते हैं कि इस्लाम जिहाद की वजह से इतनी जल्दी से फैल गया। जिहाद लफ़्ज़ से अकसर मुसलमान और ग़ैरमुसलमान दोनों ही मुग़ालते में पड़ जाते हैं। जिहाद क्या है? अरबी ज़बान में जिहाद का मतलब यह है कि पूरी ताक़त से

दुश्मन को दफ़ा करना। यह अल्लाह तआला की ख़ातिर जिद्दो-जहद करना है।

अल्लाह की ख़ातिर जिद्दो-जहद करने की तीन अक़साम हैं। पहले, एक ज़ाहिरी दुश्मन के ख़िलाफ़ जिद्दो-जहद। दूसरे, इबलीस की आज़माइशों के ख़िलाफ़ जिद्दो-जहद। और तीसरे, अपने मनफ़ी जज़बात के ख़िलाफ़ जिद्दो-जहद। जिहाद करते वक़्त लाज़िम है कि मुसलमान अपने वक़्त, इल्म, ताक़त, अमलाक, ख़ूबियों और तमाम ज़राए को काम में लाकर अल्लाह की ख़ातिर जिद्दो-जहद करें। यह है जिहाद के असली मानी।

इस्लाम के मुताबिक़ जंग सिर्फ़ दो मक़ासिद की बिना पर जायज़ है। पहले, अपनी बचाव और दूसरे, इनसाफ़, आज़ादी और अमनो-अमान की बहाली। मुसलमानों को हुक्म दिया गया है कि न वह अपनी तरफ़ से जंग करें, न ही दुश्मन के दबाव या हमले को क़बूल करें। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और लड़ो अल्लाह की राह में उन लोगों से जो लड़ते हैं तुमसे। ... और लड़ो उनसे यहाँ तक कि न बाक़ी रहे फ़साद और हुक्म रहे अल्लाह तआला ही का। फिर अगर वह बाज़ आएँ तो किसी पर ज़्यादती नहीं मगर ज़ालिमों पर। (अल-बक़रा 2:190-193)

यह इस्लाम में जंग की शर्त है। न जंग इस्लाम का मिशन है, न ही यह उम्मत के लिए मामूल का काम है।

## इस्लाम सुलह-सलामती का दीन है

इस्लाम अमनो-सलामती का मज़हब है। इनसान को अल्लाह की मरज़ी के ताबे रहना है। जब मुसलमान "अस्सलामु अलैकुम" कहता है तो इसका मतलब है, "अल्लाह की सलामती तुम पर हो।" इस्लाम दुनिया में सलामती लाना चाहता है। इस्लाम कभी भी उन ग़ैरमुसलमानों के ख़िलाफ़ क़दम नहीं उठाएगा जो उससे नहीं लड़ते, चाहे वह उसकी बातें मानते हों या न हों। इस्लाम लोगों को मजबूर नहीं करता क्योंकि लाज़िम है कि इनसान दिल की गहराइयों से ईमान रखे। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> ज़बरदस्ती नहीं दीन के मामले में। (अल-बक़रा 2:256)

उम्मत का मिशन यह है कि वह इस्लाम का पैग़ाम सलामती के साथ दुनिया के सारे लोगों को सुनाए। तमाम इनसान को दारुल-इस्लाम यानी उम्मत में शरीक होने की दावत देनी है।

हज़रत मुहम्मद (सलअम) ने क़ासिदों के ज़रीए इस्लाम का पैग़ाम पड़ोसी ममालिक के हाकिमों को सुनाया। उनमें से बाज़ंतीनी सलतनत और फ़ारस के शहनशाह थे, नीज़ हबशा और यमन के बादशाह। हर मुल्क में क़ासिदों का अच्छा इस्तिक़बाल न हुआ। फ़ारस के शहनशाह

का सुलूक सबसे बुरा था। कुछ अरसे बाद ही रोमी और फ़ारसी फ़ौजियों ने मुसलमानों की सरहद को उबूर किया। हाँ, रोमी बादशाह ने हज़रत मुहम्मद (सलअम) का सर क़लम करने का हुक्म भी दिया। यों आपकी वफ़ात पर मुसलमान पड़ोसी ममालिक से लड़ने पर मजबूर हुए। जब वह अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आए तो न उन्होंने अवाम को सताया, न ही उनको मुसलमान बनने पर मजबूर किया।

यहाँ नोट करना ज़रूरी है कि मुसलमानों के तमाम जंगें अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ नहीं थीं। जिन मुसलमानों से इस नाते से ग़लती हुई है उनको मालूम होना चाहिए कि वह इस्लाम की तालीम की मुख़ालफ़त कर रहे हैं। उन पर अल्लाह का ग़ज़ब ज़रूर नाज़िल होगा।

मुसलमानों ने अल्लाह के हुक्म और पैग़ंबरे-इस्लाम के नमूने पर चलकर दीगर ममालिक में दावते-इस्लाम पेश की। बड़े बड़े उस्ताद, ब्योपारी, सौदागर, सूफ़ी, उलमा और दीगर आम लोगों ने इस्लाम का पैग़ाम तमाम दुनिया में फैलाने में तावुन किया। आपकी वफ़ात के 100 साल बाद अल्लाह तआला के अज़ीम नाम की हम्दो-सना मशरिक़ में चीन तक, मग़रिब में मराकेश तक और शिमाल में फ़्राँस तक की जाने लगी। इसी दौरान इस्लाम मशरिक़ी और शिमाली अफ़्रीक़ा में भी फैल गया था। आज के दौर में इस्लाम दुनिया के चारों ओर फैल चुका है। यह इस बात को ज़ाहिर करती है कि उम्मत किस तरह अमनो-सलामती से

अल्लाह तआला के मुकम्मल पैग़ाम की मुनादी करने में कामयाब और सरगरम रही है।

## मिशन में ख़िदमत का पहलू

चूँकि इस्लाम ज़िंदगी की मुकम्मल राह है इसलिए ख़िदमत मुसलिम मिशन का एक पहलू है। नबी (सलअम) ने फ़रमाया, “वह एक सच्चा मोमिन नहीं है जो पेट भरकर खाए जबकि उसका पड़ोसी भूका रहे।” जो ग़रीब की मदद करे, भूके को खाना खिलाए, मुसीबतज़दे की ख़िदमत करे वह सचमुच इबादत बजा लाता है। ग़रीबों की मदद के लिए ज़कात अदा करना इस्लामी फ़रायज़ का तीसरा सतून है।

चूँकि ख़िदमत मुसलमानों के लिए एक अहम फ़र्ज़ है इसलिए कीनिया में दो मुसलिम इदारे हैं जिनमें से एक का नाम इस्लामिक फाउंडेशन और दूसरा है यंग मुसलमान असोसियेशन। इन इदारों ने कीनिया में मुफ़्त बोर्डिंग स्कूल और यतीमख़ाने क़ायम किए हैं। यह दो इदारे पूरी दुनिया की इस्लामी ख़िदमात की ज़िंदा मिसाल हैं। यों उम्मत अपने मिशन को पूरा करने के लिए भरपूर कोशिश अंजाम दे रही है।

## उम्मत और तारीख़

यह अल्लाह की मरज़ी है कि तमाम लोग क़ुरान शरीफ़ और हदीस के ताबे हो जाएँ। जो भी शरीअत के ताबे रहे वह मुबारक है। गो दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं है ताहम अब जब आख़िरी किताब का इनकिशाफ़

हुआ है मुनासिब है कि तमाम लोग मुसलिम दावत क़बूल करके इस्लाम की शरीअत के ताबे हो जाएँ। ऐसा करने से लोग उम्मत यानी सलामती के दीन में शरीक हो जाते हैं।

मुसलिम उलमा यक़ीन से नहीं कह सकते कि उम्मत मज़ीद कितनी फैलेगी। कुछ उलमा समझते हैं कि यौमे-आख़िरत से पहले ही उम्मत तमाम मुल्कों और क़ौमों तक पहुँच जाएगी। दीगर समझते हैं कि आख़िरी दिनों में बेदीनी बढ़ती जाएगी। ताहम अहादीस की बिना पर मुसलमान एतक़ाद करते हैं कि ज़माने के आख़िर में हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) दुबारा दुनिया में आएँगे ताकि तमाम ज़मीन पर इस्लाम को क़ायम करें। फिर क़ियामत होगी और अदालत का दिन। तब अल्लाह तआला फ़ैसला करेगा कि कौन जहन्नुम में जाएगा और कौन जन्नत में। जहन्नुम आग की जगह और अबदी सज़ा होगी जबकि जन्नत ख़ुशी के बाग़ात और शादमानी की जगह होगी। दोज़ख़ से बचने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि इनसान सलामती का दीन मानकर शरीअत की पैरवी करे जिसका इनकिशाफ़ हज़रत मुहम्मद (सलअम) पर हुआ।

बेशक गुज़श्ता चौदह सदियों के दौरान उम्मत को मुख़्तलिफ़ परेशानियों का सामना करना पड़ा है। ताहम वह अपनी ख़िदमत में काफ़ी हद तक कामयाब रही है। तबलीग़ सारी दुनिया में संजीदगी से की जा रही है। कई-एक मुसलमान इदारे जैसे राबता (वर्ल्ड मुसलिम लीग, मक्का), इस्लामिक काल सोसायटी (लीबिया), या अज़हर यूनिवर्सिटी

मिशन (क़ाहिरा) पूरी दुनिया में अपने लोगों को तबलीग़ करने के लिए भेजते रहते हैं।

अपनी पुरख़ुलूस ख़िदमत और वफ़ादार तबलीग़ के ज़रीए उम्मत हमेशा अपने मिशन को पूरा करने के लिए जिद्दो-जहद करती रहेगी। यों वह पैग़ंबरे-इस्लाम के नमूने पर चलकर ज़मीन पर अल्लाह तआला की सलतनत और शरीअत क़ायम करने में लगी रहेगी।

## ईसाई का जवाब

मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह दुनिया में तबलीग़ करे। उम्मत का फैलाव इस बात का इज़हार करता है कि मुसलमानों ने यह काम बड़े मुअस्सर तरीक़े से सरंजाम दिया है।

ईसाई का भी यह फ़र्ज़ है। ईसाइयों और मुसलमानों को यह तसलीम करना चाहिए कि दोनों के लिए तबलीग़ ईमान का मरकज़ी हिस्सा है। जब मुसलमान ऐसे मुल्क में रहते हैं जहाँ ईसाइयों की अकसरियत है तो मुसलमानों को यह आज़ादी हासिल होनी चाहिए कि वह अपना ईमान पेश कर सकें। अगर कोई ईसाई इस्लाम क़बूल करना चाहे तो उसे रोकना नहीं चाहिए। क्योंकि अपना ईमान पेश करने और दीन बदलने की आज़ादी अल्लाह की तरफ़ से इनसान की एक बुनियादी हक़ है। जदीद दौर के नाम-निहाद ईसाई ममालिक में सबको यह हक़ हासिल है।

इसी तरह जब ईसाई ऐसे मुल्क में आबाद हैं जहाँ मुसलमानों की अकसरियत है तो ईसाइयों को भी यह आज़ादी हासिल होनी चाहिए कि वह अपना ईमान पेश कर सकें। साथ साथ अगर कोई मुसलमान हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) का पैरोकार होना चाहे तो उसे रोकना नहीं चाहिए। लेकिन ऐसी आज़ादी मुसलिम ममालिक में मुश्किल ही से पाई जाती है। जब ईसाई आज़ादी से अपने ईमान की गवाही नहीं दे सकते तो उनको शदीद रूहानी दिक़्क़त होती है। तबलीग़ तो ईसाई ईमान का मरकज़ी हिस्सा होती है। चूँकि इनसानी आज़ादी अल्लाह की तरफ़ से एक बुनियादी हक़ है इसलिए लोगों को यह हक़ हासिल होना चाहिए कि वह अपनी मरज़ी से वह ईमान क़बूल करें जो उन्हें पसंद हो चाहे वह इस्लाम का ईमान हो या ईसाई ईमान का या फिर किसी और के ईमान का।

ईसाई दिल की गहराई से इस तालीम की क़दर करते हैं कि "दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं।" हम इक़रार करते हैं कि हमारी ईसाई तारीख़ में ईसाई कभी कभी इस मेयार पर पूरे नहीं उतरे। हमने कई बार लोगों को मजबूर किया है कि वह ईसाई दीन क़बूल करें। हम इस गुनाह का इक़रार करते हैं और इससे तौबा करते हैं।

यही वजह है कि जदीद दौर के ईसाई ममालिक में दीन और हुकूमत को अलग अलग कर दिया गया है। क्योंकि बेशुमार बादशाहों ने हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) का नाम लेकर क़त्लो-ग़ारत किया है। यही बाज़ंतीनी

शाहन्शाह, क्लोविस शाहन्शाह और सलीबी जंगों का बुनियादी मसला था। क्योंकि इन जंगों में मसीही रूह का नामो-निशान नहीं था। ख़ासकर जो क़त्लो-ग़ारत यरूशलम में हुआ उसका इंजील जलील के पैग़ाम से कोई वास्ता नहीं। जिसने ऐसा काम करते हुए हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) का नाम मुँह में लिया उसने संगीन गुनाह किया है। लेकिन हमारी गुज़ारिश यह भी है कि जिस तरह मुसलमान ईसाई ममालिक में अमनो-अमान के साथ रह सकते हैं उसी तरह ईसाई मुसलिम ममालिक में भी अमनो-अमान के साथ रह सकें।

ईसाई इस बात की भी तारीफ़ करते हैं कि मेयारी तौर से इस्लाम में जिहाद अपने बचाव के लिए है न कि हमला करने के लिए। लेकिन जब अपने बचाव का अमली नतीजा यह है कि ईसाइयों को अपना ईमान पेश करने से रोका जाए तो यह शदीद दिक़्क़त का बाइस है। अपने बचाव में यह शामिल होना चाहिए कि ईसाई अपना ईमान पेश कर सकें। आख़िर यह वह लोग हैं जिनके बारे में क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> तू पावेगा सबसे नज़दीक मुहब्बत में मुसलमानों के उन लोगों को जो कहते हैं कि हम नसारा हैं।
>
> (अल-माइदा 5:82)

अहादीस की तरह इंजील जलील भी एलान करती है कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) आख़िरत के वक़्त वापस आएँगे। इंजील जलील बड़ी तफ़सील से अल-मसीह की आमदे-सानी पेश करती है। बेहतर

होगा अगर मुसलमान और ईसाई मिलकर अल-मसीह की आमदे-सानी और उसके नतायज पर ग़ौरो-ख़ौज़ करें।

# ईसाई का ईमान

रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उसकी शफ़क़त अबदी है।

(1 तवारीख़ 16:34)

# एक ही ख़ुदा है

## ईसाई का अक़ीदा

ईसाई एक ही ख़ुदा पर ईमान रखते हैं। तौरेत शरीफ़[1] फ़रमाती है,

> सुन ऐ इसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब है। रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना। (इस्तिसना 6:4-5)

अल्लाह ने फ़रमाया कि यह बातें

> अपने दिल पर नक़्श कर। उन्हें अपने बच्चों के ज़हन-नशीन करा। यही बातें हर वक़्त और हर जगह तेरे लबों पर हों ख़ाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी

1 तौरात शरीफ़ किताबे-मुक़द्दस की पहली पाँच किताबों पर मश्तमिल है : पैदाइश, ख़ुरूज, अहबार, गिनती और इस्तिसना।

> के लिए अपने बाज़ुओं और माथे पर लगा। उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख। (इस्तिसना 6:6-9)

## एक ही ख़ुदा है

अल्लाह एक है, और वह हमें हुक्म देता है कि हम उससे पूरे दिलो-जान से मुहब्बत रखें। अल्लाह की मरज़ी यह है कि वह हमारी पूरी ज़िंदगी का मरकज़ बन जाए। अल्लाह की वहदानियत मानना और उससे मुहब्बत रखना : यही तौरेत शरीफ़ की मरकज़ी तालीम है।

हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) के एक हज़ार साल बाद हज़रत ईसा[1] से पूछा गया, "तमाम अहकाम में से कौन-सा हुक्म सबसे अहम है?" उन्होंने जवाब दिया,

> अव्वल हुक्म यह है : 'सुन ऐ इसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब है। रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना।' (मरक़ुस 12:29-30)

तौरेत और इंजील जलील दोनों ही फ़रमाती हैं कि ख़ुदा एक है। हमें हुक्म दिया गया है कि इस वाहिद ख़ुदा से मुहब्बत रखें। सिर्फ़ अल्लाह ही हमारी पूरी वफ़ादारी का हक़दार है।

---

1 मसीह के मानी हैं 'मसह किया हुआ।'

# अल्लाह क्या नहीं है

अल्लाह को यह हक़ क्यों हासिल है कि हम उससे वफ़ादार रहकर पूरी मुहब्बत रखें? अल्लाह को यह हक़ इसलिए हासिल है कि वह ख़ुदा है। मगर ख़ुदा कौन और कैसा है? यह समझने के लिए अच्छा होगा कि हम पहले पूछें कि अल्लाह क्या नहीं है?

पहले, अल्लाह इनसानी दिमाग़ का ईजाद नहीं है। वह इनसान की तख़लीक़ नहीं है। किताबे-मुक़द्दस के मुताबिक़ इनसान के ढाले हुए देवता सब झूटे हैं (होसेअ 13:2-3)। वाहिद और सच्चा ख़ुदा आदमियों के ज़रीए पैदा नहीं हुआ, क्योंकि वह ख़ुद ख़ालिक़ है।

दूसरे, अल्लाह क़ुदरत का महज़ एक हिस्सा नहीं है। अल्लाह ने ख़ुद कायनात को बनाया है। कायनात का कोई भी पहलू अल्लाह नहीं है। वह तख़लीक़ से अलग है। यही एक सबब है कि किताबे-मुक़द्दस के मुताबिक़ किसी भी बनाई हुई चीज़ की परस्तिश करना मना है। तख़लीक़ का कोई भी पहलू परस्तिश के लायक़ नहीं है। सिर्फ़ ख़ालिक़ ही हमारी वफ़ादारी और इबादत के लायक़ है (इस्तिसना 20:4-6)।

तीसरे, अल्लाह एक फ़लसफ़े का उसूल नहीं है। फ़लसफ़े के माहिरीन अकसर अल्लाह का वुजूद साबित करना चाहते हैं या यह कि ख़ुदा है ही नहीं। किताबे-मुक़द्दस का इससे कोई वास्ता नहीं है। किताबे-मुक़द्दस के मुताबिक़ ख़ुदा को जाना जाता है, मगर इनसानी फ़लसफ़े के ज़रीए नहीं

बल्कि उस काम से जो वह करता है। ख़ुदा ही अपने आपको इनसान पर ज़ाहिर करता है।

## अल्लाह काम करनेवाला है

अल्लाह उस काम से जाना जाता है जो वह करता है। सवाल है कि वह क्या काम करता है?

पहले, अल्लाह ख़ालिक़ है। अल्लाह हर चीज़ का सरचश्मा है। तख़लीक़ से पहले अल्लाह मौजूद था। वह तमाम देखी और अनदेखी चीज़ों का सरचश्मा है। किताबे-मुक़द्दस फ़रमाता है कि इनसान का ख़ालिक़ बाप है। ख़ुदा बाप की तरह कायनात और ख़ास तौर से इनसान की फ़िकर करता है। अल्लाह ने कायनात को अकेला नहीं छोड़ा बल्कि वह हमेशा उसकी परवरिश करता है। अल्लाह ने कायनात को बनाया, और वह उसकी मुहाफ़ज़त भी करता है।

दूसरे, मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर अल्लाह ने अपने आपको नबियों और रसूलों पर ज़ाहिर करके फ़रमाया कि वह इन मुकाशफ़ों को क़लमबंद करें। यों पाक नविश्ते वुजूद में आए। नबियों ने गाहे बगाहे गवाही भी दी कि जब रूह उन पर नाज़िल हुआ तब उन्होंने नबुव्वत की (हिज़क़ियेल 2:2, गिनती 11:26-30, ज़करियाह 7:12)। अकसर जब ख़ुदा अपने आपको नबियों के ज़रीए ज़ाहिर करता था तो वह रूह कहलाता था।

तीसरे, अल्लाह का काम तारीख़ में भी ज़ाहिर होता है। तारीख़ में यह काम ख़ासकर मोमिनों पर ज़ाहिर हुआ (ज़बूर शरीफ़ 78:1-72)।

हमारे ईमान के मुताबिक़ तारीख़ में अल्लाह का सबसे अज़ीम काम अल-मसीह की आमद थी। अल-मसीह के ज़रीए अल्लाह ने ख़ुद को नजातदहिंदे की हैसियत से ज़ाहिर किया (मत्ती 1:21)।

## अल्लाह मुहब्बत है

अल-मसीह की आमद हमारे ईमान का एक मरकज़ी नुकता है। क्योंकि इस अमल से ज़ाहिर हुआ कि अल्लाह इनसान से इतनी गहरी मुहब्बत रखता है कि उसे दुख होता है जब हम ग़लत काम कर बैठते हैं। अल-मसीह में अल्लाह का अनोखा काम यह बात ज़ाहिर करता है कि अल्लाह इनसान से मुहब्बत रखता है। यही बात हमारे ईमान का मरकज़ी नुकता है।

अल्लाह ने अपने आपको क़ुदरत, नबियों और तारीख़ के वसीले से हम पर ज़ाहिर किया। अल-मसीह में यह तीन पहलू उरूज पर पहुँच गए। ख़ासकर अल-मसीह के काम से हम पहचान सकते हैं कि अल्लाह की मुहब्बत में क़ुरबानी का उनसुर भी है। इसी काम की रौशनी में हम समझ सकते हैं कि अल्लाह वह बाप है जो ख़ालिक़ है, अल्लाह वह रूह है जो नबियों के कलाम के ज़रीए ख़ुद को ज़ाहिर करता है, और अल्लाह वह नजातदहिंदा है जो तारीख़ में काम करता है (लूक़ा 5:32)। यही वजह है कि अल-मसीह के क़रीबी शागिर्द यूहन्ना रसूल फ़रमाते हैं कि अल्लाह मुहब्बत है (1 यूहन्ना 4:16)।

अल्लाह की मुहब्बत ज़िंदगी और सच्चाई का सरचश्मा है। चूँकि हम जो ईसाई हैं ने इस मुहब्बत का तजरिबा किया है इसलिए हम अपनी बातों और अमल से इसका इज़हार करना चाहते हैं गो हम जानते हैं कि हमारा यह इज़हार कमज़ोर है। क्योंकि हम किस तरह ठीक तरह से अल्लाह का वह अज़ीम और अनोखा इत्तहाद पेश कर सकते हैं जो ख़ालिक़, रूह और नजातदहिंदे में पाया जाता है? हम यह बात कैसे ज़ाहिर करें कि अल्लाह पूरी तरह मुहब्बत करता है, कि अल्लाह का जौहर ही मुहब्बत है, और कि अल्लाह का इत्तहाद भी इस मुहब्बत में घिरा हुआ है? हम ईमान रखते हैं कि अल्लाह इसलिए एक है कि वह मुहब्बत है। जिस वाहिद ख़ुदा ने अपने आपको ख़ालिक़, रूह और नजातदहिंदे के तौर पर ज़ाहिर किया है उसमें बख़्शनेवाली मुहब्बत का कामिल इत्तहाद है (यूहन्ना 17:22)।

गो तसलीस का लफ़्ज़ इंजील जलील में पाया नहीं जाता, फिर भी बाद में उम्मत ने यह लफ़्ज़ इस्तेमाल करना शुरू किया ताकि अल्लाह के कामिल इत्तहाद का भेद और कामिल मुहब्बत का बयान करे। उस वक़्त से उम्मत यह इस्तेमाल करती आई है ताकि ज़ाहिर करे कि एक ही ख़ुदा है जिसका असल जौहर छुड़ानेवाली मुहब्बत है। तसलीस के यह मानी नहीं कि तीन ख़ुदा हैं। नऊज़-बिल्लाह! तसलीस का लफ़्ज़ सिर्फ़ यह बयान करता है कि एक ही सच्चा ख़ुदा है जिसने अपने आपको ख़ालिक़, नजातदहिंदे और रूह के तौर से ज़ाहिर किया है। यह वाहिद,

सच्चा और अबदी ख़ुदा, मुहब्बत का ख़ुदा है। वह मुहब्बत से लबरेज़ होता है और अपने आपको इनसान के लिए क़ुरबान करता है।

## अल्लाह की ज़ात एक राज़ है

मुनासिब तौर से तसलीस बयान करना नामुमकिन है। तमाम मिसालें यह पूरी तरह बयान नहीं कर सकतीं। कुछ लोग एक इनसान की मिसाल पेश करते हैं। इनसान का दिमाग़, जिस्म और रूह होती है। तीनों का कामिल इत्तहाद है। दिमाग़, जिस्म और रूह एक ही इनसान में मुत्तहिद होते हैं। फिर भी यह तीनों फ़रक़ होते हैं। इनसान अपने हाथों से चीज़ें बनाता है। वह अपने दिमाग़ के ज़रीए मसले हल करता है। उसकी रूह उसकी शख़्सियत ज़ाहिर करती है। यह तीनों एक ही इनसान में होते हैं।

हम जानते हैं कि अल्लाह की ज़ात को बयान करना अक़्लमंदी नहीं है। हमें यह याद रखने की ज़रूरत है कि कोई भी क़यास अल्लाह की ज़ात को पूरी तरह बयान नहीं कर सकता। क्योंकि किसी ने भी अल्लाह को नहीं देखा। वह राज़ बन रह जाता है। अल्लाह की ज़ात बयान करना हमारी समझ से बाहर है।

## अल्लाह अहद करता है

गो अल्लाह एक राज़ है फिर भी वह अनजान नहीं है। किताबे-मुक़द्दस फ़रमाता है कि अल्लाह ने ख़ुद को हम पर ज़ाहिर किया है। हम ग़ौर कर

चुके हैं कि अल्लाह तारीख़ में अपने कामों से ज़ाहिर हुआ है। इसका एक ख़ास पहलू यह है कि उसने इनसान से अहद बाँध लिया।[1] अल्लाह के इनसान के साथ अहद में उसकी छुटकारा बख़्शनेवाली मुहब्बत ज़ाहिर होती है।

अल्लाह ने इनसान के साथ पहला अहद अदन के बाग़ में बाँधा जहाँ उसने हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) के साथ अहद बाँधा। उसने उन्हें हुक्म दिया कि बाग़ की देख-रेख करो और फलो-फूलो। मगर हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने उस पहले अहद को तोड़ दिया (पैदाइश 3:24; 1:28)। इसके बाद अल्लाह बार बार इनसानों के साथ अहद बाँधता रहा, मसलन हज़रत नूह, इब्राहीम, इसहाक़, याकूब, मूसा और दाऊद (अलैहुम अस-सलाम) के साथ।

ख़ासकर अल्लाह का हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) और इसराईली क़ौम के साथ अहद मरकज़ी अहमियत रखता है। तौरात शरीफ़ फ़रमाती है कि इबरानी जो हज़रत इब्राहीम (अलैहिस-सलाम) की औलाद थे मिसर में फ़िरऔन के ग़ुलाम हो गए थे। अल्लाह एक जलती झाड़ी में हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) पर ज़ाहिर हुआ, और उसने हज़रत मूसा को हुक्म दिया कि इन इबरानियों को फ़िरऔन की ग़ुलामी से छुड़ा लाए। शुरू में हज़रत मूसा झिजकते रहे। आख़िरकार उन्होंने अल्लाह से पूछा कि तेरा नाम क्या है? अल्लाह ने जवाब दिया, "मैं जो हूँ सो हूँ।" उसने कहा,

1 एक अहद दो या दो से ज़्यादा लोगों के बीच एक मुआहदा है जो कि कभी तोड़ा नहीं जाना चाहिए।

यही नाम तो बनी इसराईल से कहना कि “मैं हूँ” ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है (ख़ुरूज 3:13-15)।

हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) अल्लाह के ताबे होकर इबरानियों के राहनुमा बन गए। उनकी राहनुमाई में अल्लाह ने इबरानियों को फ़िरऔन की ग़ुलामी से छुड़वाया। यह बातें बड़ी ख़ूबसूरती से तौरेत में बयान की गई हैं।

इस नए नाम का मफ़हूम क्या है जो अल्लाह ने हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) को जलती झाड़ी के ज़रीए ज़ाहिर किया था? अल्लाह अपने आपको हज़रत इब्राहीम (अलैहिस-सलाम) पर “इलोहीम” के नाम से ज़ाहिर कर चुका था। यह लफ़्ज़ अल्लाह नाम के क़रीब ही है, और इसका मतलब क़ादिरे-मुतलक़ है।[1] हज़रत इब्राहीम यही नाम इस्तेमाल करते थे। मगर अल्लाह ने अपने आपको हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) पर “मैं हूँ” के नाम से ज़ाहिर किया (ख़ुरूज 6:2-3)। इसके लिए इसराईली अपनी ज़बान में लफ़्ज़ यहविह इस्तेमाल करते थे। यहविह से अल्लाह अपनी ज़ात के बारे में क्या ज़ाहिर करना चाहता है?

यहविह से अल्लाह यह कहना चाहता है कि वह छुटकारा देनेवाला है। इससे वह लोगों को दावत देता है कि वह अहद में उसके साथ शरीक हो जाएँ, एक ऐसे अहद में जिससे उन्हें नजात मिलेगी। अल्लाह अहद का ख़ुदा है। इबरानियों को ग़ुलामी से छुड़ाने के बाद अल्लाह कोहे-सीना

---

1 इलोहीम और अल्लाह के नाम एक ही सामी मसदर यानी ‘एल’ से निकल आए हैं।

पर पूरी इबरानी क़ौम पर ज़ाहिर हुआ। तौरात शरीफ़ बयान करती है कि वह बिजली की तेज़ गड़गड़ाहट, घने बादलों, आग और धुएँ में ज़ाहिर हुआ। उस वक़्त सारा पहाड़ ज़ोर से हिल रहा था। अल्लाह की पाक ज़ात और क़ुदरत के सामने लोगों पर सख़्त दहशत तारी हुई।

अल्लाह ने कोहे-सीना पर इसराईली क़ौम को दस अहकाम दिए। यह दस अहकाम और दीगर अहकाम इनसान को रास्तबाज़ और ख़ुशहाल ज़िंदगी गुज़ारने की हिदायत देते थे। ख़ुदा ने लोगों को दावत दी कि वह अहद के लोग बन जाएँ। उसने उनसे वादा किया कि अगर तुम मेरे वफ़ादार रहोगे तो मैं तुम्हारा बाप ठहरूँगा। मैं तुम्हें बरकत अता करूँगा, तुम्हारी फ़िकर करूँगा और तुम्हें नजात दिलाऊँगा। यहविह अहद का ख़ुदा है (ख़ुरूज 19:16-25)।

यहविह अनजान और दूर नहीं है। वह हमारी ज़रूरतों से बेपरवा नहीं है। वह हमारी ख़ताओं, गुनाहों और बग़ावत से रंजीदा रहता है। वह हमको बचाना चाहता है। वह हमारे गुनाहों को माफ़ करना चाहता है और हमको अपने फ़ज़ल और अपनी मुहब्बत से बरकत देना चाहता है। इसी वजह से यहविह लोगों के साथ अहद बाँधना चाहता है। चूँकि वह मुहब्बत है इसलिए उसने अपनी तरफ़ से लोगों से अहद बाँधा है। ईसाई उम्मत में वह लोग पाए जाते हैं जो अल्लाह की दावत क़बूल करके उसके अहद के लोग बन गए हैं।

अहद के इस रिश्ते में हम सीखते हैं कि ख़ुदा रास्त है, वह मुहब्बत है, वह मुंसिफ़ है, वह पाक है और वह बुराई और गुनाहगारी को हरगिज़ बरदाश्त नहीं करता। इसलिए कि वह हमसे मुहब्बत रखता है और हमको बुराई से बचाना चाहता है। ख़ुदा हमें दावत देता है कि हम उसके साथ अहद में शरीक हो जाएँ। हम अल्लाह को उस वक़्त जान लेते हैं जब हम अपने गुनाहों का इक़रार करके ईमान के साथ उसकी दावत क़बूल करते हैं।

## ख़ुलासा

किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है कि अल्लाह मुहब्बत का ख़ुदा है जो तमाम इनसान अपने साथ अहद के रिश्ते में आने की दावत देता है। जब हम ईमान से इस दावत को क़बूल करते हैं तब हम जान लेते हैं कि वह हमसे मुहब्बत रखनेवाला आसमानी बाप है, वही जो हमको बचाता और बरकत देता है।

## मुसलमान का जवाब

ईसाई और मुसलमान एक ही ख़ुदा मानते हैं, तो भी उनके ईमान में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। चाहे वह ख़ुदा या अल्लाह या यहविह या इलोहीम की बात करते हैं तो उनका मतलब वही ख़ुदा है जो वाहिद है, जो ख़ालिक़ है, जो मुहब्बत रखनेवाला, मुंसिफ़, पाक, रहम करनेवाला, ज़िंदा और अबदी, हिकमतवाला और आलिमे-कुल ख़ुदा है। ताहम

ईसाई ईमान अल्लाह के ज़ाहिर होने पर ज़ोर देता है (इसलिए तसलीस की अहमियत) जबकि इस्लाम में अल्लाह की मरज़ी और हिदायत के इज़हार पर ज़ोर है।

इस्लाम में हज़रत मुहम्मद (सलअम) का किरदार और ईसाई ईमान में हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) का किरदार मुख़्तलिफ़ हैं। लेकिन सच्चे ख़ुदा के पैग़ंबर होने के नाते से उनकी कई बातें एक जैसी हैं। ईसाई ईमान यह है कि इनसानी तारीख़ में सबसे अहम और मरकज़ी वाक़िया अल-मसीह की आमद है। यह मुसलिम नुकताए-नज़र से बिलकुल फ़रक़ है जो मानते हैं कि अल्लाह ने तारीख़ में कभी जिस्म इख़्तियार नहीं किया। मुसलिम मानते हैं कि अल्लाह माफ़ौक़ और ख़ुदमुख़तार है।

नीज़, मुसलमान नहीं मानते कि अल्लाह बाप है। इस्लाम की तालीम के मुताबिक़ अल्लाह का किसी इनसानी शक्ल से या ख़ासियत से तसव्वुर नहीं किया जा सकता। वह तमाम दीगर ख़ासियतों से बरतर है। चूँकि वह वाहिद ख़ुदा है इसलिए मुसलमान कभी भी अल्लाह को ख़ुदा बाप, ख़ुदा बेटे और ख़ुदा रूह के नाम से तसव्वुर नहीं कर सकता। अल्लाह के तमाम इलाही सिफ़ात उसके कामिल इत्तहाद में जमे हुए हैं।

## ईसाई की विज़ाहत

जब ईसाई अल्लाह को बाप कहते हैं तो वह उसे इनसान नहीं समझते। ईसाई दीन में अल्लाह को किसी शक्ल में तसव्वुर करने की मनाही है।

जब अल्लाह को बाप कहा जाता है तो यह उसके साथ रिश्ते की तरफ़ इशारा है और बस। ईसाई ईमान के मुताबिक़ जब अल्लाह को बाप और तमाम इनसानों को उसके फ़रज़ंद कहा जाता है, तो यह अहद के रिश्ते की तरफ़ इशारा है। हम इस अहद के तहत उसके फ़रज़ंद बन जाते हैं और यों हमें उसकी क़ुरबत हासिल होती है।

ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का है, दुनिया
और उसके बाशिंदे उसी के हैं।

(ज़बूर शरीफ़ 24:1)

# तख़लीक़

## ईसाई का अक़ीदा

> इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को बनाया।
>
> (पैदाइश 1:1)

यह तौरेत शरीफ़ का सबसे पहला जुमला है। क़ुदरत के बारे में ईसाई सोच तौरेत के पहले तीन अबवाब में पाई जाती है।

## तख़लीक़ और तरक़्क़ी

तख़लीक़ के चार अहम पहलू हैं।

पहले, तौरेत फ़रमाती है कि अल्लाह ख़ालिक़ है। यह अज़हद अहम बात है। इसका मतलब यह है कि कुल कायनात अल्लाह की मिलकियत है। उसने उसे तशकील दी, और वही उसकी परवरिश करता है। हम अल्लाह की ज़मीन पर रहते हैं। जिसकी तख़लीक़ उसने की है उसकी वह परवरिश और हिफ़ाज़त भी करता है।

ख़ालिक़ होने के नाते से अल्लाह दुनिया से अलग है। अगर कायनात न भी होती तो भी अल्लाह मौजूद रहता। कायनात का कोई भी हिस्सा इलाही नहीं है। कुछ लोग समझते हैं कि पेड़ इलाही हैं, इसलिए वह उनकी पूजा करते हैं। कुछ लोग समझते हैं कि पहाड़ इलाही हैं इसलिए वह पहाड़ों की पूजा करते हैं। कुछ लोग कुछ जानवरों की परस्तिश करते हैं। यह किताबे-मुक़द्दस के मुताबिक़ सही नहीं है। कायनात की कोई भी चीज़ इलाही नहीं है।

इसी लिए कई-एक इबरानी नबियों ने हरे-भरे पहाड़ों पर परस्तिश करने के ख़िलाफ़ मुनादी की। लोग समझते थे कि ऊँचे हरे-भरे पहाड़ इलाही ताक़तों के मरकज़ हैं, कि उनका ख़ुदा या देवताओं से ख़ास ताल्लुक़ है। नबियों ने एलान किया कि यह ग़लत है। अल्लाह जिसने कायनात की तख़लीक़ की वह उसकी बनाई हुई किसी भी चीज़ के साथ शरीक नहीं किया जा सकता है क्योंकि वह तख़लीक़ से अलग है।

दूसरे, गो अल्लाह तख़लीक़ से परे है फिर भी तख़लीक़ अच्छी है। पैदाइश के पहले बाब में हम पढ़ते हैं कि तख़लीक़ के हर क़दम के बाद अल्लाह ने फ़रमाया कि यह "अच्छा है।" जब उसने इनसान को बनाया तो कहा कि "बहुत अच्छा है" (पैदाइश 1:31)। दुनिया अच्छी है!

कुछ फ़लसफ़े के माहिर कहते हैं कि मादी ज़मीन अच्छी नहीं है, कि सिर्फ़ रूह अच्छी है। यह ख़याल मुक़द्दस नविश्तों के ख़िलाफ़ है।

किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है कि दुनिया इनसान समेत बहुत अच्छी है। जो भी हो उससे लुत्फ़ उठाना चाहिए, चाहे तुलूए-आफ़ताब या ग़ुरूबे-आफ़ताब हो, बरसात का मौसम या ख़ुश्की हो, हवा में झूमते हुए पेड़-पौदे या लहलहाती घास हो, सितारे, सूरज या चाँद हो, ज़रख़ेज़ ज़मीन या रेगिस्तान के टीले हों। यह सब अज़हद ख़ूबसूरत है। अल्लाह चाहता है कि हम इन सबसे लुत्फ़ उठाएँ और इनका शुक्र अदा करें। हम अल्लाह के कलाम में पढ़ते हैं कि

> अल्लाह ... हमें फ़ैयाज़ी से सब कुछ मुहैया करता है ताकि हम उससे लुत्फ़अंदोज़ हो जाएँ।
> (1 तीमुथियुस 6:17)

तीसरे, दुनिया तरतीब से बनाई गई। अल्लाह ने दुनिया को क़दम बक़दम और उसूलों के तहत ख़लक़ किया : रौशनी, आसमान और ज़मीन; ख़ुश्क ज़मीन और समुंदर; नबातात; दिन, रात और साल के दौरे सूरज चाँद और सितारों समेत; समुंदरी जानदार और हवा के चरिंद-परिंद; ख़ुश्की के तमाम जानवर और आख़िरकार इनसान। हर दिन के काम से अगले दिन की तैयारी हुई। कायनात की तख़लीक़ बड़ी तरतीब से हुई।

चौथे, अल्लाह ने इनसान को एक ख़ास ओहदा दिया। अल्लाह ने हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को इस अच्छी दुनिया में रखा। उसने उनको अदन के बाग़ में रखा ताकि वह उससे लुत्फ़ उठाएँ। उसने फ़रमाया,

> तमाम बीजदार पौदे और फलदार दरख़्त तुम्हारे ही हैं। मैं उन्हें तुमको खाने के लिए देता हूँ। (पैदाइश 1:29)

अल्लाह ने हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को ज़िम्मेदारियाँ भी दीं। उन्हें ज़मीन पर इख़्तियार रखना था, साथ साथ कुल जानदारों पर हुकूमत करनी थी (पैदाइश 1:28)। इसमें क्या क्या शामिल था?

- औलाद को जन्म देना था। ज़मीन उनसे भर जाए (पैदाइश 1:28)।
- दुनिया पर इख़्तियार रखना था (पैदाइश 1:28)।
- बाग़ की निगहबानी करनी थी (पैदाइश 2:15)।
- जानदारों के नाम रखने थे (पैदाइश 2:19)।
- जिस दरख़्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था उसका फल खाना मना था। (पैदाइश 2:16-17)

यह अहकाम हमें क़ुदरत के लिए अल्लाह का मक़सद दिखाते हैं।

अल्लाह लोगों को दावत देता है कि हम ज़मीन की देख-रेख करने और उसे बेहतर बनाने में तावुन करें। कि हम सब दुनिया को फ़रोग़ देने में हाथ बटाएँ। मसलन हम ज़राअत के नए नए तरीक़े अपनाएँ; चौड़ी सड़कों, फ़ैक्टरियों और शहरों की तामीर करें; नई दवाइयाँ ईजाद करें; औलाद को महदूद रखें ताकि बच्चों को अच्छी तालीम मिल सके और हम ज़िंदगी की ज़रूरियात पूरी कर सकें; ज़मीन के ज़ख़ीरे एहतियात से सही इस्तेमाल करें; ऊँटों, बकरियों और दीगर जानवरों की अच्छी नसलें पैदा करें। इन तमाम सरगरमियों से हम इनसान जो आदम और

हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) की औलाद हैं ज़मीन पर हुकूमत कर सकते हैं। कह लें कि इससे हम बाग़ की देख-रेख करते हैं। यों हम इनसान की भलाई के लिए ज़मीन को फ़रोग़ देते हैं।

दुनिया को फ़रोग़ देना और ज़मीन पर हुकूमत करना चार उसूलों पर मबनी है :

- अल्लाह क़ुदरत से परे है।
- क़ुदरत उसूलों के तहत चलती है।
- क़ुदरत अच्छी है।
- इनसान को क़ुदरत पर हुकूमत करनी है।

दर्जे-बाला उसूल तरक़्क़ी के चार बुनियादी पत्थर हैं। चूँकि अल्लाह क़ुदरत से परे है इसलिए हम किसी दरख़्त को काटते वक़्त नहीं डरते कि कोई देवता पेड़ पर से छलाँग मारकर हमें काटेगा। या कोई देवता हमें वबा से मारेगी जब हम पहाड़ों की चटानें तोड़ने के लिए धमाके इस्तेमाल करते हैं। अल्लाह ने दुनिया को तरतीब से और उसूलों के तहत बनाया है, और हम उस पर भरोसा कर सकते हैं। चूँकि क़ुदरत अच्छी है और इनसान को हुक्म दिया गया है कि वह ज़मीन पर हुकूमत करे इसलिए हम बड़ी ख़ुशी महसूस करते हैं जब हम उसकी तहक़ीक़ करके उसे लोगों के फ़ायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं। इन बुनियादी उसूलों की रौशनी में ईसाई तकनीकी और तरक़्क़ियाती कामों में हिस्सा लेते हैं।

## ख़ुदग़रज़ी और घमंड

तौरेत में न सिर्फ़ यह लिखा है। साथ साथ हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को आगाह किया गया कि वह ममनुआ फल को न खाएँ। यह बात हमें आगाह करती है कि हम अल्लाह की नेमतों को अपने ख़ुदग़रज़ और मग़रूर मक़ासिद के लिए इस्तेमाल न करें। इसमें हमें ख़ुदा और दूसरे इनसानों का लिहाज़ रखना चाहिए।

जो इस दरख़्त के साथ हुआ उसकी कई-एक मिसालें आज भी होती हैं। मसलन एक किसान पहाड़ी ज़मीन में हल चलाता है। अब ख़तरा है कि सारी मिट्टी बारिश से बहकर ज़ाया हो जाए। किसान शायद यह कहे कि "ज़मीन तो मेरी है इसलिए मिट्टी की कोई फ़िकर नहीं है। मैं जैसे चाहूँ खेतीबाड़ी करूँगा।" लेकिन अगर वह ऐसा करे तो बीस साल बाद यह ज़मीन बंजर होकर किसी काम की नहीं रहेगी। उसके बच्चे उस ज़मीन से फ़ायदा नहीं उठाएँगे इसलिए कि उसने ज़मीन को ज़िम्मेदारी से इस्तेमाल न किया। उसका अमल मग़रूर और ख़ुदग़रज़ था।

नेको-बद की पहचान का दरख़्त अल्लाह की तरफ़ से इशारा है कि गो हमें ज़मीन पर हुकूमत करना है ताहम हमें फ़रोतनी से ज़िंदगी बसर करना है। हमको ख़ुदग़रज़ और घमंड बनने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए। हमें सारे अनाज को अपने इस्तेमाल के लिए नहीं रखना चाहिए बल्कि उसे दूसरों के साथ भी बाँटना चाहिए।

दरख़्त एक निशान है कि तरक़्क़ी करते वक़्त हमें अल्लाह का ख़याल रखना है। ज़मीन अल्लाह की है। वह उसी की मिलकियत है हमारी नहीं। उसने हमें ज़मीन अता की है कि हम उसको इनसान की भलाई के लिए इस्तेमाल करें। लेकिन साथ ही यह भी हमेशा याद रखने की ज़रूरत है कि यह सब कुछ अल्लाह की नेमत है। हमें इस दुनिया को वफ़ादार बाग़बान की हैसियत से इस्तेमाल करना चाहिए। ज़मीन पर हुकूमत करने के साथ साथ हमें याद रखना है कि उस ममनुआ दरख़्त के फल को न खाएँ। यह दरख़्त हमें याद दिलाता है कि हम अल्लाह पर इंहिसार करें और कभी भी उससे आज़ाद ज़िंदगी बसर करने की कोशिश न करें।

ताहम आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी की। उन्होंने नेको-बद की पहचान के दरख़्त के फल से खाया। यह करने से उन्होंने ज़ाहिर किया कि हम अल्लाह के फ़रमान से आज़ाद हैं। वह कह रहे थे कि हम अल्लाह की मानिंद बनना चाहते हैं। वह क़ुदरत के फलों को अपने ख़ुदग़रज़ मक़ासिद के लिए और अल्लाह से आज़ाद होकर इस्तेमाल करना चाहते थे (पैदाइश 3:1-7)।

चूँकि आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने अल्लाह के ख़िलाफ़ बग़ावत की इसलिए क़ुदरत बिगड़ गई। उस वक़्त अल्लाह ने ज़मीन पर लानत भेजी (पैदाइश 3:14-24)। ज़मीन से काँटे और ऊँटकटारे उगने लगे। पहले इनसान ख़ुदा की बरकत के ताबे रहकर काम करता था,

लेकिन अब से सख़्त मशक़्क़त और मेहनत करनी पड़ती थी। अल्लाह ने फ़रमाया कि

> पसीना बहा बहाकर तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। (पैदाइश 3:19)

अल्लाह से फिरने से ज़मीन पर हुकूमत करना निहायत ही मुश्किल हो गया। मौजूदा ज़माने ने बहुत तरक़्क़ी की है। फिर भी गाहे बगाहे की आफ़तें हमें याद दिलाती रहती हैं कि हम नहीं बल्कि अल्लाह ही क़ुदरत का मालिक है। बेशक हम क़ुदरत को इनसान की भलाई के लिए इस्तेमाल करें। लेकिन याद रहे कि हमारी मेहनत-मशक़्क़त अल्लाह पर मुनहसिर है। तमाम तरक़्क़ी के बावुजूद हमें याद रखना है कि घमंड और ख़ुदग़रज़ी बरबाद करती है। जब भी हम अल्लाह से आज़ाद होकर जीना चाहें तो हम बरकत के बजाए लानत हासिल करते हैं।

## ख़ुलासा

ईसाई ईमान रखते हैं कि ज़मीन इनसान के लिए अल्लाह की उम्दा नेमत है। इनसान को अल्लाह से हुक्म मिला है कि ज़मीन को इनसान की भलाई के लिए इस्तेमाल करे। मगर हम ख़ुदग़रज़ी और घमंड के बाइस ज़मीन को ठीक तरह से फ़रोग़ नहीं दे सकते।

# मुसलमान का जवाब

मुसलमान ईसाइयों की तरह ही कहते हैं कि अल्लाह ख़ालिक़ है। ख़ालिक़ होने के नाते से वह तख़लीक़ से परे है। मुसलमान अल्लाह की तख़लीक़ को कामिल मानते है।

मुसलमान यह भी कहते हैं कि हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) पहले इनसान थे जिनको अल्लाह ने अपना ख़लीफ़ा बनाकर भेजा। उसने उनके लिए एक शरीके-हयात और मददगार बनाम हज़रत हव्वा (अलैहिस-सलाम) बनाया। ज़मीन पर रहने से पहले वह आसमानी बाग़ यानी फ़िरदौस में रहते थे। उन्हें हुक्म दिया गया कि बाग़ के तमाम फल को आज़ादी से खाओ। मगर ममनुआ दरख़्त के नज़दीक मत जाना।[1] मगर शैतान ने उन्हें वरग़लाया तो उन्होंने ममनुआ फल से खाया।

नतीजे में अल्लाह तआला ने दोनों को बाग़ से ख़ारिज करके ज़मीन पर नाज़िल किया और हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) को ज़मीन पर ख़लीफ़ा होने का शरफ़ बख़्शा।

> तुम सब उतरो तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे। और तुम्हारे वास्ते ज़मीन में ठिकाना है और नफ़ा उठाना है एक वक़्त तक। (अल-बक़रा 2:36)

1 क़ुरान शरीफ़ में यह दरख़्त बेनाम है। कुछ मुफ़स्सिरों का मानना है कि यह बुराई का एक दरख़्त है।

इस आयत की बिना पर हम कह सकते हैं कि मुसलिम ईमान के मुताबिक़ बाग़े-अदन इस दुनिया में नहीं था।

नीज़, मुसलमान नहीं मानते कि अल्लाह ने ज़मीन पर लानत भेजी (पैदाइश 3:14-24)। क़ुरान शरीफ़ सिर्फ़ उतना ही फ़रमाता है कि

> उसी में तुम ज़िंदा रहोगे और उसी में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (अल-आराफ़ 7:25)

## ईसाई की विज़ाहत

जब तौरेत शरीफ़ में लिखा है कि अल्लाह ने ज़मीन पर लानत भेजी तो इसका मतलब है कि इनसान का क़ुदरत के साथ रिश्ता बिगड़ गया। इसी लिए लिखा है कि “तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है” (पैदाइश 3:17)। इसमें कोई शक नहीं कि घमंड और ख़ुदग़रज़ी के सबब से क़ुदरत पर एक लानत रही है। इंजील जलील फ़रमाती है कि तमाम कायनात कराहती और दर्दे-ज़ह में तड़पती रहती है कि कब गुनाह के असर से छुटकारा मिलेगा (रोमियों 8:19-23)।

तूने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहनाकर सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया।

(इबरानियों 2:7)

# हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम)

## ईसाई का अक़ीदा

> अल्लाह ने फ़रमाया, "आओ अब हम इनसान को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हमसे मुशाबहत रखे। वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुंदर की मछलियों पर, हवा के परिंदों पर, मवेशियों पर, जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर।" यों अल्लाह ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर। उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया। (पैदाइश 1:26-27)

> फिर रब ख़ुदा ने … उसके नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ। (पैदाइश 2:7)

## अल्लाह की सूरत और शबीह

तौरेत शरीफ़ फ़रमाती है कि लोग अल्लाह की सूरत और शबीह पर बनाए गए हैं। इनसान जीती जान हैं। अल्लाह ने उनके नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका है। इसके क्या मानी हैं? इनसान को किन किन बातों में अल्लाह की सूरत पर बनाया गया?

पहले, आदमी और औरत दोनों ही अल्लाह की सूरत और शबीह पर पैदा किए गए (पैदाइश 1:27)। औरत भी आदमी जैसी अहमियत रखती है। दोनों बराबर हैं। दोनों नर और नारी अल्लाह की सूरत और शबीह पर बनाए गए।

दूसरे, हम कायनात को एक हद तक समझ सकते हैं। हम तहक़ीक़ करके सायंस के उसूलों को फ़रोग़ दे सकते हैं, यहाँ तक कि हम चाँद का सफ़र कर सकते हैं।

हम अपने लिए मकान बना सकते, ख़ुराक के लिए बाग़ लगा सकते और मवेशी यों पाल सकते हैं कि वह ज़्यादा से ज़्यादा दूध दें। इनसान कायनात को अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

तीसरे, हम तहज़ीब-याफ़्ता हैं। जानवर तहज़ीब पैदा नहीं कर सकते। सारी दुनिया के कुत्ते एक तरह से भौंकते हैं मगर इनसानी ज़बानें निहायत वसी तौर से इख़्तिलाफ़ रखते हैं। ज़बान तहज़ीब का एक अहम पहलू है। इसी तरह लोग अलग अलग क़िस्म के मकानात में बूदो-बाश

करते हैं, वह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के कपड़े पहनते और हज़ारों अक़साम के खाने खाते हैं। नीज़, हर इनसान मुख़्तलिफ़ होता है।

चौथे, हम ग़लत और सही में इम्तियाज़ कर सकते हैं। जानवरों के मुक़ाबले में इनसान अख़लाक़ी है। गो दुनिया में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मुआशरे पाए जाते हैं तो भी हर जगह लोग इस बात का एहसास रखते हैं कि क़त्लो-ग़ारत मना है। हमारा ज़मीर ज़ाहिर करता है कि हम अल्लाह की सूरत पर पैदा किए गए हैं।

पाँचवें, हम सब महसूस करते हैं कि हमें बेहतर इनसान बनना चाहिए। तमाम लोगों में यह एहसास होता है कि वह इतने अच्छे नहीं जितने उन्हें होना चाहिए। यह ज़मीर की दबी हुई आवाज़ है कि हमें बेहतर होना चाहिए, कि हमें अल्लाह की तरह मेहरबान, सच्चे और क़ाबिले-एतमाद होना चाहिए। ज़मीर की यह आवाज़ ज़ाहिर करती है कि हम अल्लाह की सूरत पर बनाए गए हैं।

छटे, तमाम मुआशरों को यह एहसास है कि इनसान लाफ़ानी है। हम सब महसूस करते हैं कि मौत इनसान का ख़ातमा नहीं है बल्कि क़ब्र के बाद भी एक ज़िंदगी है। अल्लाह अबदी है। इसी तरह अल्लाह ने फ़ैसला किया है कि जिनको उसने अपनी सूरत और शबीह पर बनाया है वह भी अबदियत हासिल करें।

सातवें, हम अपने हमइनसानों और अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त रख सकते हैं। इसमें एक अहम पहलू बोलना है। अल्लाह जानवरों से रिफ़ाक़त नहीं रख सकता क्योंकि वह इनसान नहीं हैं।

अदन के बाग़ में हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को अल्लाह की रिफ़ाक़त हासिल थी। अल्लाह उनसे बातचीत करता था। वह इनसान से रिफ़ाक़त रखना चाहता है। यही वजह है कि अल्लाह हमसे अहद बाँधना चाहता है। जो रिश्ता इससे क़ायम होता है वह बाप का अपने बच्चों के साथ रिश्ता की तरह है। हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, अल्लाह हमारा आसमानी बाप है (इस्तिसना 32:6; ज़बूर शरीफ़ 103:13; यरमियाह 31:9; रोमियों 8:14,17)।

कलाम के मुताबिक़ हम उस वक़्त सच्ची इनसानियत पाते हैं जब हमारा अल्लाह के साथ अहद का रिश्ता क़ायम हो जाता है। जब हम अल्लाह के साथ सही रिश्ते में रहते हैं तब हम सही मानों में इनसान होते हैं। जब हम अल्लाह से फिरकर ग़ैरमाबूदों की परस्तिश करने लग जाते हैं तब हमारी इनसानियत बिगड़ जाती है।

शादी अल्लाह के साथ अहद का एक निशान है। तौरेत शरीफ़ फ़रमाती है कि जब अल्लाह ने आदम (अलैहिस-सलाम) के पहलू से एक पसली निकालकर हव्वा (अलैहिस-सलाम) को पैदा किया तो उसने उसको अपनी बीवी क़बूल करके कहा,

> वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है। इसका नाम नारी रखा जाए क्योंकि वह नर से निकाली गई है। इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। दोनों, आदमी और औरत नंगे थे, लेकिन यह उनके लिए शर्म का बाइस नहीं था। (पैदाइश 2:23-25)

यही वजह है कि ईसाई एक से ज़्यादा बीवियाँ क़बूल नहीं कर सकते। कलाम फ़रमाता है कि शादी में मर्द और औरत एक तन होते हैं। जब किसी को एक से ज़्यादा बीवियाँ हों तो वह हर एक का हक़ पूरा नहीं कर सकता। तब एक तन की जो यकताई अल्लाह चाहता है वह बिगड़ जाती है।

इसी तरह जब हम अल्लाह को हर दूसरी चीज़ पर तरजीह नहीं देते तो अल्लाह के साथ हमारा रिश्ता बिगड़ जाता है। अल्लाह के साथ सच्ची रिफ़ाक़त का मतलब यह है कि हम पूरे तौर से उसके वफ़ादार रहें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह शादी में सच्ची रिफ़ाक़त इसका तक़ाज़ा करती है कि हम अपने शरीके-हयात के साथ पूरे तौर से वफ़ादार रहें (देखिए होसेअ 2:14–3:5)।

# इनसान का गुनाह

अफ़सोस, आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) अल्लाह के वफ़ादार न रहे। वह ख़ुदा से फिर गए। उन्होंने साँप की सुनी जिससे इबलीस बोल रहा था। उन्होंने वह फल खाया जो सख़्त मना था। इससे आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने ज़ाहिर किया कि हम अल्लाह से आज़ाद हैं। किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है कि वह "अल्लाह की मानिंद" बनना चाहते थे। यह था उनकी ख़ुदग़रज़ी और घमंड का इज़हार (पैदाइश 3:1-7)।

बग़ावत के इस अमल से वह इनसानियत बिगड़ गई जो अल्लाह की सूरत और शबीह पर बनाई गई थी। गो कुछ शबाहत हमारी इनसानियत में बाक़ी रहती है, फिर भी हमारी गुनाहगारी कैंसर की तरह हममें फैलकर हमें बरबाद करती है (रोमियों 3:23)।

तमाम इनसान के पहले माँ-बाप हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) अल्लाह से फिर गए; उन्होंने अल्लाह के साथ अहद का रिश्ता तोड़ डाला। जिस दिन उन्होंने दरख़्त का फल खाया उसी शाम अल्लाह बाग़ में ज़ाहिर हुआ ताकि आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) से बात करे, मगर वह ख़ौफ़ और शरमिंदगी के मारे छुप गए।

> रब ख़ुदा ने पुकारकर कहा, "आदम, तू कहाँ है?" आदम ने जवाब दिया, "मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हूँ। इसलिए मैं छुप गया।" (पैदाइश 3:9-10)

अल्लाह ने हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को न छोड़ा बल्कि वह ख़ुद उससे छुप गए। अल्लाह ने उनके साथ अहद को न तोड़ा बल्कि उन्होंने उसे तोड़ा।

अल्लाह हमें कभी नहीं छोड़ता। चूँकि वह मुहब्बत है इसलिए वह हमारी तलाश में रहता और हमें दावत देता रहता है कि हम उसके अहद के लोग बन जाएँ। यही तारीख़ में इनसान की हालत रही है। इनसान बार बार उससे फिर जाता है, जो उसे अपनी क़ौम बनने की दावत देता है।

यों इनसान की दो सूरतें सामने आती हैं। एक तरफ़ तो हम अल्लाह की सूरत पर पैदा किए गए हैं और हमें दावत दी गई है कि उसके अहद में शरीक हों और अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त रखें। लेकिन दूसरी तरफ़ हमने अल्लाह की तरफ़ से मुँह फेर लिया है। सारी नसले-इनसानी बग़ावत पर उतर आई है। हम नेकी की निसबत ज़्यादा आसानी से बुरा काम करने के दरपै रहते हैं।

## मुसलमान का जवाब

ईसाई ईमान यह है कि इनसान अल्लाह की सूरत और शबीह पर बनाया गया है। मुसलिम ईमान फ़रक़ है। हम मानते हैं अल्लाह ने इनसान में अपनी रूह फूँकी। लेकिन हम कहते हैं कि नतीजे में उसे इल्म, क़ुव्वते-इरादा और काम करने की ताक़त हासिल हुई। अगर लोग यह नेमतें ठीक तरह से इस्तेमाल करें तो कोई डर नहीं। यानी अगर वह यह अल्लाह

की मरज़ी को समझने और उसके अहकाम बजा लाने में इस्तेमाल करें तो न उन्हें हाल और मुस्तक़बिल में ख़ौफ़ होगा, न ही माज़ी के बारे में ग़म।

इस्लाम के मुताबिक़ इनसान न सिर्फ़ अशरफ़ुल-मख़लूक़ात है बल्कि उसको ज़मीन पर अल्लाह का ख़लीफ़ा भी मुक़र्रर किया गया है। यह इज़्ज़त तमाम मर्दों और औरतों को हासिल है चाहे वह किसी भी क़बीले, तबक़े, ज़बान या तहज़ीब से ताल्लुक़ रखते हों। इनसान की इज़्ज़त यह है कि वह अल्लाह तआला का ग़ुलाम है, कि वह उसके ताबे रहता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है :

> हमने बनाया आदमी ख़ूब से अंदाज़े पर। फिर फेंक दिया उसको नीचों से नीचे। मगर जो यक़ीन लाए और अमल किए अच्छे सो उनके लिए सवाब है बेइंतहा। (अत-तीन 95:4-6)

ईसाई ईमान यह है कि हमारे पहले माँ-बाप की बग़ावत ने इनसान को बिगाड़ दिया। यह इस्लाम की तालीम के ख़िलाफ़ है। इस्लाम के मुताबिक़ तारीख़ इनसान की बग़ावत से शुरू न हुई। गो हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) ने अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी की तो भी आपने तौबा की। आपके गुनाह बख़्शे गए, यहाँ तक कि उन्हें नेकी की तरफ़ हिदायत भी दी गई। इनसान पैदाइशी गुनाहगार नहीं होता।

इन इख़्तिलाफ़ात के बावुजूद दोनों ईमान रखते हैं कि इनसान के लिए मुकाशफ़े की ज़रूरत है। इस्लाम में मुकाशफ़े का मरकज़ इलाही हिदायत है जबकि ईसाई दीन में मुकाशफ़े का मरकज़ गुनाहों से छुटकारा है।

दिल हद से ज़्यादा फ़रेबदेह है, और उसका इलाज नामुमकिन है। कौन उसका सही इल्म रखता है?

(यरमियाह 17:9)

# गुनाह और बुराई

## ईसाई का अक़ीदा

बुराई अल्लाह से नहीं आती जो कि रास्तबाज़ ख़ालिक़ है। बुनियादी तौर पर बुराई का सरचश्मा यह अच्छी दुनिया भी नहीं है। क़दीम यूनानी फ़लसफ़ी समझते थे कि रूह अच्छी है मगर मादा ख़राब है। किताबे-मुक़द्दस यह बात नहीं मानती। बुराई जहालत का नतीजा भी नहीं है। न तो अल्लाह और न उसकी अच्छी मख़लूक़ात बुराई का सरचश्मा हैं।

कलाम के मुताबिक़ हम अल्लाह से फिर जाने से ही बुरे बन जाते हैं। गुनाह करने से पहले हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) बुराई को नहीं जानते थे। लेकिन ममनुआ फल खाते ही उन्हें मालूम हुआ कि हमारे अंदर कुछ बिगड़ गया है। हमारा आपस का रिश्ता और हमारा ख़ुदा से रिश्ता और हमारा ज़मीन के साथ रिश्ता बिगड़ गया है।

ममनुआ फल खाने से उन्होंने अल्लाह से आज़ादी का एलान किया। यह घमंड का इज़हार था, क्योंकि आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम)

अल्लाह की मानिंद बनना चाहते थे (पैदाइश 3:4)। यह ख़ुदग़रज़ी का अमल भी था, क्योंकि वह बाग़ के सबके सब फल खाना चाहते थे (पैदाइश 3:6)। और यह ना-फ़रमानी थी, क्योंकि अल्लाह ने दरख़्त का फल खाने से मना किया था (पैदाइश 3:11)।

आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने ख़ुद अल्लाह से फिर जाने का फ़ैसला किया (पैदाइश 3:1-7)। बेशक इबलीस ने साँप की शक्ल में उन्हें वरग़लाया। ताहम मरकज़ी किरदार इबलीस नहीं बल्कि हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) थे। उन्होंने साँप की सुनकर अपने हाथ बढ़ाए और ममनुआ फल को खाया। अल्लाह के ख़िलाफ़ यह हरकत उनका अपना ही फ़ैसला था।

गुनाह उस वक़्त दुनिया में दाख़िल होता है जब इनसान अपनी आज़ादी ग़लत इस्तेमाल करता है। हम सब उस पहले इनसान आदम (अलैहिस-सलाम) के गुनाह में शरीक होते हैं। हम सबने अपनी आज़ादी को ग़लत इस्तेमाल किया है। पाक नविश्ते फ़रमाते हैं,

> हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की।
> (यसायाह 53:6)

हम सब इनफ़िरादी और मजमुई तौर से गुनाह के ज़िम्मेदार हैं।

इनसानी तारीख़ के आग़ाज़ में ही इनसान अल्लाह से फिर गया। हम हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) या अपने माँ-बाप को

ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकते कि हम गुनाहगार हैं। हम ख़ुद अपने गुनाहों के ज़िम्मेदार हैं, हम सब अल्लाह से फिर गए हैं। हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) की कहानी हमारी अपनी ही कहानी भी है। किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है,

> सबने गुनाह किया, सब अल्लाह के उस जलाल से महरूम हैं जिसका वह तक़ाज़ा करता है। (रोमियों 3:23)

आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) की कहानी हर एक इनसान से दोहराई जाती है। ज़ैल में गुनाह के कुछ नतायज दर्ज हैं :

- आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ख़ुद से शरमिंदा हुए (पैदाइश 3:7)। अल्लाह से फिरने से पहले वह एक दूसरे के सामने शर्म महसूस नहीं करते थे गो वह नंगे थे। मगर ना-फ़रमानी के बाद उन्होंने अपनी शर्मगाह को छुपाने के लिए अंजीर के पत्तों से लुंगियाँ सी लीं। साथ साथ वह झाड़ियों के पीछे छुप गए। वह शरमिंदा थे। हम भी अच्छे लिबास और दूसरों पर रोब डालने से अपने आपको ढाँपने की कोशिश करते हैं। हम अपनी असली हालत को छुपाने की कोशिश करते हैं। हम अपनी असली हालत दिखाने से शरमाते हैं, इसलिए हम उसे छुपाते हैं। यह सब कुछ गुनाह का अंजाम है। यह मुनाफ़क़त है।
- आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) डर गए। वह बाग़ की झाड़ियों के पीछे छुप गए। वह एक दूसरे से और अल्लाह से भी डर गए। जब

अल्लाह मामूल के मुताबिक़ हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) से रिफ़ाक़त के लिए बाग़ में ज़ाहिर हुआ तो वह अल्लाह से छुप गए। वह झाड़ियों के दरमियान दबक गए, यह सोचकर कि अल्लाह को पता नहीं चलेगा। मगर बेसूद। अल्लाह ने आवाज़ दी,

> "आदम, तू कहाँ है?" आदम ने जवाब दिया, "मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हूँ। इसलिए मैं छुप गया।" (पैदाइश 3:9-10)

इनसान को अल्लाह की सूरत पर बनाया गया था ताकि वह अपने ख़ालिक़ से रिफ़ाक़त रखे। लेकिन अब वह डरकर अपने आसमानी बाप से छुप गया। क्या यह अलमिया नहीं है? इनसान अल्लाह से जुदा हो गया। वह अपने ख़ुदा से फिरकर झाड़ियों में छुप गया। गो अल्लाह मुहब्बत रखता है तो भी वह उससे डर गए! अल्लाह से रिफ़ाक़त रखने के बजाए वह भागकर अल्लाह से छुप गए।

- आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने अपनी ग़लती क़बूल नहीं की बल्कि वह बहाना बनाने लगे।

जब अल्लाह ने उनसे बात की तो आदम (अलैहिस-सलाम) ने जवाब दिया,

> "जो औरत तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है उसने मुझे फल दिया। इसलिए मैंने खा लिया।" अब

> रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ, “तूने यह क्यों किया?” औरत ने जवाब दिया, “साँप ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया।” (पैदाइश 3:12-13)

हज़रत आदम ने हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को अपने गुनाह के लिए ज़िम्मेदार ठहराया। उन्होंने अल्लाह पर भी इलज़ाम लगाया। उन्होंने कहा कि जिस औरत को तूने मुझे दिया उसने मुझे फल दिया। और हव्वा (अलैहिस-सलाम) ने इबलीस पर इलज़ाम लगाया। दोनों ने अपना क़ुसूर क़बूल न किया।

हम भी ऐसे ही हैं। जब हमसे गुनाह सरज़द हो जाए तो दूसरों पर इलज़ाम लगाते हैं। कभी कभी हम अल्लाह पर इलज़ाम लगाते हैं। शायद हम कहें कि अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ है इसलिए गुनाह हक़ीक़त में अल्लाह का क़ुसूर है। शायद हम कहें कि अल्लाह को इजाज़त नहीं देना चाहिए था कि हमें वरग़लाया जाए। शायद हम ख़ुदा को हमारे किसी गुनाह या आफ़त के लिए मुलज़िम ठहराएँ। ज़्यादा हम इबलीस पर इलज़ाम लगाते हैं। या हम अपने माँ-बाप और भाई-बहनों पर इलज़ाम लगाते हैं कि हमसे ग़लतियाँ सरज़द हुई हैं। हम ख़ुद ज़िम्मेदार नहीं ठहरना चाहते बल्कि दूसरों पर इलज़ाम लगाते हैं।

- इज़दिवाजी रिश्ता बिगड़ गया। गुनाह करने से पहले उनका एक दूसरे के साथ अच्छा रिश्ता था। मगर जब उन्होंने गुनाह किया तो वह अपनी अंदरूनी हालत एक दूसरे से छुपाने लगे।

कलाम यह भी फ़रमाता है कि गुनाह के नतीजे में हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) अपनी बीवी पर हुकूमत जताने लगे, और हव्वा (अलैहिस-सलाम) उनके तहत दबने लगीं (पैदाइश 3:16)। शादी में इस क़िस्म का रिश्ता ज़्यादती है। बग़ावत के सबब से शादी के रिश्ते में ज़्यादती का उनसुर आ गया। औरत मर्दों को राग़िब करने के कपड़े पहनती है। दूसरी तरफ़ आदमी कोशिश करता है कि औरत को ज़बरदस्ती से शादी में या बग़ैर शादी के अपने मातहत कर ले।

जन्म देने का अमल भी ज़्यादा दर्दनाक हो गया।

> फिर रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ और कहा, "जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तकलीफ़ को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद दर्द का शिकार होगी। (पैदाइश 3:16)

बच्चे बरकत का बाइस होते हैं। मगर गुनाह के बाइस जन्म देने का सिलसिला तकलीफ़देह हो गया। बच्चे न सिर्फ़ दर्द के साथ पैदा होते हैं बल्कि वह अपने माँ-बाप की ना-फ़रमानी करने से भी दर्द का सबब बनते हैं।

- हर काम मुश्किल हो गया। अल्लाह ने आदम (अलैहिस-सलाम) से कहा कि

> तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है। उससे ख़ुराक हासिल करने के लिए तुझे उम्र-भर मेहनत- मशक़्क़त करनी पड़ेगी। (पैदाइश 3:17)

शुरू में हर काम बरकत का बाइस था। अल्लाह ने हुक्म दिया था कि ज़मीन में बेहतरी पैदा करो। मगर ना-फ़रमानी के बाद क़ुदरत के साथ इनसान का रिश्ता बिगड़ गया। जब वह क़ुदरत से फ़ायदा उठाने लगे तो ज़मीन कराहने लगी। ज़मीन इनसान के सबब से मलऊन हो गई। फ़सल के साथ साथ काँटे और ऊँटकटारे भी उगने लगे। इनसान क़ुदरत के साथ जूझने लगा, और क़ुदरत इनसान से जूझने लगी। रोज़ी के लिए सख़्त मेहनत करनी पड़ी।

- गुनाह के ज़रीए मौत आई। ख़ुदा ज़िंदगी बख़्शनेवाला है। चुनाँचे जब हमारा ख़ुदा के साथ अच्छा रिश्ता हो तो हमें ख़ुशहाल ज़िंदगी हासिल होती है। अल्लाह से फिर जाने से इनसान ने ज़िंदगी बख़्शनेवाले से आज़ादी का एलान किया। नतीजे में वह मौत की तरफ़ मुड़ गया। हम इसलिए मरते हैं कि हम अल्लाह से फिर गए हैं। इंजील जलील फ़रमाती है,

> गुनाह का अज्र मौत है। (रोमियों 6:23)

यह मौत जिस्मानी मौत से ज़्यादा है। मौत का गहरा मतलब यह है कि वह इनसानियत बिगड़ गई जो अल्लाह की सूरत पर बनाई

गई थी। हमारी ज़िंदगियों को अल्लाह के जलाल और रास्तबाज़ी को मुनअकिस करना चाहिए। मगर इसके बजाए हम ख़ुदग़रज़ और घमंड होते हैं। हमारी इनसानियत ख़राब हो गई है। हम मुहब्बत के बजाए दूसरों से नफ़रत करते हैं। हम एक दूसरे के साथ बाँटने के बजाए एक दूसरे से ज़्यादती करते हैं। हम माफ़ करने के बजाए तलख़ी महसूस करते हैं। हम सच्चे होने के बजाए फ़रेबी और धोकेबाज़ हैं। हम क़दम बक़दम अल्लाह से दूर होते चले जाते हैं। यों हम अपनी ज़िंदगी में भी मौत का तजरिबा करते हैं। मौत अल्लाह से हमेशा की जुदाई है। अल्लाह से जुदाई सबसे बड़ी बुराई है। अल्लाह से जुदाई मौत है।

- मौत फैलकर सारे रिश्तों में अपना ज़हर डाल देती है। हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) के ख़ानदान में मौत की हुकूमत थी। बड़े बेटे क़ाबील ने अपने छोटे भाई हाबील को क़त्ल किया (पैदाइश 4:1-16)। क़ाबील ने हसद की वजह से अपने भाई को क़त्ल किया। पहले इनसानी ख़ानदान से क़त्ल सरज़द हुआ। बड़े भाई ने अपने छोटे भाई को क़त्ल किया!

  इनसानी ख़ानदान में पहला क़त्ल ज़ाहिर करता है कि गुनाह हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) से आगे फैल गया था। अल्लाह से बग़ावत सारी इनसानी नसल में फैल गई है। इंजील जलील फ़रमाती है,

> कोई नहीं जो रास्तबाज़ है, एक भी नहीं।
> (रोमियों 3:10)

नीज़,

> सब इसलिए मरते हैं कि वह आदम के फ़रज़ंद हैं।
> (1 कुरिंथियों 15:22)

कलाम फ़रमाता है कि

> हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की।
> (यसायाह 53:6)

हममें से हर एक अल्लाह से बग़ावत कर चुके हैं, और हम सब मौत के पंजे में आ गए हैं। हमारी इनसानियत अलमिया तौर से बिगड़ चुकी है। इनसान अल्लाह के फ़रज़ंद हैं जो अल्लाह की सूरत पर ख़लक़ किए गए हैं। ताहम वह अल्लाह से जुदा हो गए हैं। रास्तबाज़ होने के बजाए हम गुनाहगार हैं। हम जीने के बजाए मौत की गिरिफ़्त में हैं।

हमारा गुनाह बग़ावत है। यह बुराई के उन कामों से ज़्यादा है जो हम कर बैठते हैं। हम ख़ुद गुनाहगार हैं। हमारे दिल शरीर हैं। किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है,

> दिल हद से ज़्यादा फ़रेबदेह है, और उसका इलाज नामुमकिन है। कौन उसका सही इल्म रखता है? (यरमियाह 17:9)

जो भी ग़लत काम हम करते हैं वह सब हमारे दिल की बुराई के अंजाम होते हैं। हम ख़ुद गुनाहगार हैं, इसलिए ग़लत काम करते हैं। किताबे-मुक़द्दस बहुत मिसालें पेश करती है कि इनसान ने किस तरह गुनाह और मौत का तजरिबा किया है। हारून इमाम (अलैहिस-सलाम) ने सोने का बुत बनाने में लोगों की मदद की (ख़ुरूज 32 बाब)! हज़रत दाऊद (अलैहिस-सलाम) से ज़िनाकारी सरज़द हुई। न सिर्फ़ यह बल्कि जिस औरत से यह हुई, उसके नेक शौहर को उन्होंने मरवा डाला (2 समुएल 11)। नबी भी गुनाहगार थे। किताबे-मुक़द्दस किसी के भी गुनाह पर परदा नहीं डालती। हज़रत आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, हारून, दाऊद (अलैहुम अस-सलाम)—इन सबसे नाकामियाँ और गुनाह सरज़द हुए। इसलिए किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है, "सबने गुनाह किया और अल्लाह के जलाल से महरूम हैं।"

तारीख़ भी हमारी गुनाहगारी ज़ाहिर करती है। इनसान एक दूसरे को क़त्ल करते हैं। जो आलीशान इमारतें एक तामीर करता है उन्हें दूसरा बरबाद कर देता है। सलतनतें और तहज़ीबें उरूज पर आकर ख़त्म हो जाती हैं। जंग के सबब से लाखों करोड़ों तबाह हो जाते हैं।

इनसानियत मौत के असर में आ गई है। हम सबके सब फिर गए हैं। मौत हमारा एक आम तजरिबा बन रह गया है।

बग़ावत और ना-फ़रमानी न सिर्फ़ इनसान से सरज़द हुई बल्कि कुछ रूहों और फ़रिश्तों से भी। यह रूहानी मख़लूक़ भी आज़ाद मरज़ी रखते हैं। वह भी अल्लाह से फिर सकते हैं। इबलीस एक ऐसा फ़रिश्ता है जिसने बग़ावत की। वह मग़रूर होकर अल्लाह से फिर गया (यसायाह 14:12-14)। दीगर फ़रिश्ते उसके पीछे हो लिए (इफ़िसियों 6:12;2:2)। इबलीस और बदरूहें मुकम्मल तौर से बाग़ी हैं। वह हर अच्छी चीज़ को बरबाद करने की कोशिश में लगे हैं। इनका रुख़ मौत की तरफ़ है, और वह लोगों और मुआशरों को मौत के रास्ते में लाने की भरपूर कोशिश करते हैं।

चाहे बुराई रूहानी और पोशीदा ताक़तों या इनसान से सरज़द हो जाए वह हमेशा ही बग़ावत का अंजाम है। हर तरह की अल्लाह से बग़ावत बुरी है। अल्लाह के साथ सही रिश्ता हमेशा अच्छा है। मगर इनसान ने अल्लाह की ना-फ़रमानी की, इसलिए हम मौत के असर में आ गए हैं।

## ख़ुलासा

सवाल यह है : हम किस तरह मौत से बच सकते हैं? हम जो अल्लाह से फिर चुके हैं किस तरह फिर से ख़ुशहाल ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं? अल्लाह की सूरत जो बग़ावत के सबब से ख़राब हो चुकी है वह किस

तरह बहाल हो सकती है? इन्हीं सवालों का जवाब किताबे-मुक़द्दस में पाया जाता है।

## मुसलमान का जवाब

मुसलमान मुत्तफ़िक़ हैं कि हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने ममनुआ फल को खाकर अल्लाह की ना-फ़रमानी की। ईसाई नुकताए-नज़र से जब हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने फल को लिया तो वह अल्लाह से अपनी आज़ादी का एलान कर रहे थे और अल्लाह की मानिंद बनना चाहते थे।

मुसलमान का ईमान यह है कि हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने अपनी ख़ता को पहचानते हुए अल्लाह से माफ़ी माँगी, और उन्हें बख़्शा गया। हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) को ज़मीन पर पहला पैग़ंबर भी बनाया गया। ईसाई ईमान इबलीस का किरदार इतनी अहमियत नहीं देता बल्कि समझता है कि इनसान ख़ुद बग़ावत के ज़िम्मेदार है। हम समझते हैं कि शैतान जो बुराई की ताक़त है उस पूरे ड्रामे का मरकज़ था। बल्कि बाग़े-अदन से हज़रत आदम (अलैहिस-सलाम) के नुज़ूल का ज़िम्मेदार भी वही था।

मुसलमान होने के नाते से हम हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) पर इलज़ाम नहीं लगाते कि उनके ज़रीए तमाम नसले-इनसानी में गुनाह और बुराई मुंतक़िल हो गई। दोनों को माफ़ी मिल गई, और उनकी नसल गुनाह के उस असर से महफ़ूज़ रही। गुनाह न मौरूसी और

न ही नागुज़ीर है। इनसान अपनी आज़ाद मरज़ी से गुनाह करता है। मगर इल्म और अल्लाह की हिदायत से वह उससे बच सकता है। मुसलमान समझते हैं कि इनसान बुनियादी तौर से अच्छा है और इज़्ज़तदार है। वह एक गिरा हुआ मख़लूक़ नहीं है। मुसलमान यक़ीनी तौर से मुत्तफ़िक़ नहीं हैं कि अंबिया गुनाहगार हैं।

## ईसाई की विज़ाहत

मौरूसी गुनाह पर बहस करने की निसबत ज़्यादा ज़रूरी यह है कि हम पहचानें कि हमें गुनाह से छुटकारे की ज़रूरत है। यह बात ज़्यादा अहम है इसकी निसबत कि हम इस पर बहस करें कि गुनाह किस तरह नसल दर नसल मुंतक़िल होता या नहीं होता।

तेरा कलाम मेरे पाँवों के लिए चराग़ है जो मेरी राह को रौशन करता है।

(ज़बूर शरीफ़ 119:105)

# अल्लाह का कलाम

## ईसाई के इलहामी नविश्ते

ईसाई ईमान रखते हैं कि किताबे-मुक़द्दस अल्लाह का कलाम है। किताबे-मुक़द्दस ख़ुद ही फ़रमाती है कि

> हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है और तालीम देने, मलामत करने, इसलाह करने और रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने की तरबियत देने के लिए मुफ़ीद है। कलामे-मुक़द्दस का मक़सद यही है कि अल्लाह का बंदा हर लिहाज़ से क़ाबिल और हर नेक काम के लिए तैयार हो। (2 तीमुथियुस 3:16-17)

ईसाई ईमान रखते हैं कि मुक़द्दस नविश्ते अल्लाह के रूह से वुजूद में आए हैं। यही इल्हाम का मतलब है, कि अल्लाह का कलाम रूह के ज़रीए उसके मुक़द्दस बंदों के अंदर डाला गया, और नतीजे में उन्होंने यह कलाम बोला या लिखा।

इलाही इल्हाम का मतलब इमला नहीं है। किताबे-मुक़द्दस के तमाम नविश्तों में फ़रक़ फ़रक़ मुसन्निफ़ों के किरदार नज़र आते हैं। दाऊद एक नज़मनिगार थे, और यह नेमत ज़बूर लिखने में इस्तेमाल हुई। नविश्तों को क़लमबंद करते वक़्त मुसन्निफ़ों की नेमतें और किरदार काम में लाए गए।

## किताबे-मुक़द्दस की तरतीब

किताबे-मुक़द्दस को दो बड़े हिस्सों में तक़सीम किया गया है—पुराना अहदनामा और नया अहदनामा। जो अहद बाँधता है वह वादा करता है कि इसे नहीं तोड़ूँगा। पुराना अहदनामा उस अहद की तरफ़ इशारा है जो अल्लाह ने इसराईलियों से सीना पहाड़ पर बाँधा। सीना पहाड़ पर अल्लाह ने उनको अपने अहकाम अता किए (ख़ुरूज 20:1-17)। उसने उन्हें दावत दी कि वह उसके अहद के लोग बन जाएँ। उसने वादा किया कि वह बाप की तरह उनकी परवरिश करेगा। पुराना अहदनामा अल्लाह के इज़हार और लोगों के जवाब का बयान है।

अफ़सोस, इसराईली अल्लाह पर यों भरोसा न कर पाए जिस तरह उन्हें करना चाहिए था। सीना पहाड़ के दामन में ही वह सोने के बछड़े की परस्तिश करने लगे। बार बार वह अल्लाह की तरफ़ से फिरते गए। वह अल्लाह के अहकाम पर अमल करने के क़ाबिल न रहे बल्कि बहुत बार वह यह चाहते भी नहीं थे। वह गुनाहगार थे (ख़ुरूज 32:7-10)। आहिस्ता आहिस्ता अल्लाह ने पुराने अहदनामे के नबियों पर ज़ाहिर किया कि

पुराना अहद नाकाफ़ी है। उन पर मुंकशिफ़ हुआ कि अल्लाह इनसान के साथ एक नया अहद बाँधने को है—क़ुव्वत और फ़ज़ल का एक ऐसा अहद जो इनसान के दिल को तबदील करेगा। गो इनसान ख़ुदा की सूरत पर बनाया गया था तो भी यह सूरत गुनाह के बाइस बिगड़ गई थी। लेकिन नए अहद से यह सूरत बहाल हो जाएगी।

इस नए अहद के बारे में यरमियाह नबी फ़रमाता है,

> रब फ़रमाता है, "ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं इसराईल के घराने और यहूदाह के घराने के साथ एक नया अहद बाँधूँगा। यह उस अहद की मानिंद नहीं होगा जो मैंने उनके बापदादा के साथ उस दिन बाँधा था जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिसर से निकाल लाया। क्योंकि उन्होंने वह अहद तोड़ दिया, गो मैं उनका मालिक था।" यह रब का फ़रमान है। "जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद इसराईल के घराने के साथ बाँधूँगा उसके तहत मैं अपनी शरीअत उनके अंदर डालकर उनके दिलों पर कंदा करूँगा। तब मैं ही उनका ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम होंगे। (यरमियाह 31:31-33)

पुराने अहदनामे के अंबिया पर यह भी ज़ाहिर हुआ कि नया अहद अल-मसीह के ज़रीए पूरा किया जाएगा। इस तरफ़ इशारा बाग़े-अदन में ही मिलता है। जब हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने गुनाह किया तो अल्लाह ने फ़रमाया कि औरत की नसल से एक बच्चा पैदा

होगा जो इबलीस के सर को कुचलेगा (पैदाइश 3:15)। यह अल-मसीह के बारे में पहली पेशगोई है। बाद में मज़ीद बहुत-सी पेशगोइयाँ पेश की गईं कि जो वादे अल्लाह ने इनसान से किए हैं वह अल-मसीह में पूरे हो जाएँगे। उसी के ज़रीए इनसान से एक नया और बेहतर अहद बाँधा जाएगा (यसायाह 11:1-9)।

पुराना अहदनामा बड़ी तफ़सील से अल-मसीह के बारे में पेशगोइयाँ पेश करता है। मसलन

- वह दाऊद बादशाह की नसल से होगा (2 समुएल 7:12-13)।
- वह कुँवारी से पैदा होगा (यसायाह 7:14)।
- वह बैत-लहम में पैदा होगा (मीकाह 5:2)।
- वह इम्मानुएल यानी ख़ुदा हमारे साथ होगा (यसायाह 7:14)।
- वह इनसान से क़बूल नहीं किया जाएगा (यसायाह 53:3-9)।
- वह बदकारों के साथ दुख उठाएगा और मारा जाएगा (ज़बूर 22:16-17)।
- वह दौलतमंद की क़ब्र में दफ़न किया जाएगा (यसायाह 53:9)।
- वह मुरदों में से जी उठेगा (ज़बूर 16:10)।

अल-मसीह की आमद के बारे में यह कुछ ही पुराने अहदनामे की नबुव्वतें हैं। यह सब अल-मसीह में पूरी हुईं।

नया अहदनामा बयान करता है कि अल्लाह ने पुराने अहदनामे की पेशगोइयों को अल-मसीह में किस तरह पूरा करके नया अहद क़ायम

किया। उसमें अल-मसीह की ज़िंदगी और तालीमात और उम्मत की तामीर और सरगरमियाँ बयान की गई हैं। पुराना अहदनामा अल-मसीह की आमद की तरफ़ इशारा है जबकि नया अहदनामा ज़ाहिर करता है कि अल-मसीह आ चुका है।

अल्लाह के मुकाशफ़े को समझने के लिए पुराने अहदनामे और नए अहदनामे दोनों की ज़रूरत है। पुराना अहदनामा नए अहदनामे की तैयारी करता है; ईसाइयों का ईमान है कि दोनों अहदनामे अल्लाह का इलहामी कलाम हैं।

इन दो अहदनामों में क्या क़लमबंद हुआ है? हक़ीक़त में किताबे-मुक़द्दस एक कुतुब-ख़ाना है जिसकी किताबें कई सदियों में तसनीफ़ हुईं। इनको यों तक़सीम किया जाता है :

तौरेत — तारीख़ी सहायफ़ — सहायफ़े-हिकमत और ज़बूर — सहायफ़े-अंबिया — इंजील

पहले चार हिस्से पुराना अहदनामा कहलाते हैं और इबरानी और अरामी ज़बान में मरक़ूम हुए। इंजील को नया अहदनामा भी कहा जाता है, और वह यूनानी ज़बान में क़लमबंद हुई।

## पुराना अहदनामा

तौरेत पुराने अहदनामे का पहला हिस्सा है। उसमें किताबे-मुक़द्दस की पाँच किताबें पाई जाती हैं—पैदाइश, ख़ुरूज, अहबार, गिनती, और इस्तिसना। तौरेत बल्कि पूरे पुराने अहदनामे का सबसे अहम नबी हज़रत

मूसा (अलैहिस-सलाम) हैं। तौरेत में लिखा है कि अल्लाह ने हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) को हुक्म दिया कि अहद के कलाम को लिखें (ख़ुरूज 34:27-28)। यह ग़ैरमामूली है। आम तौर पर नबी अल्लाह के कलाम को सुनकर मुनादी करते थे। फिर उनके शागिर्द यह कलाम क़लमबंद करते। (नोट करें यरमियाह 36:4)। मगर हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) के बारे में लिखा है कि उन्होंने कलाम के कुछ हिस्से अपने ही हाथ से लिखा (इस्तिसना 31:9)। हमें पूरा यक़ीन है कि तौरात का मुकम्मल नुसख़ा हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) और उनके शागिर्दों के वसीले से हम तक पहुँच गया है।[1]

तौरेत के बाद तारीख़ी सहायफ़ और सहायफ़े-हिकमत और ज़बूर दर्ज हैं। तारीख़ी सहायफ़ में ज़ैल की किताबें दर्ज हैं :

यशुअ, क़ुज़ात, रूत, 1 और 2 समुएल, 1 और 2 सलातीन, 1 और 2 तारीख़, अज़रा, नहमियाह और आस्तर।

सहायफ़े-हिकमत और ज़बूर में ज़ैल की किताबें दर्ज हैं :

ऐयूब, ज़बूर शरीफ़, अमसाल, ग़ज़लुल-ग़ज़लात और वायज़। हज़रत दाऊद ने कई ज़बूर लिखे। बहुत-से ज़बूर अल्लाह तआला की हम्दो-सना करते हैं।

पुराने अहदनामे का चौथा हिस्सा सहायफ़े-अंबिया हैं। इनमें ज़ैल की किताबें दर्ज हैं :

1 W. F. Albright, *From the Stone Age to Christianity*, (New York: Doubleday, 1957), pp 249-272.

यसायाह, यरमियाह, नोहा, हिज़क़ियेल, दानियाल, होसेअ, योएल, आमूस, अबदियाह, यूनुस, मीकाह, नाहूम, हबक़्क़ूक़, सफ़नियाह, हज्जी, ज़करिया और मलाकी।

पुराने अहदनामे के तमाम नविश्ते इलहामी हैं। तो भी नबियों के सहायफ़ कुछ फ़रक़ हैं। जब भी अल्लाह के बंदों का ईमान ज़वाल पर आता तो वह अपने नबियों को भेजता ताकि वह लोगों को वापस लाएँ। तमाम नबियों का मक़सद यही था कि वह लोगों को बताएँ कि वह तौबा करके उस अहद की तरफ़ रुजू करें जो अल्लाह ने सीना पहाड़ पर उनके साथ बाँधा था। साथ साथ अंबिया पर ज़ाहिर होता गया कि पुराना अहद नाकाफ़ी है। लिहाज़ा उनके नविश्तों में अल-मसीह की आमद की पेशगोइयाँ पाई जाती हैं।

पुराने अहदनामे का एक अज़ीम नबी यसायाह थे जिन्होंने पेशगोई की कि अल-मसीह एक नया अहद क़ायम करेगा जो तमाम इनसान के लिए बरकत का बाइस होगा। उसने यह भी नबुव्वत की कि अल-मसीह दुख उठाएगा और लोगों के गुनाहों के लिए अपनी जान देगा।

## नया अहदनामा

नया अहदनामा मजमुई तौर पर इंजील कहलाता है। पहले चार नविश्ते अल-मसीह की ज़िंदगी और तालीमात बयान करते हैं। हक़ीक़त में अल-मसीह ख़ुद ही इंजील हैं। इंजील का लफ़्ज़ एक यूनानी लफ़्ज़ की अरबी शक्ल है जिसके मानी ख़ुशख़बरी या बिशारत हैं।

अल-मसीह ख़ुद ही इंजील हैं। जो उनके क़रीब थे वह शागिर्द कहलाते थे। अल-मसीह ने उनमें से कुछ रसूल मुक़र्रर किए। यह शागिर्द और रसूल बाद में भी इंजील के गवाह रहे। वह अल-मसीह के साथ रहा करते थे। वह उनको शख़्सी तौर से जानते थे। अल-मसीह की मौत और क़ियामत के बाद अल्लाह ने रसूलों को इल्हाम दिया कि जो कुछ उन्होंने देखा और सुना उसे क़लमबंद करें। इन गवाहियों के चार नविश्ते हैं : मत्ती, मरक़ुस, लूक़ा और यूहन्ना। हर एक अल-मसीह से मुताल्लिक़ एक रसूली गवाही है। यह बात कि यह नविश्ते गवाही देते हैं लूक़ा की इंजील में बयान किया गया है,

> बहुत-से लोग वह सब कुछ लिख चुके हैं जो हमारे दरमियान वाक़े हुआ है। उनकी कोशिश यह थी कि वही कुछ बयान किया जाए जिसकी गवाही वह देते हैं जो शुरू ही से साथ थे और आज तक अल्लाह का कलाम सुनाने की ख़िदमत सरंजाम दे रहे हैं। मैंने भी हर मुमकिन कोशिश की है कि सब कुछ शुरू से और ऐन हक़ीक़त के मुताबिक़ मालूम करूँ। अब मैं यह बातें तरतीब से आपके लिए लिखना चाहता हूँ। आप यह पढ़कर जान लेंगे कि जो बातें आपको सिखाई गई हैं वह सच और दुरुस्त हैं। (लूक़ा 1:1-4)

इंजील की गवाही इसलिए क़लमबंद हुई कि हम यह पढ़कर जान लें कि क्या कुछ सच और दुरुस्त है।

नए अहदनामे में न सिर्फ़ अल-मसीह की ज़िंदगी और तालीम को क़लमबंद किया गया है। पाँचवीं किताब रसूलों के आमाल है। यह किताब इब्तिदाई उम्मत की मुख़तसर तारीख़ पेश करती है। यह किताब बताती है कि नए अहद की उम्मत किस तरह क़ायम हुई। कि उन्होंने ख़ुशख़बरी दुनिया के कोने कोने तक कैसे फैलाई। आमाल की किताब में रसूलों के कई वाज़ भी शामिल हैं। यह पैग़ामात अल-मसीह का दुनिया में आने का मक़सद बयान करते हैं।

इसके बाद रसूली ख़ुतूत दर्ज हैं। ज़ैल में इनके नाम दर्ज हैं :

रोमियों, 1 और 2 कुरिंथियों, गलतियों, इफ़िसियों, फ़िलिप्पियों, कुलुस्सियों, 1 और 2 थिस्सलुनीकियों, 1 और 2 तीमुथियुस, तितुस, फ़िलेमोन, इबरानियों, याक़ूब, 1 और 2 पतरस, 1, 2 और 3 यूहन्ना, यूदाह और मुकाशफ़ा।

यह ख़ुतूत उम्मत की राहनुमाई के लिए लिखे गए।

मसलन पौलुस रसूल ने फ़िलिप्पियों का खत फ़िलिप्पी शहर की जमात की राहनुमाई के लिए लिखा। इबरानियों के नाम खत बयान करता है कि अल-मसीह किस तरह पुराने अहदनामे की तकमील हैं। याक़ूब का खत बयान करता है कि ईसाइयों का चाल-चलन किस तरह होना चाहिए। तमाम ख़ुतूत ईसाई ईमान और चाल-चलन के बारे में तालीम देते हैं।

दीगर ख़ुतूत उम्मत के राहनुमाओं को लिखे गए उन्हें यह तालीम देने के लिए कि किस तरह उम्मत की राहनुमाई करें। मसलन पौलुस रसूल के दो ख़ुतूत एक जवान पासबान बनाम तीमुथियुस को लिखे गए। एक और दिलचस्प खत फ़िलेमोन को लिखा गया जिसमें उसको यह हिदायत दी गई है कि वह अपने ग़ुलाम से बिरादराना मुहब्बत रखे। रसूल से यह खत हासिल करने के बाद ग़ालिबन मालिक ने उस ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया। नए अहदनामे की आख़िरी किताब मुकाशफ़ा है। उसमें अल-मसीह की उस फ़तह का बयान है जो आख़िरत में ज़ाहिर होगी।

किताबे-मुक़द्दस एक अनोखी किताब है। तीस से ज़्यादा नबियों और रसूलों की तालीम किताबे-मुक़द्दस में क़लमबंद हुई है। किताबे-मुक़द्दस के नविश्ते हज़ार से ज़्यादा सालों के दौरान क़लमबंद हुए। इसके बावुजूद तमाम तहरीरों में अनोखा इत्तफ़ाक़ पाया जाता है। सबमें यह बात ज़ाहिर होती है कि अल्लाह का मनसूबा तारीख़ में जारी है। उसकी मंशा इनसान को गुनाह से छुटकारा देना और मौत से बचाना है। उसका छुटकारे का काम अल-मसीह में पूरा हुआ और तकमील तक पहुँचा।

## नुसख़े और तरजुमे

क़दीम ज़माने में किताबे-मुक़द्दस के तमाम नुसख़ों को हाथ से नक़ल किए जाते थे। जब एक नुसख़े को नक़ल किया जाता है तो हमेशा इनसानी ग़लतियों के इमकान हो सकते हैं। पंद्रहवीं सदी में किताबे-मुक़द्दस प्रिंटिंग प्रेस के ज़रीए छपने लगी। इससे ग़लतियों का इमकान ख़त्म हुआ। इसके बावुजूद माहिरीन की यह कोशिश रही है कि मौजूदा किताबे-मुक़द्दस का मतन असल और इब्तिदाई नुसख़ों के ऐन मुताबिक़ हो। यह सरंजाम देने के लिए वह मौजूदा नुसख़ों का क़दीम नुसख़ों से मुवाज़ना करते हैं।

पुराना अहदनामा इबरानी और अरामी ज़बान में क़लमबंद हुआ जबकि नया अहदनामा यूनानी ज़बान में लिखा गया। उलमा जानना चाहते हैं कि मौजूदा इबरानी, अरामी और यूनानी नुसख़े भरोसे के लायक़ हैं या नहीं। इसके लिए वह सायंस के जदीदतरीन तरीक़े इस्तेमाल करते हैं।

जदीद दौर में कई-एक क़दीमतरीन नुसख़े पाए गए हैं। मसलन 1947 में बहीराए-मुरदार के क़रीब क़ुमरान में पुराने अहदनामे के ऐसे नुसख़े मिले जो दूसरी सदी क़बल अज़ मसीह के हैं। इसी तरह नए अहदनामे के कई-एक क़दीमतरीन नुसख़े पाए गए हैं। इनमें से एक अल-मसीह की मौत के सौ साल के अंदर ही लिखा गया। इस वक़्त हमारे पास नए अहदनामे के कम अज़ कम पाँच हज़ार क़दीम नुसख़े दस्तयाब हैं। इन क़दीम नुसख़ों के मुतालए ने इसकी तसदीक़ की कि जो किताबे-मुक़द्दस आज हमारे पास मौजूद है वह असल के ऐन मुताबिक़ है। उलमा यक़ीन से कह सकते हैं कि मौजूदा इंजील और असल में फ़रक़ न होने के बराबर है। जहाँ मामूली से फ़रक़ का इमकान है वहाँ उसका किताबे-मुक़द्दस के पैग़ाम पर कोई भी असर नहीं पड़ता।[1]

हम ईसाई इस पर बहुत ज़ोर देते आए हैं कि किताबे-मुक़द्दस का मतन क़ाबिले-एतबार हो, क्योंकि हम ईमान रखते हैं कि किताबे-मुक़द्दस अव्वल दर्जे का इख़्तियार रखती है। ख़ुद अल-मसीह ने फ़रमाया,

> मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक आसमानो-ज़मीन क़ायम रहेंगे तब तक शरीअत भी क़ायम रहेगी — न उसका कोई हरफ़, न उसका कोई ज़ेर या ज़बर मनसूख़ होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। (मत्ती 5:18)

अल-मसीह के मुताबिक़ ज़ेर और ज़बर तक भी अहम है।

---

1 Sean Kealy, *The Changing Bible*, (Nairobi : N.D.), p 87.

और मुकाशफ़े की किताब फ़रमाती है,

> मैं, यूहन्ना हर एक को जो इस किताब की पेशगोइयाँ सुनता है आगाह करता हूँ, अगर कोई इस किताब में किसी भी बात का इज़ाफ़ा करे तो अल्लाह उसकी ज़िंदगी में उन बलाओं का इज़ाफ़ा करेगा जो इस किताब में बयान की गई हैं। और अगर कोई नबुव्वत की इस किताब से बातें निकाले तो अल्लाह उससे किताब में मज़कूर ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने और मुक़द्दस शहर में रहने का हक़ छीन लेगा।
>
> (मुकाशफ़ा 22:18-19)

ऐसी सख़्त आगाहों के पेशे-नज़र कौन किताबे-मुक़द्दस में तबदीली लाएगा? ईसाई यक़ीन रखते हैं कि किताबे-मुक़द्दस अल्लाह का इलहामी कलाम है। इसलिए वह इसकी तसदीक़ करते आए हैं कि किताबे-मुक़द्दस का मतन क़ाबिले-एतमाद है।

हम ईसाई समझते हैं कि किताबे-मुक़द्दस का दुनिया की तमाम ज़बानों में तरजुमा किया जाना चाहिए। किताबे-मुक़द्दस का पैग़ाम यह है कि अल्लाह ने ख़ुद को इनसान पर ज़ाहिर किया। इनसान इस मुकाशफ़े को तब साफ़ समझ सकता है जब वह उसे अपनी मादरी ज़बान में पढ़ और सुन सकता है। तरजुमों के पीछे यही ख़याल है। यहूदियों ने चौथी सदी क़बल अज़ मसीह पुराने अहदनामे का यूनानी तरजुमा किया।

ईसाई ईमानदारों ने यह सिलसिला जारी रखा। दूसरी सदी ईसवी से ही किताबे-मुक़द्दस का तरजुमा मक़ामी ज़बानों में होने लगा। ग़ालिबन शाम में पहला तरजुमा अरामी ज़बान में हुआ। फिर मिसरी ज़बान में, शिमाली अफ़्रीक़ा में लातीनी ज़बान में और एथोपिया की ज़बान में। आज भी हम किताबे-मुक़द्दस का मक़ामी ज़बानों में तरजुमा अपना अव्वल फ़र्ज़ समझते हैं। किताबे-मुक़द्दस के कम अज़ कम कुछ हिस्सों का तरजुमा दो हज़ार से ज़्यादा ज़बानों में किया जा चुका है। उम्मत की यह ख़ाहिश है कि तमाम दुनिया के लोग अल्लाह के कलाम को अपनी मादरी ज़बान में पढ़ सकें।

## ख़ुलासा

ईसाई ईमान रखते हैं कि किताबे-मुक़द्दस अल्लाह का कलाम है। किताबे-मुक़द्दस अल्लाह के उन कामों का बयान है जो उसने अपने अहद के लोगों के साथ किए। इसके अलावा कलाम अल्लाह के नए अहद का बयान भी है जो अल-मसीह से क़ायम हुआ। कलाम इन कामों की तशरीह भी करता है।

## मुसलमान का जवाब

क़ुरान शरीफ़ ने तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इंजील शरीफ़ की बहुत ताज़ीम की है। वह मानता है कि यह नविश्ते इलाही हिदायात पेश करते हैं। जिन नबियों पर यह नविश्ते नाज़िल हुए (हज़रत मूसा, हज़रत दाऊद

(अलैहुम अस-सलाम) और हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना)) उनके बारे में फ़रमाया गया है कि यह अल्लाह तआला के अज़ीम अंबिया थे। मुसलमान इसका इनकार नहीं करते कि यह नबी हैं।

तो भी मुकाशफ़े और पाक नविश्तों के बारे में ईसाइयों का ख़याल मुसलिम सोच से बहुत फ़रक़ है। ईसाई ईमान रखते हैं कि किताबे-मुक़द्दस इलहामी है मगर इमला के ज़रीए क़लमबंद न हुआ। वह कहते हैं कि नबी ने अपने ही अलफ़ाज़ और किरदार के ज़रीए ही अल्लाह का कलाम बयान किया। नीज़ कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ख़ुद ही इंजील हैं।

इसके बरअक्स मुसलमान मानते हैं कि इलहामी नविश्ते बराहे-रास्त अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुए हैं। नबियों की ज़िंदगियाँ इलाही पैग़ाम का हिस्सा नहीं हो सकतीं। यही वजह है कि मुसलमान समझते हैं कि गो अहादीस ज़रूरी हैं तो भी वह क़ुरान शरीफ़ के बराबर नहीं हैं।

अफ़सोस कि ईसाई नहीं मानते कि क़ुरान शरीफ़ अल्लाह का आख़िरी और हतमी मुकाशफ़ा है।

कोई भी पेशगोई कभी भी इनसान की तहरीक से वुजूद में नहीं आई बल्कि पेशगोई करते वक़्त इनसानों ने रूहुल-क़ुद्स से तहरीक पाकर अल्लाह की तरफ़ से बात की।

(2 पतरस 1:21)

# अंबिया का किरदार

## ईसाई का अक़ीदा

किताबे-मुक़द्दस अल्लाह की नजात के काम सुनाती है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन कामों की तशरीह भी करती है। ख़ुदा अपने नबियों और रसूलों के ज़रीए इन कामों का मतलब बताता है।

हम कलाम का यह किरदार एक मिसाल से वाज़िह कर सकते हैं। मत्ती रसूल अल-मसीह की पैदाइश बयान भी करता है और उसकी तशरीह भी करते हैं (मत्ती 1:18–2:23)। मत्ती फ़रमाते हैं कि हज़रत यूसुफ़ और कुँवारी मरियम की शादी से पहले मरियम हामिला पाई गई। फ़रिश्ते ने यूसुफ़ और कुँवारी मरियम को बताया कि यह रूहुल-क़ुद्स के वसीले से हुआ है। तब नजातदहिंदा बैत-लहम क़सबे में पैदा हुआ।

मजूसियों ने मशरिक़ में एक ख़ास सितारा देखकर पहचान लिया कि यह अल्लाह की तरफ़ से निशान है कि यहूदियों का बादशाह पैदा हुआ

है। वह नज़राने लेकर बच्चे को ढूँडते हुए यरूशलम पहुँच गए। यरूशलम में उनकी मुलाक़ात हेरोदेस बादशाह और फ़क़ीहों से हुई जो अल-मसीह से मुताल्लिक़ पेशगोइयों से वाक़िफ़ थे। मजूसियों को बताया गया कि अल-मसीह बैत-लहम में पैदा होगा। जब वह बैत-लहम पहुँचे तो उन्होंने अल-मसीह को मरियम और यूसुफ़ के साथ पाया। उन्होंने ख़ुदा की हम्दो-सना करके उन्हें क़ीमती नज़राने पेश किए।

तब एक फ़रिश्ते ने उन्हें आगाह किया कि वह यरूशलम को वापस न जाएँ। क्योंकि हेरोदेस बादशाह बच्चे को क़त्ल करना चाहता था। बाद में जब हेरोदेस को मालूम हुआ कि मजूसी दूसरे रास्ते से अपने मुल्क को लौट गए तो उसे सख़्त ग़ुस्सा आया। उसने हुक्म दिया कि बैत-लहम के जितने नरीना बच्चे दो साल और इससे छोटे हों उन्हें मार दिया जाए। लेकिन हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) बच गए, क्योंकि फ़रिश्ते ने ख़ाब में हज़रत यूसुफ़ को हिदायत दी कि वह अपनी बीवी और बच्चे को लेकर मिसर चले जाएँ। जब हेरोदेस मर गया तो हज़रत यूसुफ़ और मरियम हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) को लेकर मिसर से लौट आए और नासरत में रहने लगे। यों अल-मसीह की पैदाइश और बचपन के ऐयाम के बारे में पुराने अहदनामे की पेशगोइयों की तकमील हुईं।

इस बयान में मुकाशफ़े के तीन उनसुर पाए जाते हैं—ख़ुदा का काम, लोगों का जवाब और इसकी तशरीह। अल्लाह का नजात देनेवाला काम अल-मसीह की पैदाइश है। इसके दो जवाब पाए जाते हैं। मजूसी ईमान

लाते हैं जबकि हेरोदेस ख़ुदा का यह काम रद करता है। हेरोदेस बच्चे के ख़िलाफ़, नजात के इस काम के ख़िलाफ़ बल्कि ख़ुद अल्लाह के ख़िलाफ़ लड़ता है। इस काम यानी पैदाइश की तशरीह इसका हमारे लिए मतलब बयान करती है। मतलब यह है कि नजातदहिंदा पैदा हो गया है, और कुछ लोग इसका इनकार करते हैं जबकि दूसरे उसे क़बूल करते हैं। सवाल यह है कि क्या हम ईमान लाएँगे या नहीं। यही तीन बातें किताबे-मुक़द्दस के मुकाशफ़े में पाई जाती हैं : ख़ुदा का काम, इसका जवाब और इसकी तशरीह।

किताबे-मुक़द्दस इनकिशाफ़ करती है कि अल्लाह हमसे अहद बाँधना चाहता है। वह हम सबको नजात देना चाहता है। कलाम अल्लाह के नजात देनेवाले बेशुमार काम बयान करता है। मसलन :

- अल्लाह ने नूह और उनके ख़ानदान को तूफ़ान से बचाया।
- अल्लाह ने इब्राहीम के बेटे की जान को मेंढे की क़ुरबानी के ज़रीए बचाया।
- अल्लाह एक जलती झाड़ी में हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) पर ज़ाहिर हुआ।
- अल्लाह ने अहद के लोगों को फ़िरऔन की ग़ुलामी से छुड़ाया।
- अल्लाह ने इसराईलियों को ख़ुश्क ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रने दिया।
- अल्लाह ने उन्हें बयाबान में मन खिलाया जब ख़ुराक नहीं थी।

- अल्लाह ने उन्हें सीना पहाड़ पर दस अहकाम दिए।
- अल्लाह ने उन्हें बयाबान में चटान से पानी पिलाया।
- अल्लाह ने बयाबान में उनके कपड़ों और जूतों तक उनकी हिफ़ाज़त की।

कलाम में अनगिनत और इलाही काम दर्ज हैं। इनसे ज़ाहिर होता है कि वह इनसान की नजात में कितनी दिलचस्पी लेता है। अल्लाह के यह अजीबो-ग़रीब काम तमाम इलाही मुकाशफ़े का मरकज़ी पहलू हैं। ख़ुदा अपने कामों से जाना जाता है। लिहाज़ा किताबे-मुक़द्दस का एक बड़ा हिस्सा बयान करता है कि अल्लाह ने क्या कुछ किया है।

लेकिन अल्लाह के काम हमेशा इनसान को जवाब देने पर मजबूर करते हैं। जब अल्लाह काम करता है तो लोग या इसे क़बूल या रद करते हैं। या वह ईमान लाते हैं या ईमान से दूर हो जाते हैं। या वह तौबा करते हैं या बाग़ी हो जाते हैं। अल्लाह के काम जवाब का तक़ाज़ा करते हैं।

इनसानी जवाब का यह बयान इनसान के दिल की फ़ितरत को ज़ाहिर करता है। ज़ालिम हेरोदेस का जवाब हमें याद दिलाता है कि हम भी ऐसे ही होते हैं : जब हमारी कुरसी ख़तरे में है तो हम उससे नफ़रत करते हैं जो ख़तरे का बाइस है। मजूसी की तलाश हमें याद दिलाती है कि हमें सच्चाई की तलाश में रहना है। इनसानी जवाब कलाम का एक

अहम पहलू है, क्योंकि इससे हम पहचानते हैं कि हम कौन हैं और कि हमें छुटकारे की ज़रूरत है।

अल्लाह के काम और इनसान का जवाब—मुकाशफ़े के यह दो पहलू एक दूसरे से जुदा नहीं किए जा सकते। हम सिर्फ़ इलाही मुकाशफ़े के ज़रीए इलाही और इनसानी रिश्ते की हक़ीक़त समझ सकते हैं। इल्हाम के ज़रीए अल्लाह ने रसूलों और नबियों को अपने कामों और इनसानी जवाब का मतलब पेश किया।

अकसर किताबे-मुक़द्दस में लिखा है कि नबी ने ख़ुदा के कलाम को "देखा" या "सुना" (यसायाह 1:1; अबदियाह 1:1; मीकाह 1:1; हबक़्क़ूक़ 1:1)। इलाही मुकाशफ़ा यों ही हुआ। अल्लाह ने अपने कामों का सही मतलब अपने रसूलों और नबियों पर ज़ाहिर किया। तब उन्होंने यह मतलब वाज़, तालीम या तहरीर के ज़रीए लोगों को सुनाया। हम इसी लिए ख़ुदा की नजात पहचान सकते हैं कि उसके पैग़ंबरों ने उसके कामों की तशरीह की है।

मत्ती रसूल ने पैदाइश के वाकिये को क़लमबंद किया। साथ ही उसने इनसान का जवाब भी बयान किया और वाकिये का मतलब भी बताया। उसने फ़रमाया कि उसका नाम ईसा है, क्योंकि

> वह अपनी क़ौम को उसके गुनाहों से रिहाई देगा।
> (मत्ती 1:21)

यों कलाम में ख़ुदा का बयान और उसकी तशरीह दोनों मौजूद हैं। अल्लाह का काम, इनसान का जवाब और उसकी तशरीह—यह तीनों कलाम में शामिल होते हैं।

## मुसलमान का जवाब

मुसलमान इस पर ज़ोर देते हैं कि मुख़्तलिफ़ ज़मानों और क़ौमों में नबी खड़े हुए। यों अल्लाह इनसान को लगातार हिदायत देता आया है, क्योंकि वह इस दुनिया में और आनेवाले जहान में इनसान की फ़लाहो-बहबूद चाहता है।

ईसाई इस पर ज़ोर देते हैं कि अल्लाह ने अपने कामों की सही तशरीह के लिए इल्हाम का ज़रीअ इस्तेमाल किया। मुसलमान इनकार नहीं करते कि ऐसा इल्हाम नहीं हो सकता। लेकिन वह समझते हैं कि अल्लाह ने अपने मुकाशफ़े को अपने पैग़ंबरों पर नाज़िल किया। अल्लाह तआला ने जिबराईल फ़रिश्ते (अलैहिस-सलाम) को अपना पैग़ाम दिया जिसने इसे बराहे-रास्त नबियों को सुनाया। जो कुछ नबियों ने पेश किया वह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ वह पैग़ाम था जो फ़रिश्ते ने उन्हें सुनाया था।

क़ुरान शरीफ़ में मुकाशफ़े के लिए यह अलफ़ाज़ इस्तेमाल होते हैं : انزل (अल-इनाम 6:92), اوحی (अल-इनाम 6:19), اوحیٰ (अश-शुअरा 26:63), نزّل (अल-फ़ुरक़ान 25:1), عطیٰ (अल-कौसर 108:1), تنزیل (या.सीन 36:5)। यह तमाम अलफ़ाज़ इस तरफ़ इशारा करते हैं कि अल्लाह तआला पैग़ाम किसी के वसीले से नाज़िल करवाता है न

कि ख़ुद नाज़िल होता है। तमाम इलाही मुकाशफ़े यह ज़ाहिर करते हैं कि अल्लाह तआला क़ादिरे-मुतलक़ है। इनकी निसबत सूफ़ियों का इलहामी इल्म कम दर्जा रखता है।

इस्लाम में न तारीख़ी वाक़ियात और न ही इनसान का जवाब मुकाशफ़े का दर्जा रखते हैं। जो मुकाशफ़ा नबी पर नाज़िल होता है उस पर तारीख़ असरअंदाज़ नहीं होती। मुकाशफ़ा सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल होता है।

## ईसाई की विज़ाहत

जब ईसाई कहते हैं कि मुक़द्दस नविश्ते इलहामी हैं तो उनका मतलब होता है कि नविश्ते अल्लाह के रूह के ज़रीए पैग़ंबर में डाले गए हैं। यह उस इल्म से मुताबिक़त नहीं रखता जो सूफ़ी हासिल करते हैं। तमाम पाक नविश्तों के मुकाशफ़े तजस्सुम होने की हैसियत रखते हैं।

उसके बेटा होगा और उसका नाम ईसा रखना, क्योंकि वह
अपनी क़ौम को उसके गुनाहों से रिहाई देगा।

(मत्ती 1:21)

# अल-मसीह

## ईसाई का अक़ीदा

अल-मसीह की ज़िंदगी और तालीमात इंजील की उन चार किताबों में दर्ज हैं जो मत्ती, मरक़ुस,लूक़ा और यूहन्ना की मारिफ़त मरक़ूम हुईं। हर एक इंजील रसूलों और उनके क़रीबी साथियों से क़लमबंद हुई। हम ईमान रखते हैं कि यह मोतबर गवाह हैं।

## अल-मसीह की ज़िंदगी और तालीम

अल-मसीह फ़लस्तीन के क़सबे बैत-लहम में पैदा हुए। ग़ालिबन उनकी पैदाइश 4 क़ हुई। उन दिनों में क़ैसर ऑगस्टस रोम की सलतनत का बादशाह था। जिबराईल फ़रिश्ता कुँवारी मरियम पर ज़ाहिर हुए और फ़रमाया कि तू अल-मसीह की माँ बननेवाली है :

> रूहुल-क़ुद्स तुझ पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इसलिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़रज़ंद कहलाएगा। (लूक़ा 1:35)

पैदाइश होते वक़्त बीबी मरियम और हज़रत यूसुफ़ 200 किलोमीटर का सफ़र करके बैत-लहम आए थे। एक मर्दुमशुमारी की वजह से उन्हें किसी भी सराय में जगह न मिली थी। चुनाँचे जब हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) पैदा हुए तो उन्हें चरनी में लिटा दिया गया। उस वक़्त कुछ चरवाहे क़रीब ही खुले मैदान में अपने रेवड़ों की पहरेदारी कर रहे थे। फ़रिश्तों ने उन पर ज़ाहिर होकर पैदाइश का एलान किया। बैत-लहम जाकर चरवाहों ने बच्चे को हज़रत यूसुफ़ और मरियम के पास पाया और उसे सिजदा किया। बाद में मजूसी मशरिक़ से हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) को देखने के लिए आए। थोड़ी देर बाद हज़रत यूसुफ़ और बीबी मरियम बच्चे को लेकर हेरोदेस बादशाह से बचने के लिए मिसर फ़रार हुए।

मिसर से लौटने के बाद यह ख़ानदान गलील के नासरत में रहने लगा, जहाँ हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) पले-बढ़े। ग़ालिबन वह बढ़ई थे, क्योंकि यह हज़रत यूसुफ़ का पेशा था। हम उनके बचपन के बारे में ज़्यादा नहीं जानते। सिर्फ़ एक वाक़िया लूक़ा की इंजील में क़लमबंद है। जब आप 12 साल के थे तो आप माँ-बाप के साथ इबादत के लिए यरूशलम को

गए। उस वक़्त मज़हब के राहनुमा आपकी बातें सुनकर आपकी पाक नविश्तों के बारे में समझ से दंग रह गए।

अल-मसीह तक़रीबन 30 साल के थे जब आपने अपनी ख़िदमत शुरू की। अपनी इस ख़िदमत का आग़ाज़ यों हुआ कि आपने दरियाए-यरदन में हज़रत यहया से पानी का बपतिस्मा लिया। इंजील फ़रमाती है,

> एक दिन जब बहुत-से लोगों को बपतिस्मा दिया जा रहा था तो ईसा ने भी बपतिस्मा लिया। जब वह दुआ कर रहा था तो आसमान खुल गया और रूहुल-क़ुद्स जिस्मानी सूरत में कबूतर की तरह उस पर उतर आया। साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, "तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं ख़ुश हूँ।" (लूक़ा 3:21-22)

बपतिस्मे के ऐन बाद अल्लाह का रूह आपको बयाबान में ले गया जहाँ आपने 40 दिन के रोज़े रखे। इसके बाद इबलीस ने आपको सख़्त आज़माकर कहा कि पत्थरों को रोटियों में तबदील कर। फिर कहा कि बैतुल-मुक़द्दस की सबसे ऊँची जगह से छलाँग लगाकर अपनी क़ुदरत का इज़्हार कर। इसके बाद इबलीस ने कहा कि मैं तुझे तमाम ममालिक और उनकी शानो-शौकत दे दूँगा। शर्त यह है कि तू मुझे सिजदा करे। जवाब में हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने पाक नविश्तों के हवाले देकर

इबलीस की बातें रद कीं। आख़िरकार इबलीस अल-मसीह को छोड़कर चला गया और अल्लाह के फ़रिश्ते आकर आपकी ख़िदमत करने लगे।

इस आज़माइश के बाद आपकी ख़िदमत का आग़ाज़ हुआ। यह ख़िदमत तक़रीबन 3 साल तक जारी रही। मुनादी के सिलसिले में आप फ़लस्तीन में जगह जगह घूमे-फिरे।

आपकी ख़िदमत नासरत के इबादतख़ाने में शुरू हुई। आपने खड़े होकर यसायाह नबी का नविश्ता पढ़कर सुनाया जहाँ लिखा है,

> रब का रूह मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे तेल से मसह करके ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने का इख़्तियार दिया है। उसने मुझे यह एलान करने के लिए भेजा है कि क़ैदियों को रिहाई मिलेगी और अंधे देखेंगे। उसने मुझे भेजा है कि मैं कुचले हुओं को आज़ाद कराऊँ और रब की तरफ़ से बहाली के साल का एलान करूँ।
> (लूक़ा 4:18-19)

इसे पढ़ने के बाद आपने एलान किया,

> आज अल्लाह का यह फ़रमान तुम्हारे सुनते ही पूरा हो गया है। (लूक़ा 4:21)

यों अल-मसीह ने एलान किया कि मुझमें अल्लाह की बादशाही आ गई है। नया अहद क़ायम हुआ है। अल-मसीह ने अपनी पूरी ख़िदमत से इस बादशाही की आमद ज़ाहिर की।

## अल-मसीह के मोजिज़े

हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने अंधों, कोढ़ियों, लंगड़ों और बहरों को शफ़ा दी। आपने बेशुमार बदरूहों को निकाला और मुरदों को जिलाया। एक मौक़े पर आपने पाँच रोटियों और दो छोटी मछलियों से 5000 मर्दों को खाना खिलाया जिनमें औरतें और बच्चों की गिनती नहीं की गई थी। एक और मौक़े पर आपने सात रोटियों और कुछ मछलियों से 4000 मर्दों को खाना खिलाया जिनमें औरतें और बच्चों की गिनती नहीं की गई थी। एक मरतबा जब आपके शागिर्द गलील की झील के बीच में तूफ़ान से घिरे हुए थे तो आप पानी पर चलकर उनके पास पहुँचे। तब आँधी एकदम थम गई। लोगों ने ख़ुशी मनाकर गवाही दी कि आपको ज़बरदस्त क़ुव्वत हासिल है (लूक़ा 24:19)।

## अल-मसीह की अज़ीम तालीम

हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने मुअस्सर तरीक़े से तमसीलें सुनाईं। इनमें आपने किसी कहानी या मुवाज़ने से कोई सच्चाई ज़ाहिर की। आपकी कई-एक तमसीलें अल्लाह की बादशाही का मतलब ज़ाहिर करती थीं। कुछ तो मुख़तसर ही हैं। मसलन आपने फ़रमाया,

> आसमान की बादशाही ख़मीर की मानिंद है जो किसी औरत ने लेकर तक़रीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला

> दिया। गो वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गुँधे हुए आटे को ख़मीर बना दिया। (मत्ती 13:33)

दीगर तमसीलें कुछ लंबी हैं। जैसे खोए हुए बेटे की तमसील जिसमें बेटे ने अपने बाप के घर को छोड़कर अपना पैसा ऐयाशी में उड़ा दिया। जब होश में आया तो वह अपने बाप के पास वापस आया। वह अभी घर से दूर ही था कि बाप भागकर बेटे के पास आया और गले लगाकर उसे बोसा दिया। फिर नौकरों को हुक्म दिया कि बड़ा जशन मनाया जाए (लूक़ा 15:11-32)।

अल-मसीह ने गुफ़्तगू के ज़रीए भी तालीम दी। आप सवालो-जवाब का तरीक़ा इस्तेमाल करके उन्हें सच्चाई की तरफ़ लाए। अल-मसीह एक अज़ीम वायज़ भी थे। हज़ारों लोग घंटों बैठकर आपकी बातें सुनते थे। इंजील फ़रमाती है,

> लोग उसकी तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, क्योंकि वह उनके उलमा की तरह नहीं बल्कि इख़्तियार के साथ सिखाता था। (मत्ती 7:28-29)

## अल-मसीह से मुख़ालफ़त

आहिस्ता आहिस्ता मुख़ालफ़त शुरू हुई। इस मुख़ालफ़त के कई-एक असबाब थे।

- हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) सख़्ती से मज़हब की हर झूटी शक्ल की तंक़ीद करते थे। आप मज़हबी मुनाफ़क़त की मलामत करते और गुनाहगारों से मुहब्बत रखते थे। आपने फ़रमाया कि

> मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ ताकि वह तौबा करें। (लूक़ा 5:32)

- हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने लोगों के गुनाहों को माफ़ किया। यह देखकर मज़हबी राहनुमा आपसे नाराज़ हुए, क्योंकि वह कहते थे कि सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाहों की माफ़ी दे सकता है। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने फ़रमाया कि

> इब्ने-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह माफ़ करने का इख़्तियार है। (मत्ती 9:6)

- हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने कहा कि "मैं और बाप एक हैं" (यूहन्ना 10:30)। जब आपने यह कहा तो मज़हबी राहनुमाओं ने आप पर कुफ़र बकने का इलज़ाम लगाया और आपको संगसार करने की कोशिश की। जवाब में आपने फ़रमाया कि कोई भी वह काम नहीं कर सकता जो मैं कर रहा हूँ अगर ख़ुदा उसके साथ न हो। जो काम मैं करता हूँ वह साबित करते हैं कि बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ (यूहन्ना 10:38)।

- हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने एलान किया कि अल्लाह की बादशाही आ चुकी है। उन दिनों फ़लस्तीन रोम के मातहत था। यहूदी राहनुमा समझते थे कि अल्लाह की बादशाही का मतलब यह है कि वह रोम की सलतनत से आज़ाद हो जाएँगे। यह समझकर कई-एक गलीलियों ने हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) को मजबूर करने की कोशिश की कि वह बादशाह बन जाएँ। मगर आपने इस क़िस्म का बादशाह बनने से इनकार किया। यह देखकर बहुत-से लोग आपके ख़िलाफ़ हो गए।

## सलीबी मौत और क़ियामत

अल-मसीह की ख़िदमत के आख़िरी दिनों में यह मुख़ालफ़त बढ़ गई। आख़िर में आप गलील से आहिस्ता आहिस्ता यरूशलम की तरफ़ बढ़ने लगे। रास्ते में आपने अपने शागिर्दों को आगाह किया कि मैं मसलूब होने जा रहा हूँ। फ़सह की ईद के मौक़े पर आपको गिरिफ़्तार कर लिया गया। यहूदी और रोमी दोनों अदालतों में आपकी पेशी हुई। गो गवाहों की बातों में इख़्तिलाफ़ था तो भी मौत की सज़ा सुना दी गई। इंजील फ़रमाती है,

> इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल किया, “क्या तू अल-हमीद का फ़रज़ंद मसीह है?” ईसा ने कहा, “जी, मैं हूँ। और आइंदा तुम इब्ने-आदम को क़ादिरे-

> मुतलक़ के दहने हाथ बैठे और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।" इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, "हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही! आपने ख़ुद सुन लिया है कि इसने कुफ़र बका है। आपका क्या फ़ैसला है?" (मरक़ुस 14:61-64)

रोम के हाकिम ने कोई ऐसा सबब न पाया कि आपको मसलूब किया जाए। मगर भीड़ के दबाव के तहत उसने आख़िरकार मान लिया कि आपने ख़ुद को यहूदियों का बादशाह होने का एलान किया था।

सलीब पर चढ़ने से पहले अल-मसीह की पिटाई की गई। आपका मज़ाक़ उड़ाया गया। आपके गाल पर तमाँचे मारे गए। रोमी सिपाहियों ने आपके सर पर काँटों का ताज रख दिया। आख़िरकार आपको कीलों से सलीब पर लगा दिया गया। आपके साथ दो मुजरिमों को भी सलीब पर चढ़ाया गया। दोपहर तीन घंटे तक लगातार पूरे मुल्क में अंधेरा छाया रहा। जब आपने पानी माँगा तो सिपाहियों ने आपको सिरका पेश किया। सिरके को चखकर आपने फ़रमाया कि "काम मुकम्मल हो गया है" और सर झुकाकर जान दे दी (यूहन्ना 19:30)।

अल-मसीह के दोस्तों ने लाश को एक नई क़ब्र में रख दिया। एक अमीर आदमी बनाम अरिमतियाह के यूसुफ़ ने यह क़ब्र अपने लिए चटान में खुदवाई थी। अल-मसीह तीसरे दिन की सुबह तक क़ब्र में रहे। फिर आप मुरदों में से जी उठे। चंद औरतें इतवार के दिन सुबह-सवेरे क़ब्र पर

आईं और बाद में कुछ मर्द भी। उन्होंने क़ब्र को ख़ाली पाया। इसके बाद अल-मसीह कई-एक बार अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुए। सबसे पहले आप मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर हुए और फिर दो शागिर्दों पर जब वह शहर से बाहर सफ़र कर रहे थे। फिर दीगर शागिर्दों पर। आप चालीस दिनों के अंदर कम अज़ कम ग्यारह मरतबा अलग अलग जगहों में फ़रक़ फ़रक़ लोगों पर ज़ाहिर हुए। आपने अपने शागिर्दों के साथ खाना खाया और उनसे बातचीत की। उनमें कोई शक नहीं था कि यह हमारे जी उठे हुए आक़ा हैं। फिर आप अपने शागिर्दों को लेकर यरूशलम से बाहर ज़ैतून के पहाड़ पर गए और लोगों के देखते देखते आसमान पर सऊद फ़रमाए।

अल-मसीह की ज़िंदगी, मौत और क़ियामत अनोखे और हैरानकुन वाक़ियात हैं। आपकी ज़िंदगी की बहुत-से तफ़सीलात की पेशगोई पुराने अहदनामे के नबियों से की गई थी। यूहन्ना रसूल फ़रमाते हैं कि

> ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहुत-से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं। लेकिन जितने दर्ज हैं उनका मक़सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी अल्लाह का फ़रज़ंद है और आपको इस ईमान के वसीले से उसके नाम से ज़िंदगी हासिल हो। (यूहन्ना 20:30-31)

इसके बाद रसूल फ़रमाते हैं कि

> यह वह शागिर्द है जिसने इन बातों की गवाही देकर इन्हें क़लमबंद कर दिया है। और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है। (यूहन्ना 21:24)

## अल-मसीह कौन हैं?

अल-मसीह के बारे में हज़ारों किताबें लिख दी गई हैं; और हर साल आपके बारे में कई सौ नई किताबें इशाअत की जाती हैं। सब नाकाफ़ी हैं। कोई नहीं वह राज़ पूरे तौर से बयान कर सकता है जो अल-मसीह के किरदार में पाया जाता है। फिर भी हम कोशिश करेंगे। अल-मसीह के जो लक़ब इंजील में पाए जाते हैं उनके ज़रीए हम आपका किरदार बयान करेंगे।

## इब्ने-आदम

अल-मसीह ने तक़रीबन हमेशा इब्ने-आदम के लक़ब से अपना हवाला पेश किया। यह इस बात को ज़ाहिर करता है कि आप एक पक्के इनसान हैं। आप आदम (अलैहिस-सलाम) के सच्चे बेटे हैं। आप पूरी तरह से हम जैसे हैं।

आप एक ग़रीब ख़ानदान में पैदा हुए। आप दो साल से भी कम उम्र के थे जब मिसर में पनाह लेनी पड़ी। ग़ालिबन आपने अपनी रोज़ी के लिए बढ़ई का पेशा इख़्तियार किया। हर इनसान की तरह आप मुसीबतों और

ग़लतफ़हमियों का शिकार हुए। आप एक हक़ीक़ी इनसान हैं जो हम इनसानों को कामिल तौर से समझ सकते हैं। क्योंकि आप इब्ने-आदम हैं।

## दुख सहनेवाला ख़ादिम

अल-मसीह की आमद से कई सदियों पहले अल्लाह ने यसायाह नबी की मारिफ़त ज़ाहिर किया कि आनेवाला अल-मसीह दुख सहनेवाला ख़ादिम होगा।

> उसे हक़ीर और मरदूद समझा जाता था। दुख और बीमारियाँ उसकी साथी रहीं, और लोग यहाँ तक उसकी तहक़ीर करते थे कि उसे देखकर अपना मुँह फेर लेते थे। हम उसकी कुछ क़दर नहीं करते थे।
> (यसायाह 53:3)

अल-मसीह में इस नबुव्वत की तकमील हुई है। आपने ख़ाकसार ख़ादिम बनकर इनसान की ख़िदमत की।

एक मरतबा अल-मसीह ने अपने शागिर्दों के पैर धोने से सच्ची ख़िदमत की ज़िंदा मिसाल पेश की। फ़लस्तीन में रिवाज यह था कि जब घर का मालिक बाहर से घर लौटता था तो नौकर मालिक के पैर धोता था। मगर हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने नौकर की सूरत इख़्तियार

की। आपने अपने शागिर्दों के पैर धोकर अंगोछे से सुखा दिए! शागिर्द हैरान हुए मगर आपने उनसे कहा,

> मैंने तुमको एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया है। (यूहन्ना 13:15)

लिहाज़ा जितने भी अल-मसीह की पैरवी करते हैं उन सबको एक दूसरे के ख़ादिम बनने चाहिएँ। अल-मसीह ने ख़ादिम की हैसियत से बहुत दुख उठाया। बेशुमार लोगों की ज़रूरतों को पूरी करके आप फ़लस्तीन का दौरा लगाते रहते थे। दुख सहनेवाली ख़िदमत का उरूज सलीब पर ज़ाहिर हुई। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) एक कामिल ख़ादिम थे जिन्होंने अपनी ज़िंदगी इनसान की ख़िदमत में सर्फ़ कर दी। आपकी दुख उठानेवाली ख़िदमत से हम शफ़ा पाकर बहाल हो जाते हैं। ख़ादिम की हैसियत से आप हमारी तमाम ज़रूरियात पूरी करते हैं।

## अल्लाह का लेला

जब अल-मसीह बपतिस्मा लेने के लिए हज़रत यहया के पास आए तो उन्होंने कहा कि

> देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है। (यूहन्ना 1:29)

अकसर मुआशरों में लोग जानवरों की क़ुरबानियाँ चढ़ाते हैं यह उम्मीद रखते हुए कि हमारे गुनाह बख़्श दिए जाएँगे। मसलन तौरेत शरीफ़ फ़रमाती है कि हज़रत इब्राहीम के बेटे के मक़ाम पर एक मेंढा क़ुरबान किया गया। इस तरह की क़ुरबानियाँ इस तरफ़ निशान हैं कि इनसान को नजात के लिए एक कामिल क़ुरबानी की ज़रूरत है। ईसाई ईमान रखते हैं कि यह क़ुरबानियाँ अल-मसीह की क़ुरबानी की तरफ़ इशारा हैं जिन्होंने अपनी जान दे दी ताकि हम अपने गुनाहों से नजात पाएँ। आप अल्लाह का कामिल लेला हैं। आपकी क़ुरबानी और जी उठने से हमें बख़्शा गया है, हमें नजात मिली है (मुकाशफ़ा 5:9)।

## अल्लाह का फ़रज़ंद

अल-मसीह का यह लक़ब आपके शागिर्दों से ईजाद न हुआ। एक आसमानी आवाज़ ने दो बार आपसे मुख़ातिब होकर “मेरा फ़रज़ंद” कहा। पहली मरतबा आपके बपतिस्मे के दौरान आसमान से आवाज़ आई कि

> तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं ख़ुश हूँ। (लूक़ा 3:22)

ख़िदमत के उरूज पर आप तीन शागिर्दों के साथ एक पहाड़ पर थे। आपकी शक्लो-सूरत बदल गई, और हज़रत मूसा और हज़रत इलयास (अलैहुमा अस-सलाम) ज़ाहिर हुए। फिर एक बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी कि

> यह मेरा चुना हुआ फ़रज़ंद है, इसकी सुनो।
> (लूक़ा 9:35)

ग़रज़ अल्लाह ख़ुद अल-मसीह से “मेरा फ़रज़ंद” के अलफ़ाज़ से मुख़ातिब हुआ।

अल-मसीह को यह लक़ब मंज़ूर था। एक मौक़े पर आपने अपने शागिर्दों से सवाल किया कि तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?

> पतरस ने जवाब दिया, “आप ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं।” ईसा ने कहा, “शमाऊन बिन यूनुस, तू मुबारक है, क्योंकि किसी इनसान ने तुझ पर यह ज़ाहिर नहीं किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने।”
> (मत्ती 16:16-17)

यह लक़ब अल-मसीह और ख़ुदा बाप के दरमियान मुहब्बत की कामिल रिफ़ाक़त ज़ाहिर करता है। इसका ज़िक्र हो चुका है कि इनसान अल्लाह की सूरत पर बनाया गया है। बाग़े-अदन में हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) अल्लाह के फ़रज़ंद थे। शुरू में उनकी अल्लाह के साथ कामिल रूहानी रिफ़ाक़त थी। पुराने अहदनामे में लोगों को बार बार दावत दी गई कि वह अहद के फ़रज़ंद बन जाएँ। कि वह अल्लाह को अपना आसमानी बाप क़बूल करें। अल-मसीह अल्लाह के फ़रज़ंद

की हैसियत से वही एक इनसान हैं जिनकी अल्लाह के साथ कामिल रिफ़ाक़त थी।

अल-मसीह की अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त कामिल थी। आप ख़ुदा की कामिल सूरत थे। साथ ही आप कामिल इनसान भी थे। आप ही की अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त बिलकुल साफ़, कामिल, खुली और सही थी। क्योंकि आप सचमुच अल्लाह के फ़रज़ंद थे। आपका बाप के साथ रिश्ता इतना पुख़्ता और गहरा था कि आप पूरी हलीमी और सच्चाई के साथ कह सकते थे कि

> मैं और बाप एक हैं। (यूहन्ना 10:30)

## अल्लाह हमारे साथ

यसायाह नबी सदियों पहले नबुव्वत कर चुके थे कि अल-मसीह का नाम "इम्मानुएल" होगा (यसायाह 7:14)। मत्ती रसूल इंजील में फ़रमाते हैं कि यह नबुव्वत हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) में पूरी हुई। कि कुँवारी से पैदा हुआ बच्चा इम्मानुएल है। इम्मानुएल इबरानी ज़बान का लफ़्ज़ है जिसके मानी हैं "अल्लाह हमारे साथ" (मत्ती 1:23)।

नए अहदनामे की गवाही यह है कि अल्लाह ने अपने आपको अल-मसीह में ज़ाहिर किया। वह "अल्लाह हमारे साथ" हैं। पूरे नए अहदनामे में रसूलों का अक़ीदा यह है कि अल्लाह मसीह में था। पौलुस रसूल फ़रमाते हैं,

> अल्लाह को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम मसीह को देख सकते हैं जो अल्लाह की सूरत और कायनात का पहलौठा है। ... क्योंकि अल्लाह को पसंद आया कि मसीह में उसकी पूरी मामूरी सुकूनत करे।
> (कुलुस्सियों 1:15,19)

हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने ख़ुद फ़रमाया,

> जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, 'बाप को हमें दिखाएँ'?
> (यूहन्ना 14:9)

अल-मसीह में अल्लाह ने अपने आपको हम पर ज़ाहिर किया। चूँकि अल-मसीह आए इसलिए अल्लाह हमारे लिए अजनबी नहीं है।

## अल्लाह का कलाम

अल-मसीह को अल्लाह का कलाम भी कहा गया है। इंजील जलील फ़रमाती है,

> इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ था और कलाम अल्लाह था। यही इब्तिदा में अल्लाह के साथ था। सब कुछ कलाम के वसीले से पैदा हुआ। मख़लूक़ात की एक भी चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई।

> ... कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइश-पज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह फ़ज़्ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद का-सा था।
> (यूहन्ना 1:1-3;14)

अल्लाह कभी नहीं सोता। वह हमेशा ख़ुद को ज़ाहिर करता रहता है। अल्लाह अपने कलाम से ज़ाहिर होता है। जब अल्लाह कलाम करता है तो यह एक तख़लीक़ी अमल होता है। अल्लाह के कलाम ही से कायनात ख़लक़ हुई। अल-मसीह में अल्लाह का अज़लीओ-अबदी इज़हार, उस का अज़लीओ-अबदी कलाम मुजस्सम हुआ।

जिस तरह अल्लाह अज़लीओ-अबदी है उसी तरह उसका कलाम भी अज़लीओ-अबदी है। यही वजह है कि अल-मसीह फ़रमा सकते थे कि

> इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर 'मैं हूँ।' (यूहन्ना 8:58)

चूँकि अल-मसीह ख़ुदा का मुजस्सम हुआ कलाम हैं इसलिए वह अज़लीओ-अबदी हैं। आप मख़लूक़ नहीं हैं, क्योंकि आप अज़लीओ-अबदी ख़ुदा का कलाम हैं जो इब्तिदा में अल्लाह के साथ थे (यूहन्ना 1:2)।

अल-मसीह इनसानी सूरत में ख़ुदा का ज़िंदा और अज़लीओ-अबदी कलाम हैं। किताबे-मुक़द्दस ख़ुदा का तहरीरशुदा कलाम है, मगर अल-

मसीह अल्लाह का मुजस्सम हुआ अज़लीओ-अबदी और ज़िंदा कलाम हैं जो हमारे दिलों से मुख़ातिब होता है। इंजील जलील फ़रमाती है,

> हम आपको उसकी मुनादी करते हैं जो इब्तिदा से था, जिसे हमने अपने कानों से सुना, अपनी आँखों से देखा, जिसका मुशाहदा हमने किया और जिसे हमने अपने हाथों से छुआ। वही ज़िंदगी का कलाम है। ... हम आपको वह कुछ सुनाते हैं जो हमने ख़ुद देख और सुन लिया है। (1 यूहन्ना 1:1,3)

किताबे-मुक़द्दस का मक़सद यह है कि हम पर ज़िंदा कलाम ज़ाहिर हो जो अल-मसीह हैं। आपने फ़रमाया,

> तुम अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो क्योंकि समझते हो कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी हासिल है। लेकिन यही मेरे बारे में गवाही देते हैं! (यूहन्ना 5:39)

इंजील जलील में अल-मसीह के दीगर कई-एक लक़ब भी मिलिते हैं। मसलन रब्बी या उस्ताद, नबी, बादशाह, ख़ुदावंद, नजातदहिंदा, मुंसिफ़ और छुड़ानेवाला। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने अपने बारे में फ़रमाया, “क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ,” “राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ।” कलाम हमें दावत देता है कि हम अल-मसीह से मिलें और उन्हें क़बूल करें।

# मुसलमान का जवाब

मुसलमान हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) की बड़ी इज़्ज़त करते हैं। आप अल्लाह तआला के अज़ीमतरीन नबियों में से एक हैं। मुसलमान ईमान रखते हैं कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) अल्लाह के हुक्म से कुँवारी मरियम से पैदा हुए। आपको क़ुरान शरीफ़ में "इब्ने-मरियम" कहा गया है।

क़ुरान शरीफ़ तालीम देता है कि अल-मसीह की आमद एक ख़ुशख़बरी थी (आल इमरान 3:45)। वह फ़रमाता है,

> फिर भेजा हमने उसके पास अपना फ़रिश्ता। फिर बनकर आया उसके आगे आदमी पूरा। बोली मुझको रहमान की पनाह तुझसे अगर है तो डर रखनेवाला। बोला मैं तो भेजा हुआ हूँ तेरे रब का कि दे जाऊँ तुझको एक लड़का सुथरा। बोली कहाँ से होगा मेरे लड़का और छुआ नहीं मुझको आदमी ने? बोला यों ही फ़रमा दिया तेरे रब ने, वह मुझ पर आसान है और उसको हम क्या चाहते हैं लोगों के लिए निशानी और मेहरबानी अपनी तरफ़ से और है यह काम मुक़र्रर हो चुका।
>
> (मरियम 19:17-21)

तो भी मुसलमान ईसाइयों का यह ईमान नहीं मानते कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) इलाही थे या "अल्लाह के बेटे" थे। मुसलिम एतराज़ की बुनियाद क़ुरान शरीफ़ ख़ुद है जहाँ लिखा है,

> अल्लाह ऐसा नहीं कि रखे औलाद। वह पाक ज़ात है। जब ठहरा लेता है किसी काम का करना सो यही कहता है इसे कि हो वह हो जाता है। (मरियम 19:35)[1]

क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने यहूदियों को हुक्म फ़रमाया कि अल्लाह तआला की इबादत करो जो मेरा ख़ुदा और तुम्हारा भी ख़ुदा है। लिहाज़ा मुसलमान ईमान रखते हैं कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) दीगर पैग़ंबरों की तरह इनसान थे, कि वह मुजस्सम ख़ुदा नहीं थे। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है कि "अल्लाह ने कोई बेटा नहीं किया और न उसके साथ किसी का हुक्म चले" (अल-मोमिनून 23:91)।

यही वह नुकता है जहाँ पर आकर मुसलमान और ईसाई एक दूसरे से जुदा हो जाते हैं। मुसलमान के नज़दीक तजस्सुम का ईसाई नज़रिया नामुमकिन है, क्योंकि अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ है। हमारे नज़दीक ईसाइयों ने एक इनसान को अल्लाह का दर्जा दे दिया है। इसलिए तजस्सुम का इनकार करते हुए इस्लाम इसकी तसदीक़ करता है कि

---

1 मज़ीद देखिए क़ुरान शरीफ़ 18:4-5; 19:88-93; 2:116-117; 6:101-102।

अल्लाह माफ़ौक़ुल-फ़ितरत है और कि इनसान ज़मीन पर अल्लाह का ख़ादिम और ख़लीफ़ा है।

अफ़सोस कि ईसाई नहीं मानते कि हज़रत मुहम्मद (सलअम) ख़त्मे-नबुव्वत हैं, कि आपके वसीले से आख़िरी हिदायत यानी क़ुरान शरीफ़ नाज़िल हुआ। हालिया दिनों में अहमद दीदात ने दिखाया है कि तौरेत शरीफ़ हज़रत मुहम्मद (सलअम) का ज़िक्र इस्तिसना 18:18 में करती है जहाँ लिखा है, "आइंदा मैं उनमें से तुझ जैसा नबी खड़ा करूँगा। मैं अपने अलफ़ाज़ उसके मुँह में डाल दूँगा, और वह मेरी हर बात उन तक पहुँचाएगा।"[1]

## ईसाई की विज़ाहत

ईसाई मुत्तफ़िक़ हैं कि अल्लाह ने किसी बेटे को जन्म नहीं दिया। अगर ऐसा होता तो ख़ुदाओं की कसरत होती।

1 Ahmad Deedat, *What the Bible Says About Muhammad*, (Durban, N.D), pp 1-28.
इस किताब में मुसन्निफ़ बताते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सलअम) हर लिहाज़ से हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) की तरह थे जबकि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) जैसे नहीं थे। हज़रत मुहम्मद (सलअम) इसमें भी हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) से फ़रक़ थे कि अनपढ़ थे। इसलिए कलाम आपके मुँह में डाल दिया गया जिस तरह इस हवाले में लिखा है (मैं अपने अलफ़ाज़ उसके मुँह में डाल दूँगा)। हज़रत मुहम्मद (सलअम) इसराईलियों के भाई हैं, क्योंकि वह इब्राहीम के बेटे हज़रत इसमाईल की नसल से थे।

अल-मसीह अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, जिसका मतलब और है। इसका मतलब यह है कि अल्लाह और अल-मसीह के दरमियान कामिल मुहब्बत और रिफ़ाक़त का रिश्ता है।

ईसाई ईमान के मुताबिक़ अल-मसीह में ख़ुदा का अज़ली और अबदी कलाम मुजस्सम हुआ है। अल्लाह अपने कलाम को जन्म नहीं देता! उसका कलाम अज़लीओ-अबदी है और कामिल तौर से अल्लाह का इज़हार करता है।

लाज़िम है कि हम यह दोनों ख़याल एक दूसरे से जुदा न करें यानी यह कि अल-मसीह कलाम और फ़रज़ंद दोनों ही हैं। वह इम्मानुएल यानी अल्लाह हमारे साथ हैं।

तमाम इनसान अल्लाह की नजात देखेंगे।

(लूक़ा 3:6)

# नजात

## ईसाई का अक़ीदा

नीकुदेमुस यहूदियों का एक इज़्ज़तदार राहनुमा था। एक रात वह चुपके से अल-मसीह के पास आया कि नजात के बारे में सीखे। गुफ़्तगू के दौरान हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने फ़रमाया,

> "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो नए सिरे से पैदा हुआ हो।"
>
> नीकुदेमुस ने एतराज़ किया, "क्या मतलब? बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जाकर पैदा हो सकता है?"
>
> ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकता

> है जो पानी और रूह से पैदा हुआ हो। जो कुछ जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी है, लेकिन जो रूह से पैदा होता है वह रूहानी है। . . .
>
> नीकुदेमुस ने पूछा, "यह किस तरह हो सकता है?"
>
> ईसा ने जवाब दिया, . . . अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए।
>
> (यूहन्ना 3:1-16; पूरी गुफ़्तगू यूहन्ना 3:1-21 में दर्ज है।)

यह गुफ़्तगू हम पर ज़ाहिर करती है कि हमारे आसमानी बाप ने अपने फ़रज़ंद को दुनिया में भेजा ताकि इनसान को नजात दे। जो उसके फ़रज़ंद अल-मसीह को क़बूल करते हैं वह नई ज़िंदगी पाते हैं। यह नजात अल्लाह के रूह का मोजिज़ा है। बाप, फ़रज़ंद और रूह नजात के इस मुहब्बत भरे काम में मिल-जुल कर कारफ़रमा हैं। जब हम तसलीस की यह मुहब्बत क़बूल करते हैं तो हमें नजात मिलती है।

क्या यह बात समझना मुश्किल है? फ़िकर न करें। नीकुदेमुस भी उलझन में पड़ गया। आइए हम तफ़सील से छुटकारे के उस काम पर ग़ौर करें जो बाप, फ़रज़ंद और रूह के वसीले से किया जाता है। नजात पाने के लिए लाज़िम है कि हम ख़ुदा बाप, फ़रज़ंद, और रूह के बचानेवाले काम को क़बूल करें।

हमारे आसमानी बाप ने हम इनसानों को अपनी सूरत पर बनाया। इसका मतलब है कि हम सचमुच इनसान होते हैं जब हम अल्लाह के साथ ख़ुशकुन रिफ़ाक़त रखें। हम सब आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) समेत आसमानी बाप से फिर गए हैं। मगर उसने हमको कभी नहीं छोड़ा। शुरू से लेकर आज तक वह लोगों को दावत देता आया है कि अहद के फ़रज़ंद बन जाओ, तौबा करके नजात हासिल करो।

अफ़सोस, हमारी गुनाहआलूदा फ़ितरत हमें अल्लाह से कामिल रिफ़ाक़त रखने से रोक देती है। इस फ़ितरत के बाइस हम रास्तबाज़ ज़िंदगी नहीं गुज़ार सकते। यसायाह नबी फ़रमाता है,

> हम सब नापाक हो गए हैं, हमारे तमाम नाम-निहाद रास्त काम गंदे चीथड़ों की मानिंद हैं। (यसायाह 64:6)

हमारी गुनाहआलूदा फ़ितरत हमको अल्लाह से जुदा रखती है। यहाँ तक कि हज़रत मूसा (अलैहिस-सलाम) भी रूबरू होकर अल्लाह से मुलाक़ात न कर सके (ख़ुरूज 33:18-23)। अल्लाह के हुज़ूर हम शरमिंदा और दहशतज़दा रहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि हम मुजरिम और सज़ा के लायक़ हैं। हम झूटे और मुनाफ़िक़ पसंद हैं। अकसर इनसान अपनी ख़ताकारी को ढाँकने के लिए जानवरों की क़ुरबानियाँ चढ़ाते आए हैं। इसके बावुजूद हमारा अल्लाह से टूटा हुआ और नाक़िस रिश्ता हमेशा क़ायम रहा है।

हम जानते हैं हमारे गुनाह ने हमको अल्लाह से जुदा कर दिया है। गो अल्लाह लोगों को अपने अहद में शामिल होने की दावत देता है तो भी इनसान इस अहद के क़वायद पर चलने से नाकाम रहा है। गो हमें तौबा का हुक्म मिला है मगर हम शाज़ो-नादिर ही ख़ुदा की सुनते या उसकी बुलाहट मंज़ूर करते हैं।

यही वजह है कि अल्लाह अपने अज़ीज़ फ़रज़ंद अल-मसीह में होकर तारीख़ में दाख़िल हुआ। नजात के लिहाज़ से अल-मसीह की ज़िंदगी और काम के तीन पहलू हैं।

- अल-मसीह की ज़िंदगी अल्लाह की बादशाही का इज़हार है। आप ही के ज़रीए अल्लाह की बादशाही तारीख़ में दाख़िल हुई। आप नई पैदाइश और नए आदम थे; आसमान से भेजे गए आदम यानी वह आदम जो हमें ख़ुद होना चाहिए था (1 कुरिंथियों 15:45-50)। अल्लाह ने आदम को हुक्म दिया था कि ज़मीन पर हुकूमत करे। मगर आदम और तमाम इनसान की ज़मीन पर हुकूमत नाकामिल थी। इसके बरअक्स अल-मसीह ऐसे नहीं हैं। अल-मसीह जो आसमान के नए आदम हैं क़ुदरत पर पूरा इख़्तियार रखते हैं। आप पानी पर चले। आपने तेज़ आँधी को थमाया। आपने बीमारों को शफ़ा दी। आपने थोड़ी ख़ुराक से हज़ारों को खिलाया। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) को तमाम ज़मीन पर पूरा इख़्तियार था।

हम सबको पता है कि हमको बेगुनाह ज़िंदगी जीनी है। अफ़सोस, ऐसा नहीं है। हमको इनसाफ़ क़ायम रखना चाहिए मगर अकसर हम कमज़ोरों का हक़ मारते हैं। मगर आप कामिल तौर पर रास्तबाज़ थे। आपने इनसाफ़ की ज़िंदगी बसर की। आपसे कभी भी गुनाह सरज़द न हुआ। अल-मसीह वह आदम हैं जो हमें होना चाहिए। आप क़ुदरत के मालिक हैं। आप गुनाह से मुबर्रा और इनसाफ़पसंद हैं। आप ही अल्लाह की बादशाही हैं। आप तमाम इनसान पर अल्लाह की पुरफ़ज़ल मरज़ी का इज़हार हैं। अल-मसीह हर एक के साथ कामिल इख़्तियार, इनसाफ़ और मुहब्बत का सुलूक करते थे। आप इनसान की असल और हक़ीक़ी शक्लो-सूरत हैं। आप में अल्लाह की बादशाही पूरी हुई। आप ही में हम नजात पाते हैं (इबरानियों 2:6-9)।

- अल-मसीह की सलीबी मौत में अल्लाह की मुहब्बत और बादशाही का बातिनी राज़ ज़ाहिर हुआ। अल्लाह मुहब्बत है, इसलिए वह कभी भी अपनी मरज़ी इनसान पर नहीं जताएगा। उसने हमें मजबूर न किया बल्कि हमारी तमाम दुश्मनी, ज़ुल्म और नफ़रत को अपने ऊपर ले लिया है।

  अल-मसीह की सलीब पर हर क़िस्म के इनसान के नुमाइंदे हाज़िर थे : मज़हबी राहनुमा, सियासतदान, फ़सादी हुजूम, अवाम; तालीमयाफ़्ता, अमीर और पेशावर लोग; ग़रीब और मुआशरे से

ठुकराए हुए लोग; मर्दो-ख़वातीन; ग़ुलाम और आज़ाद; यूरोप, एशिया, अफ़्रीक़ा और बाक़ी दुनिया के लोग। सबके सब अल-मसीह की सलीबी मौत के ज़िम्मेदार थे। जब आपको सलीब पर लटकाया गया तो उन्होंने आपका मज़ाक़ उड़ाया, मगर अल-मसीह के दिल में कोई तलख़ी या नफ़रत नहीं थी बल्कि आपने चिल्लाकर कहा,

> ऐ बाप, इन्हें माफ़ कर, क्योंकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं। (लूक़ा 23:34)

इस पुकार में हमारे गुनाहों से ख़ुदा की घिन भी नज़र आती है और उसकी मुहब्बत और बख़्शिश भी। हम क्यों अल्लाह से बग़ावत करें जब वह हमें उस वक़्त भी माफ़ करता है जब हम अल-मसीह को मसलूब कर रहे हैं? यानी उन्हें जो मुकम्मल तौर पर रास्तबाज़ और अल्लाह के फ़रज़ंद हैं? सलीब ने मुअस्सर तौर से अल्लाह की बख़्शिश और उसकी मुहब्बत का इज़हार किया।

जब अल-मसीह ने सलीब पर अपनी जान दी तो यरूशलम के मक़दिस का परदा मोजिज़ाना तौर से ऊपर से नीचे तक फट गया (लूक़ा 23:44-45)। मक़दिस का यह परदा पाक मक़ाम और पाकतरीन मक़ाम को अलग करता था। उस पाकतरीन मक़ाम में ख़ुदा का जलाल सुकूनत करता था। इसलिए सिर्फ़ सरदार इमाम को इजाज़त थी कि वह साल में एक बार उस पाकतरीन मक़ाम में दाख़िल हो जाए। जब अल-मसीह मसलूब हुए तो जो परदा ख़ुदा के

जलाल को इनसान की नज़रों से छुपाए रखता था वह फट गया। यह इस तरफ़ इशारा था कि अब से अल्लाह और इनसान के दरमियान तमाम रुकावटें दूर हो गई हैं। अल-मसीह की मौत ने इन रुकावटों को दूर कर दिया है। इस सबब से हम माफ़ कर दिए गए हैं। हम क़बूल कर लिए गए हैं। अब हम पूरे एतमाद से बाप कहकर ख़ुदा से मुख़ातिब हो सकते हैं। जो रोक हमारे गुनाहों ने हमारे और अल्लाह के दरमियान लगा दी थी वह हमेशा के लिए हटा दी गई है।

अल-मसीह ने अपनी ज़िंदगी सलीब पर देने से हमारे गुनाहों के लिए मुकम्मल क़ुरबानी पेश की (इबरानियों 8–10)। बहुत-से लोग इस उम्मीद से नज़राने पेश करते हैं कि वह उनके गुनाहों को ढाँप देंगे और उन्हें बुराई से बचाएँगे। पुराने अहदनामे के लोगों को कई तरह की क़ुरबानियाँ चढ़ाने का हुक्म दिया गया था। यहाँ तक कि इब्राहीम ने एक मेंढे की क़ुरबानी अदा की ताकि आपका बेटा बच जाए। यह सब कुछ उस कामिल क़ुरबानी की तरफ़ इशारा था जो अल-मसीह ने दी। हम जानते हैं कि हम सज़ा के लायक़ हैं क्योंकि हम गुनाहगार हैं। अल-मसीह ने हमारे गुनाहों की सज़ा को बरदाश्त किया। मसीह में अल्लाह ने ख़ुद दुख, शरमिंदगी और हमारी गुनाहगारी की सज़ा को क़बूल किया। हम जानते हैं कि गुनाह की मज़दूरी मौत है (रोमियों 6:23)। अल-मसीह ने हमारे लिए मौत सही ताकि हम ज़िंदगी पाएँ। यों लिखा है,

> लेकिन उसे हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़मों से हमें शफ़ा मिली। (यसायाह 53:5)

- हम अल-मसीह की क़ियामत से नजात पाते हैं। जब हम अल्लाह से जुदा हो जाते हैं तो मौत से वास्ता पड़ता है। इबलीस मौत की तमाम ताक़तों का शहज़ादा है। वह और उसके तमाम शरीर फ़रिश्ते और रूहें मौत के पहलवान हैं। जब अल-मसीह मसलूब हुए तो इबलीस बहुत ख़ुश हुआ। मौत उसका ब्योपार है। लेकिन अल्लाह ने अल-मसीह को मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। अल-मसीह की क़ियामत मौत की शिकस्त थी। शैतान की ताक़त तोड़ दी गई थी। मौत फ़तह नहीं पाएगी बल्कि क़ियामत और ज़िंदगी।

  अल-मसीह ने मौत पर फ़तह पाई, और ख़ुदा की ख़ाहिश है कि हम सब उसकी इस फ़तह में शामिल होकर अबदी ज़िंदगी पाएँ। जिस तरह अल-मसीह मौत से जी उठे उसी तरह हम भी जो ईमान रखते हैं जी उठेंगे। गो हमारे जिस्म मर जाएँ मगर क़ियामत के दिन हम सब एक नए और जलाली जिस्म पाकर जी उठेंगे। बिलकुल उसी तरह जिस तरह अल-मसीह मुरदों में से जी उठे (1 कुरिंथियों 15)। जिस तरह अल-मसीह की क़ियामत ने इबलीस और उसकी ताक़तों पर फ़तह पाई उसी तरह हम भी मौत की तमाम शैतानी ताक़तों पर

फ़तह पाते हैं जब हम अपनी ज़िंदगियों को अल-मसीह के तहत करते हैं। अल्लाह ने तमाम ताक़तों को अल-मसीह के तहत कर दिया है। जो अल-मसीह पर ईमान रखे उसे ख़ौफ़ और तमाम शैतानी ताक़तों से आज़ादी हासिल होती है (इफ़िसियों 1:15-23)।

अल्लाह ने मुक़र्रर किया कि जी उठे हुए अल-मसीह ख़ुदा और लोगों के बीच शफ़ाअत करें। इंजील जलील फ़रमाती है,

> इसी तरह मसीह ने भी अपनी मरज़ी से इमामे-आज़म का पुर-वक़ार ओहदा नहीं अपनाया। इसके बजाए अल्लाह ने उससे कहा, "तू मेरा फ़रज़ंद है, आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।" (इबरानियों 5:5)

आप उन्हीं दुखों, आज़माइशों और परेशानियों से दोचार हुए जिनसे हम भी दोचार होते हैं अगरचे आप बेगुनाह रहे (इबरानियों 2:18)। चूँकि अल-मसीह अल्लाह और इनसान के दरमियान कामिल दरमियानी हैं इसलिए ईसाई अपने आसमानी बाप से अल-मसीह के नाम से दुआ करते हैं। अल-मसीह ने ख़ुद ही वादा किया कि

> जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह तुमको देगा। (यूहन्ना 16:23)

अल्लाह का रूह भी हमारी नजात में कारफ़रमा है। अल-मसीह ने नीकुदेमुस से कहा कि तुमको पानी और रूह से पैदा होना है। नजात में

पाक रूह का क्या किरदार है? पाक रूह ही पुराने अहदनामे में नबियों पर अल्लाह का कलाम ज़ाहिर करता था। और वही पाक रूह आज भी हम पर सच्चाई का इनकिशाफ़ करता है। जो कुछ हमने अल्लाह और अल-मसीह के कामों के बारे में कहा है वह सब बेमानी है जब तक कि हमारे दिल अल्लाह के रूह की आवाज़ के लिए खुले न हों। पाक रूह हमारी सच्चाई तक राहनुमाई करता है। पाक रूह के वसीले से जी उठे अल-मसीह की ज़िंदगी और फ़तह हमारी ज़िंदगी का हिस्सा बन जाती है। जब हम तौबा करके ईमान लाते हैं तो पाक रूह हमारे अंदर अल्लाह की सूरत को बहाल कर देता है।

अल्लाह ने यरमियाह नबी के ज़रीए वादा किया था कि वह हर ईमानदार को नया दिल अता करते हुए इनसान के साथ एक नया अहद बाँधेगा। यह तख़लीक़ का नया काम है। अल्लाह का रूह यह मोजिज़ा ईमानदार की ज़िंदगी में अंजाम देता है। नए अहदनामे में लिखा है,

> रब फ़रमाता है कि जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बाँधूँगा उसके तहत मैं अपनी शरीअत उनके दिलों में डालकर उनके ज़हनों पर कंदा करूँगा। . . . उस वक़्त से मैं उनके गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा। (इबरानियों 10:16-17)

अल-मसीह ने इस नए अहद और तख़लीक़ के काम को नई पैदाइश कहा। जब हम अल्लाह की वह मुहब्बत क़बूल करते हैं जो अल-मसीह

में ज़ाहिर हुई तो अल्लाह का रूह हमें नए सिरे से ख़लक़ करना शुरू कर देता है। हम अल्लाह की बादशाही में रहने लगते हैं। जिस नई पैदाइश का कामिल नमूना अल-मसीह ने पेश किया उसका हम भी तजरिबा करने लगते हैं। हम रोज़ बरोज़ अल-मसीह की सूरत पर नए बनते जाते हैं। हम आज़ादी से हर एक से मुहब्बत रखने के क़ाबिल बन जाते हैं।

जब हम अल्लाह की मुहब्बत और बख़्शिश को हासिल करते हैं तो हम वह नजात पाते हैं जो अल-मसीह में ज़ाहिर हुई और जो अब भी अल्लाह के रूह के वसीले से मौजूद है। अल-मसीह की ज़िंदगी, मौत और क़ियामत में अल्लाह की मुहब्बत मुकम्मल तौर पर ज़ाहिर हुई। हमें उसकी इस मुहब्बत का तजरिबा पाक रूह के वसीले से होता है। अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को इसलिए दुनिया में भेजा कि वह दुनिया नजात दे (यूहन्ना 3:17)। इसी तरह अल्लाह ने

> अपने फ़रज़ंद के रूह को हमारे दिलों में भेज दिया, वह रूह जो “अब्बा” यानी “ऐ बाप” कहकर पुकारता रहता है। (गलतियों 4:6)

बाप, फ़रज़ंद और रूह का यह वाहिद ख़ुदा अपनी कामिल मुहब्बत और वहदानियत से हमें नजात देता है।

इबरानी ज़बान में ईसा नाम का मतलब “यहविह बचाता है” है। इस नजात में क्या क्या शामिल है?

- अल्लाह के साथ सही और पुरमुसर्रत रिफ़ाक़त; अल्लाह के साथ मेल-मिलाप।
- अपने साथी इनसान के साथ मेल-मिलाप।
- गुनाहों की माफ़ी।
- ख़ुदा की जिस सूरत पर हमें बनाया गया है उसकी बहाली, यानी नई तख़लीक़ और नई पैदाइश।
- शख़्सी बहाली और बरकत।
- अल्लाह की मुहब्बत का तजरिबा और अल्लाह को अपना बाप कहने का इस्तेहक़ाक़।
- मौत पर फ़तह, अबदी ज़िंदगी और मौत के बाद जी उठने का यक़ीन।
- गुनाह और तमाम तारीक ताक़तों पर फ़तह।
- अब से अबद तक अल्लाह की बादशाही में शिरकत।

हम मज़ीद बहुत कुछ कह सकते थे। मुख़तसरन नजात अल्लाह की मुहब्बत का तजरिबा है। हम ईमान लाकर अपने आपको अल-मसीह के ताबे करने से नजात पाते हैं; क्योंकि अल-मसीह के वसीले से ही अल्लाह ने ज़ाहिर किया कि वह हमसे इतनी मुहब्बत रखता है कि उसने फ़िद्या देकर हमारी ख़ातिर नजात का रास्ता क़ायम किया।

अल-मसीह के आसमान पर सऊद फ़रमाने के बाद दो ईसाई राहनुमाओं बनाम पौलुस और सीलास को क़ैदख़ाने में डाला गया। वजह यह थी कि उन्होंने यूनान के शहर फ़िलिप्पी में एक लौंडी में से बदरूह

निकाली थी। उसी रात एक ज़लज़ला आया। क़ैदख़ाने की नींव हिल गई और उसके दरवाज़े खुल गए। दारोग़ा ख़ुदकुशी करने को था, क्योंकि उसने सोचा कि क़ैदी भाग गए होंगे। मगर पौलुस और सीलास ने उसे रोककर कहा कि हम सब यहीं हैं। इससे मुतअस्सिर होकर उसने पौलुस और सीलास से पूछा,

> "साहबो, मुझे नजात पाने के लिए क्या करना है?" उन्होंने जवाब दिया, "ख़ुदावंद ईसा पर ईमान लाएँ तो आप और आपके घराने को नजात मिलेगी।"
> (आमाल 16:30-31)

ईसाई ईमान यह है कि जो अल-मसीह पर ईमान लाए हैं वह नजात पाकर नए अहद की उम्मत में शामिल हो जाते हैं।

## मुसलमान का जवाब

ईसाई ईमान के मुताबिक़ नजात का मरकज़ अल-मसीह की सलीबी मौत है। यह ख़याल मुसलिम सोच से बहुत दूर है।

इस्लाम के नज़दीक हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) अल्लाह तआला के एक जलीलुल-क़दर पैग़ंबर थे। आपको कहा गया कि अंबिया के नक़्शे-क़दम चलकर शरीअत की तसदीक़ करें। आपको इंजील शरीफ़ अता की गई जिसमें हिदायत और नूर पाया जाता है। क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और करेगा उसको पैग़ंबर बनी इसराईल की तरफ़। बेशक मैं आया हूँ तुम्हारे पास निशानियाँ लेकर तुम्हारे रब की तरफ़ से ... और सच्चा बताता हूँ अपने से पहली किताब को जो तौरेत है।
>
> (आल इमरान 3:49-50)

अल-मसीह ने दीगर अंबिया की तरह मोजिज़े किए। उन्होंने कोढ़ियों को शफ़ा और अंधों को बीनाई बख़्शी, बीमारों को ठीक किया और मुरदों को जिलाया। आपने यह तमाम मोजिज़े अल्लाह तआला की मरज़ी से अंजाम दिए। इन तमाम मोजिज़ों का मक़सद यह था कि आपके मिशन की तसदीक़ की जाए। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) सिर्फ़ अल्लाह तआला के ख़ादिम और पैग़ंबर थे। चुनाँचे क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> कोई नहीं आसमान और ज़मीन में जो न आए रहमान का बंदा होकर। (मरियम 19:93)

ईसाई मानते हैं कि इनसान को हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) की सलीबी मौत से माफ़ी मिलती है। यह मुसलिम ईमान से मेल नहीं खाता। अल-मसीह का ख़ातमा एक राज़ है, और अकसर मुसलमान समझते हैं कि क़ुरान शरीफ़ से बढ़कर कुछ नहीं कहना चाहिए। इसके बारे में क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> और उनके इस कहने पर कि हमने क़त्ल किया मसीह ईसा मरियम के बेटे को जो रसूल था अल्लाह का। और उन्होंने न उसको मारा और न सूली पर चढ़ाया। लेकिन वही सूरत बन गई उनके आगे और जो लोग इसमें मुख़्तलिफ़ बातें करते हैं तो वह लोग इस जगह शुबहे में पड़े हुए हैं। कुछ नहीं उनको इसकी ख़बर सिर्फ़ अटकल पर चल रहे हैं और उसको क़त्ल नहीं किया बेशक। (अन-निसा 4:157-158)

मुसलमान के नज़दीक यह नहीं हो सकता कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) को सलीबी मौत दी जाए। अल्लाह जो मुंसिफ़ है इजाज़त न देता कि अल-मसीह इस तरह का दुख उठाएं। मुसलमान समझते हैं कि अल्लाह तआला ने अल-मसीह को यों सलीबी मौत की ज़िल्लत से बचाया जिस तरह उसने बाद में ख़त्मे-नबुव्वत को हिजरत के वक़्त बचाया।

नीज़, मुसलमान मुत्तफ़िक़ नहीं हैं कि इनसान को फ़िद्या के छुटकारे की ज़रूरत है। यह सोच कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) की एवज़ी क़ुरबानी से छुटकारा है मुसलिम नज़रिये से मेल नहीं खाती। हम समझते हैं कि इनसान बुनियादी तौर पर अच्छा ही है, कि अल्लाह उनसे मुहब्बत रखता है जो उसकी मरज़ी पर चलते हैं और उनके गुनाह बख़्शता है।

इस्लाम सलामती की राह है। मुसलिम तालीम यह है कि इनसान उस वक़्त सलामती पाता है जब वह अल्लाह के ताबे रहता है। दीगर नबियों की तरह हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) और हज़रत मुहम्मद (सलअम) दोनों अल्लाह के फ़ज़्ल के नमूने हैं।

## ईसाई की विज़ाहत

हो सकता है कि सलीबी मौत के बारे में मुसलिम और ईसाई सोच इतना फ़रक़ न हो जितना सरसरी तौर से लगता है। बहरहाल इंजील इस बात पर ज़ोर देती है कि अल-मसीह ने अपनी जान दी। आपने फ़रमाया,

> कोई मेरी जान मुझसे छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मरज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख़्तियार है और उसे वापस लेने का भी। यह हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ़ से मिला है। (यूहन्ना 10:17-18)

अल-मसीह की सलीबी मौत अपने आपको क़ुरबान करने की अज़ीमतरीन मिसाल है। अल-मसीह ने ख़ुद अपनी जान दी। किसी भी के पास इसे छीनने का इख़्तियार नहीं था। क्योंकि कोई भी ख़ुदा के कलाम को क़त्ल नहीं कर सकता था। गो आपने अपने आपको बदकारों के सुपुर्द कर दिया तो भी वह उन्हें तबाह न कर सके। आप क़ब्र में से जी उठे। ईसाई मुत्तफ़िक़ हैं कि मौत ने अल-मसीह पर फ़तह न पाई बल्कि मसीह ने मौत पर फ़तह पाई।

आपको मालूम होगा कि अल्लाह के घराने में हमारा
बरताव कैसा होना चाहिए।
(1 तीमुथियुस 3:15)

# उम्मत

## ईसाई बिरादरी

जी उठने के चालीस दिन बाद अल-मसीह आसमान पर सऊद फ़रमाए। आसमान पर सऊद फ़रमाने से पहले आपने अपने शागिर्दों से कहा कि जब तक रूहुल-क़ुद्स तुम पर नाज़िल न हो तब तक यरूशलम में ठहरे रहो (आमाल 1:4-5)। इस पर शागिर्द उसी बालाखाने में ठहरे रहे जहाँ आप अपने शागिर्दों के साथ अशाए-रब्बानी में शरीक हुए थे। वहाँ उन्होंने पाक रूह के नाज़िल होने का इंतज़ार किया। दीगर ईमानदार भी हाज़िर थे। कुल मिल मिलाकर 120 लोग जमा थे (आमाल 1)।

यह लोग 10 दिन तक इंतज़ार करते रहे। ईदे-पंतिकुस्त जब फ़सल की पैदावार की ख़ुशी मनाई जाती थी अल्लाह ने शागिर्दों पर रूहुल-क़ुद्स नाज़िल फ़रमाया। इंजील जलील फ़रमाती है,

> अचानक आसमान से ऐसी आवाज़ आई जैसे शदीद आँधी चल रही हो। पूरा मकान जिसमें वह बैठे थे इस आवाज़ से गूँज उठा। और उन्हें शोले की लौएँ जैसी नज़र आईं जो अलग अलग होकर उनमें से हर एक पर उतरकर ठहर गईं। सब रूहुल-क़ुद्स से भर गए और मुख़्तलिफ़ ग़ैरमुल्की ज़बानों में बोलने लगे, हर एक उस ज़बान में जो बोलने की रूहुल-क़ुद्स ने उसे तौफ़ीक़ दी। (आमाल 2:2-4)

इस वाकिये का शोर बहुत दूर तक सुनाई दिया। लोग शहर के मुख़्तलिफ़ कोनों से दौड़े हुए आए ताकि शोर की वजह पता करें। शागिर्दों की बातें सुनकर सब हक्का-बक्का रह गए। उन्होंने कहा,

> क्या यह सब गलील के रहनेवाले नहीं हैं? तो फिर यह किस तरह हो सकता है कि हममें से हर एक उन्हें अपनी मादरी ज़बान में बातें करते सुन रहा है जबकि हमारे ममालिक यह हैं : पारथिया, मादिया, ऐलाम, मसोपुतामिया, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुंतुस, आसिया, फ़रूगिया, पंफ़ीलिया, मिसर और लिबिया का वह इलाक़ा जो कुरेन के इर्दगिर्द है। रोम से भी लोग मौजूद हैं। यहाँ यहूदी भी हैं और ग़ैरयहूदी नौमुरीद भी, क्रेते के लोग और अरब के बाशिंदे भी। और अब हम सबके

> सब इनको अपनी अपनी ज़बान में अल्लाह के अज़ीम कामों का ज़िक्र करते सुन रहे हैं। (आमाल 2:8-11)

पतरस रसूल खड़े होकर इंजील की मुनादी करने लगा। यह सुनकर लोग पूछने लगे कि “भाइयो,हम क्या करें?”

पतरस रसूल ने जवाब दिया,

> आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह माफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। (आमाल 2:38)

जवाब में उसी दिन क़रीबन 3000 लोगों ने बपतिस्मा लिया। यों उम्मत का आग़ाज़ हुआ। आज लाखों करोड़ों ईसाई दुनिया के तक़रीबन हर मुल्क में पाए जाते हैं। यह उम्मत कैसी है जो करोड़ों नए ईमानदारों को हर साल अपनी रिफ़ाक़त में खींच ले आती है? उम्मत कौन हैं?

## जो ईमान रखते हैं वह उम्मत हैं

अल-मसीह ने अपनी ख़िदमत के दौरान बारह शागिर्दों को बुलाया कि आपके पीछे हो लें। इनमें से कुछ माहीगीर थे, एक महसूल लेनेवाला था, और एक यहूदी जिहादी रहा था (लूक़ा 4:13-14)। हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने शागिर्दों के ज़रीए एक नई बिरादरी क़ायम की जिनका आक़ा अल-मसीह थे।

एक बार अल-मसीह ने शागिर्दों से पूछा कि “तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?” पतरस रसूल ने जवाब दिया,

> आप ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं।

हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने फ़रमाया,

> शमाऊन बिन यूनुस, तू मुबारक है, क्योंकि किसी इनसान ने तुझ पर यह ज़ाहिर नहीं किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने। मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि तू पतरस यानी पत्थर है, और इसी पत्थर पर मैं अपनी जमात को तामीर करूँगा, ऐसी जमात जिस पर पाताल के दरवाज़े भी ग़ालिब नहीं आएँगे। (मत्ती 16:16-18)

तमाम शागिर्दों का यही ख़याल था। उम्मत वह लोग हैं जिन्होंने अल-मसीह पर ईमान लाकर उनको अपना ख़ुदावंद और नजातदहिंदा क़बूल किया है। यही है वह पत्थर जिस पर उम्मत तामीर की गई है।

गो शागिर्द अल-मसीह पर ईमान ले आए थे तो भी उनका ईमान कमज़ोर था। इसलिए अल-मसीह की सलीबी मौत पर वह ज़्यादातर भाग गए। यहाँ तक कि पतरस रसूल ने फ़रमाया कि मैं अल-मसीह को नहीं जानता। मगर जिस दिन रूहुल-क़ुद्स उन पर नाज़िल हुआ उस दिन वह दिलेरी से इंजील की मुनादी करने लगे। जब वह अल्लाह के पाक रूह से भर गए तब ही उनको तबलीग़ करने की क़ुव्वत हासिल

हुई। तब ही वह ऐसी उम्मत बन गए जिस पर पाताल के दरवाज़े भी ग़ालिब नहीं आएँगे।

उम्मत वह लोग हैं जो अल-मसीह पर ईमान लाए हुए हैं। उम्मत कोई इमारत नहीं है। दरअसल इब्तिदाई ईमानदार इबादत के लिए किसी मख़सूस इमारत में जमा नहीं होते थे बल्कि ईमानदारों के घरों में। आज भी काफ़ी ईमानदार घरों में या पेड़ों के छाऊँ में जमा होकर इबादत करते हैं। जो लोग अल-मसीह पर ईमान लाए हैं वही उम्मत हैं। ईमानदार बाक़ायदगी से अल-मसीह के नाम में जमा होते हैं। जो ईमानदार एक दूसरे से रिफ़ाक़त रखते हैं वह उम्मत कहलाते हैं।

अल-मसीह ने फ़रमाया,

> जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम में जमा हो जाएँ वहाँ मैं उनके दरमियान हूँगा। (मत्ती 18:20)

जी उठे हुए अल-मसीह रूहुल-क़ुद्स की मौजूदगी के वसीले से ईमानदारों के बीच हाज़िर रहते हैं। जब कभी ईमानदार अल-मसीह के नाम में जमा होते हैं तो वह महसूस करते हैं कि आप उनके बीच मौजूद हैं। वह आपके नाम में दुआ करते हैं। उनकी दुआएँ क़बूल की जाती हैं। वह अपने गुनाहों का इक़रार करके तौबा करते हैं और इसका तजरिबा करते हैं कि वह सचमुच बख़्शे गए हैं। वह हिदायत माँगकर महसूस करते हैं कि ख़ुदावंद उन्हें हिकमत अता करते हैं। वह ताक़त माँगकर तरो-ताज़गी, तक़वियत, अमनो-सलामती, फ़ज़ल और मुहब्बत पाते हैं। वह जानते हैं कि अल-

मसीह सचमुच उनके दरमियान मौजूद हैं जब वह उनके नाम में जमा होते हैं।

इबादत के बाद ईमानदार एक दूसरे से अलग होकर अपने अपने कामों में जुट जाते हैं, चाहे वह मज़दूर, किसान, स्कूल टीचर, दुकानदार, डाक्टर या नर्स हों। कुछ दिनों बाद वह फिर से अल-मसीह के नाम में जमा होते हैं। वह फिर से महसूस करते हैं कि अल-मसीह हमारे दरमियान मौजूद हैं। यह जमा होनेवाली और बिछड़नेवाली बिरादरी ही उम्मत कहलाती है।

## उम्मत की राहनुमाई

उम्मत का इंतज़ाम और राहनुमा होते हैं। अल-मसीह और आपके शागिर्दों ने उम्मत को राहनुमाई का नमूना पेश किया। सऊद के बाद ख़ुदा ने आपके नज़दीकी शागिर्दों को रसूल मुक़र्रर किया। वह उम्मत के पहले राहनुमा थे। जल्द ही रसूलों को इंतज़ामी मदद की ज़रूरत महसूस हुई, ख़ासकर बेवाओं की मदद करने में। रूहुल-क़ुद्स की राहनुमाई से सात मददगारों को चुन लिया गया (आमाल 6:1-6)।

जब उम्मत बढ़ने लगी तो मक़ामी राहनुमाओं की ज़रूरत भी बढ़ने लगी। यह मक़ामी राहनुमा किस तरह मुक़र्रर हुए? मक़ामी लोगों ने रोज़ा रखकर दुआ की और फिर रूहुल-क़ुद्स की राहनुमाई में उन्हें चुन लिया। उनके सरों पर हाथ रखकर उन्होंने उन्हें मख़सूस किया। यह राहनुमा बुज़ुर्ग कहलाते थे (आमाल 14:23)।

जितने रसूलों की उम्र और उम्मत की तादाद बढ़ती गई उतना ही दूसरे राहनुमाओं की ज़रूरत महसूस हुई। तब बिशप मख़सूस किए गए। यह बिशप रसूलों की जगह राहनुमाई करने लगे (2 तीमुथियुस 6:1-7)। यों शुरू से ही उम्मत में तीन ओहदे क़ायम हुए : बिशप, मददगार (डीकन) और मक़ामी जमात के बुज़ुर्ग। हर एक को दुआ के साथ और हाथ रखकर मख़सूस किया जाता था।

आज अकसर जमातें इसी नमूने पर चलती हैं, गो थोड़ा-बहुत फ़रक़ हर जमात में पाया जाता है। यह सीधा-सादा मगर मुअस्सर नमूना दुनिया-भर की जमातों के लिए बरकत का बाइस साबित हुआ है।

## तहज़ीब और उम्मत

जितने ही उम्मत बढ़ती गई उतना ही उसकी रिफ़ाक़त में मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों के लोग शामिल हुए। मसलन यहूदी ईसाई अपने बच्चों को ख़तना देते थे जबकि ग़ैरयहूदी ईमानदार यह नहीं करते थे। यहूदी ईसाइयों का पहनावा और खाने-पीने का रिवाज ग़ैरयहूदी ईसाइयों के रिवाज से फ़रक़ था। यह देखकर उम्मत उलझन में पड़ गई। सवाल यह था कि क्या ईसाइयों की रस्मो-रसूम एक ही होनी चाहिएँ? पुराने अहदनामे के तमाम लोग एक ही तहज़ीब से ताल्लुक़ रखते थे। क्या यह नए अहदनामे में भी ज़रूरी है? ख़ास तौर से ख़तने का रिवाज मुश्किल था, क्योंकि पुराने अहदनामे में ख़तना उम्मत का निशान था।

आख़िरकार एक बड़ी कान्फ़्रेंस तक़रीबन 43 में मुनअक़िद हुई। रसूल और दीगर राहनुमाओं ने इस पर ग़ौर किया कि पुराने अहदनामा क्या फ़रमाता है। उन्होंने लोगों की रिपोर्टें भी सुनीं कि ग़ैरयहूदी ईमानदारों में रूहुल-क़ुद्स किस तरह काम कर रहा है। आख़िरकार उम्मत ने फ़ैसला किया कि यहूदी और ग़ैरयहूदी ईसाई अपनी तहज़ीब में ही रह सकते हैं। उन्हें खाने-पीने के यहूदी उसूल या ख़तने का रिवाज अपनाने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन लाज़िम है कि वह तमाम बुरी हरकतों से परहेज़ करें, मसलन हरामकारी और बुतपरस्ती से ताल्लुक़ रखनेवाले कामों से (आमाल 15:1-35)।

यरूशलम की कान्फ़्रेंस का यह फ़ैसला अहमतरीन था। इसका मतलब था कि उम्मत में हमेशा तहज़ीबी गुंजाइश होगी। जहाँ भी इंजील की मुनादी की जाती है वहाँ लोगों को दावत दी जाती है कि वह यह ख़ुशख़बरी क़बूल करके उसे मक़ामी जामा पहनाएँ। कि वह अपने रूहानी तजरिबे को अपनी तहज़ीब का लिबास पहनाएँ। यही वजह है कि दीगर मज़हबों के मुक़ाबले में ईसाई उम्मत में ज़्यादा तहज़ीबी तनव्वो पाया जाता है। हर मुआशरे में ईमानदारों को आज़ादी है कि वह ईमान रखने के साथ साथ अपनी तहज़ीब में क़ायम रहें।

ताहम उम्मत में एक अजीबो-ग़रीब इत्तहाद पाया जाता है। इंजील जलील फ़रमाती है,

> एक ही बदन और एक ही रूह है। यों आपको भी एक ही उम्मीद के लिए बुलाया गया। एक ख़ुदावंद, एक ईमान, एक बपतिस्मा है। एक ख़ुदा है, जो सबका वाहिद बाप है। वह सबका मालिक है, सबके ज़रीए काम करता है और सबमें मौजूद है। (इफ़िसियों 4:4-6)

उम्मत की यगांगत यों है कि लोग तनव्वो के बावुजूद मुत्तहिद रहते हैं। यों इंजील जलील फ़रमाती है,

> अब न यहूदी रहा न ग़ैरयहूदी, न ग़ुलाम रहा न आज़ाद, न मर्द रहा न औरत। मसीह ईसा में आप सबके सब एक हैं। (गलतियों 3:28)

## उम्मत में गूनागूनी और यगांगत

कभी कभी यह तनव्वो ईसाइयों में ग़लतफ़हमियों का बाइस बन गया है। इस तनव्वो की वजह से मुख़्तलिफ़ फ़िरक़े बन गए हैं। मसलन इंग्लैंड में एंग्लिकन चर्च क़ायम हुआ। इसकी एक ख़ास वजह यह थी कि मक़ामी लोग अपनी अँग्रेज़ी तहज़ीब के मुताबिक़ इबादत करना चाहते थे। यह चर्च ज़्यादातर इसी लिए क़ायम हुई। इसी तरह कुछ अफ़्रीक़ी फ़िरक़े इसलिए क़ायम हुए कि वह अपनी अफ़्रीक़ी तहज़ीब पर ज़्यादा ज़ोर देना चाहते हैं।

लेकिन हर फ़िरक़ा इस वजह से क़ायम नहीं हुआ। कभी कभी ईसाई इसलिए तक़सीम हुए कि वह तालीम के किसी पहलू पर मुत्तफ़िक़ नहीं थे। एक ख़ास मिसाल कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट फ़िरक़ों की तफ़रीक़ है। एक ख़ास वजह दोनों फ़िरक़ों का किताबे-मुक़द्दस के बारे में ख़याल था। प्रोटेस्टेंट मानते हैं कि उम्मत में सिर्फ़ और सिर्फ़ किताबे-मुक़द्दस का इख़्तियार होना चाहिए। कैथोलिक समझते हैं कि कलामे-पाक से बढ़कर दीगर रसूमात और राहनुमाई के उसूल भी मरकज़ी अहमियत रखते हैं। बाद में प्रोटेस्टेंट फ़िरक़ा कभी तहज़ीबी और कभी तालीमी इख़्तिलाफ़ के सबब से तक़सीम हुआ।

ईसाई यक़ीन रखते हैं कि तहज़ीबी तनव्वो कलामे-पाक के मुताबिक़ ही है। मगर साथ साथ हम महसूस करते हैं कि जब तक़सीम होने की वजह से रिफ़ाक़त में रुकावट आ जाती है, तो यह गुनाह है। हम जानते हैं कि इस तरह की तक़सीम इस बात का सबूत है कि आपस में मुहब्बत कमज़ोर है। इस क़िस्म की तक़सीम कई बार गुनाह है। लेकिन मौजूदा ज़माने में ऐसी तहरीकें भी वुजूद में आई हैं जो यह तक़सीम दूर करने की कोशिश कर रही हैं।

कुछ ममालिक में मुख़्तलिफ़ फ़िरक़ों की कौंसलों ने तशकील पाई है ताकि ईसाई एक दूसरे के साथ मुहब्बत और तावुन करें। यह कुछ बैनुल-अक़्वामी सतह पर भी हुआ है। मसलन वर्ल्ड कौंसल ऑफ़ चर्चज़

और वर्ल्ड ईवैंजेलिकल फ़ेलोशिप जो ईसाइयों की मदद करता है कि वह मिलकर और मुहब्बत की रूह में काम कर सकें।

करोड़ों ईसाइयों की ख़ाहिश यह है कि उस दुआ के मुताबिक़ चलें जो अल-मसीह ने की,

> वह कामिल तौर पर एक हों। (यूहन्ना 17:23)

बेशक हम मुकम्मल तौर से एक नहीं हैं! फिर भी रूहुल-क़ुद्स आज ईसाइयों की मदद कर रहा है ताकि वह मसीह में तनव्वो और यगांगत दोनों क़बूल करें।

## मुसलमान का जवाब

मुसलिम उम्मत भी एक इमारत नहीं है। यह ईमानदारों की बिरादरी है। ईसाई उम्मत वह लोग हैं जो हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) पर ईमान लाए हैं। इसके मुक़ाबले में मुसलिम उम्मत वह लोग हैं जो पूरी तरह अल्लाह तआला के ताबे होकर ख़त्मे-नबुव्वत की हिदायात पर चलते हैं। ईसाई का इंतज़ाम इस्लाम के इंतज़ाम से बहुत मुख़्तलिफ़ है। मुसलिम उम्मत के मख़सूसशुदा राहनुमा नहीं होते। उम्मत में क़ुरान शरीफ़, हज़रत मुहम्मद (सलअम) की सुन्नत और शरीअत उम्मत की राहनुमाई करते हैं।

हम इस बात की क़दर कर सकते हैं कि ईसाई उम्मत में तहज़ीबी तनव्वो पाया जाता है। लेकिन साथ साथ हम देखते हैं कि इस बात ने

ईसाइयों के दरमियान ग़लतफ़हमियाँ पैदा की हैं। बल्कि यह जमातों में तक़सीमो-तफ़रीक़ का सबब बना है। इसके मुक़ाबले में इस्लाम में पूरी उम्मत की एक ही मुसलिम तहज़ीब है। उम्मत में भी कुछ तनव्वो है। मगर मजमुई तौर पर उम्मत तहज़ीबों, मुल्कों, क़ौमों और ज़बानों से मुतअस्सिर नहीं होती। इस सबब से मुसलमान अफ़्रीक़ी इस्लाम, तुरकी इस्लाम, चैनी इस्लाम या अमरीकी इस्लाम की बात नहीं छेड़ते।

अल्लाह रूह है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चाई से उसकी परस्तिश करें।

(यूहन्ना 4:24)

# इबादत और रिफ़ाक़त

## ईसाई रिवाज

ईसाई हफ़्ते में कम अज़ कम एक बार घर में, किसी पेड़ के साय में या किसी ख़ास इमारत में इबादत के लिए जमा होते हैं। जहाँ वह इबादत करते हैं उसकी कोई अहमियत नहीं है। अहम बात यह है कि ईमानदार उस सच्चे ख़ुदा के नाम में जमा हो जाएँ जिसने अपने आपको बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स की हैसियत से ज़ाहिर किया है। इबादत में तसलीस फ़ित्तौहीद मरकज़ी अहमियत रखती है।

यह बात ज़ाहिर होती है जब ईसाई दुआ करते हैं। वह अल्लाह से जो आसमानी बाप है मुख़ातिब होते हैं। वह फ़रज़ंद के नाम में दुआ करते हैं जिसने अपनी जान देने से इलाही मुहब्बत का इज़हार किया। और वह रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत में दुआ करते हैं जो उनकी ज़िंदगियों में अल्लाह की मौजूदगी का एहसास दिलाता है। यह कुछ तमाम ईसाई इबादतों में पाया जाता है।

इस बात को छोड़कर ईसाई इबादतों में बहुत गुंजाइश पाई जाती है। याद रहे कि सन 43 में यरूशलम की कान्फ्रेंस में उम्मत ने तहज़ीबी तनव्वो की तसदीक़ की। तब से लेकर आज तक ईसाई इबादतों में बहुत फ़रक़ पाया जाता है। कुछ ईसाई बुलंद आवाज़ में मिलकर दुआ करते हैं। कुछ में सिर्फ़ जमात का राहनुमा ही दुआ करता है। कुछ खड़े होकर दुआ करते हैं और कुछ घुटने टेककर। कुछ सामने सलीब या मोमबत्तियाँ लगाते हैं जबकि कुछ इसकी ज़रूरत महसूस नहीं करते। कुछ क़दीम दस्तूर को अहमियत देते हैं जबकि कुछ अल्लाह के कलाम की मुनादी पर ज़ोर देते हैं। गो क़िस्म क़िस्म की इबादत मनाई जाती है फिर भी सब मिलकर ख़ुशी मनाते हैं कि ख़ुदा बाप ने अल-मसीह के वसीले से अपनी मुहब्बत का इज़हार किया है और कि वह अब भी पाक रूह के ज़रीए हमारे दरमियान है।

गो ईसाइयों की इबादतों में बहुत तनव्वो है तो भी कई-एक रसूमात आम हैं। अब हम इनका ज़िक्र करेंगे।

## बपतिस्मा

आसमान पर सऊद फ़रमाने से पहले अल-मसीह ने फ़रमाया,

> जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें

> यह सिखाओ कि वह उन तमाम अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें जो मैंने तुम्हें दिए हैं। (मत्ती 28:19-20)

शागिर्द पंतिकुस्त की ईद पर ही यह कुछ करने में जुट गए। उस वक़्त तक़रीबन तीन हज़ार अफ़राद ने ईमान लाकर बपतिस्मा लिया और यों उम्मत में शामिल हुए (आमाल 2:37-42)। ईमान लाना और बपतिस्मा लेना एक साथ चलते हैं। उस दिन से लेकर आज तक उम्मत उनको बपतिस्मा देती आई है जो ईमान लाए हैं। उस वक़्त से लोग इस तरीक़े से उम्मत में शामिल होते हैं।

बपतिस्मे की रस्म में ज़ैल की बातें शामिल हैं :

- गवाहों के सामने अल-मसीह पर ईमान रखने का इक़रार।
- बाप फ़रज़ंद और रूह के नाम में पानी में बपतिस्मा लेना।

कुछ जमातों में बच्चों का बपतिस्मा होता है। इस सूरत में माँ-बाप या सरपरस्त बच्चे के एवज़ ईमान का इक़रार करके वादा करते हैं कि वह रूहानी बातों में बच्चे की राहनुमाई करेंगे। तमाम जमातों में बपतिस्मा पाकीज़गी, रूहुल-क़ुद्स के हुसूल और उम्मत में शमूलियत का निशान है। कुछ जमातों में सर पर पानी की कुछ बूँदें छिड़की जाती हैं जबकि दीगर जमातों में हथेली-भर पानी इस्तेमाल किया जाता है। कुछ जमातों में नौमुरीद को पानी में पूरी तरह डुबोया जाता है। यह ज़ाहिर करता है कि उसके गुनाह दफ़न किए गए हैं। पानी से बाहर आने का मतलब यह है कि उसने मसीह के साथ जी उठकर नई और अबदी ज़िंदगी पाई है।

कुछ जमातें नौमुरीद को अल-मसीह पर ईमान लाने के ऐन बाद बपतिस्मा देती हैं। मगर ज़्यादातर जमातों में नौमुरीद को पहले बपतिस्मे के लिए तैयार किया जाता है। इसके दो सबब हैं। पहले, नए ईमानदार को तालीम और रसूमात सिखाए जाएँ। दूसरे, यह जाँचने के लिए कि क्या नौमुरीद ने सच्चे दिल से यह रास्ता इख़्तियार कर लिया है। लाज़िम है कि ईमानदार रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारे। जमात यह जानना चाहती है कि क्या नौमुरीद की ज़िंदगी में तबदीली आई है। तालीम पाने के बाद नौमुरीद दूसरों के सामने बपतिस्मा लेता है।

जिन जमातों में बच्चों को बपतिस्मा दिया जाता है वहाँ तरीक़ा कुछ फ़रक़ होता है। इन जमातों में बच्चे को लगभग बारह साल की उम्र में तालीम दी जाती है। जब जमात को बच्चे के बारे में तसल्ली है तो इसकी तसदीक़ एक ख़ास इबादत में की जाती है। उस वक़्त से वह जमात का फ़ुल मेंबर है जो अशाए-रब्बानी में भी शरीक हो सकता है।

## इतवार की इबादत

हर ईमानदार का फ़र्ज़ यह है कि वह बाक़ायदगी से इबादत की सूरत में दूसरों से रिफ़ाक़त रखे। कुछ रोज़ाना इकट्ठे होते हैं। अकसर लोग कम अज़ कम हफ़्ते में एक बार जमा होते हैं। आम तौर पर इबादत इतवार को होती है। वजह यह है कि अल-मसीह इतवार की सुबह मुरदों में से ज़िंदा हुए। जब ईसाई इतवार की सुबह जमा होते हैं तो इसलिए कि वह ख़ुशी मनाते हैं कि अल-मसीह जी उठे।

इतवार की इबादत हर एक जमात के दस्तूर के हिसाब से फ़रक़ होता है। मगर तमाम फ़िरक़ों में इबादत के दो मरकज़ी पहलू हैं। पहले, अपने गुनाहों का इक़रार। दूसरे, इसकी ख़ुशी मनाई जाती है कि अल-मसीह ने हमें नजात दी है। अकसर इबादतों में किताबे-मुक़द्दस की तिलावत पर ज़ोर दिया जाता है। रूहानी गीत गाए जाते और दुआएँ की जाती हैं। आम तौर पर उम्मत का कोई बुज़ुर्ग वाज़ सुनाता है। कुछ जमातों में हर इतवार को अशाए-रब्बानी मनाई जाती है, कुछ में रोज़ाना और कुछ में माहवार।

## अशाए-रब्बानी

अशाए-रब्बानी अल-मसीह की मौत और जी उठने की याद में मनाई जाती है। तौरेत की ईदे-फ़सह अशाए-रब्बानी का मतलब समझने में हमारी मदद करती है (ख़ुरूज 12)। जब अल्लाह ने इसराईलियों को फ़िरऔन की ग़ुलामी से छुड़ाया तो उसने हुक्म दिया कि हर ख़ानदान एक बेऐब लेला क़ुरबान करके उसका ख़ून चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगाए। फिर पूरा ख़ानदान मिलकर उसका गोश्त आग में भूनकर खाए ताकि सफ़र के लिए तक़वियत मिल जाए।

उस रात को रब का फ़रिश्ता मुल्क में से गुज़रा। जिन घरों के चौखटों पर ख़ून का निशान नहीं था उनके पहलौठों को उसने क़त्ल किया। जब मिसरियों ने देखा कि उनके साथ क्या कुछ हुआ है तो उन्होंने इसराईलियों से मिन्नत की कि हमारे मुल्क से चले जाओ। यह अज़ीम

वाक़िया फ़सह कहलाता है क्योंकि अल्लाह के फ़रिश्ते ने उन ख़ानदानों को छोड़ दिया जिनके चौखटों पर ख़ून का निशान था।

इसकी याद में हर साल इसराईली ईदे-फ़सह मनाते हैं। वह याद करते हैं कि अल्लाह ने उनको ग़ुलामी और मौत से बचाया। जो बेऐब लेला उन्होंने मिसर में क़ुरबान किया वह नजात का निशान है।

अल-मसीह को ईदे-फ़सह को सलीब पर चढ़ाया गया। आपके सलीबी मौत की रात ही आपने अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाया।

> खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, "यह लो और खाओ। यह मेरा बदन है।" फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें देकर कहा, "तुम सब इसमें से पियो। यह मेरा ख़ून है, नए अहद का वह ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उनके गुनाहों को माफ़ कर दिया जाए। मैं तुमको सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का यह रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे तुम्हारे साथ अपने बाप की बादशाही में ही पियूँगा।"
>
> (मत्ती 26:26-29)

यह पहली अशाए-रब्बानी थी। ख़ुद अल-मसीह ने उसे क़ायम किया।

उम्मत ईदे-फ़सह के बदले में अशाए-रब्बानी मनाती है। हम मानते हैं कि ईदे-फ़सह ने लोगों को उस क़ुरबानी के लिए तैयार किया जो अल-मसीह की सलीबी मौत से सरंजाम हुई।

रोटी अल-मसीह के जिस्म का निशान है। अंगूर का रस आपके ख़ून का निशान है जो सलीब पर हमारी नजात और माफ़ी के लिए बहाया गया।

अशाए-रब्बानी इत्तहाद का निशान भी है। जिस तरह अल-मसीह ने एक ही प्याले से अंगूर का रस पिलाया और एक ही रोटी को तक़सीम करके खिलाया उसी तरह ईसाई भी एक ही रोटी से खाते और एक ही प्याले में से पीते हैं। इस तरीक़े से उम्मत की रिफ़ाक़त नए सिरे से ठोस हो जाती है। अशाए-रब्बानी में मसीह में यगांगत मनाई जाती है।

अशाए-रब्बानी अल्लाह और इनसान के बीच मेल-मिलाप को भी ज़ाहिर करती है। रोटी और अंगूर का रस जमात में ख़ुदा की हुज़ूरी के निशान हैं। ज़िंदगी के मादी और रूहानी पहलू अशाए-रब्बानी में मुत्तहिद होते हैं। अशाए-रब्बानी में इनसान को अल्लाह का फ़ज़ल मिलने की दावत दी जाती है। उसमें हम अपने आसमानी बाप से रिफ़ाक़त रखते है।

# ख़िदमत

ख़िदमत भी ईसाई इबादत का एक हिस्सा है।नजात और रूहुल-क़ुद्स का तजरिबा मसीह के पैरोकार को आज़ादी और ख़ुशी से ख़िदमत करने पर मजबूर करता है। किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है,

> भाइयो, अल्लाह ने आप पर कितना रहम किया है! अब ज़रूरी है कि आप अपने बदनों को अल्लाह के लिए मख़सूस करें, कि वह एक ऐसी ज़िंदा और मुक़द्दस क़ुरबानी बन जाएँ जो उसे पसंद आए। (रोमियों 12:1)

इबादत में यह शामिल है कि हम अपने आपको क़ुरबान करके दूसरों की ख़िदमत करें। यह ख़िदमत ज़ाहिर करने के लिए अकसर जमातें हदिये इकट्ठे करते हैं ताकि ज़रूरतमंदों की मदद करें। यह हदिये ज़ाहिर करते हैं कि जिस तरह अल्लाह ने हमारा छुटकारा दिया है उसी तरह हमें भी दूसरों की ख़िदमत करनी चाहिए।

हमने इबादत के कई अहम पहलुओं का ज़िक्र किया है। बेशक हर जमात मुख़्तलिफ़ पहलुओं पर ज़ोर देती है। मसलन प्रोटेस्टेंट जमातें वाज़ पर ज़ोर देते हैं जबकि कैथोलिक जमातें अशाए-रब्बानी की रस्म पर ज़ोर देते हैं। तो भी इबादत की मरकज़ी बात यह है कि लोग अल्लाह की यगांगत और मुहब्बत की ख़ुशी मनाएँ। जब हम इबादत के लिए जमा होते हैं तो हम महसूस करते हैं कि अल-मसीह का वादा सच है कि

> जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम में जमा हो जाएँ वहाँ मैं उनके दरमियान हूँगा। (मत्ती 18:20)

इबादत करते वक़्त जमात अल्लाह के रूह के वसीले से महसूस करती है कि अल-मसीह मौजूद हैं।

## मुसलमान का जवाब

ईसाई इबादत मुसलिम इबादत से सरासर फ़रक़ है। मुसलमान के नज़दीक इबादत नमाज़ से कहीं ज़्यादा है। इबादत का मतलब है कि अल्लाह तआला मेरा मालिक है और मैं उसका ग़ुलाम हूँ। जो भी ग़ुलाम अपने मालिक की ख़िदमत में करता है वह इबादत है। हर एक नेक काम जो अल्लाह को ख़ुश करने के लिए किया जाता है वह इबादत है। इबादत की कुछ रसूमात हैं जो लाज़िमी क़रार दिए गए हैं। जो उन्हें अदा न करे उससे गुनाह सरज़द होता है या उसकी मुसलिम हैसियत ख़त्म हो जाती है।

तौहीद के इक़रार के अलावा इबादत का सबसे लाज़िमी फ़र्ज़ नमाज़ है। नमाज़ ईसाई इबादत से सरासर फ़रक़ है। तमाम दुनिया में वह एक जैसी है। तमाम ईमानदार एक सफ़ में खड़े होकर इमाम के पीछे हर एक हरकत की पैरवी करते हैं। नमाज़ की यह तमाम रसूम सरासर एक जैसी हैं।

नमाज़ का ख़ास मरकज़ अल्लाह तआला है। नमाज़ में मुसलिम सीधे अल्लाह तआला से मुख़ातिब होता है न कि किसी दरमियानी के वसीले से।

अल्लाह की बादशाही खाने-पीने की चीज़ों पर क़ायम नहीं है बल्कि रास्तबाज़ी, सुलह-सलामती और रूहुल-क़ुद्स में ख़ुशी पर।

(रोमियों 14:17)

# चाल-चलन

## ठीक चाल-चलन

ईसाई चाल-चलन किस नमूने पर चलता है?

- अल-मसीह ने फ़रमाया,

> ‘रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ तमाम शरीअत और नबियों की तालीमात इन दो अहकाम पर मबनी हैं। (मत्ती 22:37-40)

मुहब्बत ठीक चाल-चलन की कुंजी है। अपने पड़ोसी से हक़ीक़ी मुहब्बत सिर्फ़ दिल से उभर आती है। मुहब्बत क़ानून से बढ़कर है।

अहम बात दिल का रुझान है। अपने हमइनसानों से मुहब्बत ठीक चाल-चलन की बुनियाद है।

- रूहुल-क़ुद्स हमारे अंदर सुकूनत करता है ताकि हमारी राहनुमाई करे। सलीबी मौत से पहले अल-मसीह ने वादा किया कि मैं आसमान पर सऊद फ़रमाने के बाद रूहुल-क़ुद्स को भेजूँगा।

> जब सच्चाई का रूह आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। (यूहन्ना 16:13)

अल-मसीह ने यह भी वादा किया कि

> जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनिया की ग़लती को बेनिक़ाब करके यह ज़ाहिर करेगा। (यूहन्ना 16:8)

अल्लाह रूहुल-क़ुद्स के वसीले से ईमानदार में हाज़िर रहता है। रूहुल-क़ुद्स उम्मत और ईमानदार की सच्चाई और रास्तबाज़ी में राहनुमाई करता है। यह न सिर्फ़ कोई ज़ाहिरी क़ानून है बल्कि दिल की बात।

- रूहुल-क़ुद्स ईमानदार की ज़िंदगी में अल्लाह की वह तस्वीर बहाल करता है जो इनसान के अल्लाह से फिरने से बिगड़ गई थी। अल्लाह चाहता है कि हर इनसान की रास्तबाज़ी बहाल हो जाए। ज़ाहिरी क़ानून का ग़ुलाम बनने से कोई भी बहाल नहीं होता। शायद वह

दिल में शरीर ख़याल रखे मगर ज़ाहिरी तौर से रास्तबाज़ दिखलाए। अल-मसीह को इनसान के दिल की फ़िकर है जहाँ से रास्तबाज़ी और बुराई पैदा होती हैं। इसी लिए अल-मसीह ने मज़हबी राहनुमाओं की मलामत की,

> शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बाहर से हर प्याले और बरतन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अंदर से वह लूट-मार और ऐशपरस्ती से भरे होते हैं। अंधे फ़रीसियो, पहले अंदर से प्याले और बरतन की सफ़ाई करो, और फिर वह बाहर से भी पाक-साफ़ हो जाएँगे।
> (मत्ती 23:25-26)

पूरी इंजील में बातिनी तबदीली, बहाली और मसीह की मानिंद होने पर ज़ोर दिया गया है। इंजील फ़रमाती है,

> अपने पुराने इनसान को उसके पुराने चाल-चलन समेत उतार देना, क्योंकि वह अपनी धोकेबाज़ शहवतों से बिगड़ता जा रहा है। अल्लाह को आपकी सोच की तजदीद करने दें और नए इनसान को पहन लें जो यों बनाया गया है कि वह हक़ीक़ी रास्तबाज़ी और क़ुद्दूसियत में अल्लाह के मुशाबेह है।
> (इफ़िसियों 4:22-24)

जो लोग रूहुल-क़ुद्स की राहनुमाई में रहते हैं वह किस तरह जान सकते हैं कि वह सचमुच रास्तबाज़ और पाक ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं?

तौरेत शरीफ़ तफ़सील से सही चाल-चलन और इबादत की हिदायात पेश करती है। सही चाल-चलन का ख़ुलासा दस अहकाम में क़लमबंद किया गया है (ख़ुरूज 20:1-17) :

- अल्लाह के सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।
- अपने लिए बुत न बनाना।
- रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना।
- सातवाँ दिन मख़सूसो-मुक़द्दस हो।
- अपने बाप और माँ की इज़्ज़त करना।
- क़त्ल न करना।
- ज़िना न करना।
- चोरी न करना।
- अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।
- अपने पड़ोसी की किसी भी चीज़ का लालच न करना।

तमाम ईसाइयों को उन उसूलों पर जो दस अहकाम में ज़ाहिर की गई हैं क़ायम रहना है। क्योंकि वह अल्लाह और दूसरों से मुहब्बत रखने पर मबनी होते हैं।

तौरात फ़रमाती है कि हम अल्लाह और अपने पड़ोसियों से मुहब्बत रखें (इस्तिसना 6:4; अहबार 19:18)। बाद में अल-मसीह ने इसकी तसदीक़ करके फ़रमाया कि यह हुक्म सबसे अहम हुक्म है। किताबे-मुक़द्दस के दीगर तमाम अहकाम का ख़ुलासा इस हुक्म में पाया जाता है। आपने फ़रमाया

> तमाम शरीअत और नबियों की तालीमात इन दो अहकाम पर मबनी हैं। (मत्ती 22:40)

अल-मसीह ने यह भी फ़रमाया कि

> एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैंने तुमको प्यार किया है। (यूहन्ना 15:12)

अपनी ज़िंदगी और तालीम से आपने यह मुहब्बत ज़ाहिर की। मुहब्बत के सबब से अल-मसीह ने बीमारों को शफ़ा दी और उनकी ज़रूरतों को पूरा किया। आपने गुनाहगारों के गुनाहों को माफ़ किया। जो माफ़ी आपने सलीब पर ज़ाहिर की वह सबसे अज़ीम मुहब्बत का इज़हार है। साथ साथ आपकी मुहब्बत के बारे में तालीम भी अहम है।

एक मौक़े पर अल-मसीह अपने शागिर्दों को एक पहाड़ पर ले गए ताकि उन्हें दीन के उसूलों की तालीम दें। आपने फ़रमाया कि सच्ची रास्तबाज़ी इस पर मुनहसिर है कि हम अपने दिलों को अल्लाह को

मख़सूस करें। यह तालीमात पहाड़ी वाज़ कहलाती हैं। वह मत्ती 5-7 में क़लमबंद की गई हैं।

हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) ने पहाड़ी वाज़ को यह कहते हुए शुरू फ़रमाया कि

> मुबारक हैं वह जिनकी रूह ज़रूरतमंद है, क्योंकि आसमान की बादशाही उन्हीं की है। (मत्ती 5:3)

ईसाई मानते हैं कि

> अल्लाह की बादशाही खाने-पीने की चीज़ों पर क़ायम नहीं है बल्कि रास्तबाज़ी, सुलह-सलामती और रूहुल-क़ुद्‌स में ख़ुशी पर। (रोमियों 14:17)

अल-मसीह ने फ़रमाया कि जिनकी रूह ज़रूरतमंद है वही अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होंगे। यानी सिर्फ़ वही जो अपने आपको गुनाहगार समझते हैं, जो जानते हैं कि हमारी अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त ठीक नहीं है, जो माफ़ी की तलाश में हैं। सिर्फ़ इन्हीं को अल्लाह की नजात हासिल होती है। इन्हीं को रूहुल-क़ुद्‌स की बहाल करनेवाली क़ुव्वत हासिल होती है। तब उनका दूसरों से रवैया भी तबदील हो जाता है। मसलन :

## सुलह-सलामती

तौरेत शरीफ़ फ़रमाती है कि क़त्ल न करना। मगर अल-मसीह ने फ़रमाया कि नफ़रत करना भी ग़लत है। नफ़रत ही लोगों को क़त्ल पर उभार देती है। ज़रूरी है कि दूसरों से बुरी सोच न रखें। अल-मसीह ने फ़रमाया,

> मैं तुमको बताता हूँ कि जो भी अपने भाई पर ग़ुस्सा करे उसे अदालत में जवाब देना होगा। (मत्ती 5:22)

## शादी

तौरेत शरीफ़ फ़रमाती है कि ज़िना न करना (ख़ुरूज 20:14) मगर अल-मसीह ने फ़रमाया,

> जो किसी औरत को बुरी ख़ाहिश से देखता है वह अपने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका है। (मत्ती 5:28)

ज़िनाकारी शादी और ज़िनाकार दोनों को बरबाद कर देती है। इसी सबब से अल-मसीह ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारे जिस्म का कोई अज़ु जैसे कि आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो बेहतर यह है कि उसे निकालकर फेंक दे ताकि तू आज़माइश से बच सके।

> इससे पहले कि तेरे पूरे जिस्म को जहन्नुम में डाला जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अज़ु जाता रहे। (मत्ती 5:29)

अल-मसीह ने सिखाया कि तलाक़ भी ग़लत है।

> यह भी फ़रमाया गया है, 'जो भी अपनी बीवी को तलाक़ दे वह उसे तलाक़नामा लिख दे।' लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि अगर किसी की बीवी ने ज़िना न किया हो तो भी शौहर उसे तलाक़ दे तो वह उससे ज़िना कराता है। और जो तलाक़शुदा औरत से शादी करे वह ज़िना करता है। (मत्ती 5:31-32)

तलाक़ बुरी बात है क्योंकि यह वह रिश्ता तोड़ देता है जिसे अल्लाह ने बाँधा था। जब अल्लाह ने हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को बनाया तो वह एक हो गए (पैदाइश 2:24)। अल-मसीह ने फ़रमाया,

> जिसे अल्लाह ने जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे। (मत्ती 19:6)

तौरेत ने लोगों को उनके दिलों की सख़्ती के सबब से तलाक़ की इजाज़त दी थी (मत्ती 19:8)। मगर तलाक़ का यह रिवाज नए अहद के लोगों में कभी नहीं होना चाहिए जिनमें रूहुल-क़ुद्स सच्ची रास्तबाज़ी क़ायम कर रहा है (मत्ती 5:31-32)।

किताबे-मुक़द्दस कसरतुल-अज़वाज को मना नहीं करती। ताहम अकसर जमातें कसरतुल-अज़वाज की इजाज़त नहीं देतीं। गो तौरेत के ज़माने में कुछ आदमियों ने एक से ज़ायद बीवियाँ रखीं मगर उनमें से एक का भी इंतज़ाम तसल्लीबख़्श नहीं लगता। उनमें से अकसर दुखी थे। कसरतुल-अज़वाज शादी के इत्तहाद को बिगाड़ देती है।

एक होने का मतलब यह है कि मियाँ-बीवी एक दूसरे से वफ़ादार रहें। अगर एक आदमी के चंद बीवियाँ हों तो शादी का गहरा मक़सद बरबाद हो जाता है। यों किताबे-मुक़द्दस फ़रमाती है,

> शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मसीह ने अपनी जमात से मुहब्बत रखकर अपने आपको उसके लिए क़ुरबान किया।
> (इफ़िसियों 5:25)

# ईमानदारी

तौरेत फ़रमाती है,

> अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।
> (ख़ुरूज 20:16)

अल-मसीह ने इस हुक्म का अंदरूनी मतलब बताया। आपने फ़रमाया कि क़सम भी नहीं खाना चाहिए, क्योंकि जो क़सम खाता है वह किसी वक़्त झूट भी बोल सकता है। मगर सच्चे पैरोकार को कभी भी क़सम

खाने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उसकी बात हमेशा सच होती है। सच्चा पैरोकार सिर्फ़ “हाँ” या “न” कहे तो उसके साथियों को यक़ीन है कि उसने सच कहा है।

## माफ़ी

सबसे बड़ा हुक्म अल्लाह और अपने पड़ोसी से मुहब्बत रखना है। इसका मतलब है कि हम अपने दुश्मनों को भी माफ़ करें। तौरेत ने फ़रमाया था,

> आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत।
> (ख़ुरूज 20:16)

मगर अल-मसीह फ़रमाते हैं,

> अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए दुआ करो जो तुमको सताते हैं। (मत्ती 5:44)

अगर कोई आपके दहने गाल पर तमाँचा मारे तो दूसरे को भी पेश करें। अगर कोई आपका चोग़ा ले तो कुरता भी उसे लेने दें। अपना इंतक़ाम न लो। क्योंकि बदला लेना अल्लाह का काम है (रोमियों 12:19)।

नफ़रत और तशद्दुद मज़ीद नफ़रत और ज़्यादा तशद्दुद पैदा करते हैं। बदला लेने से नफ़रत ख़त्म नहीं होती। सिर्फ़ माफ़ी तशद्दुद को ख़त्म कर सकती है। सिर्फ़ मुहब्बत नफ़रत को बरबाद कर सकती है। अगर

हमारे दुश्मनों को मालूम हो कि हम उनसे मुहब्बत करते हैं तो वह हमारे दोस्त बन सकते हैं। पर अगर हम तशद्दुद करें तो हम दोनों चोट खाएँगे और हमारे दरमियान नफ़रत बढ़ जाएगी।

## दौलत

तौरेत शरीफ़ फ़रमाती है कि अपने पड़ोसी की किसी भी चीज़ का लालच न करना। लालच एक बुरी ख़ाहिश है जो दूसरे की मिलकियत को छीनने की कोशिश करती है। दौलत और दीगर चीज़ें अपनाने की ख़ाहिश लालच की जड़ है। इससे बढ़कर अल-मसीह ने फ़रमाया कि दौलत या मिलकियत पर भरोसा करने से बाज़ आओ। हमको रास्तबाज़ी की तलाश करनी है। सबसे पहले हमें अल्लाह की बादशाही की तलाश करनी है। जब हम तमाम चीज़ों की निसबत अल्लाह से ज़्यादा मुहब्बत रखें तब वह हमारी दीगर ज़रूरियात को पूरा करेगा। अल-मसीह ने फ़रमाया,

> परेशानी के आलम में फ़िकर करते करते यह न कहते रहो, 'हम क्या खाएँ? हम क्या पिएँ? हम क्या पहनें?' ... पहले अल्लाह की बादशाही और उसकी रास्तबाज़ी की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें भी तुमको मिल जाएँगी। (मत्ती 6:31,33)

शायद वाज़ की सबसे हैरानकुन बात यह है कि आपने फ़रमाया,

> वैसे ही कामिल हो जैसा तुम्हारा आसमानी बाप कामिल है। (मत्ती 5:48)

हम किस तरह अल्लाह जैसे रास्तबाज़ हो सकते हैं? यक़ीनन इस तरह की रास्तबाज़ी सिर्फ़ उस वक़्त मुमकिन है जब रूहुल-क़ुद्स हमारी ज़िंदगियों में काम करे। जब हमारी रूह ज़रूरतमंद हो, जब हम अपनी नाकामियों और गुनाहों का इक़रार करके नजात पाएँ।

## ख़ुलासा

> जब ईसा ने यह बातें ख़त्म कर लीं तो लोग उसकी तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, क्योंकि वह उनके उलमा की तरह नहीं बल्कि इख़्तियार के साथ सिखाता था। (मत्ती 7:28-29)

ईसाई वह हैं जो अल-मसीह का इख़्तियार तसलीम करते हैं। वह आपको ख़ुदावंद और नजातदहिंदा जानते हुए अल्लाह की मरज़ी के ताबे रहते हैं। वह अल-मसीह के पैरोकार हैं और उसके नक़्शे-क़दम पर चलते हैं। इब्तिदाई ईमानदार समझते थे कि जो मानते हैं कि अल-मसीह ख़ुदावंद है वह अल्लाह की राह पर चलते हैं (आमाल 18:26)। आज भी जो अल-मसीह की पैरवी करते हैं वह अल्लाह की राह पर चलते हैं। यह मुहब्बत की राह है, वही राह जिस पर अल-मसीह ने ज़िंदगी गुज़ारी।

## मुसलमान का जवाब

चाल-चलन के बारे में मुसलिम सोच बहुत फ़रक़ है। हम मुसलमानों को एक आलमगीर क़ानून हासिल है। हम समझते हैं कि इनसान नाक़िस है, और उसका इल्म महदूद है। लिहाज़ा लाज़िम है कि उसकी राहनुमाई शरीअत की तफ़सीलात और अख़लाक़ी क़वायद से की जाए। गो इनसान को इनसाफ़ करने का हुक्म दिया गया है तो भी वह यह अंजाम देने का तरीक़ा नहीं जानता। लिहाज़ा शरीअत पूरी तफ़सील से फ़रमाती है कि किस तरह इनसाफ़ और रहम करना है।

दूसरी तरफ़ मुसलमान और ईसाई का चाल-चलन मिलता-जुलता है, हालाँकि ईसाई उम्मत समझती है कि मुहब्बत सबसे अहम हुक्म है। बाज़ औक़ात मुसलमान को मुहब्बत पर यह ज़ोर ज़्यादा ख़याली पुलाव लगती है।

शादी और तलाक़ के मामले में ईसाइयों और मुसलमानों में ना-इत्तफ़ाक़ी है। इस्लाम में शादी एक आदमी और एक औरत के बीच मुआहदा है जो अल्लाह के नाम में किया जाता है। यह एक पाक रिवाज है। इसलिए हर एक को यह मुआहदा क़ायम रखने की कोशिश करनी चाहिए।

लेकिन अगर शादी में मेल-मिलाप नामुमकिन हो तो इस्लाम तलाक़ की इजाज़त देता है। मगर तलाक़ एक आख़िरी हल होना चाहिए। हज़रत

मुहम्मद (सलअम) ने फ़रमाया कि तलाक़ तमाम बातों से ज़्यादा मकरूह है।[1] और क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

> जो औरतें नेक हैं सो ताबेदार हैं, निगहबानी करती हैं पीठ पीछे अल्लाह की हिफ़ाज़त से। और जिनकी बदखोई का डर हो तुमको तो उनको समझाओ और जुदा करो सोने में और मारो। फिर अगर कहा मानें तुम्हारा तो मत तलाश करो उन पर राह इलज़ाम की।
> (अन-निसा 4:34)

इस्लाम मायूस, बेवफ़ा, बेमुहब्बत और बेफल शादियाँ बरदाश्त नहीं करता। इसी अमली वजह से तलाक़ की इजाज़त दी गई है।

इसी तरह इस्लाम के नज़दीक माफ़ी एक आला नेकी है। मगर इसे अमली जामा पहनाने की ज़रूरत है। इस्लाम में इसकी इजाज़त है कि मज़लूम ज़ालिम का सामना करे ताकि उसे सज़ा दी जाए। मगर साथ साथ उसे यह भी हक़ हासिल है कि वह ज़ालिम को माफ़ करे इस उम्मीद से कि अल्लाह तआला आख़िरत में बदला लेगा। यों क़ुरान शरीफ़ फ़रमाता है,

---

1 Reported by Son of Omar, Abu Dawd and Hakim, *Fikqi Sunnah*, Vol. 11 (Beirut: Daarul-Kitabl-I-Alaby), p 241.

> और बुराई का बदला है बुराई। वैसी ही फिर जो कोई माफ़ करे और सुलह करे सो उसका सवाब है अल्लाह के ज़िम्मे। बेशक अल्लाह को पसंद नहीं आते गुनाहगार। (अश-शूरा 42:40)

नीज़,

> जो ... दबा लेते हैं ग़ुस्सा और माफ़ करते हैं लोगों को और अल्लाह चाहता है नेकी करनेवालों को। (आल इमरान 3:134)

अमली तौर से देखा जाए तो इस्लाम में न आँख के बदले आँख का उसूल पाया जाता है, न ही यह उसूल कि अगर कोई एक गाल पर तमाँचा मारे तो उसे दूसरा गाल पेश करो। यह भी नहीं फ़रमाया गया कि अगर कोई तुम्हारी क़मीज़ छीन ले तो उसे अपनी पतलून भी देना।

पूरी दुनिया में जाकर तमाम मख़लूक़ात को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाओ।

(मरक़ुस 16:15)

# उम्मत का मिशन

## उम्मत के काम

अल-मसीह ने अपनी ख़िदमत दर्जे-ज़ैल अलफ़ाज़ से शुरू की,

> रब का रूह मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे तेल से मसह करके ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने का इख़्तियार दिया है। उसने मुझे यह एलान करने के लिए भेजा है कि क़ैदियों को रिहाई मिलेगी और अंधे देखेंगे। उसने मुझे भेजा है कि मैं कुचले हुओं को आज़ाद कराऊँ और रब की तरफ़ से बहाली के साल का एलान करूँ।
>
> (लूक़ा 4:18-19)

ख़ुशख़बरी यह थी कि अल्लाह की बादशाही क़रीब आ गई है। आप इस बादशाही के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते थे बल्कि आप ख़ुद ही बादशाही थे। जो आप पर ईमान लाए, उन्हें हर तरह की शफ़ा मिली, उनके गुनाह

बख़्शे गए, लंगड़े चलने-फिरने लगे, अंधों को बीनाई हासिल हुई। अल-मसीह में अल्लाह की बादशाही दुनिया में आ गई।

उम्मत अल-मसीह का यह काम जारी रखती है (1 कुरिंथियों 12,13)। वह क़ौमों के दरमियान अल्लाह की बादशाही ज़ाहिर करती है। जो काम रूहुल-क़ुद्स उम्मत में कर रहा है उससे अल्लाह की बादशाही हमारे मुआशरे और हमारी ज़िंदगियों में दाख़िल हो रही है। उम्मत दुनिया में गवाही देती है कि नजात क़रीब ही है।

उम्मत का मिशन इस पर मबनी है कि उसे नजात मिली है। जिसे नजात मिली है वह अल्लाह की मुहब्बत से मजबूर होकर अपने साथियों को यह मुहब्बत पेश करता है। जो मुहब्बत हमें अल-मसीह की क़ुरबानी से मिली है वह हमें दूसरों की ख़िदमत करने पर मजबूर करती है। यों इंजील जलील फ़रमाती है,

> मुहब्बत की रूह में ज़िंदगी यों गुज़ारें जैसे मसीह ने गुज़ारी। क्योंकि उसने हमसे मुहब्बत रखकर अपने आपको हमारे लिए अल्लाह के हुज़ूर क़ुरबान कर दिया और यों ऐसी क़ुरबानी बन गया जिसकी ख़ुशबू अल्लाह को पसंद आई। (इफ़िसियों 5:2)

दूसरों से मुहब्बत रखना ईसाई ख़िदमत का मरकज़ है।

उम्मत किस तरह अल्लाह की बादशाही की मौजूदगी पेश करती है? वह किस तरह दूसरों पर अल्लाह की मुहब्बत ज़ाहिर करती है? वह

किस तरह दुनिया पर ज़ाहिर करती है कि अल-मसीह के ज़रीए अल्लाह की अबदी हुकूमत शुरू हुई है? उम्मत अपनी ख़िदमत तीन बुनियादी तरीक़ों से अंजाम देती है :

- उम्मत अपना मिशन रिफ़ाक़त के ज़रीए अंजाम देती है। उम्मत के लोगों को कहा गया है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो (1 कुरिंथियों 13)। मुहब्बत ग़ैरमामूली तौर से उस वक़्त ज़ाहिर हुई जब उम्मत क़ायम हुई। इंजील फ़रमाती है,

> जो भी ईमान लाते थे वह एक जगह जमा होते थे। उनकी हर चीज़ मुश्तरका होती थी। अपनी मिलकियत और माल फ़रोख़्त करके उन्होंने हर एक को उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ दिया। रोज़ाना वह यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस में जमा होते रहे। साथ साथ वह मसीह की याद में अपने घरों में रोटी तोड़ते, बड़ी ख़ुशी और सादगी से रिफ़ाक़ती खाना खाते और अल्लाह की तमजीद करते रहे। उस वक़्त वह तमाम लोगों के मंज़ूरे-नज़र थे। और ख़ुदावंद रोज़ बरोज़ जमात में नजातयाफ़्ता लोगों का इज़ाफ़ा करता रहा। (आमाल 2:44-47)

यह इब्तिदाई ज़माना ग़ैरमामूली था। लेकिन आज भी जहाँ उम्मत वफ़ादार है वहाँ ईमानदार एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं। मसलन

अगर किसी रुकन का घर जल गया तो ईमानदार हदिये जमा करके उसकी मदद करते हैं। मक़ामी जमातों के ईमानदार अनगिनत तरीक़ों से एक दूसरे से मुहब्बत का इज़हार करते हैं, वह कुछ जो इंजील जलील फ़रमाती है,

> इसलिए आएँ, जितना वक़्त रह गया है सबके साथ नेकी करें, ख़ासकर उनके साथ जो ईमान में हमारे भाई और बहनें हैं। (गलतियों 6:10)

ईसाई अपनी मुहब्बत का इज़हार उन भाई-बहनों पर भी करते हैं जो दूसरी जगहों में रहते हैं। हर मक़ामी जमात आलमगीर उम्मत का एक हिस्सा है। ईसाई आलमगीर कौंसलों और इदारों के ज़रीए भी इस मुहब्बत का इज़हार करते हैं।

मसलन अगर एक मुल्क में काल पड़े तो दूसरे ममालिक की जमातें उनकी माली मदद करती हैं। एक और मिसाल मेहमान-नवाज़ी है। जब हम सफ़र करते हैं तो दूसरे ममालिक के भाई-बहनें हमारी मेहमान-नवाज़ी करते हैं हालाँकि हम पहले से एक दूसरे से नावाक़िफ़ थे।

मिशन के सिलसिले में रिफ़ाक़त मरकज़ी अहमियत रखती है। यह वह मुहब्बत है जो ईसाई एक दूसरे से रखते हैं। रिफ़ाक़त एक गवाही है कि अल्लाह की बादशाही आ चुकी है। अल-मसीह ने फ़रमाया,

> अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो। (यूहन्ना 13:35)

- उम्मत ख़िदमत से अपने मिशन का इज़हार करती है। इस नाते से उम्मत पूरी दुनिया में सरगरम है। मसलन पनाहगुज़ीनों की इमदाद, काल की ज़द में आनेवालों की इमदाद, हस्पताल, तालीमी इदारे, दरख़्त लगाने के मनसूबे, काश्तकारी और मवेशी पालने के मनसूबे, ज़हनी मरीज़ों के इदारे, निचले तबक़ों के लिए घर के कारख़ाने, तालीमे-बालिग़ाँ, सड़कों की तामीर, कोढ़ियों के इदारे वग़ैरा। ख़िदमत की यह फ़हरिस्त बहुत लंबी है।

  इन ख़िदमात से उम्मत उन कामों को जारी रखती है जिनका आग़ाज़ अल-मसीह ने किया। यों उम्मत अल्लाह की मुहब्बत को दूसरों को पेश करती है। उम्मत का फ़र्ज़ यह है कि जहाँ भी ज़रूरत हो वहाँ ख़िदमत करके अल्लाह की मुहब्बत का इज़हार करे।

  उम्मत यह नहीं समझती कि वह मुआशरे के तमाम मसायल हल कर सके। यह नामुमकिन है। ताहम उम्मत का फ़र्ज़ है कि अल्लाह की बादशाही का एक निशान हो, कि वह मुआशरे में ज़मीर का काम करे।

  कीनिया की एक मिसाल लीजिए। कुछ साल पेशतर वहाँ के काफ़ी बच्चों को सेकंडरी स्कूल की तालीम से महरूम होने के बाइस नौकरी न मिली। तब जमातों ने कई पॉलीटेक्निक स्कूल खोले ताकि यह

बच्चे तरक़्क़ी कर सकें। यह कोशिश इतनी कामयाब रही कि आज सारे पॉलीटेक्निक स्कूल सरकारी इमदाद के मातहत चलते हैं। इस तरह की अनगिनत मिसालें हैं।

- उम्मत अपना मिशन ख़ुशख़बरी सुनाने से अंजाम देती है। अल-मसीह ने आसमान पर सऊद फ़रमाने से पहले अपने शागिर्दों को हुक्म दिया कि

> जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें यह सिखाओ कि वह उन तमाम अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें जो मैंने तुम्हें दिए हैं। और देखो, मैं दुनिया के इख़्तिताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। (मत्ती 28:19-20)

अल-मसीह ने यह भी फ़रमाया कि

> तुम्हें रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत मिलेगी जो तुम पर नाज़िल होगा। फिर तुम यरूशलम, पूरे यहूदिया और सामरिया बल्कि दुनिया की इंतहा तक मेरे गवाह होगे। (आमाल 1:8)

अल्लाह ने उम्मत को हुक्म दिया कि वह ख़ुशख़बरी को ज़मीन की इंतहाओं तक ले जाए। ईसाइयों को हुक्म दिया गया है कि वह जिद्दो-जहद करके ख़ुशख़बरी सुनाएँ, कि वह लोगों को दावत

दें कि वह तौबा करके इक़रार करें कि अल-मसीह उनका ख़ुदावंद और नजातदहिंदा हैं। उन्हें हुक्म दिया गया है कि ईमान लानेवालों को बपतिस्मा दे कर तालीम दें, कि वह नई जमातें तमाम क़ौमों के दरमियान क़ायम करें। यह हुक्म इरशादे-आज़म कहलाता है।

पंतिकुस्त के ऐन बाद उम्मत इरशादे-आज़म की तकमील में जुट गई। रसूलों के जीते-जी ख़ुशख़बरी यरूशलम से दूर के ममालिक तक पहुँची। थोड़े सालों के अंदर अंदर करोड़ों ने अल-मसीह पर ईमान लाकर बपतिस्मा लिया। ख़ुशख़बरी यरूशलम के मशरिक़ में हिंदुस्तान और चीन तक और मग़रिब में स्पेन तक पहुँच गई। रसूलों ने इंजील को मिसर और शिमाली अफ़्रीक़ा तक भी पहुँचाया।

अफ़सोस कि माज़ी में ऐसे लोग भी थे जिन्होंने ख़ुशख़बरी को जंगो-जदल और तशद्दुद के ज़रीए फैलाने की कोशिश की। मसलन ईसाई फ़ौजियों ने यूरोप में कुछ इलाक़ों को ज़बरदस्ती से ईसाई दीन के लिए जीत लिया। ईसाइयों को दुख है कि सलीबी जंगों के दौरान ईसाई फ़ौजियों से बहुत क़त्लो-ग़ारत हुई। यह अल-मसीह के पैग़ाम से कहीं दूर है। जिनसे यह सरज़द हुआ उन्हें इरशादे-आज़म की समझ नहीं आई थी। ऐसी हरकतों से उम्मत को बहुत नुक़सान पहुँचा है।

फिर भी अकसर ईसाइयों ने अमनो-अमान के साथ ख़ुशख़बरी दुनिया में फैलाई है। इन दिनों में बेशुमार ईसाई दुनिया में मुनादी कर रहे

हैं। जहाँ कहीं ईसाई जाते हैं वह अपने साथ इंजील लेकर चलते हैं। उनमें से कई-एक को मक़ामी जमात की तरफ़ से किसी दूसरे मुल्क में भेजा गया है ताकि इंजील की मुनादी करें। दीगर लोग ब्योपार के लिए, पेशे के लिए या तालीमी सबब से जाते हैं। मगर जहाँ भी वह जाते हैं उनका फ़र्ज़ है कि वह ख़ुशख़बरी दूसरों तक पहुँचाएँ।

बेशक उम्मत को याद रखना है कि इंजील की मुनादी घर से ही शुरू होती है। वफ़ादार जमातें इंजील की मुनादी सबसे पहले अपने पड़ोसियों में करती हैं। यहीं से इरशादे-आज़म शुरू होता है। इंजील जलील फ़रमाती है कि अल्लाह की मरज़ी है कि तमाम क़ौमें ख़ुशख़बरी सुनें और उनके बीच जमातें क़ायम हो जाएँ (मत्ती 24:14; 28:16-20; आमाल 1:8; फ़िलिप्पियों 2:9-11)।

## ख़ुलासा

उम्मत अल्लाह की बादशाही का निशान है। उसका मिशन यह है यह वह अक़वाम के बीच में अल्लाह की बादशाही की गवाही दे। यह अंजाम देने के लिए वह उस ख़िदमत को जारी रखती है जो अल-मसीह ने शुरू की। इस ख़िदमत में रिफ़ाक़त, ख़िदमत और ख़ुशख़बरी सुनाना शामिल हैं।

इंजील जलील के मुताबिक़ आख़िरत के दिन अल-मसीह जलाल के साथ ज़मीन पर वापस आएँगे। तब अल्लाह की बादशाही तकमील

पाएगी। उस वक़्त तमाम लोगों की अदालत की जाएगी। जो अल्लाह के ताबे नहीं रहे होंगे वह अबदी सज़ा पाएँगे। सारी ज़मीन जाती रहेगी।

जिन्होंने अल्लाह का फ़ज़ल क़बूल करके अल्लाह की बादशाही में शरीक हुए हैं वह अबदी नजात पाएँगे। अल्लाह की बादशाही जो अल-मसीह की पहली आमद से शुरू हुई वह तकमील पाएगी। आसमान और ज़मीन के तमाम बाशिंदे तसलीम करेंगे कि अल-मसीह ख़ुदावंद और नजातदहिंदा हैं। यह दुनिया के लिए अल्लाह का मनसूबा है (मरक़ुस 14:62; फ़िलिप्पियों 2:9-11; मुकाशफ़ा 20:11-15; 21:1-8,22-27)।

## मुसलमान का जवाब

मुसलमान और ईसाई दोनों ही दुनिया को ख़ुशख़बरी सुनाने में लगे हैं। दोनों ही समझते हैं कि ख़िदमत और ख़ासकर मोमिनों की ख़िदमत एक बुनियादी फ़र्ज़ है।

लेकिन यह दोनों अपने मिशन को फ़रक़ तौर से मुनज़्ज़म करते हैं। इस्लाम की तबलीग़ ज़्यादातर इनफ़िरादी मुसलमानों के ज़रीए हुई है जिनके पास रोज़ी-रोटी के लिए महदूद ज़राए हैं। यही सबब है कि मुसलिम ख़िदमत में हस्पताल, सड़कें या कान्फ़्रेंस सेंटर जैसी चीज़ें नज़र नहीं आतीं। ख़ास तौर पर उन इलाक़ों में जहाँ मुसलमानों की अक़्लियत है। मुसलमान फ़ितरी तौर से आख़िरत की ज़िंदगी की उतनी ही फ़िकर रखते हैं जितनी कि इस दुनियावी ज़िंदगी की।

गो इस्लाम अल-मसीह की आमदे-सानी मानता है फिर भी उसका इस वाकिये के बारे में ख़याल फ़रक़ है। मुसलमान मानते हैं कि अल-मसीह इसलिए ज़मीन पर लौटेंगे कि अदालत से पहले ही सच्चे इस्लाम को मज़बूत करें।

# इख़्तिताम

इस्लाम और ईसाई दीन दोनों के मिशन का निशाना तमाम दुनिया है। इस किताब में हमने मुख़तसर तौर पर दोनों मज़हबों का मुक़ाबला किया है।

हम जो मुसन्निफ़ हैं उन अक़ीदों के लिए शुक्रगुज़ार हैं जो मिलकर रखते हैं। हम दोनों ही हज़रत इब्राहीम (अलैहिस-सलाम) के ईमान के नमूने पर चलने की कोशिश करते हैं। हम समझते हैं कि हमारे ईमान की बुनियाद नबियों, रसूलों और सहीफ़ों की गवाही है। मुकाशफ़ा इनसान का ईजाद नहीं है बल्कि अल्लाह की तरफ़ से है। हम समझते हैं कि दुनिया अदालत की तकमील की तरफ़ बढ़ रही है। हम दोनों क़ियामत मानते हैं। हम एतक़ाद करते हैं कि यह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है जो कि क़ादिरे-मुतलक़, माफ़ौक़ुल-फ़ितरत, आदिल और तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है। हम मुत्तफ़िक़ हैं कि अल्लाह चाहता है कि हम ग़ैरमोमिनों को गवाही देकर उन्हें तौबा करने और उम्मत में शामिल हो

जाने की दावत दें। हमारा ईमान है कि अल्लाह ने गवाही देनेवाली उम्मत क़ायम की है।

तो भी हम यह नज़रंदाज़ नहीं करना चाहते कि हमारे ईमान के कुछ पहलू फ़रक़ भी हैं। मुसलिम ईमान यह है कि क़ुरान शरीफ़ अल्लाह की कामिल मरज़ी का आख़िरी और ला-तबदील मुकाशफ़ा है। ईसाई ईमान यह है कि हज़रत ईसा (सलामुहु अलैना) इनसानी सूरत में अल्लाह का ज़िंदा कलाम हैं। मुसलमान के मुताबिक़ क़ुरान शरीफ़ सच्चाई की कसौटी है। ईसाई के मुताबिक़ पूरी किताबे-मुक़द्दस जिसकी तकमील अल-मसीह में हुई सच्चाई की कसौटी है। लिहाज़ा जो कुछ मुसलमान और ईसाई इनसान, ख़ुदा, नजात, हिदायत, रास्तबाज़ी, मुकाशफ़े, आख़िरी अदालत और उम्मत के बारे में सोचते हैं वह इन फ़रक़ कसौटियों पर मबनी होता है।

हमारी बातचीत में हमने महसूस किया है कि कुछ बातें हैं जिनमें हमारे ईमान मुताबिक़त रखते हैं। हम इस मुताबिक़त के लिए शुक्र गुज़र हैं। मगर साथ ही हमें इसका एहसास है कि अहम फ़रक़ भी पाए जाते हैं। इस्लाम और ईसाई दीन इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि अल्लाह रहीमो-करीम है और कि वह मुहब्बत रखनेवाला ख़ुदा है। सवाल यह है कि अल्लाह इनसान से कितना क़रीब आया है। अल्लाह किस तरह अपनी मुहब्बत और अपने रहम का इज़हार करता है?

इस्लाम में अल्लाह के रहम का कामिल इज़हार एक कामिल शरीअत से हुआ है। ईसाई ईमान के मुताबिक़ अल्लाह की मुहब्बत का कामिल इज़हार अल-मसीह की ज़िंदगी, सलीबी मौत और जी उठने से हुआ है। यह सतही फ़रक़ नहीं है। कोई भी दावा नहीं कर सकता कि यह फ़रक़ मामूली-सा है।

इस बात पर हम दोनों मुत्तफ़िक़ हैं : अल्लाह की तरफ़ से मुंकशिफ़ हुआ कलाम सच्चाई है। गो हम इस पर मुत्तफ़िक़ हैं, लेकिन यह हमें एक दूसरे से जुदा भी करती है। सवाल यह है कि क्या मुकाशफ़े का कलाम बुनियादी तौर पर एक किताब है या एक शख़्स? यह बात बहस के ज़रीए हल नहीं की जा सकती। इस क़िस्म का मामला सब्र और सुनने की तैयारी और हर एक उम्मत की गवाही तलब करता है।

ताहम हमें यक़ीन है कि यह फ़रक़ हमें बातचीत करने से रोकना नहीं चाहिए। इस फ़रक़ से ऐसी नफ़रत पैदा नहीं होनी चाहिए कि हम अपने बीच में दीवार खड़ी करके एक दूसरे के दुश्मन बन जाएँ। अगर हम सचमुच सच्चाई के मुतलाशी हैं और एक दूसरे को गहराई से समझने की चाह रखते हैं तो फिर हमारी आपस की गुफ़्तगू जारी रखना ज़रूरी है। यह किताब एक तहरीरशुदा गुफ़्तगू है। गुफ़्तगू के दीगर तरीक़े भी ज़रूरी हैं। अहम बात यह है कि हम अच्छे हमसाय बने रहें। हमारे दरमियान दोस्ती बढ़नी चाहिए। हमको अल्लाह से यह दुआ करनी चाहिए कि ऐ ख़ुदा! हमारी दोनों क़ौमों के दरमियान मुहब्बत का पुल तामीर करने में

हमारी मदद कर। लाज़िम है कि हम मुहब्बत भरी बातचीत करना, एक दूसरे को माफ़ करना, एक दूसरे की इज़्ज़त करना, अच्छे पड़ोसी बनना, एक दूसरे की बात सुनना और अच्छी गवाही देना सीख लें। आमीन।